२०

पिछौंड़ी बांह न देहौं दान।
सूधे मन तुम लेहु गुसाईं राखो हमारो मान ॥
मार्ग रोकि रहे नन्दनन्दन सब गुण-रूपनिधान।
वदन मोरि मुसकाइ भामिनी नयन बाण सन्धान ॥
नन्दरायके कुंवर लाड़िले सबके जीवन प्राण।
परमानन्द स्वामी मोहन हो तुम ते कौन सुजान ॥

२१

मोहन तुम कैसे हो दानी।
सूधे रहो गहे पति अपनी तिहारि जोको मैं जानी ॥
हम गूजरी गंवारि अहीरी तुम हो सारङ्गपानी।
मटुकी लई उतारि शीर्षते सुन्दरि अधिक लजानी।
कर गहि चीर कहा ऐंचत हो बोलति चतुर सयानी।
सूरदास प्रभु माखनके हित प्रेम प्रीति चित ठानी ॥

२२

आज दधि देखों तेरो चाखि।
कहि धों मोल किते बेंचेगो सत्य वचन मुख भाखि ॥
जोई तू कहे सोई हों देहों सङ्ग सखा सब साखि।
जो न पत्याइ ग्वालि तू हमको कण्ठश्री ले राखि ॥
ले चली सङ्ग घर दाम देन को जनायो नैकु कटाक्षि।
कुम्भन दास प्रभु गोवर्द्धन धर रसवश लियो तताछि ॥

२३

रञ्चक चाखन दे री दह्यो।
अद्भुत स्वाद श्रवण सुनि मोपे नाहिन परत रह्यो ॥
ज्यों ज्यों कर अम्बुज कुच झम्पति त्यों त्यों
मर्म लह्यो।
नन्दकुमार छबीलो ढोटा अञ्चल धाइ गह्यो ॥
हरि हठ करत दास परमानन्द इह मैं बहुत सह्यो।
इन बात नि खायो चाहत हो सेत न जात बह्यो ॥

२४

किशोरी अङ्ग अङ्ग भेटो श्याम हि।
कृष्णतमाल तरल भुज शाखा लटकि मिलो ज्यों
दाम हि ॥
गिरिवर धरण सुरति रति नायक रति जीत्यो
सङ्ग्राम हि।
सूर कहे ए उभय सुभट बिच क्यों जु बसे रिपु
काम हि ॥

२५

किशोरी देखत नयन सिरात।
वलि वलि जाउं सुखारविन्दको चन्द्र मन्द ह्वै जात ॥
श्याम कञ्चुकी तामें शोभित कञ्चन कलस न मात।
मानो मदन दोउ कुच ऊपर नील वस्त्र फहरात ॥
नकवेसरि और उरझि पीताम्बर देखत मुनि मुरझात।
या सुख देखि सूरदास प्रभु उड़े पुराने पात ॥

२६

सघन कुञ्जते उठे भोर ही श्यामा श्याम खरे।
जलद नवीन त्रिया मिलि दामिनि वर्षि निशा उघरे ॥
शिथिल रसन पट नील पीताम्बर आलस्य युत पहिरे।
कछुक बुन्द रति श्रम कणिका बादर वरण धरे ॥
भूषण विविध हुतो मिड़वारी अतिरस उमड़ि परे।
कज्जल अधर तमोल नयन रस अङ्ग अङ्ग झिल परे ॥
प्रेम प्रवाह छुटी मानो सरिता टूटी माल गरे।
शोभा अमित विलोकि सूर सुख नाहि न जात तरे ॥

२७

देखि सखि चार चन्द्र इकठोर।
चितवति रही नितम्बिनि प्रिय सङ्ग सार सुताकी ओर ॥
द्वे विधु नील श्याम-घन जैसे द्वे विधुको गति गोर।
ताके मध्य चार शुक राजत द्वे फल आठ चकोर ॥
शशि शशि सङ्ग प्रवाल कुन्द अलि तहां अरुझि
दो मोर।
सूरदास प्रभु उभय रूपनिधि वलि वलि युगल
किशोर ॥

२८

यशोमति आनन्द कान्द नचावति।
पुलकि पुलकि हुलसाति देखि सुख अति सुख
पुञ्ज हि पावति ॥

बाल युवा वृद्धा किशोर मिलि चुटकी दै दै गावति।
नूपुर स्वर शिञ्जित ध्वनि उपजत शिव विरिञ्चि
विस्मावति ॥
कुञ्चित ग्रन्थित अलक मनोहर झपकि वदन
पर आवति
जनु भगवान् मनहुं घन विधु मिलि मकर चांदनी
लजावति ॥

१९

मांगत दधि माखन उठि प्रात।
हौं दधि मथन कारनको बैठी तहां आई अररात ॥
कह्यो यशोदा रियो रोहिणी हंसि हंसि बैठे खात।
व्रजपति प्रिय और मागत हैं कहि कहि तोतरी बात॥

२०

तुमपे कौन दुहावत गैया।
गूढ़ भाव सूचित अन्तर गति अति सुकामकी नैया ॥
गूढ़ प्रीति तासौं मिलि कीजै जो होइ तिहारो दैया।
ज्यौं भावे त्यौं मिलत सबनि सो इहै सिखाई मैया ॥
ले जु रहे कर कनक दोहनी बैठे हो अधपैया।
परमानन्द स्वामी हठ मागो ज्यौं घर खसम गुसैया ॥

२१

बसौ मेरे नयन में नन्दलाल।
सांवरी सूरत माधुरी मूरति राजीव नयन विशाल ॥
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल अरुण तिलक दिये
भाल।
शङ्ख चक्र गदा पद्म विराजत कौस्तुभ मणि वनमाल॥
बाजूबन्द ज़री के भूषण नूपुर शब्द रसाल।
दास गोपाल मदनमोहन प्रिय भक्तनके प्रतिपाल ॥

२२

क्यौं बिसरै वह गाइ चरावनि।
वाम कपोल वाम भुज पर करि दक्षिण भौंह
उचावनि ॥
कोमल कर अङ्गुलि गहि मुरली अधर सुधा बर्षावनि।
चढ़ि विमान जे सुनत देव तिय तिन हु मोह
उपजावनि ॥
हार दाम उर स्थिर चपला अरु अद्भुत रूप
मिलावनि।
दन्त धरे तृण रहति चित्र ज्यौं गैयन सुधि बिसरावनि॥
मोर मुकुट श्रवण नि पल्लव कटि मल्लव स्वरूप
बनावनि।
चरण रेणु वाञ्छत कम्पत भुज सरितन गमन
थंभावनि ॥
आदि पुरुष जौं अचल भुतिव्धैं सङ्ग सखागुण गावनि।
वन वन फिरत कबहुं मुरली कर गिरि
चढ़ि गाइ बुलावनि ॥
लता विटप मन माह प्रकट ह्वै फलभर भूमि
नवावनि।
तत्क्षण हरित होत प्रति अवयव मधुधारा उपटावनि॥
सुन्दर रूप देखि वन लाला मत्त मधुप स्वर गावनि।
आदर देत सरोवर सारस हंस निकट बैठावनि ॥
बल सङ्ग श्रवण पुहप शोभा गिरिशिखर नाद
पुरवावनि।
विविध भांति वन गमन विचक्षण नूतन तान बतावनि॥
सुनत नाद ब्रह्मादिक सुरगण अधिक चित्त मोहावनि।
चलत ललित गति हरत ताप व्रजभूमि शोक
विनशावनि ॥
व्रज युवती मन मैन उदय करि स्थिरता ठहरावनि।
दिव्यगन्ध तुलसी माला उर मणि धर गाइ गनावनि॥
वेणुनाद वञ्चित करि सब हरिणी भौंह छिड़ावनि।
कुन्ददाम शृङ्गार सकल अङ्ग यमुना जल उछरावनि ॥
मुदित सकल गन्धर्व देवगण सेवा उचित करावनि।
गिरिधर वत्स ले व्रजगैयनके आवत चरण छुवावनि॥
वेणु बजावत व्रज सुख देवै गाय नि ले व्रज आवनि।
गावत गोप विशद कीर्ति सङ्ग फिरत वर भावनि ॥
घूमत मद दृग देत मान कछु श्रुति कुण्डल
झलकावनि।
बदर सदृश आनन सब सूचित विधु ज्यौं अङ्ग
सिरावनि ॥

गुण गावत ह्वै प्रकट रूप सों घोष वियोग बुझावनि ।
चारि याम हरिके सङ्ग क्रीड़त लीला माह समावनि ॥
यह लीला चित वसो लसो नित गोपीजन सुख
पावनि ।
दीजे दास रसिक को यह फल व्रज जनपद
रज धावनि ॥

३३

जब ते श्याम शरण मैं पायो ।
तब ते भेंट भई श्रीवल्लभ निज पति नाम बतायो ॥
और अविद्या छाड़ि मलिन मति श्रुतिपथ सों
दृग दृढ़ायो ।
कृष्णदास सब युग जन खोजत अब निश्चय
मन आयो ॥

३४

प्रकटे श्रीवल्लभ राजकुमार ।
जय जय श्रीगिरिधर श्रीगोविन्द बालकृष्ण जु उदार ॥
गोकुलपति व्रजपति श्रीयदुपति शोभित तन घनश्याम ।
करुणापति श्रीकल्याण राय जू रसिक जननि
सुखधाम ॥
श्रीमुरली धर प्रभु बालक श्रीवल्लभकुल सकल समान ।
विष्णुदास गोपाल लीला वपु गावत वेद पुरान ॥

३५

श्रीगोकुल युग युग राज करो ।
या सुख भजन प्रतापते चण इत उत न टरो ॥
पावन रूप दिखाय प्राणपति पतितन पाप हरो ।
विश्वविदित दीन गति प्रेत निज गति नियम धरो ॥
श्रीवल्लभकुल कमलनि दीपक यश मकरन्द भरो ।
नन्ददास प्रभु षट्गुण सम्पन्न श्रीविठलेश वरो ॥

३६

जे जन शरण गए ते तारे ।
दीनदयाल प्रकट पुरुषोत्तम श्रीविट्ठल नाथ ललारे ॥
जितनी रवि छायाको कणिका तितने दोष हमारे ।
तुम्हरे चरण प्रताप तेजते ते-ते तत्चण तारे ॥
माला कण्ठ तिलक माथे दे शङ्ख चक्र वपु धारे ।
माणिकचन्द्र प्रभुके गुण ऐसे महापतित निस्तारे ॥

३७

महा श्रीवल्लभ के ह्वै गाजो ।
चरण अम्बुज गहि मान अन्य तजि स्वामी
पदते भाजो ॥
गीता भागवत निगमसे साखी तो काहे को लाजो ।
गीतगोविन्द विल्वमङ्गल सीमा को कहि सकै
अनदाजो ॥
श्रीपुरुषोत्तम इनही ते पैये यह दृढ़ मति तुम साजो ।
सगुण दास कहे युवती सभामें गिरिधर महल
विराजो ॥

३८

अपुन पै अपनो सेवा करत ।
आपुन प्रभु आपुन सेवक ह्वै अपनो रूप उ धरत ॥
आपुन धर्म कर्म सब जानत मर्यादा अनुसरत ।
छीतस्वामी गिरिधरण श्रीविट्ठल भक्तवत्सल वपु धरत ॥

३९

हम तो श्रीविट्ठल नाथ हि जाने ।
आन देव सेवन कत करिए नहि कछु उरमें आने ॥
कोऊ भजो सुरपति कोऊ गणपति व्रत कोउ
भजो वेद पुराने ।
कोऊ रवि चन्द्र भजो शिव शङ्कर कोऊ भजो
प्रकट प्रमाने ॥
कोऊ भजो सनकादिक मुनि नारद कोऊ भजो
कर्म निदाने ।
कोऊ भजो अंश कला अवतारे काज अचर
चर थाने ॥
कोऊ भजो नेति नेति कहि निर्गुण कोऊ भजो
पद निर्वाने ।
कोऊ भजो तन्त्र मन्त्र यन्त्रनको फिरत सबै भहराने ॥
कोऊ भजो नव अरु सात पदार्थ मुक्ति ले सके दाने ।
करुणानिधि गिरिधर भजि दृढ़ करि हरिलोला
रस पाने ॥

४०

श्रीवल्लभके नन्दन फिरि आए ।
वेई रूप वेई फिरि क्रीड़ा करत आपु मन भाए ॥
वे फिरि राज करत श्रीगोकुल वेई रीति प्रकटाए ।
वेई शृङ्गार भोग छण छणके वेई लीला गाए ॥
जे यशोमति को आनन्द दीन्हों सो फिरि व्रजमें आए।
श्रीविट्ठल गिरिधर पद अम्बुज गोविन्द उर में लाए ॥

४१

प्रगट्यो प्राची दिशि पूरण चन्द्र ।
यों ही प्रगटे श्रीवल्लभ गृह सुर नर मुनि आनन्द ॥
अद्भुत रूप अलौकिक महिमा जन जनता यों भाष्यो।
छीतस्वामी गिरिधरण श्रीविट्ठल लोक वेद मत राख्यो॥

४२

यह कलि परम शुभग जन धन्य श्रीविट्ठलनाथ
उपासी ।
जो प्रकटे व्रजपति विट्ठलेश्वर तो सेवक व्रजवासी ॥
व्रजलीला भूलग्यो चतुरानन कुल टारो व्रतरासी ।
अब लों शठ अवगणत अभागी करत परस्पर हासी ॥
आत्या सहित आपु भए हैं हितू दीन्हों नर प्रकासी ।
देखियत लोक स्वरूप अलौकिक ज्यों गङ्गा सरिता सी॥
परिहरि सदन सदा हरि यश गावत मुक्ति
भक्तकी दासी ।
वदत न कछू भीम भव-वैभव भजनानन्द उपासी ॥

४३

यशोदा कहा कहों हों बात ।
तुम्हरे सुतके करतब मोपे कहत कहे नहिं जात ॥
भाजन फोर ढोरि सब गोरस ले माखन दधि खात ।
जो वरजो तो आंखि दिखावे रंचहु नाहिं सकात ॥
और अटपटी कहां लों वरनों छुवत पाणि सो गात ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरके गुण हों कहति कहति
सकुचात ॥

४४

ग्वालिन तोहि कहत क्यों भायो ।
मेरो कान्ह निपट बालक क्यों चोरी माखन खायो ॥
बूझि विचारि देखि जिय अपने कहा कहों हों
तोहि ।
कछुकि वन्द तोरे यह कैसे सो समुझि परति
नहिं मोहि ॥
चतुर्भुज दास लाल गिरिधर सों झूठो कहति बनाय।
मेरो श्याम सकुच को लरिका पर घर कबहुं न जाय ॥

४५

बालक हो ते चोरी ए हो जानत ।
माखन दूध धर्यो उन छाड़्यो बहोरि अचानक
भाजन भानत ॥
अब हौं लाल मेरो सर्व्वस्व मूस्यो और उलटे तुम
कैसी कैसी बानत ।
कुम्भन दास प्रभु सङ्ग लागी डोलति गोवर्द्धनधर
अज हुं न मानत ॥

देवगान्धार—अठताला

मानि मानि री मोहन द्वार ठाढ़े ।
तेरो तो प्रकृति आने पियकी पीरो न जाने बातें तो
बहुत उफाने त्यों त्यों ते हृदय आगार कपाट
दिये गाढ़े ॥
वर्ष रैन कारो तो सों बहि लगी भारो ऐसे री
लालन पर तन मन धन वारि फेरि प्राण दीजे काढ़े ।
सुनत वचन प्यारी कण्ठ लागी गिरिधारी गोविन्द
प्रभुको हृदय प्रेम जल सों बुझायो आए विरहानल
दाढ़े ॥

२

कछु व कहो न जाइ तेरी उनकी विकट बात ।
आन आन प्रकृति कैसे वनि आवे जो तू डार डार
ता वे हैं री पात पात ॥
अब कहा कहति सोइ जाइ कहों प्रियतम सों छाड़ि
देहु इत उतकी पांच सात ।
अब एते पर गोविन्द प्रभु सुमुख मनावत तेरो
बातनि बातनि भयो प्रात ॥

३

विनती करत प्यारी को सखी लालन मुरली नेक
बजाइये ।
जानति हों सकल कला गुण नि शिरमौर ढीथ्यो
दीजत तातें घोष राजकुंवर हम हु तान दे सुनाइये ॥
जैसे खग मृग द्रुम पशु वेली सरिता मोही तैसे
हमारो सखि निको मन रिझाइये ।
गोविन्द प्रभु सकल कला प्रवीण तातें हमारे
श्रवणनि सुख उपजाइये ॥

४

लड़ेते दे मेरो उरहार ।
जाइ कहों गी नन्द राय सों यह तेरो व्यवहार ॥
मेरी दुलरी मेरो कङ्कण मेरो गजरा हार ।
तेरे घरको मोल सबेई मेरो सहज शृङ्गार ॥
बहुत दिनन को झगरो ठान्यो उर मणि कञ्चनहार ।
झगरति झगरति गई कुञ्जमें व्यास कियो निर्वार ॥

५

कुञ्ज सदन तें मदन जीति उठे घन दामिनी से भोर ।
व्रज तरुणी वृषभानु नन्दिनी नागर नन्दकिशोर ॥
राजत है वनमाल ग्रीव उर बनी बलाका डोर ।
मनहु पाकशासन शरासन सो शीर्ष चन्द्रिका मोर ॥
परिभ्रत वेणु हंस हंसिनि मन चातक नयन चकोर ।
मुरली अधर मधुर कल गरजत ललित रास
मिलि घोर ॥
वर्षे प्रेम नीर रस सरसे दर्शे अनुपम ज़ोर ।
देखे प्रभु ऐसे मनमोहन आवत व्रजकी खोर ॥

६

भले तुम आए मेरे प्रात ।
रजनी सुख कहुं अनत कियो प्रिय जागी सारी रात ॥
झपि झपि आवत नयन उनींदे कहा कहुं वह बात ।
ज्यों जलरुह तकि किरण चन्द्रको अति सभीत
मुंदि जात ॥
कहुं चन्दन कहुं वन्दन लाग्यो देखियत सांवल गात ।
गङ्गा सरस्वती मानो यमुना अङ्ग हि मांझ लखात ॥
भली करी प्राण बोल निवाहे मेरे गृह प्रभात ।
चौत स्वामी गिरिधर शुनि बातें वदन मोरि
सकुचात ॥

७

सांचे भए आए प्रभात ।
नन्दनन्दन रजनी कहां जागी कहिये सांवल गात ॥
पीक कपोल नि लगी तुम्हारे जावक भाल लखात ।
उर हि विराजत बिनगुण माला मोतन लखि
सकुचात ॥
भली करो अब तहीं पग धारो जहां बिताई रात ।
चौत स्वामी गिरिधर काहे को झूठी सौंहें खात ॥

८

मोहन करतें दोहनि लीनी मोपद बछरा जोरें ।
हाथ धेनु स्तन वदन त्रियातन छीर छांकि छल छोरें ॥
आनन रहो ललित पय छींटें छाजत छवि तृण तोरें ।
मानहु निकसि कलङ्क कलानिधि दुग्धसिन्धु
मथि खोरें ॥
दे घूंघट पट ओट नील हंसि कुंवर मुदित मुख मोरें ।
मनहु शरत् शशि को मिलि दामिनि घेरि लियो
घनघोरें ॥
यह विधि रहसत विलसत दम्पति हेत हियें
नहिं थोरें ।
सूर उमगि आनन्द सुधानिधि मनो विलावलि फोरें ॥

९

अब हो देखे नवल किशोर ।
घर आवत हो तनक भए हैं ऐसे तनके चोर ॥
कछु दिन करि दधि माखन चोरी अब चोरत
मन मोर ।
विवश भई तन सुधि न संभारति कहति बात
भई भोर ॥
यह वाणी कहत हो लजानी समुझि भई जिय बोर ।
सूरश्याम मुख निरखि चली घर आनन्द लोचन लोर ॥

१०

युवती एक आवत देखी श्याम ।
द्रुमकी ओट रहे हैं आपुन यमुना तट गई वाम ॥
जल हलोरि गागरि भरि नागरि जब ही शीर्ष
उठायो ।
घरको चलो जाइ ता पाछें शिरते घट ढरकायो ॥
चतुर ग्वालि कर गह्यो श्यामको कनक लकुटिया
पाई ।
और नि सों करि रहे अचगरी मोसों लगत कन्हाई ॥
गागरि लै हंसि देत ग्वालि कर रीतो घट नहिं लैहीं ।
सूर श्याम ह्यां आनि देहु भरि तब हि लकुट
कर देहीं ॥

११

गोपिका अति आनन्द भरी ।
माखन दधि हरि खात सखनि सङ्ग अति
आनन्द खरी ॥
कर लै लै मुख स्पर्श करावति उपमा बड़ी सुभाई ।
मानहु कञ्ज मिलन शशि को लिये सुधा कौर
कर आई ॥
जा कारण शिव ध्यान लगावत शेष सहस्र मुख गावत ।
सोई सूर प्रकट व्रज भीतर राधा मन हि चोरावत ॥

१२

मन मन हंसति राधिका गोरी ।
ऐसे श्याम रहत व्रज भीतर बूझति है भई भोरी ॥
तुम उनको कहुं देखे हैं के शुनी कहति हो बात ।
चतुराई नीके गहि राखो मुख मुरिके मुसिकात ॥
कब ह्रं ता कहं सङ्ग परि हो तब हो लोजी चीनि ।
सूर श्यामको पीताम्बर मेरो बेसरि लीजो छीनि ॥

१३

तुमको कैसे श्याम लगी ।
न्हात रही जलमें सब तरुणी तब तुम कहां खगी ॥
अङ्ग अङ्ग अवलोकन कीन्हीं कौन अङ्गपर रहे पगी ।
भूल्यो न्हान ध्यान तन भूली नन्द सूनु उसते न डगी ॥
जानति नहीं कहुं नहिं देखे मिलि गई ऐसे
मनहु सगी ।
सूरश्याम ऐसे तें देखि मैं जानति दुःख दूरि भगी ॥

१४

श्याम अति राधा विरह भरे ।
कबहुं मदन कबहुं अति हीं कबहुं पौरि खरे ॥
जननी आतुर करति रसोंई देखि देखि हरि जात ।
कहा अबेरे करति तू अब री भूख लगी अति प्रात ॥
मैं बलि जाओं श्याम घन सुन्दर अब बैठो तुम आइ ।
सूर सखा सङ्ग सबै बोलावहु हलधर नहीं बताइ ॥

१५

मेरे नयन नि हीं सब खोरि ।
श्यामवदन छवि निरखि जु अटके बहुरे नहीं बहोरि ॥
जो मैं कोटि यतन करि राखति घूंघट ओट अगोरि ।
तो उड़ि मिले वधिकके खग ज्यों पलक पिञ्जर
नि तोरि ॥
बुद्धि विवेक बल बचन चातुरी पहिल हि लई
अंजोरि ।
अति अधीन भई सङ्ग डोलति ज्यों व गुड़ी वश डोरि ॥
अब धौं कौन हेत हमसों बहुरि हंसत मुख मोरि ।
मनहु सूर दोउ सिन्धु सुधा भरि उमगि चले मिति
फोरि ॥

१६

मैं जानी पिय मनकी बात ।
धरणी पगनख कहा करोवत अब सीखे ए घात ॥
तुम जानत जिय हम हि सयाने अरु सब लोक
अयाने ।
रैन बसत कहुं भोर हमारे आवत नहीं लजाने ॥
यह चतुरई पढ़ो ताही पे सौ गुण हमते न्यारो ।
धन्य धन्य सूरदास के स्वामी काहे हमन बिसारो ॥

१७

पिया पिय नाहिं मनायो माने ।
श्रीमुखवचन मधुर मृदु मादक कठिन कुलिश हुते
जाने ॥

शोभित सहित सुगन्ध श्याम कच कल कपोल
अरुझाने ।
मनहुं विधुन्तुद ग्रस्यो कलानिधि तजत नहीं
बिनु दाने ॥
बाल भाव अनुसरति भरति दृग अग्र अंशुकन आने ।
जनु खञ्जरीट युगल जठरातुर लेत सुभच्छ अकुलाने ॥
नयन निकट ताटङ्क गण्ड मण्डल पर कविन बखाने ।
जनु खद्योत चमकि चलि सकत न निशिगत
तिमिर हिराने ॥
यह सुनिके अकुलाय चले हरि कृत अपराध छमाने ।
सूरदास प्रभु मिले परस्पर मानिनि मिलि मुसकाने ॥

१८

कितते आये हो नन्दलाल ऐसो कौन बाल जा
धोखे तुम आइ द्वार ह्वै झांके ।
मिटति नहीं चितवनि हित चित को ओ है टेव
तिन तिन में पहिंचाने नयन बांके ॥
कबहुं जंभात कबहुं अङ्ग मोरत अटपटात
मुख बात न आवत रैन कहूं धौं थाके ।
सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि रसिक रसिकई
जानि नाम लेहु रहे जाके ॥

१९

मैं जाने हो जू ललना तहीं निशि धरिये जहां नयो
नेहरा ।
मंह की हलभराई मोहू सों कहन आये जियकी
जासों ताही सों तुम बिनु सूनो वाको गेहरा ॥
निशाके सुखकी बात कहे देत अधर नयन उर
नख लागी छवि देहरा ।
वेग सवारे पग धारिये सूरके स्वामी ना तरु भीजें
गो पियरो पट आवतु है पिय मेहरा ॥

२०

जोई जोई प्यारे करें सोई मोहि भावे भावे मोहि
जोई सोई सोई करें प्यारे ।
मोको व भावति ठौर प्यारेके नयन निमें प्यारे भये
चाहें मेरे नयननिके तारे ॥
मेरे तन मन प्राणहु ते प्रियतम प्रिय अपने कोटिक
प्राण प्रियतम मो से हारे ।
श्रीहित हरिवंश हंस हंसिनो श्यामल गौर कहो
कौन करे जलतरङ्गिनी न्यारे ॥

२१

प्रात समय दोऊ रस लम्पट सुरति युद्ध जय युत
अति फूल ।
प्रेम वारिज वन इन्दु वदन पर भूषण अङ्ग हि
अङ्ग विकूल ॥
कछु रह्यो तिलक शिथिल अलकावलि वदनकमल
मानहु अलि भूल ।
श्रीहित हरिवंश मदन रङ्ग रङ्गि रहे नयन वेन कटि
शिथिल दुकूल ॥

२२

आजु तो युवति तेरो वदन आनन्द भरो पियके
सङ्गमके सूचत सुख चैन ।
आलस्य वलित बोल सुरङ्ग रङ्गे कपोल विथकित
अरुण उनीदे दोउ नयन ॥
रुचिर तिलकलेश कीर्ति कुसुमकेश शिर सोमन्त
भूषित मानो तेन ।
करुणाकर उदार राखत कछू न सार अशन वसन
लागत जब देन ॥
काहेको दुरति भिरु पलटे प्रियतम चोर वश किये
श्याम शिखै शत् मैन ।
गलित उरसि माल शिथिल किङ्किणी जाल श्रीहित
हरिवंश लता गृह सैन ॥

२३

आजु प्रभात लता मन्दिरमें सुख वर्षत अति हर्ष
युगल वर ।
गौर श्याम अभिराम रङ्ग भरे लटकि लटकि
पग धरत अवनि पर ॥

कुच कुङ्कुम रञ्जित मालावलि सुरतिनाथ श्रीश्याम
धाम धर।
प्रिया प्रेमके अङ्ग अलङ्कृत चित्रित चतुर शिरोमणि
निज कर॥
दम्पति अति अनुराग मुदित कल गान करत
मन हरत परस्पर।
श्रीहित हरिवंश प्रशंस परायण गायन अलि स्वर
देत मधुर तर॥

२४

प्यारे बोलि भामिनी आजु नीकी यामिनी।
भेंटु नवीन मेघ सौदामिनी॥
मोहन रसिक रायरी मारी ता सों जु मान करै ऐसी
कौन कामिनी।
श्रीहित हरिवंश श्रवण नि शुनत श्रीप्यारी राधिका
रमण सों मिली गजगामिनी॥

२५

कौन चतुर युवती प्रिया जाहि मिलत लाल
चोर ह्वै रैन।
दुरवत क्यों बहुरि शुनि प्यारे रङ्गमें गहीले चैन
में नयन॥
उर नख चन्द्र विराजै पट अटपटे से वैन।
श्रीहित हरिवंश सुरति राधापति प्रमथित मैन॥

२६

आजु निकुञ्ज मञ्जुमें खेलत नवल किशोर नवीन
किशोरी।
अति अनुपम अनुराग परस्पर शुनि अभूत
भूतल परयोरी॥
विद्रुम स्फटिक विविध निर्मित घर नव कर्पूर
पराग न थोरी।
कोमल किशलय शयन सुपेशल ता पर श्याम
निवेशित गोरी॥
मिथुन हास परिहास परायण पीक कपोल कमल
पर झोरी।
गौर श्याम भुज कलह मनोहर नीवी बन्धन
मोचत डोरी॥
हरि उर मुकुर विलोकि अपनपौ विभ्रम विकल
मान युत भोरी।
चिबुक सुचारु प्रलोइ प्रबोधित प्रिय प्रतिविम्ब
जनाइ निहोरी॥
नेति नेति वचनामृत शुनि शुनि ललितादिक
देखति दुरि चोरी।
श्रीहित हरिवंश करत करधूनन प्रणय कोपि
मालावली तोरी॥

२७

अति हि अरुण तेरे नयन नलिन री।
आलस्य युत इतरात रगमगे भये निशि जागरमें
खिन्न मलिन री॥
शिथिल पलक में उठति गोलक गति विधयो
मोहन मृग सकतु चलि न री।
श्रीहित हरिवंश हंस कल गामिनि सम्भ्रम देति
भंवरिनी अलिन री॥

२८

बनी राधामोहन की जोरी।
इन्द्र नीलमणि श्याम मनोहर सात कुम्भ तन गोरी॥
भाल विशाल तिलक हरि कामिनी चिकुर चन्द्र
विच रोरी।
गजनायक प्रभु चालि गयन्दिनिगति वृषभानु
किशोरी॥
नील निचोल युवति मोहन पट पीत अरुण
शिर खोरी।
श्रीहित हरिवंश रसिक राधापति सुरतिरङ्ग में बोरी॥

२९

आजु भावारी किशोर भावती विचित्र और कहा
कहौं अङ्ग अङ्ग परम माधुरी।
करत केलि कण्ठ मेलि बाहुदण्ड गण्ड गण्ड स्पर्श
सरस हास रासमण्डल युरी॥

श्याम सुन्दरी विहार बांसुरी मृदङ्ग तार मधुर घोष
नूपुरादि किङ्किणी चुरी।
देखति हरिवंश आलि नृत्यनी सुगन्ध चालि वारि
फेरि देति प्राण देह सों दुरी ॥

३०

मञ्जुल कुल कुञ्जदेश राधा हरि विशद वेश
राकानभ कुमुदबन्धु शरत् यामिनी।
श्यामल द्युत कनक अङ्ग विहरत मिलि एक सङ्ग
नीरद मनो नील मध्य लसति दामिनी ॥
अरुण पीत नव दुकूल अनुपम अनुराग मूल
सौरभ युत शीत अनिल मन्द गामिनी।
किसलय दल रचित शयन बोलत प्रिय चाटु वैन
मान सहित प्रति प्रतिकूल कामिनी ॥
मोहन मन मथत मार परशत कुचनी विहार वेपथ
युत नेति नेति वदति भामिनी।
नर वाहन प्रभु सुकेलि बहु विधि भर भरित झेलि
सौरत रस रूप नदी जगत् पावनी ॥
चलहि राधिके सुजान तेरे हित सुख निधान
रास रच्यो श्याम तट कलिन्द नन्दिनी।
नृत्यत युवती समूह रागरङ्ग अति कतूह बाजति
रस मूल मुरलिका आनन्दिनी ॥
वंशीवट निकट जहां परम रमण भूमि तहां सकल
सुखद वहे मलय वायु मन्दिनी।
जाती ईषद् विकाश कानन अतिशय सुवास
राका निशि शरद् मास विमल चन्दिनी ॥
नरवाहन प्रभु निहारि लोचन भरि घोष नारि
नख शिख सौन्दर्य्य काम दुःख निकन्दनी।
विलस हि भुज ग्रीव मेलि भामिनी सुखसिन्धु झेलि
नव निकुञ्ज श्यामकेलि जगत् वन्दिनी ॥

३१

नन्दके लाल हरो मन मोर।
हों अपनो मोतिन लर पोवति कङ्कर डारि गये
सखि भोर ॥
बङ्क विलोकनि चालि छबीली रसिक शिरोमणि
नन्दकिशोर।
कहि कैसे मनु रहे श्रवण शुनि सरस मधुर
मुरलीकी घोर ॥
इन्दु गोविन्द वदनकी कारण को भये नयन चकोर।
श्रीहित हरिवंश रसिक रस युवती तू ले मिलि
सखि प्राण अकोर ॥

३२

अरुण अधर तेरे कैसे के दुराऊं।
रवि शशि शङ्कि भजन किय अपवश अद्‌भुत रङ्गनि
कुसुम बनाऊं ॥
शुभ को सेवक शिव कौसुभ मणि पङ्कजदल नि ले
अङ्ग नि लुपाऊं।
हर्षत इन्दु तजत जैसे जलधर सो भ्रम ढूंढ़ि
कहां हों पाऊं ॥
अम्भ न दम्भ कछू नहिं व्यापत हिमकर तपे ताहि
कैसेके बुझाऊं।
श्रीहित हरिवंश रसिक नवरंग पिय भृकुटि भौंह
तेरे खञ्जन लराऊं ॥

३३

अपनो बात मोसों कहि री कामिनी औंगी मौंगी
रहति गर्वकी माती।
हों तोसो कहत हारो सुनि री राधिका प्यारी
निशिको रङ्ग क्यों न कहत लजाती ॥
गलित कुसुम वेणी सुनि री सारङ्ग नयनी छूटी लट
अंचरा वदत अरसाती।
अधर नि रङ्ग रङ्ग रच्यो री कपोलनि युवती चलत
गजगति अरझाती ॥
रहसि रमी छबीले रसन वसन ढीले शिथिल
कसनि कञ्चुको उर राती।
सखि सों शुनि श्रवण वचन मुदित मन चली
श्रीहित हरिवंश भवन मुसुकाती ॥

३४

आजु मेरे कहे चलो मृगनयनी।
गावति सरस युवति मण्डल में प्रिय सङ्ग मिले भली
पिक बैनी॥
परम प्रवीण कोक विद्या में अभिनय निपुण
लाग गति लेनी।
रूपराशि शुनि नवल किशोरी पल पल घटति
चांदनी रैनी॥
श्रीहित हरिवंश चली आतुर मन राधारमण
सुरति सुख देनी।
रहसि रभस आलिङ्गन चुम्बन मदन कोटि कुल
भई कुचैनी॥

३५

आजु देखि व्रजसुन्दरी मोहन बनी केलि।
अंश अंश बाहु दै किशोर जोर रूपराशि मानो
तमाल अरझि रही सरस कनक बेलि॥
नव निकुञ्ज भ्रमर गुञ्ज मञ्जु घोष प्रेमपुञ्ज
गान करत मोर पिकनि अपने स्वर सो मेलि।
मदन मुदित अङ्ग अङ्ग बीच बीच स्वर तरङ्ग
पल पल हरिवंश पिवत नयन चखक झेलि॥

३६

शुनि मेरो वचन छवीलो राधा।
तै पायो रससिन्धु अगाधा॥
तू वृषभानु गोपकी बेटी।
मोहनलाल रसिक रस भेटी॥
जाहि विरिञ्चि उमापति नाए।
तापै तें वन फूल बिनाए॥
तेरो रूप कहत नहिं आवै।
श्रीहित हरिवंश कछुक यश गावै॥

३७

खेलत रास रसिक व्रज मण्डन।
युवति सु अंश दिये भुज दण्डन॥
शरद विमल नभ चन्द्र विराजै।
मधुर मधुर मुरली ध्वनि बाजै॥
अति राजत घनश्याम तमाला।
कञ्चन वेलि बनी व्रजबाला॥
बाजत ताल मृदङ्ग उपङ्गा।
गान मथत मन कोटि अनङ्गा॥
भूषण बहुत विविध रङ्ग सारी।
अङ्ग सुगन्ध दिखावति नारी॥
वर्षत कुसुम मुदित सुरयोषा।
शुनियति दिवि दुन्दुभि कल घोषा॥
श्रीहित हरिवंश मगन मन श्यामा।
श्रीराधारमण सकल सुख धामा॥

३८

मोहन लालके रस माती।
बधु गुपत गोवति कत मो सों प्रथम नेह सकुचाती॥
देखि संभारि पीत पट ऊपर कहा चूनरी राती।
छूटी लर लटकति मोतिनकी नख विधु अङ्कित छाती॥
अधर बिम्ब खण्डित मख मण्डित गण्ड चलत
अरुझाती।
अरुण नयन घूमत आलस्य युत कुसुम गलित
लटपाती॥
आजु रहसि मोहन सब लूटी विविध आपनो थाती।
श्रीहित हरिवंश श्रवण शुनि भामिनि भवन
चली मुसकाती॥

३९

तेरे नयन करत दोउ चारी।
अति कुलकात समात नहीं कहुं मिले हैं कुञ्ज
विहारी॥
विथुरी मांग कुसुम गिरि गिरि परे लटकि रही
लट न्यारी।
उर नख रेख प्रगट देखियति है कहा दुरावति प्यारी॥
परी है पीक शुभग गण्डन पर अधर नि रङ्ग सुकुमारी।
श्रीहित हरिवंश रसिकिनी भामिनि आलस्य
अङ्ग अङ्ग भारी॥

४०

नयन नि वारो कोटिक खञ्जन।
चञ्चल चपल अरुण अनियारे अग्रभाग बन्यो अञ्जन ॥
रुचिर मनोहर वङ्क विलोकनि सुरति समरदल
गञ्जन।
श्रीहित हरिवंश कहो न बनै छवि सुखसमुद्र
मनरञ्जन ॥

४१

राधा प्यारी तेरे नयन सलोल।
ते निज भजन कनक यौवन तन लिये हैं
मनोहर मोल ॥
अधरनि रङ्ग अलक लट छूटी रञ्जित पीत कपोल।
तू रस मगन भई नहिं जानति ऊपर नील निचोल ॥
तेरे कुचयुग पर नखरेखा प्रगटानो शङ्कर
शिर शशि टोल।
श्रीहित हरिवंश कहति कछु भामिनी अति
आलस्यसों बोल ॥

४२

री सजनी आजु गोपाल रास रस खेलतु पुलिन
कल्पतरु तीर।
शरद् विमल नभचन्द्र विराजे रोचक त्रिविध समीर॥
चम्पक वकुल मालती मुकुलित मत्त मुदित
अलि कीर।
देशी सुगन्ध राग रङ्ग नीको व्रज युवतिनको भीर ॥
मघवा मुदित निशान वजायो व्रत छाड़्यो मुनि धीर।
श्रीहित हरिवंश गमन मन श्यामा हरत मदन
घन पीर ॥

४३

आजु नीकी बनी राधिका नागरी।
व्रज युवति यूथ में रूप अति चतुरई सोलह श्रृङ्गार
गुण सबनते आगरी ॥
कमल दच्छिण भुजा वामभुज अंश सखि गावति
सरस मिलि मधुर स्वर राग री।
सकल विद्याविदित रहसि हरिवंश हित मिलित
नव कुञ्ज वर श्याम बड़ भाग री ॥

श्रीकृष्णाय नमः

बिलावल—तिताला

धन्य आजु यह दर्श दियो।
धन्य धन्य जासों अनुरागी तन जानो नहिं और वियो॥
हम ता श्याम यह भली भावती भले भली मिलि
भली करी।
यह मेरे जिय अति हि अचम्भित तो विछुरत क्यों
एक घरी ॥
जाहु तहीं सुख दीन्हो मोको वे शुनि के रिस पावेंगी।
सूर श्याम अति चतुर कहावत वह सों मन न
मिलावेंगो ॥

२

क्यों आये उठि भोर यहां।
काहे को इतनो शरमाने रैन रहे फिरि जाहु तहां ॥
हम को कहा इतो गरुवाई उनही वरो न
संभारो जू।
उन आये ह्यां नाहीं जान्यो अज हूं ले यग धारो जू॥
हम हूं बोलि वहां हीं लीजो डर उनके हम हू कोले।
सूर श्याम तिन हो सुख दीजियो विलसे सङ्ग
तुम को ले॥

३

रसिक रसिकई जानि परी।
नयन नितें अब न्यारे हूजो तब हो तें अति रिस
निमरी ॥
तुम यौवन अरु सो नवयौवनि एते पर सब गुण
नि भरी।
लाज नहीं मेरे गृह आवत जाहु जाह करि तिय
झहरी ॥

अञ्जन अधर कपोल नि वन्दन पीक पलक छवि
देखि डरी ।
सूरश्याम रति चिह्न दिखावन मेरे आये भले हरी ॥

४

बार बार मैं कहति हों पिय तहीं सिधारो ।
आये हो मनहरण का हरि नाम तुम्हारो ॥
भली बनी छवि आजु की क्यों लेत जंभाई ।
रैन आजु सोये नहीं रति काम जगाई ॥
वह रति तुम रति नाथ हो हम कैसे भावे ।
सूर श्याम तुम बहु गुणी जे तुम हि रिझावे ॥

५

आय गई ब्रजनारी तहां ।
सोंह करत प्रिय प्यारी आगे आनन्द विरह महां ॥
प्यारी हंसी देखि सखियनि को अन्तर रिस है भारी ।
नयन सैन दे अङ्ग अङ्ग निरखति प्रिय शोभा अधिकारी ॥
श्याम रहे मुख मूंदि सकुचि के युवति परस्पर हेरे ।
सूर प्रभु अङ्ग अङ्ग अनूप छवि कहं पायो केहि केरे ॥

६

तब नागरी कहति सखियनि सों एते पर ए सोंह करे ।
दर्शन प्रात देत हैं हमको निशि और निके चित्त हरे ॥
तुम हो देखि लेहु अङ्ग बानिक एते पर क्यों सहो घरे ।
कृपा करे अब तहीं सिधारो मो आगेतें अब जु टरे ॥
यह छवि देखि सनाथ भई मैं अब ताही पर जाइ ढरे ।
सूर श्याम रिस देखि चली डरि कहो सखी
अब ह्यां न फिरे ॥

७

प्रिय छवि निरखत नागरी अङ्गदशा भुलानी ।
अन्तर्गत आनन्द भरी ललिता हर्षानी ॥
सहचरि सों कहि सुमन ले हरि फेंट भराये ।
अति अधीन पिय ह्वे गये वश परे पराये ॥
मार्ग सुमन बिछाव हो पग निरखि निहारे ।
फूले फूल धर धरे डलिया चुनि डारे ॥
ऐसे वश प्रिय वामके सुख सूरज जाने ।
जे जेहि भाव निहारि भजे तेहि तैसें माने ॥

८

लाल उनींदे भये ।
राजत हैं रतनारे नयन मानहु नलिन नये ॥
पीक कपोल ललाट महावर वन्दन वलित खये ।
जनु तन जामें सद्य अरुण दल कामके बीज बये ॥
विन गुण हार पयोधर मुद्रा हृदय सुदेश ठये ।
अञ्जन अधर सुधामन्त्र लिख्यो रति दिच्छा ले न गये ॥
सूर श्याम विथुरे कच मुख पर नख नाराच हये ।
ता ऊपर आनन्द इन्दु जनु मानहु समर जये ॥

९

नयन उनींदे भये रङ्ग राते ।
मानहु सुरङ्ग सुमन पर सजनी फिरत भृङ्ग मदमाते ॥
प्रेम पराग पांखुरी पलदल प्रफुल्ल मदन लता ते ।
शुभग सुवास विशाल विलोकनि प्रकट प्रीति
करि ता ते ॥
तैसो ई मारुत मन्द जम्हावरि मिलत मुदित
छवि या ते ।
सींचे सूरश्याम माननि कर हित सों केलि कला ते ॥

१०

काहे को पिय भोर हो मेरे गृह आये ।
इतने गुण हमपै कहां जे रैन रमाये ॥
ताहो पै पग धारिये चकित मैं जाने ।
विनगुण गड़ि माला रहो नहीं कहुं विहराने ॥
आये हो सुख देन को ऐसो हितकारो ।
सूर श्याम तुम को की वैसो नारी ॥

११

कृपा करी उठि भोर हो मेरे गृह आये ।
अब हम भई बड़ भागिनी निशि चिह्न देखाये ॥
जावक भाल नि सोहियो नीके वश पाये ।
नयन देखि चकित भई क्यों पान खवाये ॥
अधर नि पर काजर बन्यो बहु रङ्ग कढ़ाये ।
वन्दन विन्दली भाल की भज आप बनाये ॥
यह मो सों तुम हो कहो उर क्षत अरुणाये ।
सूर श्याम यश राशि हो धन्य तिया हंसाये ॥

१२

हर्षि श्याम तिय बांह गही ।
चूक परी हम को यह बख्शो आवन की कहि
गये हरी ॥
रिसनि उठी झहराइ झटकि भुज कुवत कहा पिय
शरम नही ।
भवन गई आतुर ह्वै नागरि जी आई सुख सब कही।
मेरे महल आजु तें आवहु सोंह नन्दकी कोटि कही।
सूरदास जब लों जग जोश्रों मिलो नहीं वरु
काम दही ॥

१३

बहुरि मिलहुगो कालि हो चित समझि सयानो ।
मेरो कह्यो न क्यों करे क्या होहि अयानो ॥
अमल हि औषध अनल है सब जानि रहो हो ।
काहे को हठ करति हो बे काज वही हो ॥
धरणीधर व्याकुल खरे री गर्व गहेली ।
सूर कह्यो शुनि मानि ले मैं कहति सहेली ॥

१४

नन्दसूनु बहुनायक अनृत हि रहे जाई ।
वह अभिलाष करति रही ता को विसराई ॥
वासर ऐसो हो गयो निशि याम तुलानो ।
नारि परो अति सोचमें विरह अकुलानो ॥
आवन कहि गये सांझ हो अज हूं नहीं आये ।
को धौं कतहुं रमि रहे फग परे पराये ॥
वे हो है बहु नायको लायक गुण भारो ।
सूर श्याम कुमुदा भवन सुधि करि पग धारो ॥

१५

भलो कीन्हीं आए हो ललना हमारे मोर भए मोरें।
हम हिं दिखावन रतिके चिह्न जानति हों
उनि किये बहुत निहोरे ॥
काहे को होत उघारे प्रीतम लोक निहारि
देखि हैं खोरे ।
रसिक प्रीतम तुम छांड़ि सिधारो जाके निशि वसि
भए दृगनि लाल लाल डोरे ॥

१६

भलो करो जू आए सवारे ।
बहुरि प्रभात काउ दोहोइगो प्रकट देखिये
अङ्ग नि नारे ॥
पहने पीत नील पट ओढे ऐसोको चतुर धन भावत।
एते मान देह सुधि भूलो तुम हो आपुनपो विसरावत॥
पाउ धारिये बहुत वेर भई कर गहि कनक तलव
बैठारे ।
परमानन्द प्रभु तुम से ओर को सन्ध्या वचन वदे
नहिं टारे ॥

१७

रसिक शिरोमणि नन्दलाल । (रङ्ग भीने हो)
लाड लड़ाई नवल वाल ॥ ,,
जावक लागो सोहे शिथिल पाग । ,,
प्रिया मनाये भूरि भाग ॥ ,,
रूप छके लोचन घुमात । ,,
प्रेम उमगि ऐंड़ात गात ॥ ,,
उर सोहे मलगजी माल । ,,
मदन मत्त डगमगो चाल ॥ ,,
बाहु ओं उगव्योक फूल । ,,
दिये है उसीसो सुखको मूल ॥ ,,
अलक निकसि रही शोभा देतु । ,,
काम केलिके विजय केतु ॥ ,,
महकि रहो तन अति सुवास । ,,
अलि गावत कीर्ति रास रास ॥ ,,
जाहो सों मिले हमें चैन । ,,
सहि न सकत वह गूढ़ सेन ॥ ,,
राम राय प्रभु सुनत हसे । ,,
कोउ भागवान्के हिये वसे ॥ ,,

१८

रति रसकेलि विलास हास रङ्ग भीने हो ।
कोउ सुन्दरि नारिके लगे गात रङ्ग भीने हो ॥
अरुण नयन अति रसमसात रङ्ग भीने हो ।

मनो भोर भये जलजात रङ्ग भीने हो ॥
बोलत बोल प्रतीतिकी रङ्ग भीने हो।
सुन्दर सांवल गात लाल रङ्ग भीने हो ॥
प्रिया अधर रस पान मत्त रङ्ग भीने हो।
कहत कई बात लाल रङ्ग भीने हो ॥
अति लोहित दृग रगमगे रङ्ग भीने हो।
मनो भोर जलजात लाल रङ्ग भीने हो ॥
चाल शिथिल भ्रू भाल शिथिल रङ्ग भीने हो।
शशि मुख शिथिल जंभात लाल रङ्ग भीने हो ॥
केश शिथिल राकेश शिथिल रङ्ग भीने हो।
वयक्रम शिथिल सिरात लाल रङ्ग भीने हो ॥
गोविन्द प्रभु नन्दसुत किशोर रङ्ग भीने हो।
यदुनायक विख्यात लाल रङ्ग भीने हो ॥

१९

सांझके सांचे बोल तिहारे।
रजनी अनत जागि नन्दनन्दन आए हो निपट सवारे॥
आतुर भए नील पट ओढे पोरे वसन विसारे।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर भले वचन प्रतिपारे ॥

२०

तुम्हारे पूजिये पिय पाइ।
कैसी कैसो उपजत तुम पें कहत बनाइ बनाइ ॥
असन अधर क्यों श्याम भए क्यों परे पट पलटाइ ।
रुचिर कपोल पोक कहां लागी उर जयपत्र लिखाइ ॥
गिरिधर लाल जहां निशि जागे तहीं देहु सुख जाइ।
कुम्भनदास प्रभु छाड़ो अटपटो अब तु म्हें को
पतिआइ ॥

२१

कहो धौं आज कहां वसे लाल भोर भए आये
डगमगत पग।
खरे सकारे क्यों उठे मोहन बोलत तमचर खग ॥
कज्जल अधर लटपटो पाग उर विलुलित कुसुम
माल कुच पर स्रग।
अरुण नयन आलस्य जंभात प्रिय रैन कियो जग ॥
रतिके चिह्न तन प्रकट देखियत काहेको दुराव
करत श्याम सुभग।
कुम्भनदास प्रभु रसिक गिरिधर परे चतुर
नागरी फग ॥

२२

कहो धौं कहां तुम रैनि गंवाई लाल अरुण
उदय आये।
कौन सकोच श्याम घनसुन्दर तमचर बोलत
उठि धाये ॥
आंखि देखि कहा साखि बूझिये रतिके चिह्न
तन प्रकट लगाये।
कुम्भनदास सुजान गिरिधर काहे को दुरत प्रिय
जानि पाये ॥

२३

ऐसी बात न लालन क्यों मन मानै।
उत्तर बनाइ बनाइ तासो कहिये जो इह न जानै ॥
रतिके चिह्न प्रकटत देखियत है कैसे दुरत दुराने।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर हो तुम खरे सयाने ॥

२४

आज अरुण अरुण डोरे लालके दृगनि लागत हैं भले।
वन्दन परे पगन अलि मानो कञ्ज दलनि पर चले ॥
लालकी पगिया में न समात कुटिल अलि संझिले।
नन्ददास मधुप पुञ्ज मानो सोवततें कलमले ॥

२५

आवत लाल गोवर्द्धनधारो डगमगो चाल लटपटी पाग।
आलस्य मैन सरस रङ्ग रञ्जित प्रियाप्रेम नव नव
अनुराग ॥
विलुलित माल मलगजो उरपर सुरति समरकी
लगो पराग।
चुम्बन श्याम अधर कल गावत रतिसुख भाव
बिलावल राग ॥
पलटि परे पट नील सखीके रस मद झीलत
मदन तड़ाग।

वृन्दावन वीथिनि अवलोकत कृष्णदास लोचन
बड़ भाग ॥

२६

कहां दुरत प्रिय जान शिरोमणि रतिके चिह्न
देखियत है न्यारे।
अरुण नयन घूमत आलस्य सह कछुक जंभात
अधर मसि कारे ॥
श्याम अङ्ग नभ नख पद न्यारे चन्दन छांट बने
मानो तारे।
अवर अनेक कहां ला वरणो इह नागरता जु
आए हो सवारे ॥
मोहनलाल गोवर्द्धनधारी कटितट नील वसन
बने प्यारे।
कृष्णदास कहहु धौं प्रीतम चतुर पीत पट कहां
बिसारे ॥

२७

माया कीन्हीं बलवीर आए तमचरके बोल।
नागर नन्दलाल कुंवर पहिरे नील निचाल ॥
मोहन रगमगे अलसात कमल नयन अति सलाल।
अधरनि नख रेख बनी अरुण श्याम कपोल ॥
मृगमदको तिलक रच्यो सिन्दूरके झोल।
ऊपर नख चिह्न रत्न क्यों दुरत अमोल ॥
कृष्णदास प्रभु गिरिधर मांगत मनओल।
अपनो पीताम्बर दे लियो मदन मोल ॥

२८

मोहन कुन्ददाम उरपर कुच कुङ्कुम रञ्जित बनो।
गन्ध लुब्ध अलि पंक्ति न तजत केलि धन धनो ॥
मोहन अधर श्याम मुख जंभानि सङ्गम श्वास सनो।
अवर चिह्न अगणित प्रिय न गनो गणना गनो ॥
कृष्णदास प्रभु नवरङ्ग युवति नि चिन्तामनो।
गोवर्द्धनधरण धीर रसिकनि चूड़ामनो ॥

२९

लाल तेरे चपल नयन अनियारे।
नन्दकुमार सुरति रस भीने प्रेम रङ्ग रतनारे ॥
कछु असरोंधे चकित चहुं दिशि नव वर यौवन वारे।
मानो शरद् कमल पर खञ्जन मधुप अलक घुघरारे ॥
ए जु मीन घनश्याम सिन्धु में विलसत लेत झुलारे।
गोवर्द्धनधर जान मुकुट मणि कृष्णदास प्रभु पारे ॥

३०

सोई भलो जिन तुम बिरमाये।
पूजा करि भामिनो सब निशि तव पद उर नख
कुसुम चढ़ाये ॥
अरुण दिशा अब हो नहिं देखो रटत मधुप
कमल नि समुदाये।
रूपनिधान रसिक नन्दनन्दन कौन सकोच
सवारे आये ॥
सन्ध्या वदे बोल मनमोहन कीन्हों भलो और
अवराए।
आलस्य नयन जंभात अधर वर रतिके चिह्न नहिं
दुरत दुराए ॥
अपने पीत पट दिये सखी को छीनि लए नील
वसन पराए।
कृष्णदास प्रभु गिरिवर धर प्रिय युवति सदसि
उदार कहाए ॥

३१

लालन तहां हो जाहु जाके रस लम्पट अति।
सालस्य नयन देखियत रसभरे प्रकट करत
प्यारी रति ॥
अधर दशन चत वसन पीक सह अरु कपोल
श्रमबिन्दु देखियति।
नख लेखनि तन लिखी श्यामपट जयपताका रण
जीत्यो रतिपति ॥
कैतव वाद तजो पिय हम सौं जैसे तन श्याम
तैसे हो मन हो अति।
गोविन्द प्रभु पिय पाग संवारहु गिरत कुसुम
शिर मालति ॥

१२

आजु खरे ई शिथिल देखियत हो बहु रसभरे लाल।
सब निशि जागे अति शिथिल अरुण दोउ अम्बुज
नयन विशाल॥
शिथिल भूषण कटि वसन शिथिल अति शिथिल
मलगुजी माल।
लटपटी पाग शिथिल अलकावलि विगलित
कुसुम गुलाल॥
शिथिल शिखण्ड शीर्ष लटकि रहे आए भोर
डगमगत चाल।
शिथिल वेणु कछु कहत आनकी आन गोविन्द
प्रभु पिय हो वेहाल॥

बिलावल—एकताला

जानि पाए हो ललना बलि बलि व्रज नृपति कुंअर।
जाके सब निशि जागि आये तहां ई अनुसर॥
अपनी प्यारीके रतिके चिह्न हम हि दिखावत
आए देत लोन दाढ़े पर।
गोविन्द प्रभु सांवल तन तैसे ई हो मन जनमत हो
तव हूं युवति प्राण हर॥

२

बलि बलि पाउ धारिये आजु कछु मेरो लहनो
व्रजनृप सुत भोर आए हो रसभरे।
भई बड़ी बार पाउ धारिये हमनि वाजी वाख्यो
अगर जावा से वीरा ले आगे धरे॥
कहि न सकति एवा बात लालन जाके निशि वसे
ताके वसन पलटि परे।
गोविन्द प्रभु प्रिय जान शिरोमणिके बल दोउनके हरे॥

३

प्रात समय दधि मथति यशोदा प्रमुदित कमल
नयन गुण गावति।
अति हि मधुर गति कण्ठ सुघर अति नन्द
सूनुके चित हि बढ़ावति॥
नील वसन तन सलिल सजल मन दामिनि
विम्ब भुजदण्ड चलावति।
चन्दन दनि लट लटकि छबीली मनहु अमृत
रस राहु चुरावति॥
गोरस मथत नाद एक उपजत किङ्किणी सुनि सुनि
श्रवण रमावति।
सूर श्याम अञ्चल गहि ठाढ़े काम कसोटी कसि
दिखरावति॥

४

नन्दजूके बारे कान्ह छांड़ि दे मथनिया।
बार बार कहे माता यशोमति रनिया॥
नैकु रहो माखन देहों मेरे प्राण धनिया।
आरि जिनि करो बलि गई हों न्योछनिया॥
सूर नर मुनि जाकों ध्यावे मुनि जनिया।
सूर श्याम देखि सब भूली गोप धनिया॥

५

नैक रहो माखन द्यों तुम को।
ठाढ़ी मथति जननि दधि आतुर लवनी नन्द सूनु को॥
मैं बलि जाओं श्याम घनसुन्दर भूख लगी तुम्हें भारी।
बात कहूं की बूझति श्याम हि फिर करत महतारी॥
कहत बात हरि कछू न समुझत झूठे हि भरत
हुंकारी।
सूरदास प्रभुके गुण तुरत हि विसरि गई नन्दनारी॥

६

बातन हो सुत लाइ लयो।
तब लों मथि दधि जननी यशोदा माखन करि
हरि हाथ दयो॥
लै लै अधर परस करि जेंवत देखत फूल्यो
मात हियो।
आपु हि खात प्रशंसत आपु हि माखन रोटी
बहुत प्रियो॥
जो प्रभु शिव सनकादिक दुर्लभ सुतहित वश
करि नन्द त्रियो।
यह सुख निरखत सूरज प्रभु को धन्य धन्य पल
सुफल जियो॥

७

दे री मैया दोहनी दुहि हौं मैं गैया।
माखन खाये बल भयो करि नन्द दुहैया॥
कजरी धेंदुरी धूमरी धोरी मेरी गैया।
दुहि ल्याऊं मैं तुरत ही तू करि दे चैया॥
ग्वालनि की सर दुहत हूं बूझहु बल मैया।
सूर निरखि जननी हंसी तब लेति बलैया॥

८

बाबा मोकौं दुहन सिखायो।
तेरे मन प्रतीति न आवै दुहत दुहत अङ्गुरियनि भाव बतायो॥
अङ्गुरिन भाव देखि जननी तब हंसिके श्याम हि कण्ठ लगायो।
आठ वर्षको कुंवर कन्हैया इतनी बुद्धि कहांते पायो॥
माता ले दोहनी कर दीन्हीं तब हरि हंसत दुहन को धायो।
सूर श्याम को दुहत देखि तब जननी मन अति हर्ष बढ़ायो॥

९

जननी मथति दधि दुहत कन्हाई।
सखा परस्पर कहत श्याम सों हम हूंते तुम करत चंड़ाई॥
दुहन देहु कछु दिन अरु मोकों तब करि हो मो सम सरिआई।
जब लौं एक दुहोगे तब लौं चारि दुहौं तो नन्द दोहाई॥
झूठे हि करत दोहाई प्रात उठि देखहिंगे तुम्हरी अधिकाई।
सूर श्याम कह्यो कालि दुहैंगे हम हु तुम ह मिलि होड लगाई॥

१०

उठि प्रात ही राधिका दोहनी कर लाई।
महरि सुता सों तब कह्यो कहं चली अतुराई॥
खरिक दुहावन जाति हो तुम्हरी सेवकाई।
तुम ठकुराइनि घर रहो मोहि चेरी पाई॥
रीतो देखी दोहनी कत खीझत धाई।
कालि गई अवसेर के हां उठे रिसाई॥
गाइ गई सब प्याइके प्रात हि नहिं आई।
ता कारण मैं जाति हौं अति करत चंड़ाई॥
यह कहि जननी सों चली व्रज को समुहाई।
सूर श्याम गृह द्वार ही गौ करत दुहाई॥

११

सुता महर वृषभानुकी नन्द सदन हि आई।
गृह द्वारे ही अजिरमें गउ दुहत कन्हाई॥
श्याम चितै मुख राधिका मन हर्ष बढ़ाई।
राधा मुख हरि देखिके तन स्मृति भुलाई॥
महरि देखि कीर्ति सुता तेहि लियो बोलाई।
दम्पति को सुख देखि के सूरज बलि जाई॥

१२

आजु भोर ही राधिका यशोमति गृह आई।
महरि कह्यो हंसि दधि मथो वृषभानु दुहाई॥
शुनि आयस ठाढ़ो भई कर नेत सुहाई।
रीतो माट विलोव ही चित जहां कन्हाई॥
उनकी गति हा कहा कहां जिन दृष्टि चुराई।
लई या नोई वृषभ सों गइया विसराई॥
यशोदा निरखे दूरितें मनमें मुसिकाई।
सूरदास दम्पति कथा मापै वरणि न जाई॥

१३

महरि कहति री लाड़िलो किहि मथन सिखायो।
कहु मथनी कहूं माट है चित कहां लगायो॥
क्यों मेरे घर आइ के तै सब विसरायो।
मथन नहीं मोहि आव ही तुम सौंह दिवायो॥
तिहि कारण मैं आइके तव बोल रखायो।
तब नन्द घरनी मथि दधि यहि भांति बतायो॥
हंसि बोली तब राधिका कह्यो अब मोहि आयो।
सूर निरखि मुख श्यामको तहं ध्यान लगायो॥

१४

दधि मथति ग्वालि गर्वीली री।

रुनक झुनक कर काङ्कण बाजे बाहु डुलावति
ढोली री ॥
कृष्णदेव दधि माखन मांगत नाहिं न देति
हठीली री ।
भरी गुमान विलोवनि लागी अपुने रङ्ग रङ्गीली री ॥
हँसि बोल्यो नन्दलाल लाड़िलो कछु एक बात
कहीली री ।
परमानन्द नन्दनन्दनको सर्वस्व दियो है छबोली री ॥

१५

दधि मन्थन करे नन्दरानी हो ।
बारे कन्हैया आरि न कीजे छाड़ि न देहु मथानी हो ॥
वारी मेरे मोहन कर पिराइगो कौन चित्तमें ठानी हो ।
हरि मुसिकाइ जननि तन चितयो सुधि सागरकी
आनी हो ॥
जे गुण सरस्वती छन्दनि गाए नेति नेति मधु
वाणी हो ।
परमानन्द यशोदा रानी सुत सनेह लपटानी हो ॥

१६

प्रात समय उठि यशोमती दधि मन्थन कीन्हों ।
प्रेम सहित नवनीत ले सुतके मुख दीन्हों ॥
औटि दुग्ध पैया कियो हरि रुचि सो लीन्हों ।
मधु मेवा पकान्न ले हरि आगे कीन्हों ॥
इह विधि नित्य क्रीड़ा करे जननी सुख पावे ।
गोविन्द प्रभु आनन्दमें आंगनसे धावे ॥

१७

भूलो दधिको मन्थन करिवो ।
देखत रसिक नन्दनन्दन को डगमगे पग धरिवो ॥
रहि गई चिते चित्र जैसे एकटक नयन निमेष
न धरिवो ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण जनावो नाहीं मैं मणि
माणिक हरिवो ॥

१८

देखा री माई कैसो है ग्वालिन उलटी रई मथनिया
विलोवे ।
बिनु नेती कर चञ्चल पुनि पुनि नवनीते टकटोवे ॥
निरखि स्वरूप चोहटि चित्त लाग्यो एकटक
गिरिधर मुख जोवे ।
कुम्भनदास चिते रह्यो अकबक औरे भाजन धोवे ॥

१९

ए री आनन्द में दधि मथति यशोदा कनक
मथनिया घूमे ।
निर्तत कान्ह ललित लोचन पग परत अटपटे भूमे ॥
चारु चखोडा मध्य कुटिल कण श्रम मुक्ता ताहू में ।
मनो मकरन्द बिन्दु ले मधुकर सुत हित प्यावत भूमे ॥
बोलत श्याम तोतरो बतियां हँसि हँसि दतियां दूमे ।
सूरदास वारी छवि ऊपर जननी कमल मुख चूमे ॥

२०

आज सखी री प्रात समय दधि मन्थन उठी अकुलाई ।
भरि भाजन मणि खम्भ निकट धरि नोत लियो
कर जाई ॥
सुनत शब्द हरि ता समीप हँसि उठि आए हरुवाई ।
मोहो बाल विनोद मोद अति नयननि नृत्य दिखाई ॥
लो तन प्रतिबिम्ब विलोकति रोझी सहज सुभाई ।
चितवनि चलनि हरो चित चञ्चल चिते रह्यो
चित चाई ॥
माखन पिण्ड लयो दोऊ कर तब ग्वालि रह्यो
मुसिकाई ।
सूरदास प्रभु सर्वस्वको सुख सको न हृदय समाई ॥

२१

छवि सों डोलति भुज छवि सों डोलति कटिपर
वेणी या विलोवनि पर वारों री कोटि नाच ।
दधिको घुमर अरु ध्वनित चाल अरु ध्वनित
घण्टिका ध्वनित जे नूपुर करत सांच ॥
गौर आरक्त अति शोभित सुख श्रमको वदन ऐसो
मनहु कनक लागी आंच ।
धोंधीके प्रभुको मन मोहति एई कर भेद इह नेतको
खैंच खांच ॥

२२

भावत हरिकी बाल विनोद ।
कैसो राम निरखि सुख प्रहसित प्रमुदित रोहिणी
मात यशोद ॥
अञ्जन पङ्क राग तन शोभित चल नूपुर ध्वनि सुनि
मन मोद ।
परम सनेह बढ़ावत मात निरख किरव
किठत उठि गोद ॥
अतिशय चपल सदा सुखदायक निशदिन रहत
केलि रस ओद ।
परमानन्द प्रभु अम्बुज लोचनि फिरि फिरि चितवत
व्रज जन कोद ॥

२३

बालदशा गोपालकी सब काहु भावे ।
जाके भवनमें जात हैं ले गोद खिलावे ॥
श्यामसुन्दर मुख निरखि के अविरल सचु पावे ।
लाल बाल कहि गोपिका हसि भलो मनावे ॥
चुटकी दे दे प्रेमसों करताल बजावे ।
परमानन्द प्रभु नाच हो शिशुता हि जनावे ॥

२४

बालविनोद गोपालको देखत मोहि भावे ।
प्रेम पुलकि आनन्द भरी यशोमती गुण गावे ॥
बल समेत घन सांवरो आंगनमें धावे ।
वदन चूमि कोरा लियो सुत जानि खिलावे ॥
शिव विरिञ्चि मुनि देवता जाको पार न पावे ।
सो परमानन्द ग्वालि को हसि भलो मनावे ॥

२५

हरिको विमल यश गावत गोपाङ्गना ।
मणिमय अङ्गण नन्दरायके बालगोपाल तहां
करे रङ्गना ॥
गिरि गिरि उठत घुटुरुवनि टेकत जानि पाणि
मेरो छगनको मङ्गना ।
धसर धुरि उठाय गोद ले मात यशोदाके प्रेमको
भंजना ॥
त्रिपद पुहमिना पीत वन आलस्य भयो अब जो
कठिन भयो देहरी को लङ्घना ।
परमानन्द प्रभु भक्त वत्सल हरि रुचिर हार बर कण्ठ
सोहे वङ्गना ॥

२६

मणिमय अङ्गण नन्दके खेलत दोउ भैया ।
गौर श्याम जोरो बनी बलि कुंवर कन्हैया ॥
नूपुर कङ्कण किङ्किणी रुन झुन झुन बाजे ।
मोहि रहि व्रजसुन्दरी मनसा सुत लाजे ॥
सङ्ग सङ्ग यशोमति रोहिणी हित कारण मैया ।
चुटकी दे दे नचाव हो सुत जानि कन्हैया ॥
नील पीत पट ओढनी देखत मोहि भावे ।
बाललीला विनोद सों परमानन्द गावे ॥

२७

यह तन वारि डारों कमल नयन पर सांवलियो
मोहि भावे रे ।
चरण कमलको रेणु यशोदा ले ले शिरसि चढ़ावे रे ॥
ले उछंग सुख निरखन लागो राई नोन उतारे रे ।
कौन निरासो दृष्टि लगाई ले ले अञ्चल झारे रे ॥
तू मेरो बालक तू मेरो ठाकुर तोहि विश्वम्भर राखे रे ।
परमानन्द स्वामी चिरञ्जीवहु बार बार यों भाखे रे ॥

२८

तनक कनक को दोहनी दे दे री मैया ।
तात दुहन सिखवन कह्यो मोहि धौरी गैया ॥
हरि विषमासन बैठिके मृदु कर थन लीन्हों ।
धार अटपटी देखिके व्रजपति हंसि दीन्हों ॥
गृह गृहते आई सबे देखन व्रजनारी ।
सचकित तन मन हरि लियो हंसि घोष बिहारी ॥
द्विज बुलाइ दच्छिणा दई मङ्गल यश गावे ।
परमानन्द प्रभु लाड़िलो सुखसिन्धु बढ़ावे ॥

२९

बाबा जी मोहि दोहन शिखाउ ।
गाय एक सूधो सो मिलवहु हौं नीके दुहंके बलदाउ॥

ले नोई मेलो चरण निमि लाडिलो कुंवर नोवत
वत्सराज।
याणि पयोधर धरे धेनुके भाजन वेगि भरो उबटाज॥
तव नन्दरानी नयन सिरानो द्विज बुलाइ दक्षिणा
दिवाज।
वारि फेरि पीताम्बर हरि पर परमानन्द दासहिं
पहिराज॥

३०

बोलन लागी मैया मैया।
बाबा कहत नन्दरायसों अरु हलधर सों भैया॥
खेलत फिरत सकल गोकुलमें घर घर बजत बधैया।
परमानन्द दासको ठाकुर व्रजजन केलि करैया॥

३१

नन्द जूजे लालनको छवि आछो।
चरण पैंजनियां घुम घुम बाजे चलत पूंछ गहि वाछो॥
अधर अरुण दधि मुख सों लपट्यो अति राजत
तन छोटें छाछो।
परमानन्द प्रभु बालक लीला चितवनका फिरि पाछो॥

३२

हरि लीला गावति गोपीजन आनन्द ही में
निशि दिन जायो।
बाल चरित्र विचित्र मनोहर कमल नयन व्रजके
सुखदायो॥
दोहन मण्डन खण्डन लेपन गृह मज्जन सुत
पति सेवा।
चारि याम अवकाश नहीं क्षण सुमिरन कृष्ण
देवदेवा॥
भवन भवन प्रति दीप विराजित कर कङ्कण नूर बाजे।
परमानन्द प्रभु घोष कुतूहल देखि भांति सुरपति
लाजे॥

३३

सो गोविन्द तुम्हारो व्रज बालक।
प्रकट भए घनश्याम चतुभज धरे दनुजकुल कालक॥
कमला पति त्रिभुवन पति नायक भुवन चतुर्दश
नायक सोई।
उत्पत्ति प्रलय कालको कर्ता जाके किये सबै
कछु होई॥
सुनहु नन्द उपनन्द कथा इह ईश क्षीर समुद्र को
बासी।
वसुधा भार उतारन आयो परब्रह्म वैकुण्ठ निवासी॥
ब्रह्मा महादेव इन्द्रादिक विनती के इहां ले आए।
परमानन्द दासको ठाकुर बहुत पुण्य तप के
तुम पाए॥

३४

प्रात समय गोपी नन्दरानी।
मिश्रित धन्य उपजत हियो सर दधि मन्थत
अरु माट मथानी॥
तीक्ष्ण लोलके पोल विराजत कङ्कण नूर कुणित
एक रस।
रज्जु कर्षत भुज लागत छवि गावत मुदित
श्यामसुन्दर यश॥
चञ्चल अचपल कुच हारावली वेणी चल खसित
कुसुमाकर।
मणि प्रकाशन ही दीप अपेक्षा सहज भाव राजत
ग्वालिन घर॥
चढ़ि विमान देवता गोकुल अमरावती विशेषो।
परमानन्द घोष कुतूहल जहां तहां अद्भुत
छवि पेखो॥

३५

आछे आछे बोल गड़े।
कहा करों उत्तर नहिं निकसत श्याम मनोहर
चतुर बड़े॥
मेरे नैक आव री मामिनि रहसि बुलावत रूख चढ़े।
परमानन्द स्वामी रति नागर प्रीति वखवन
कंवर लड़े॥

३६

देखो माई हरि ज की लोटनि।

यह छवि निरखि निरखि नन्दरानी अंसुआ पूरि
ढरि परत करोटनि ॥
स्वर्णत आनन मनु रवि कुण्डल अम्बुज अवत सीप
सुत जोटनि ।
चञ्चल अधर चरण कर चञ्चल चञ्चल अञ्चल
गहत वकोटनि ॥
लेति छिड़ाइ महरि कर सों कर दूर भई देखति
दुरि ओटनि ।
सूर निरखि मुसिकाइ यशोदा मधुर मधुर बोलत
मुख वोटनि ॥

३७

माधव तनिकसो वदन तनिकसे चरण भुज
तनिक माखन ।
तनिकसो कपोल तनिकसी भृकुटी तनिक हसनि
हरि लेत हैं मन ॥
तनिकसे अधर तनिकसी दतियां तनिकसे वसन
तनिकसे आभरन ।
तनिक हिं तनिक सूर निरवारों तनिक कृपा कीजे
तनिक शरन ॥

३८

बाल विनोद अङ्गनमें की डोलनि ।
मणिमय भूमि शुभग नन्दालय वलि वलि गई
तोतरी बोलनि ॥
कठुला कण्ठ रुचिर केहरि नख वज्र माल लई
नन्द अमोलनि ।
वदन सरोज तिलक गोरोचन लट लटकनि
मधुपगण टोलनि ॥
लोन्यो कर स्वर्णत आनन पर कछुक खात कछु
लग्यो कपोलनि ।
कहे जन सूर कहां लों वरणों धन्य नन्द जीवन
जग तोलनि ॥

३९

गोपाल दुरे हैं माखन खात ।
देखि सखी शोभा जो बढ़ी है श्याम मनोहर गात ॥
उठि अवलोकि ओट ठाढो ह्वै किहि विधि है
लखि लेत ।
चकित नयन चहुं दिश् चितवत और सखनिको देत ॥
सुन्दर कर आनन समीप हरि राजत इह आकार ।
जनु जलरुह तजि वैर विधु सों लिये मिलत उपहार ॥
गिरि गिरि परत वदनते उर पर हे दधि सुतके विन्दु ।
मानहु शुभग सुधाकण वर्षत प्रियजन आगम इन्दु ॥
बालविनोद विलोकि सूर प्रभु थकित भई ब्रज नारि ।
फुरत न वचन वर्जिवे को मन रह्यो विचारि विचारि ॥

४०

देख्यो मैं दधि सुतमें दधि जात ।
एक अचंभो सुनि री सजनी रिपुमें रिपु जो समात ॥
तापर कीर कीर पर पङ्कज पङ्कजके द्वे पात ।
सुन्दर वदन विलोकि श्यामको चिते नन्द मुसिकात ॥
ऐसी प्रीति बढ़ी पसुयाले कहत कहो नहीं जात ।
ऐसो ध्यान धरत जे हरि को तिन हो सूर वलि जात ॥

४१

शोभित कर नवनीत लिये ।
घुटरुन चलत रेणु तन मण्डित मुख दधि लेप किये ॥
चारु कपोल लोल लोचन छवि गोरोचन को
तिलक दिये ।
लट लटकन मानो मत्त मधुपगण मादक मधुहिं पिये ॥
कठुला कण्ठ वज्र केहरि नख राजत रुचिर हिये ।
धन्य सूर एको पल यह सुख का शत कल्प जिये ॥

४२

बाल विनोद खरे जिय भावत ।
मुख प्रतिविम्ब पकरिवे कारण हुलसि घुटुरुवनि
धावत ॥
कमल-नयन माखनके कारण करि करि सैन बतावत ।
शब्द जोरि बोल्यो चाहत हरि प्रकट वचन नहिं
आवत ॥

अनेक ब्रह्माण्ड खण्डकी महिमा शिशुता माह दुरावत।
सूरदास स्वामी सुखसागर यशोमति प्रीति बढ़ावत॥

४३

नन्दधाम खेलत हरि डोलत।
यशोमती करति रसोंई भीतरि आपुन किलकत बोलत॥
टेरि उठी यशोमती मोहन कहि आवहु घुटुरुनि धाई।
वैन सुनत माता पहिंचानी चले घुटुरुवनि पाई॥
लै उचाइ अञ्चल गहि पोंछति धूरि भरी सब देह।
सूरज प्रभु यशोमती रज झारति कहां भरी यह खेह॥

४४

धन्य यशोमति बड़ भागिनि लिये कान्ह खेलावै।
तनक तनक भुज पकरिके ठाढ़े होन शिखावै॥
लरखरात गिरि परत हैं चलि घुटुरुवनि धावै।
पुनि क्रम क्रम भुज टेकिके पग द्वैक चलावै॥
अपनै पाइन कब चलो मो देखत धावै।
सूरदास यशोमती इह विधि सो जु मनावै॥

सूहा-विलावल—तिताला

चलन चहत पाइन गोपाल।
लै लगाय अङ्गुरी नन्दरानी मोहन मूर्ति श्याम तमाल॥
डगमगात गिरि परत पाणि पर भुज भ्राजत नन्दलाल।
जनु श्रीधर श्री धरत अधोमुख झुकति धरणि मानहु नमि नाल॥
धूलि धौत तन नयन नि अञ्जन चलत अटपटी चाल।
चरण रणित नूपुर ध्वनि मानो सर विहरत जैसे बाल मराल॥
लट लटकनि मानो चारु चखौंड़ा सुठि शोभा शिशु भाल।
सूरदास ऐसो सुख निरखत जो जीजे जगमें बहुकाल॥

२

गहे अङ्गुरिया सुतुकी नन्द चलन शिखावत।
अरबराय गिरि परत हैं कर टेकि उचावत॥
बार बार बकि श्याम सों कछु बोल बोलावत।
दिधा द्वै दतियां भई अति छवि मुख पावत॥
कबहुं कबहुं कर छांड़ि नन्द पकरें फिरि गावत।
कबहुं धरणि पर बैठि जात मनमें कछु आवत॥
कबहुं गोद लै हर्षिके जियमें बहु भावत।
सूर श्याम मुख देखि महर मन मोद बढ़ावत॥

३

वलि वलि जाउं मधुर स्वर गावहु।
अब की वेर मेरे कुंवर कन्हैया नन्द हि नाचि दिखावहु॥
तारी दे दे अपने कर की परम प्रीति उपजावहु।
आन यन्त्र ध्वनि शुनि उर तपकत मो भुज कण्ठ लगावहु॥
जिन शङ्का जिय करहु लाल मेरे काहे को भरमावहु।
बाहु उचाइ कालिको नाई धोरी धेनु बुलावहु॥
नाचहु नेक जाउं वलि तेरी मेरे साध पुरावहु।
रतन जड़ित किङ्किणि पग नूपुर अपने रङ्ग बजावहु॥
कनक खम्भ प्रतिविम्ब आपनो नव नवनीत खवावहु।
परम दयालु सूरके उरते हरि टारे नहिं भावहु॥

४

चलत श्यामपै राजत पैंजनि पग चाय मनोहर।
डगमयात डोलत अङ्गणमें निरखि विनोद मगन मोहे सुर॥
अब मन मुदित यशोदा जननी पाछे फिरति गहे अङ्गुरी कर।
मनहु धेनु तृण छांड़ि वत्स हित प्रेम पुलकि चित द्रवत पयोधर॥
कुण्डल लोल कपोल विराजत लटकन ललित लटुरिया भ्रूपर।
सूर श्याम सुन्दर अवलोकनि विहरत बालगोपाल नन्द घर॥

५

कल बल ते हरि हारि परे।
नव तरङ्ग नवीन जलद पर मानहु द्वे शशि
आनि अरे॥
तब गिरि कमठ सुरासुर सर्प हिं धरत न मन
मह नेकु डरे।
तिन भुज भूषण भार परत कर गोपिनके आधार धरे॥
बिम्ब वदन मानहु मथि काढ्यो विहसनि मनहु
प्रकाश वारे।
सूरश्याम दधि भाजन भीतर निरखत मुख मुखतैं
न टरे॥

६

सिखवति चलन यशोदा मैया।
अरबराइ कर पाणि गहावति डगमगाय धरणी
धरे पैया॥
कबहुंक सुन्दर वदन विलोकति उर आनन्द भरि
लेति बलैया।
कबहुंक कुलदेवता मनावति चिरञ्जीवो मेरो
लाल कन्हैया॥
कबहुंक बलको टेरि बुलावति इह अङ्गण
खेलहु दोऊ भैया।
सूरदास स्वामी सुखसागर अति प्रताप बलकात
नन्दरैया॥

७

भावत हरिकी बालविनोद।
श्याम राम मुख निरखि निरखि सुख प्रमुदित
रोहिणि जननि यशोद॥
अङ्गन पङ्क परसत तन मण्डित चलत कुणित नूपुर
मनोमोद।
परम सनेह बढ़ावत मारिन निर्दिकार बैठत
चढ़ि गोद॥
आनन्दकन्द सकल सुखदायक निशदिन रहत
केलि रस ओद।
सूरदास प्रभु अम्बुज लोचन फिरि फिरि चितवत
व्रजजन कोद॥

८

आंगन श्याम नचाव हो यशोमति नन्दरानी।
तारी दै दै गाव हो मधुर स्वर वानी॥
पायन नूपुर बाज हीं कटि किङ्किणी कूजे।
नान्हीं नान्हीं एड़ियन अरुणता फल विम्बन पूजे॥
यशोमति गान शुनै श्रवण तब आपु हि गावै।
तारी बाजत देख हो पुनि तारी बजावै॥
केहरि नख उरपर रुरै शुठि शोभाकारी।
मनहु श्याम घन मध्य में नव शशि उजियारो॥
गभुवारे शिर केस हैं बने घूंवरवारे।
लटकन लटके भाल पर विधु मध्य गण तारे॥
कठुला कण्ठ चिवुक तरे सुख दशन विराजे।
खञ्जन विच शुक आनिके मनो परो हि राजे॥
यशोमती सुत हि नचाव हो छवि देखति जियतैं।
सूरदास प्रभु श्यामके सुख टरत न हियतैं॥

९

माधव तनक चरण अरु तनक तनक भुज तनक
वदन बोले तनक से बोल।
तनकसे करनि पर तनक माखन लिये देखत
तनक याके सकल भुवन तनक कपोल॥
तनक शुने जो यश सो पावत परम गति तनक कहत
ता सो नन्द सुवन।
तनक रीझ पर देत सकल तनु तनक चितौनि
चितके हरन॥
तनक हसनि मुसकानि तनक पुनि तुतरे वचन
उच्चरण।
तनक हि तनक तनक करि आवै सूर हि तनक
दीजे तनक शरण॥

१०

आज सखी मणि खम्भ निकट जहां है
गोरसकी गोरी।

निज प्रतिबिम्ब निरखि सिखवत शिशु प्रकट करो
जिनि चोरो ॥
अर्ध विभाग आज तें हम तुम भली बनी यह जोरो।
माखन लेहु कतव डारत हो तुम बालक मति भोरो॥
हिस्सा न लेहु सबे चाहत हो यहै बात है थोरो।
मिस्री रुचिर और चाहत हो देउ कहा भरि झोरो॥
शुनि प्रिय वचन धैर्य न रह्यो तब रसिक हसो
सुख मोरो।
सूरदास प्रभु सकुचि चले हरि सघन कुञ्जको खोरो॥

११

बाल गोपाल विराजत आज।
इन्दु वदन दधि बिन्दु परे तन कर नवनीत
मनोहर साज॥
किधों प्रकट मकरन्द कमल में कीन्हों उदित समाज।
कुञ्चित केश सुदेश नवल तन मिलि आए हैं
करनको राज॥
चुटकी दे जु नचावति सुन्दरो कटि किङ्किणि
नपुर कल बाज।
दास गोपाल मदनमोहन छवि चितवत सकल
बिसारे काज॥

१२

बड़ भागिच गोकुल की नारि।
माखन रोटी दे जु नचावति पगदाता सुख लेत
पसारि॥
शोभित वदन कमलदल लोचन शोभित केश मधुप
अनुहारि।
शोभित मकर कुण्डल छवि शोभित मृगमद
तिलक लिलारि॥
शोभित गात चरण भुज शोभित शोभित
किङ्किणी करत उचारि।
शोभित नृत्य करत परमानन्द गोपवधू वर
भुजा पसारि॥

१३

खेलत घर आंगन गोविन्द।
निरखि निरखि यशोमती सुख पावति वदन
मनोहर राका इन्दु॥
कटि किङ्किणी चन्द्रमय मणिको लट मुकताहल
जाल।
परम सुदेश कण्ठ केहरि नख बिच बिच वज्र प्रबाल॥
कर पोहोंची पाइन पनसूरा तन राजत पट पीत।
घुटुरुन चलत वत्स सङ्ग विहरत सुख मण्डित
नवनीत॥
सूर विचित्र चरित्र कान्हके वाणी कहत न आवे।
बालदशा अवलोकि सनक मुनि योगध्यान बिसरावे॥

१४

हौं वलि वलि जाओं छबीले लालकी।
धूसर धूरि घुटुरुवनि डोलनि बोलनि वचन रसालकी॥
छिटकि रही चहुं दिश जु लटुरिया लटकनि
लटकन भालकी।
मोतिन सहित नासिका नथुनी कण्ठ कमलदल
मालकी॥
कछु एक हाथ कछुक मुख माखन चितवन नयन
विशालकी।
सूरदास प्रभु प्रेम मगन ह्वै ढिग न तजत
व्रजबालकी॥

१५

बार बार यशोमती सुत बोधति आओ चन्द्र तोहि
लाल बुलावे।
मधु मेवा पकवान मिठाई आपु खात पुनि तोहि
खवावे॥
हाथ हि पर तोहि लीन्हें खेले नेकु नहीं धरणी
बैठावे।
जल भाजनमें करि के उठावे याही में तू तन
धरि आवे॥

जलपुट आनि धरणी पर राख्यो नहि आन्यो
वह चन्द्र दिखावै।
सूरदास प्रभु हंसि मुसिकाने बार बार दोऊ
कर नावै॥

१६

ल्यौंगो री मैया चन्द्र हि ल्यौं गो।
कहा करौं जलपुट भीतरको बाहिर लपकि
गहौं गो॥
इह तो कलमलात जब महिआं कैसे कर जु गहौंगो।
वह तो निपट निकट ही देखत वरजे हू न रहौंगो॥
तेरे प्रेम उदित भयो माता बौराये न बहौंगो।
सूर श्याम कह कर गहि ल्याऔं शशि तन ताप दहौंगो॥

१७

ले हो हरि चन्द्र ले।
कमल नयन वलि जाइ यशोदा नीचे नेकु चितै॥
जा कारण तुम शुनि सुन्दर सुत कीन्हीं इतो अनै।
मोद सुधाकर देखि दामोदर या भाजन में है॥
नभते निकट आनि राख्यो है जलपुट यत्न जुतै।
अब अपने कर काढ़ि मनोहर जाहि भावै ताहि दै॥
अगम गगन गति तें आन्यो है पच्यो एक पठै।
सूरदास प्रभु इतनो बातको कत मेरो लाल हठै॥

१८

सोहत दधिको छींट श्याम गात।
जब जननीके करतें ले दोऊ करें करि कछु डारत
उरपर कछु कलकें हसि खात॥
और मांगत में होत विलम्ब तब धरणी में लोटि जात।
रसिक प्रीतम सौं करति निहोरे रानी यशोमति मात॥

१९

महा महोत्सव गोकुल ग्राम।
प्रेम मुदित गोपी यश गावति ले ले श्यामसुन्दरको
नाम॥
जहां तहां लोला अवगाहति खरिक खोरि दधि
मन्थन धाम।
परम कुतूहल निश अरु वासर आनन्द हो बीतत
सब याम॥
नन्दगोप सुत सब सुखदायक मोहन मूर्ति
पूरण काम।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर आनन्द निधि नख सिख
रूप शुभग अभिराम॥

२०

हौं वारी नवनीत प्रिया।
दिन उठि देन उराहनो आवति चोरी लावति
घोष तिया॥
तुम वलराम सङ्ग मिलिके इह आंगन खेलो
दोऊ भैया।
निरखि निरखि नैननि अचु पाऊं प्राण जोवन
तन सांवरिया॥
जोई भावै सो लेहु मेरे प्यारे मधु मेवा दधि दूध घैया।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर काके घर तुम हू ते काकु
बहुत श्रेया॥

२१

कान्ह सो कहति यशोदा मैया।
मेरे मोहन अनत न जइये घर हि खेलो दोउ भैया॥
ए तरुणी यौवन मदमाती झूठे हि दोष लगावै दैया।
तुम तो मेरे प्राण जीवन धन मथिके दूध
पिवाऔंगो घैया॥
चतुर्भुज दास गिरिधरण कह्यो तब हौं वन जाऔं
चरावन गैया।
सुनि जननी मन अति हर्षानी मुख चुम्बति
अरु लेति वलैया॥

२२

घर घर डोलत माखन खात।
ग्वाल बाल सब सखा सङ्ग लिये सूने भवन धंसि जात॥
जब ग्वालिन जल भरि घर आई तब हिं भजे
मुसिकात।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण लाल सौं नाहिं न कछू
बिसात॥

२३

मोहन चलत बाजत पैंजनी पग।
शब्द सुनत चकित ह्वै चितवत त्यों त्यों ठुमकि
ठुमकि धरत हैं डग ॥
मुदित यशोदा चितवति शिशु तन ले उछङ्ग लावि
कण्ठ शुभग।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण लाल को व्रजजन निरषत
ठाढ़े ठग ठग ॥

२४

मैया मोहि बड़ो करि ले री।
दूध दही घृत माखन मेवा जब मांगों तब दे री ॥
कछू हवश राखहु जिनि मेरो जोइ जोइ मो हो
रुचे री।
हौं हुं सबल सबहिन महं जे से सदा रहौं निर्में री ॥
रङ्गभूमि मह कंस पछारों घोसि बहाऊं नेरो।
सूरदास स्वामीको लीला राख्यो मथुरा जे री ॥

२५

क्रीड़त प्रात युगल यदुवीर।
माखन मांगत मात न मानति झुकत यशोदा तीर ॥
मध्य जननी सम्मुख सङ्कर्षण ऐंचत कान्ह
सिरो शिर चीर।
मानहु सर सुनि सङ्ग उभय द्विज कर मराल
अरु नील कटीर ॥
सुन्दर श्याम गहे कवरी कर मुक्ता माल गहो
बलवीर।
तारन नभ छयो आपापनु मानहु लेत निवेरें सोर ॥
सूर सु छवि इह वरणि न आवे उपमा कहो परति
नहिं धीर।
सनक सनन्दन नित्य उठि ध्यावत अरु गावत
जाको मुनि कीर ॥

२६

बाल दशा गोपालकी सब काहू प्यारो।
ले ले गोद खिलाव ही यशोमति महतारो ॥
पीत झगुलि तन सोह हो सिर कुलह विराजि।
छुद्र घण्टिका कटि बनी पाय नूपुर बाजि ॥
मुरि मुरि नाचे मोर ज्यों सुर नर मुनि मोहे।
कृष्णदास प्रभु नन्दके आंगनमें सोहे ॥

२७

ऐसे लरिका कतहुं न देखे बाट सुचालि
गांउकी माई।
माखन चोरत माजन फोरत उलटि गारि दे
मुरि मुसिकाई ॥
तब हौं देन उराहनो आई कहा करौं जा ना
कहि आई।
सुनहु यशोदा तुम ठकुरायनि तुम सों कहत
मेरो बोराई ॥
पाछे ठाढे मोहन चितवत धीरे हौतें चारो लाई।
परमानन्द दासको ठाकुर पचयो चाहत चोरो खाई ॥

२८

तेरे लाल मेरो माखन खायो।
घोर दुपहरो देखि घर सूनो ढोरि ढंढोरि अब हिं
घर आयो ॥
खोलि कपाट पैठि मन्दिरमें सब दधि अपने
सख नि खवायो।
छोंकें छु तें चढ़ि जखल पर अनभावतो धरणो
ढरकायो ॥
दिन दिन हानि कहां लो सहिये ए ढोटा जु भले
ढङ्ग लायो।
परमानन्द प्रभु बहुत बचति हौं पूत अनोखो
तें हि जायो ॥

२९

बहुतै उपजत या ढोटा पे कैसो धौं ले ले आवत।
हरि हरि हरि देखो री माई जानो जू बात दुरावत ॥
विघमानद दधि दूध चुरायो फिरि फिरि मोहि
बोरावत।
चतुर चोर विद्या सम्पूरण गढ़ि गढ़ि छोलि बनावत ॥

जो न पतियाहु सौंह ले मो सों सांचो शपथ करावत।
तेरे वत्स जात जे हे शिव ता पर हाथ दिवावत ॥
वदन मोरि मुसकाइ चलो है फिरि उरहन मिस
आवत।
परमानन्द दासको ठाकुर श्याम मनोहर भावत ॥

३०

भाजि गयो मेरो भाजन फोरि।
कहा कहों शुनि मात यशोदा अरु खायो माखन
सब चोरि ॥
लरिका शत पचास सङ्ग लीन्हें रोके रहत
गांवकी खोरि।
मार्गमें कोउ चलन न पावत लेत दोहनी हाथ
मरोरि ॥
समुझि न परे या ढोटाकी रीति घोष गोरस ढंढोरि।
आनन्द फिरत फागु सो खेलत तारी दे दे
हसत मुख मोरि ॥
को यह कुंवर कौनको ढोटा सब व्रज बांध्यो
प्रेमकी डोरि।
परमानन्द दासको ठाकुर लेति बलैया अम्बर छोरि ॥

३१

आओ गोपाल शृङ्गार बनाऊं।
अति सुगन्धको करों उबटनो उदमोदक नहवाऊं ॥
अङ्ग अङ्गोछि गुहं तेरी वेणी फूलन रचि रचि भाल
बनाऊं।
सुरङ्ग लाल जरतारी चीरा रत्न खचित शिर पेंच
सजाऊं ॥
वागो लाल सुनहरी छापा हरी इजार चरण विरचाऊं।
पटुका सरस बैंजनी रङ्गको हसलो हेम हुमेल धराऊं॥
गजमोतिनके हार मनोहर वनमाला ले उर
पहिराऊं।
ले दर्पण देखो मेरे बारे निरखि निरखि उर नयन
सिराऊं ॥
मधु मेवा पक्वान्न मिठाई अपने कर ले तुम्हें जेंवाऊं।
विष्णुदास को इह कृपाफल बालचरित्र हों
निशदिन गाऊं ॥

३२

पीताम्बरकी चोलना पहिरावति मैया।
कनक छाप ता पर दियो झोनो एक तैया ॥
सूथन लाल चुनावकी जरकशी चोरा।
हसुली हेम जरावकी उर राजत हीरा ॥
ठाढ़ो निरखे यशोमती फूली अङ्ग न माय।
कज्जर ले विन्दुका दियो व्रजजन मुसिकाय ॥
नन्द बबा मुरली दई एक तान बजावे।
जोई सुने ताको मन हरे परमानन्द गावे ॥

३३

नयनन देखि री गिरिवरधर।
सहचरी कहति द्वितीय सहचरी सों प्रेम मुदित
प्यारी राधावर ॥
भूषण भूषित अङ्ग मनोहर कनक कान्तिहर।
चित्त वृत्त हरत विश्व युवतिनके सर्वस्व देत
उदार कमलकर ॥
उपमा काहि देहुं को लायक वरणों कहा किशोर
वयसवर।
सुरति अन्त लटकत व्रज आवत कृष्णदास बड़ भाग
कल्पतर ॥

३४

राधे वसन श्याम तन चीन्हीं।
सारङ्ग वदन विलास विलोचन हरि सारङ्ग जानि
रति कीन्हीं ॥
सुधा पान करिके नोको विधि रह्यो शेष मुद्रा
फिरि दीन्हीं।
सूर सुवेश आहि रति नागर भुज आकर्षि वाम
कर लीन्हीं ॥

३५

कमल मुख देखत तृप्ति न होइ।
इह कहा जाने बात सुहागिन रह्यो निशा भरि सोइ॥

ज्यों चकोर चाहत उडराजै रही चन्द्र मुख जोइ।
नेकु अकोर देति नहिं राधे चाहति पिय हि निचोइ।
हरि तो अपुनो सर्वस्व दीन्हों एक प्राण वपु दोइ।
भजन भेद न्यारो परमानन्द जानत बिरला कोइ॥

३६

कमल मुख देखत को न अघाय।
सुनि री सखी लोचन अलि मेरे मुदित रहे अरुझाय।
मुक्तामाल लाल उर ऊपर जनु फूली बन धाय।
गोवर्नधर अङ्ग अङ्ग पर कृष्णदास वलि जाय॥

३७

माई कौन गोपके ए दोउ नागर ढोटा।
इनकी बात कछू कहत न आवै गुणन बड़े देखत के छोटा॥
अग्रज अनुज सहोदर दोउ गौरश्याम ग्रंथित शिर चोटा।
सन्तदास वलि उभय सूरतकी लीला ललित सर्व विधि नोटा॥

३८

तू मेरी लाज गंवाई हो यशोमतिके ढोटा।
देह विदेही ह्वै गई मिलि घूंघट ओटा॥
कमल नयन तुम कुंवर हो हलधरते छोटा।
छैल छबीले रूप सभई लोट कपोटा॥
श्रीगोपाल तुम चतुर हो हम मतिको बोटा।
परमानन्द सो जान हो जाहि प्रेमको नोटा॥

३९

मद गजराज कौसी चाल।
भुजवर दण्ड सुण्डकी शोभा हरि लीन्हीं नन्दलाल॥
चूरण कच कुञ्चित अनेक अङ्कुशसे लटकत भाल।
चामर चार अवतंश मञ्जरी मदकण श्रमजल जाल॥
गन्ध अन्ध आवत अलि घेरे गुञ्जत मञ्जु रसाल।
मोर पच्छ फहरात वात वश जनो झलकत हैं ढाल॥
धातु विचित्र बनी तन शोभा गल गल दामन माल।
हठि कुलधर्म ढाह ढाहत हैं नयन कटाच्छ विशाल॥
घनन घनन घण्टिका क्वणित कटि उपजत शब्द सुताल।
खनन खनन सङ्कुल से नूपुर बाजत लजत मराल॥
युवतीहृदय सरस सरसिजमें जनु खेले बहु काल।
मानो अङ्ग अङ्ग लपटाने उनके मनसे बाल॥
मुरली रव गुञ्जार सुनत ही कम्पित चित्त व्रजबाल।
रस रूसनो गदाधर यों भयो वन वैलो वेहाल॥

४०

आजु शृङ्गार निरखि श्यामा को नीको बन्यो श्याम मन भावत।
यह छबि तन हि लिखायो चाहत कर गहि के नख चन्द्र दिखावत॥
मुख जोरे प्रतिबिम्ब विराजत निरखि निरखि मनमें मुसिकावत।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर श्रीराधा अरस परस दोउ रीझि रिझावत॥

४१

प्रात समय नन्दनन्दन श्यामा आवत देखे कुञ्जगली।
नवघनश्याम तरुणि दामिनि मिलि राजत रूप अनूप अली॥
लटपटी पाग शीर्ष वार मुरली लोचन घूमत भांति भली।
शिथलित चीर मलगजी अङ्गिया काम कामिनी देह छली॥
चार याम निशि जागत बीतो उर उमग्यो अनुराग बली।
कज्जल अधर नयन रङ्ग बीरो मदन नृपतिकी सैन्य दली॥
सूर वदन पङ्कज रस पीके अलक मधुपकी पंक्ति चली।
प्रफुल्लित प्रीति परस्पर देखियत तरणि उदय ज्यों कमल कली॥

४२

देखि री वाके चञ्चल तारे।

कमल मीन कहं कहां एती छवि खञ्जन हू न जात
अनुहारे ॥
वे देखि चारु कुटिल भुज ऊपर कुञ्चित अलक
मनो अलि वारे ।
बिडरत भजत मानहु काढ़े रथ जनु सशङ्क शशि
लङ्कर डारे ॥
वे देखि निमिष नमत मुरली पर कर मुख नयन
एक भए चारे ।
मानो जलरुह सो वे ऋतु जे विधु करत नाद वाहन
चुचुकारे ॥
हरिको रूप सकल व्रजमोहन सब युवती जन
प्राणधन वारे ।
सूर सखी निज रही चिते तन मन क्रम वचन चित्त
अन्त न जा रे ॥

४३

बने हैं विशाल कमलदल नयन।
ताहू में अति चारु विलोकनि गूढ़भाव सूचित
सखि सैन ॥
वदनसरोज निकट कुञ्चित कच मनहु मधुप
आए रस लैन।
तिलक तरुण शशि कहत कछुक हसि मोहन
मधुर मनोहर वैन ॥
मदन नृपतिके देश महामद बुद्धि बल वसि
न सकत है चैन ।
सूरदास प्रभु दूत दिन छिं दिन पठवत चरित
चुनोती दैन ॥

४४

मनोहर नयन की यह भांति ।
मानो दूरि करत बल अपने शरत् कमलको कांति ॥
इन्दीवर राजीव कुशेशय जीते सब गुण जाति ।
अति शोभा आनन्द कन्द दृग फूले दिन अरु राति ॥
खञ्जरीट मृग मीन विराजत उपमाको अकुलाति।
चितवनि चारु विलोकनि चञ्चल एको चित्त न समाति ॥
अन्तर करत निमिष लगि अन्तर युग हि समान
विहाति ।
सूर सखी अति रसिक राधिके निमिष खरे अनखाति ॥

४५

आलस्य युत देखियत जो भामिनी ।
राजत हैं रतनारे नयननि प्रिय सङ्ग जागत
गई यामिनी ॥
बाहु उठाय जोरि जमुहानी एड़ानी कमनीय
कामिनी ।
भुज छूटत छवि यों लागत मानो टूटि भई द्वे टूक
दामिनी ॥
कुच उतङ्ग पर रची कञ्चुकी शोभित त्रिबली उदर
स्वामिनी ।
मानो मदन नृपतिके तंबू हरि मन जीत्यो
राधिका नामिनी ॥
बिथुरी अलक शिथिल कच डोरी नख चत छुरित
मराल गामिनी ।
द्विगुण सुरति करि श्रीगोपाल भजि प्रमुदित
विद्यादास स्वामिनी ॥

४६

जा रस रसिक कीर मुनि गायो ।
याही रटत रटत निशि वासर शेष सहस्र मुख
पार न पायो ॥
गावत शुक नारद मुनि सारद कमल कोकरस
तउ न चखायो ।
तरणितनया तट निकट वंशीवट वृन्दावन वीथिन
बहायो ॥
सो रस रसिकदास परमानन्द ले राधा उर बीच
दुरायो ।
यद्यपि रमा रहत चरणन तर निगमनि अगम
अगाध बतायो ॥

आनन्दको निधि नन्दकुमार ।

परब्रह्म नट भेष नराकृति जगमोहन लीला अवतार ॥
श्रवणनि आनन्द लोचन आनन्द मनमें आनन्द
आनन्द मूर्ति ।
गोकुल आनन्द गोपिन आनन्द आनन्द यशोदा
आनन्द मूर्ति ॥
सब दिन आनन्द धेनु चरावत वेणु वजावत
आनन्द कन्द ।
खेलत हसत कुतूहल आनन्द राधापति
वृन्दावन चन्द ॥
शुक मुनि आनन्द भक्तन आनन्द निज जन
आनन्द हास विलास ।
चरण कमल मकरन्द पान करि अलि आनन्द
परमानन्द दास ॥

विलावल—तिताला

सेवा श्री गोपाल की मेरे मन भावे ।
मनसा वाचा कर्मणा उर आन न आवे ॥
करि दण्डवत सनेहसों सनमुख शिर नावे ।
लोचन भरि भरि भावसों हरि दर्शन पावे ॥
प्रेम नियम निश्चय करि हरिके गुण गावे ।
यह प्रताप फल परशुराम हरिभक्ति दृढ़ावे ॥

२

यह न होय जैसे माखन चोरी ।
जात किते बल बाहु छुड़ाए मूसे धन सम्पत्ति
सब मोरी ॥
तब तिन दिनन कुमार कान्ह तुम अपने जान
हम हु मति भोरी ।
अब भए कुशल किशोर कान्ह तुम हम भई सजग
समान किशोरी ॥
नख शिखते चित्त चोरि सकल अङ्ग चीन्हें पर कत
करत मरोरी ।
एक सुनि सूर हरो मेरो सर्वस्व अरु उलटो
डोलों सङ्ग डोरी ॥

३

अब मेरो खेलन जात बलैया ।
जब हो मोहि देखि लरिकन सङ्ग तब हो खिझावत
हैं बल भैया ॥
मोसों कहत तात बसुदेव हैं देवकी तेरी मैया ।
मोल लयो कछु दे वसुदेव हि करि करि यतन
बड़ैया ॥
अब बाबा करि कहत नन्दसों अरु यशोमतिसों मैया ।
ऐसे कहि कहि मोहि खिझावत तब उठत मोहि
खिसैया ॥
पाछे नन्द सुनत हैं ठाढे तब हसि हसि उर लैया ।
सूर नन्द बलराम हि हटक्यो शुनि मन हर्ष कन्हैया ॥

४

माखन खात पराये घरको ।
नित प्रति सहस्र मथानी मथिये मेघ शब्द
दधि माट घमरको ॥
कितक अहीर जीवत घर मेरे दधि मथि लेत
माखन कोमरको ।
नवं लच्छ धेनु दुहत जिनके नित बड़ो नाम है
नन्द महरको ॥
ताके पुत्र कहावत हो तुम चोरी करत
उघारत फरको ।
सूर श्याम तुम कितनो क खैहो दधि माखन
मेरे जहां तहां ढरको ॥

५

नन्द घरनि सुत भलो पढ़ायो।
व्रज वीथिनि पुर घरनि घरणी में बाट घाट
सब शोर मचायो ॥
लरकनि मारि भजत काहूके काहुको
दधि दुग्ध लुढ़ायो ।
काहूके घर करत भंड़ाई में ज्यों त्यों करि
पकरि जु पायो ॥

अब तो याहि जकरि करि बांधों इन सब
तुम्हारो गांव भजायो ।
सूर श्याम भुज गहि नन्दरानी बहुरि कान्ह
अपने हित लायो ॥

६

लालन वारी तेरे या मुख ऊपर ।
माई मेरी दीठि जिनि लागै कबहुं मसि बिन्दु
कार्खौ भूपर ॥
सर्वस्व मैंने पहिले ही दियो नान्हीं नान्हीं दतियां
दूपर ।
अब कहा सूर करै न्यौछावर अपने हो
लालन लटूपर ॥

७

जब नन्दलाल नयन भरि देखे ।
एकटक रही संभार न तनकी मोहन सूरति पेखे ॥
श्यामवरण पीताम्बर काछे अरु चन्दनकी खोर ।
कटि किङ्किणि कलराव मनोहर सकल त्रियनके
चितके चोर ॥
कुण्डल झलक परत गण्डनि पर आइ अचानक
निकसे भोर ।
श्रीमुख कमल मन्द मृदु मुसकनि लेत कर्षि
मन नन्दकिशोर ॥
मुक्तामाल राजत उर ऊपर चितए सखी जबै
इह ओर ।
परमानन्द निरखि अङ्ग शोभा व्रज वनिता डारति
तृण तोर ॥

८

बांधों आजु तोहि को छोरे ।
बहुत लङ्गरयो कीन्हीं मोसो भुज गहि अब
ऊखलसों जोरे ॥
जननी अति रिस जानि बंधाए चिते वदन लोचन
जल ढोरे ।
ऊखलसों कटिसों गहि बांध्यो दाम बहुत सब तोरे ॥

यह सुनि व्रज युवती सब धाई कहति कान्ह अब
काहे न चोरे ।
सूर श्यामको बहुत सतायो चूक परी हमते यह भोरे ॥

९

कहा करों हरि बहुत खिझाई ।
सहि न सकी रिस रिसमें भरि गई दई बहुत
ढीठ्यो जु कन्हाई ॥
मेरे कहे नाहिंने मानत करत आपनो टेक ।
भोर उराहनो ले ले आवति व्रजकी वधू अनेक ॥
फिरत जहां तहां धूम मचावत घर नहिं रहत सचेत ।
सूर श्याम त्रिभुवनके कर्ता ता सों यशोमती
कहत अचेत ॥

१०

यशोदा तेरो मुख हरि जोवै ।
कमल नयन हरि हलक नि रोवै बन्धन छोरि री
जननी यशोवै ॥
जो तेरो सुत खरोई अचगरो अपनो कोख को जायो ।
कहा भयो जो घरको ढोटा चोरी माखन खायो ॥
तुरत दोहनी दह्यो जमायो जा क्षण पूजन पायो ।
ता घर देव पितृ काहे को जा घर कान्हर आयो ॥
जाको नाम लेत अघ भाजै कर्म फन्द सब काटे ।
सोई हरि प्रेम दांव री बांधे जननी सांटि लिये डांटे ॥
सूरदास प्रभु भक्त हेतु ह्वै देह धरे तुम पाए ।
दुःखित जानि दोऊ सुत कुबेरके तिन हित आपु
बंधाए ॥

११

जाहु चली अपने अपने घर ।
तुम सब हिन मिलि ढीठ कखो यह अब आई
बन्धन छोरन वर ॥
मोकों अपने बाबाकी सौं कान्ह हि अब न पत्याउं ।
भवन जाहु अपने अपने सब लागति तिहारे पाउं ॥
मोको जिनि बरजोरी कोऊ देखो हरिके ख्याल ।
सूर श्याम सों कहति यशोदा बड़े नन्दके लाल ॥

१२

तब हि श्याम एक बुद्धि उपायी।
युवती गई घरनि सब अपने गृह कार्य जननी
अटकायो ॥
आपुन गए यमल अर्जुन तर स्पर्शत पत्र
उठे भहरायो।
दिये गिराय धरणि दोऊ तरु वर तब कुवेर सुत
प्रकटे आई ॥
द्वे कर जोरि करत दोऊ स्तुति चारणजाति न
प्रकट दिखाई।
सूर धन्य व्रज जन्म लियो हरि धरणीकी
आपदा नशाई ॥

१३

धन्य धन्य धन्य ऋषि आप हि पाए।
आदि अनादि निगम नहिं जानत ते हरि प्रकट
देह धरि आए ॥
धन्य नन्द धन्य मात यशोदा धन्य अङ्गन जहां
बैठि खिलाए।
धन्य श्याम जहां दाम धाए धन्य ऊखल धन्य
माखन खाए ॥
दीनबन्धु करुणानिधान प्रभु राखि लिये
शरणागत आए।
सूर श्यामके चरण शीर्ष धरि स्तुति करि
निज धाम सिधाए ॥

१४

कौन मेरे आंगन ह्वै जु गयो।
जगमग ज्योति वदनकी माई सपनो सो जु भयो ॥
हौं दधि मेलि भवन शुनि सजनी लेनु गई जु मथानी।
कमलनयनकी नाईं चितयो वह मूर्ति मैं जानी ॥
कर नहिं चलत देहगति थाको बहुत खेद मैं पायो।
परमानन्द प्रभु चरण शरण गहि रहतो कित
गृह आयो ॥

१५

नन्दके लाल हरो मन मोर।
हौं अपने मोतिन लर पोहति कांकर डारि गए
सखि भोर ॥
वङ्क विलोकनि चारु छवीलो कुटिल कमान
भौंहकी कोर।
कहु काको मन रहे श्रवण शुनि सरस मधुर
मुरलीकी घोर ॥
शशि विचित्र वदनके कारण तरसत हैं दृग
विहङ्ग चकोर।
सूरदास प्रभुके मिलिवेको कुच श्रीफल हौं करत
अकोर ॥

१६

इनि नयन निसीं मानी हारि।
अनुदिन हो उपरान्त आन रुचि बाढ़ी सब लोग
निसीं रारि ॥
तदपि निडर चलि जात चपल दोऊ घूंघट सघन
कपाट उघारि।
निगम ज्ञान प्रतिहार महाबल लाज लकुट कर
रहत निवारि ॥
श्रीगोपाल कौतुक मन अर्पो तबते चतुरनि भई
चिन्हारि।
सूरदास लोभनि के लोने सिरपर सही जगत्‌की गारि॥

१७

सखी हौं जागीं तो कोऊ ढिग नाहीं उठि लागो
अकुलान।
मैं जान्यो सांच हि मिले माधव भूलि रह्यो अनुमान ॥
नींद हि में मुरझाइ मदन हौं राखो प्रथम पञ्च सन्धान।
तामें श्रीर तिमिर माई री चपल छुटे छवि वान ॥
सूर शक्ति जैसे लक्ष्मण तन वह व्रणको कछु
अङ्ग न आन।
लाऊं सुजीवन मूरि मुकुन्द हि ज्यों व रहे तव प्राण ॥

१८

रहि री ग्वालि यौवन मदमाती।
मेरे छगन मगन से लाल हि कत ले उछंग
लगावति छाती ॥

खीझत ते अब हो राखे हैं नान्हीं नान्हीं उठति
दुग्धकी दाँती।
खेलन दे घर जाहि आपने डोलति कहां
इतो इतराती॥
उठि चली ग्वालि लाल लागे रोवन तब यशोमती
लाई बहु भांती।
परमानन्द ओट दे अञ्चल फिरि आई नयननि
मुसिकाती॥

१९

गावत गोपी मृदु मधुवाणी।
जाके भवन वसत त्रिभुवन पति राजा नन्द
यशोदा रानी॥
गावत वेद भारती गावत गावत नारदादि मुनि ज्ञानी।
गावत शिव कालगण गन्धर्व गोकुलनाथ माहात्म्य
जानी॥
गावत चतुरानन गज-आनन गावत शेष सहस्र
मुख रास।
मन क्रम वचन प्रीति पद अम्बुज अब गावत
परमानन्द.दास॥

२०

अङ्ग सब मिलि लागे दुःख देन।
अपनो पिशुनता कहा कहों सखि वध ना कियो कुचैन॥
लोचन भ्रमर भए उड़िवेको वदनकमल मधु लेन।
कान नेम व्रत लियो सुननको विना वदन विधु बैन॥
नासा खसत वचन नहिं निकरत मन न धरत
कछु मैन।
पग न चलत इक पेंड़ नोठि के तन पुर पसरो मैन॥
अब लाजों व्रजनाथ निकट तोहि तो लों इह सबे सहे न।
सूर निमिष सम होत युग हि युग क्यों विरमाऊं रैन॥

२१

इह बल कितकु जानि यदुरायो।
तुम जु चले हम अबल निपें तें तरकि वहां छिटकायो॥
कहियत है अति चतुर सकल विधि जानत
और उपायो।
तो जानों जो अब एको क्षण सको हृदय ते जायो॥
सूरदास स्वामी श्रीपतिको भावत अन्तर भायो।
सहि न सके रति वचन उलटि हसि लीन्हीं
कण्ठ लगायो॥

२२

श्यामा तू अति श्याम हि भावे।
बैठत उठत चलत गोचारत तेरो हो नाम ले ले गावे॥
पीत हि पीत सुमन भूषण सजि पीताम्बर उर लावे।
चन्द्रवदनि शुनि मोर चन्द्रिका शीर्ष सुमुकुट बनावे॥
अति आसक्त दर्श सम्भ्रम मिलि अङ्ग अङ्ग सचु पावे।
विछुरत तोहि क्वासि राधे कहि कुञ्ज कुञ्ज प्रति धावे॥
तेरोइ ध्यान धरे तन निरखत वासर विरह नसावे।
सूर श्याम रसराशि रसिक सखि कैसे अन्तर आवे॥

२३

मानि मनावो मौन रहो।
सकुच समेत सखी उठि आतुर वनको गैल गहो॥
विधु मुख निरखि मूंदि करि लोचन पुनि
विधुवदन चहो।
दर्श स्पर्श तद्रूप आशु निज भूमि नख लेखि कहो॥
पुहुप सुरङ्ग सारङ्ग रिपु ओढि दिखावत चतुर लहो।
पाणिसे परसत शीर्ष परस्पर मुसकाने तब हो॥
क्षण तोरे दिन जात जिते गुण काटति रेख महो।
सूर श्याम बहुरों सिलि विलसहु जाति अवति अब हो॥

२४

व्याय दिन दूलह हो नन्दलाल।
रीझि विकाय तहां वसे जहां नव दुलहो व्रजबाल॥
शिथिल पाग गति डगमगी हो वसन मलगजे गात।
शोभित हो तुम रसभरे मानो व्याह भए जागे रात॥
नयन ललोहे घूमरे हो चितवत चित्त हरि लेत।
कहे भगवान् हित राम राय प्रभु हसन वधाई देत॥

अलय्या-विलावल—तिताला

ग्वालिनि पूरण प्रगट्यो नेहु।
दधि भाजन शिरपर धरे ताहि कहति गोपाल हि लेहु॥

व्रज वीथिनि व्रजपुर गली हो जहां तहां हरिनाम।
समुझाई समुझि नहीं ताहि शिख दे विथको ग्राम॥
लज्जा लहरि तरङ्गिणी हो गुरुजन गहिरी धार।
दुहु कूलनि परिमिति नहीं ताहि तरत न लाई बार॥
सरिता निकट तड़ागके दीन्हें कूल विदारि।
नाम मिल्यो सरिता भई अब कौन निवारै वारि॥
दीपक तो मन्दिर जरै हो वाहर लखे न कोय।
तृण परसत प्रज्वलित भई अब गुप्त कहांते होय॥
पान किये ज्यों वारुणी हो मुख बोलत न संभार।
धरणि धरत पग डगमगी वाके विथुरी अलक ललार॥
कौन सुनै कासों कहों हो कौनै सुरति सकोच।
कौनै डर पथ अपथको अब को उत्तम को पोच॥
विधु भाजन ओछो रच्यो हरि शोभासिन्धु अपार।
उलटि मगन तामें भई अब कौन निकारन-हार॥
चित्त चुरायो नन्द के हो मुरली मधुर बजाय।
जिहि लज्जा जग लाजिये सो लज्जा गई है लजाय॥
प्रेम मगन भई ग्वालिनी हो सूरदास प्रभु सङ्ग।
श्रवण नयन मुख नासिका हो ज्यों कञ्चुकी भुजङ्ग॥

२

कहा करों वैकुण्ठ हि जाई।
जहां नहीं नन्द जहां नहीं यशोदा जहां नहीं
गोपी ग्वाल नहीं गाई॥
जहां नहीं जल यमुना को निर्मल और नहीं
कदम्बकी छांई।
परमानन्द प्रभु चतुर ग्वालिनी व्रजरज तजि मेरी
जाइ बलाई॥

३

अद्भुत एक अनुपम राग।
युगल कमल गजपर क्रीड़त ता पर सिन्धु करत
अनुराग॥
हरि पर सरवर सरपर गिरिवर गिरिपर फूले
कञ्ज पराग।
रुचिर कपोत वसत ता ऊपर ता पर एक अमो
फल लाग॥
फल पर पुष्प पुष्पपर पल्लव तहां रहत शुक पिक
मृग खाग।
खञ्जन धनुष चन्द्रमा ऊपर तहां वसत एक
मणिधर नाग॥
इह रस विरस होत नहिं कबहुं शोभा चण हु
करत नहिं त्याग।
सूरदास स्वामिनी रसिकवर तव हेतु बाढ़ो
सिन्धु सुहाग॥

४

ललित कथा इक कहों लड़ेते मैंक रुक सुनहु
छाड़ि दे बारि।
सूर्य वंश नृपति दशरथ के भए सुभट सुन्दर
सुत चारि॥
तामें बड़ो रामचन्द्र राजा जनक सुता जाके वर नारि।
पञ्चवटीको चले राज्य तजि तात वचन माथे पर धारि॥
श्रीवैकुण्ठनाथ धरणीधर विहरत वन तापस
अनुहारि।
मार कुटिल सबल राचस अति कानन वसत विघ्न
सब टारि॥
कपट रूप रावण सीताको ले गयो लङ्का
सिन्धुके पारि।
जानकी हरण सुनत सूरज प्रभु चौंकि उठे लयो
धनुष संभारि॥

५

सुनु सुत एक कथा कहुं प्यारी।
कमल-नयन मन आनन्द उपज्यो रसिक शिरोमणि
देत हुंकारी॥
दशरथ नृपति हुते रघुवंशी तिनके प्रकट भए
सुत चारी।
तिनमें राम एवा व्रतधारी जनक सुता ताके वर नारी॥
तात वचन मानि राज्य तज्यो है भ्राता सहित
चले वनचारी।

तिन उठि जाइ कनक मृग मारो राजीवलोचन
कौलि विहारी ॥
रावण हरण सीय को कीन्हीं सुनि रघुनन्दन
नींद निवारी ।
परमानन्द प्रभु चाप रटत कर लच्मण देहु जननि
भ्रम भारी ॥

६

अहो मेरी प्राण पियारी ।
भोर हि खेलन कहां धौं सिधारी ॥
कुङ्कुम भाल तिलक किन कीन्हीं ।
किन मृगमदको विन्दु दीन्हीं ॥

छन्द

विन्दु जु मृगमद दियो माथे निरखि शशि
संशय परो ।
एक शरत् निशाको कला पूरण मान मद दर्पहि हरो ॥
हेरि सुख हसि कहति जननी अल्प वेणी किन गुई ।
सूरके प्रभु मोहि आश्चर्य रचो किन मन्मथ मई ॥

७

नन्द-महर घर मैया सोहे ।
जिन मेरो वदन जू फिरि फिरि जोहे ॥
खेलत बोलि निकट बैठारो ।
कछु मनमें आनन्द कियो मारो ॥

छन्द

मनमें जो आनन्द कियो मारो निरखि सुत
विह्वल भई ।
बाबा जूको नाम बूझो ताहि हसि गारी दई ॥
पाटी तो पारि संवारि भूषण गोदमें मेवा भरी ।
सूरके प्रभु हर्षि मनमें विधाता सों विनती करी ॥

८

इह सुनि बात कीर्ति मुसिकानी ।
मैं नन्दरानीके जियकी जानी ॥
मेरी सुता है रूपकी रासी ।
वे तो कान्ह वनवासी उदासी ॥

छंद

कान्ह उदासी वनवासी रङ्ग ढङ्ग इह काहा बनै ।
कनक मणि ढिग रत्न अमोलिक कांच कञ्चन
क्यों सनै ॥
ललिता विशाखा सों कह्यो झुकि ललो तनि तुम
कित रही ।
सूरके प्रभु भवन बाहिर जान मति दीजो कहीं ॥

९

दिन दश पांच अटक जब कीन्हीं ।
कुंवरिको कृष्ण दिखाई दीन्हीं ॥
मुरभि परी तन सुधि न संभारे ।
कुंवरि कुण्डसी भुजङ्गम कारे ॥

छन्द

कारे भुजङ्गमसो प्यारो गारड़ हारे सबे ।
एक नन्दनन्दन मल्ल बिनु आलो इह विष दाबो
नहीं दबे ॥
मनुहारि करि गोहन बुलाए सकल विष देखत नसे ।
सूरके प्रभु जोरो अविचल जीयो युग युग मन वसे ॥

१०

विहसि उठी तब वदन पखारो ।
निरखि मोहन तन अम्बर संभारो ॥
मुरि बैठी मन भयो हुलासा ।
कीर्ति गई अपुने पति पासा ॥

छन्द

अपुने जु पतिपें गई कीर्ति प्रीति रीति बढ़ाइये ।
मन्त्र कीन्हों व्याहको सब सखी मङ्गल गाइये ॥
वृन्दावन में रच्यो स्वयंवर पुष्प मण्डप छाइये ।
सूरके प्रभु श्याम दूलह राधिका वर पाइये ॥

११

विधिवत् विधि सब कीन्हीं ।
मण्डल भरि के भांवरी दीन्हीं ॥
विविध कुसुम वर्षावे ।
तहां मानिनि मिलि मङ्गल गावे ॥

छन्द

गावे जू मानिनि मिलिके मङ्गल कहति कङ्कण
छोर ह ।
ऐसे नहीं गिरि उचकि लीन्हीं लाल हसि मन
मोर ह ॥
छोरी न छूटे डोरना इह प्रीति रीति अनिमन भई ।
सूरके प्रभु युवति जन मिलि गारी मन भावती दई ॥

१२

जिन व्रत धरिके देवी पूजी ।
तिनके मन अभिलाष न दूजी ॥
देवी नन्द सुत होहु पति मेरे ।
याही होय अनुग्रह तेरे ॥

छन्द

करि अनुग्रह वर दियो जब वर्ष भर लौं तप कियो ।
त्रैलोक्य सुन्दर पुरुष भूषण शील गुण नाहिं न वियो ॥
उवटि खोरि शृङ्गारि सखिय नि कुञ्ज चीरो आनो ।
वर्षभर जा का तप किया साधरी विधना वानो ॥
मुकुट रचि के मोर बनायो ।
सो माथे धरि हरि घर आयो ॥
तन सांवर है पीत दुकूल ।
जाहि देखि धन दामिनी भूल ॥

छन्द

दामिनी घन छवि कोटि वारों जब निहारों सुखछवी ।
कुण्डल विराजत गण्ड मण्डित नहिं न शोभा
शशि रवी ॥
या छविकी उपमाको नाहीं सकल है गुण जाही ।
मानो मोर निर्त्तत सङ्ग डोलत मुकटकी परछांही ॥
गोपी न्योते आई ।
मुरली ध्वनि पठे ज बुलाई ॥
तहां सब मिलि मङ्गल गाए ।
बहु विधि फूलन मण्डप छाए ॥

छन्द

छाए जो फूल निकुञ्ज मण्डप पुलिनमें वेदी रची ।
बैठे श्रीश्यामा श्यामवर त्रैलोक्यकी शोभा सची ॥
इत कोकिल गण करि कुलाहल उत सकल व्रजनारी ।
आई जु न्योते दुहं दिशतें देति आनन्द गारी ॥
रास मण्डलमें सब भुज जोरी ।
हरि हैं श्यामल राधा जू गोरी ॥
पाणि ग्रहण विधि जब कीन्हीं ।
मण्डल भरि भांवरी दीन्हीं ॥

छंद

दीन्हीं जो भांवर रास मण्डल प्रीति गांठि
हृदय परी ।
शरत् निशा पूर्णिमा विमल शशि निकट वृन्दा
शुभ घरी ॥
गाय गीत पुनीत सखियनि वेद रुचि मङ्गल ध्वनी ।
इत नन्दसुत वृषभानुतनया रासमें जोरी बनी ॥
मन मनसे नव राती ।
द्रुम फूल अनगन अनभांती ॥
वन्दी जन हरि यश गावे ।
मघवा बहु वादित्र बजावे ॥

छन्द

बाजे सुबाजे सकल नभ सुर पुष्पाञ्जलि वर्षहीं ।
मुनि दिव्य व्योम विमान दीपक जैसे मधुकर हर्षहीं ॥
शुनि सूरदास हि भयो आनन्द पूजी मनकी आशा ॥
श्रीनन्दनन्दन लाल दूलह दूलहिनी श्रीराधा ॥

१३

श्रीललिता जूकी आजु बधायो ।
श्रीवृन्दावन व्याह रचायो ॥
आली न्योति पठाई ।
वे मङ्गल निधि न्योती ल्याई ॥

छन्द

ल्याई जु न्योतो साजि सखियनि मण्डली
अद्भुत रची ।
बांधि वन्दनवार चहुं दिश व्याह विधि वेली सची ॥
सङ्केत देवी पूजि ललिता रहसि अति आनन्द भरी ।

नवल राधे दुलहिनो को दूलह वर पायो हरो ॥
देवी बहु भांति पुजाई ।
विधना इह विधि आनि मिलाई ॥
सोइ राधे जिन हरि आराधे ।
प्रेम लग्न सोई हरि सङ्ग साधे ॥

छन्द

साधि हरि सङ्ग लग्न ललिता रहसि मङ्गल गाइयो ।
विविध कुसुम विचित्र सों रचि महा मण्डप छाइयो ॥
उबटि राधे दुलहिनी तन श्यामके उबटन कियो ।
शृङ्गार करि सिर गूंथि मौरो मुकुट मोहनको दियो ॥
कर सों कर जोरि बैठाये ।
भांवरि दै दै हसिके फिराये ॥
तब हंसि ललिता दई है बधाई ।
वे तो फूली अङ्ग न माई ॥

छन्द

फूली अङ्ग न माइ ललिता रङ्ग भरि अङ्ग अङ्ग रही ।
या व्याहको रस रीति सखि री जाति नह
मोपे कही ॥
धन्य धन्य दिन इह रात्रि धन्य धन्य धन्य निज
कुल शुभ घरी ।
धन्य धन्य नन्दकुमार दूलह दुलहिनी राधा वरी ॥
दूलह वो होत सयानो ।
श्रीराधा जूके रूप लुभानो ॥
चण एक विलम्ब न कीजै ।
आंचर सो जोरनो कीजै ॥

छन्द

कियो अञ्चर जोरनो मिलि सखी चार गोनेको कियो।
करि दियो कुञ्ज प्रवेश दोउ धन्य ललिता को हियो॥
नवल सखी अनेक छवि पर वारने हो वलि गई ।
आजु अचल सुहाग को कछु जात नहीं मोपे कही ॥

१५

ब्रज दूलहको सुघर घोरो ।
विधना मानो सांचे ढोरो ॥
वाको ललित वदन मन मोहे ।
श्रवण कपोल चमकि चित पोहे ॥
वाके लोचन चञ्चल तारे ।
मानो द्वे नग दीप उज्यारे ॥
वाके काननकी छवि ऐसी ।
काम कतरनी चञ्चल जैसी ॥
वाके दन्त बतीसी हीरा ।
जीभ ललित खाये मानो बीरा ॥
वाके अरुण अधर अति दीसे ।
फूल झरे जब हरे हरे हीसे ॥

छन्द

फूल झरे सुदेश हीसत दृगनि अति सुख पाइये ।
मेरे नन्दनन्दन प्राणपतिको सुघर घोरो गाइये ॥
वाके केस वार सुढार मनो मखतूल मोतिन गुहो ।
मन्न रिझावन मनहु सावन मासमें फूलो जुहो ॥
वाको पीठिको जिनि डीठि लागो मिलि रहो
मोटो पुठो ।
झिलमिले प्रतिविम्ब तापर मानो मेन घटा उठो ॥
वाको पूंछ चामर अति बाढ़ो ।
मन्मथ मानो सांचे धरि काढ़ो ॥
वाके कञ्चन नाल बनाए ।
चरण शरण चन्द्र चलि आए ॥
वाके चारो खुर अति झलकें ।
दृग निरखत लागे नहीं पलकें ॥
वाको छैल छबीली छाती ।
मखमलकी पश्म सुहाती ॥
बाको चाल विचक्षण सोहे ।
देखत सबके मन मोहे ॥
वाको नख शिख रूप सुहायो ।
मखमली उर तान बनायो ॥

छंद

मखमलो उरतान झलमले पर रत्न जटित
लगाम जो ।

जोन परम प्रवीण जगमगी मानो मूर्ति काम जी ॥
सवार नन्दकिशोर दूलह चित्त सब हिनके हरे।
हर्षि राई लोन वारे आरती यशोमती करे॥
धन्य धन्य यह सुख श्याम घन प्रभु दृगनि अति
सुख पाइये।
मेरे नन्दनन्दन प्राणपतिकी सुघर घोरी गाइये॥

१६

बूझति जननी कहां हुतो प्यारी।
कहां इह भाल तिलक रुचि दीन्हों किन कच
गूंथि मांग शिर पारी॥
नन्दघरनि यशोमती कहियत है मोमों कह्यो
हमारो आरी।
तिल चांवरी मेलि गूंभामें फरिया फारि दई
मोहि सारी॥
मेरो नाम बूझि बूझि बाबाको तेरो नाम बूझि
दई हसि सुगारो।
मोतन चिते चिते ढोटा तन कछु सविता
तन ओल पसारी॥
बोलि लये वृषभानु भावतो हसि हसि बातें
बूझि दुलारी।
सूरदास रससिन्धु बढ़ो अति दम्पती मनमें इह
विचार॥

अ कु ज मङ्गल

सेरम्भो सोई उठि फरकत बाहु सुलोचन वाम।
सुन्दर सगुन भए आजु ऐहैं मेरे सुन्दर श्याम॥

छंद

श्यामसुन्दर आइति इह साइके गरे लाइ हैं।
दे अलिङ्गन प्रेम सो मन सुखसमूह बधाइ हैं॥
मन हि मन हुलसाति अति ही प्रेमपुञ्ज बढ़ाइ हैं।
पूरण करि हैं मनोरथ सब अङ्ग सङ्ग लगाइ हैं॥
भूषण विविध रचे अङ्ग अङ्ग प्रति कहे न जाई।
कञ्चुकि कसि जो लई श्याम अङ्ग झलके अधिकाई॥

छंद

अधिकाइ झलके सुरङ्ग चूनरि लाल रङ्ग सुहावनी।
पीत लहंगो बन्यो हि अतलस देखि मनको भावनी॥
दोउ जो लोचन आंजि सूक्ष्म नयन सैन बनावनी।
चूरी दई कर पहरि हरी सुपरम फाब फबावनी॥
वेणी शुभग गुही सुगन्ध तैल लगाइके नीके।
सब हि बनाव कियो जाते हरण होय मन पीके॥

छंद

प्रियके मन हरहि जैसे ऐसी मोतिन मांग भरी।
टीकावलो बहु परम सुन्दर जटित नग जगमग करो॥
वेसरि रुचिर नासा विराजे माणिक्य बनो अति
कण्ठसरी।
हार हाटक जटित नग सब चलत मोती थरथरी॥
फूलन सेज रची परम मृदुल पय फेन समान।
तकिआ रुचिर धरे गलमसुरी मानहु चन्द्रभान॥

छंद

चन्द्रभानु सम गलमसुरी मानो देत शोभा अति घनी।
चादर बिछाइ लगाइ सौरभ बहु सुगन्धन सों सनी॥
इह विधि मनोहर साजि बैठी महा सुभट
कञ्चनतनी।
हुलसाति पुलकति मन हि मनमें आइ हैं
त्रिभुवन धनी॥
फूल हरा जो धरी अपने हाथ सुधारि संवारी।
नखशिख रूप बना मन्मथ कोटि देउ बलिहारी॥

छन्द

बलिहारि मन्मथ कोटि छवि पर और उपमा
लाज हो।
चण भवन चण बाहर विलोकति साज सब
विधि साज हो॥
मुसिकाति मन मन विवश ह्वै के अद्भुत छवि
छाज हो।
मञ्जुल मनोरथ करति मन मन आइ हैं प्रिय
आज हो॥

प्राणपति आइ गए निरखत हो भई उठि ठाढ़ी ।
हृदय लगाइ लई आनन्द लहरि उमगि अति बाढ़ी ॥

छन्द

बाढ़ी जु आनन्द लहरि बहुविधि श्यामसुन्दर
वश परी ।
रतिकेलि भोगविलास सब निशि जागि याके
सङ्ग करी ॥
जो गाइ है इह रसिक लीला परम रस आनन्द भरी ।
कहि सूर वाके सब मनोरथ पूरि हैं मधुहा हरी ॥

श्रीयमुनाजीके पद

श्रीयमुना करुणा मई विनती सुनि लीजे ।
दर्शन ते पावन सदा सुमिरत अघ छीजे ॥
मज्जन तव जल पावनी मन शुद्ध करि लीजे ।
गावत वेद पुराणमें यस ते सुख जीजे ॥
भाव भक्ति वरदान हो मोको वर दीजे ।
श्रीविट्ठल गिरिधरणके गाऊँ गुण रस भीजे ॥

२

श्रीयमुना गोपाल हि भावे ।
जे यमुनाके दर्शन कीन्हें कोटि जन्मके पाप नसावे ॥
जे यमुना स्नान करत हैं धर्मराज लेखो न गणावे ।
यमुना जल पान करत हैं बहुरों सङ्कट और
न आवे ॥
पद्मपुराण कथा सब ऊपर धरनी सारवाह यश गावे ।
ते तीर्थ ए प्रगट जगत्में परमानन्द प्रसादे पावे ॥

श्रीगङ्गाजीके पद

परमेश्वरी देवी मुनि वन्दे पावन देवी गङ्गे ।
वामन चरण कमल नख रञ्जित शीतल वारि तरङ्गे ॥
मज्जन पान करत जे प्राणी त्रिविध ताप दुःख भङ्गे ।
तीर्थराज प्रयाग प्रकट भयो जब बनी यमुना
वेणी सङ्गे ॥
भगीरथ राज सगरकुल तारण वाल्मीक यश गायो ।
तव प्रताप हरि भक्ति प्रेमरस जन परमानन्द पायो ॥

अथ आरती

बाती कपूरकी ज्योति जगमगी आरती विट्ठलनाथ
विराजे ।
घण्टा ताल पखावज आवज सब स्वरनि
सारदा साजे ॥
या छविको उपमा कहा कहों कोटि काम
निरखत लाजे ।
श्रीवल्लभ प्रेम प्रताप भरे नित आनन्द मङ्गल
गोकुल गाजे ॥

२

श्रीवल्लभ पुरुषोत्तम रूप ।
सुन्दर नयन विशाल कमल रङ्ग मुख मृदु बोलत
वचन अनूप ॥
कोटि मदन वारों अङ्ग अङ्ग पर भुज मृणाल अति
सरस स्वरूप ।
देवोजी बड़ धारण प्रगटे दास शरण लक्ष्मण
सुत भूप ॥

३

रूप स्वरूप श्रीविट्ठल राय ।
वेद विदित पूरण पुरुषोत्तम श्रीवल्लभ गृह
प्रकटे आय ॥
लटपटी पाग महारस भीने अति सुन्दर मन
सहज स्वभाय ।
छीत स्वामी गिरिधरण श्रीविट्ठल अगणित महिमा
कही न जाय ॥

४

श्रीवल्लभ सुत परम कृपाल ।
तैसेइ श्रीगिरिधर श्रीगोविन्द बालकृष्ण जू
नयन विशाल ॥
महामोह दोष दुःखी जन प्रकट भए षट्
दर्शन ईश ।
जीव अनेक किये कृतार्थ कोमल कर धरत पर शीश ॥

जाको दर्शन सुर नरको दुर्लभ शरणागतको
सुलभ अपार।
जनम मरण भवबन्धन छूटे जिन श्रीमुख देख्यो
इक बार॥
श्रीवल्लभ व्रजपति श्रीयदुपति मोहन मूरति
श्रीघनश्याम।
जन भगवान् जाय बलिहारी इह श्रुनि जपीं
तिहारो नाम॥

५

धन्य धन्य माता तू तुलसी बड़ी।
नारायण ले माथे चढ़ी॥
जे कोऊ तुलसी को सेवा करे।
कोटि पाप क्षणमें परिहरे॥
जे कोऊ तुलसी को फेरी देत।
सहज जनम सुफल करि लेत॥
दान पुण्यमें तुलसी होय।
कोटिक फल पावे नर सोय॥
जे घर तुलसी करत निवास।
सो घर सदा कृष्णको वास॥
कृष्णदास कहे वारम्बार।
तुलसीकी महिमा अपरम्पार॥

६

यमुना जल घट भरि चली चन्द्रावली नारि।
मार्गमें खेलत मिले घनश्याम मुरारि॥
नयन निसों नयन जुरे मन रह्यो लुभाइ।
मोहन मूर्ति जिय वसी पग धरी न जाइ॥
तबको प्रीति प्रकट भई यह पहिली भेंट।
परमानन्द ऐसे मिले जैसे गुर चेंट॥

७

सुन्दर ढोटा कोनको सुन्दर मृदु वानी।
जौन बतायो ग्वालिनी जायो नन्दरानी॥
सुन्दर भाल तिलक दिये सुन्दर मुसकानी।
सुन्दर नयननि हरि लियो कमलनि को पानी॥
सुन्दरता तिहुं लोक की या व्रजमें आनी।
परमानन्द यशोमती सब सुख लपटानी॥

८

कमल-नयन कमलापति त्रिभुवनके नाथ।
एक प्रेमते सब बने जो मन होय हाथ॥
सकल लोकको सम्पदा जो आगे धरिये।
भक्ति विना माने नहीं जो कोटिक करिये॥
दास कहावत कठिन है जो लों चित्त राग।
परमानन्द प्रभु सांवरो पैयत बड़ भाग॥

९

आवति भोर भये कुञ्ज वन ते कहुं कहुं अरुझि
कुसुम केशमें।
रति रस रङ्ग भीनो सोहे सारी तन झीनो भूषण
अटपटे अङ्ग अङ्ग छवि देखियत सुदेशमें॥
ओपमें ओप भई विरहज ताप गई शरत् चन्द्र
नहीं गणति लेशमें।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर सङ्ग निशा जागी युवती
शिरोमणि घोष देशमें॥

१०

मांग मलगजी तिलक आधो अधर नि रङ्ग
आई सगसगाति।
चपल नयन आलस्य हि बनावत भौंह भुजङ्गिनि
लसलसाति॥
मानके शृङ्खल खूटे चोली के बन्द टूटे वदनकी
ज्योति कछु अवर हि भांति।
कुच नखरेखा बनी किलकत काम तनो मानहु
कनक घट माणिक्य कांति॥
पलटि परे पट कहहु कहे ते बोलत बाल कछु
अटपटाति।
केश कुसुम शशि पद नख पूजत चलत मधुर
गति डगमगाति॥
सुरति समर जीत्यो मदन नृपति ते ताहो ते अधिक
फुलो अङ्ग न माति।

कृष्णदास स्वामी लाल गोवर्धनधारी सङ्ग रति
विलास सुख भले वीती राति ॥

११

आई रति रण जीते भामिनी बांधी काछ कटितट
घट फेटक ।
रिझयो सकल कला गुण नागर कछु तेरे नयननि
मह चेटक ॥
भले नक्षत्र भले सगुण निर्मे सखी कमल नयन
सों तें बदी सहेटक ।
ऐसो कही अब हौं आवति हों आपुन चलो जहां
वस हेटक ॥
डगमग चरण धरति धरणी तल गजमद त्रसत
निरखि गतिकी लटक ।
त्रसत भुजङ्ग निरखि शिर वेणी भूषण निरखि
त्रसत मणि हाटक ॥
मोहन लाल गोवर्धनधारी कर वर कमल गही
तुम्हारी लट ।
काम केलि शय्या पर नचई कृष्णदास प्रभु
सुरतिरङ्ग नट ॥

१२

याही गुणते सुन हो प्यारी तू मोहन गोपाल हि माई ।
सकल शृङ्गार साजि मृगनयनी अवसर भले वेगि
चलि आई ॥
लहंगा लाल झुमककी सारी पचरङ्ग शिर
ओढ़नी बनाई ।
नव रङ्ग उर तनसुखकी चोली कसुंभी वरण
प्रिय हेतु रंगाई ॥
मृगमद पत्र लिखि कुचयुग विच कुसुमनि
माल अनुपम माई ।
उर कर शिरसि कनक मणि अलङ्कृत निरखत
रतिपति रह्यो लजाई ॥
कृष्णदास स्वामी सुखसागर तासों सखिन मा
अरुझाई ।

मोहन लाल गोवर्द्धनधारी अपनो जागि हसि
कण्ठ लगाई ॥

विलावल—चर्चरी

तू जू प्रीतमको भावती लाल भावतो तेरो ।
मन ही मन मिलि रही मोहि देखत कियो
रतिरण फेरो ॥
हिलग हृदय महंको जानिये शुभग दूरते नेरो ।
कृष्णदासनि नाथ छैल गिरिधर पायो
रसिक सुख केरो ॥

२

अति रमझगी देखियत है प्यारी हसति वदति
आलस्य सों बोल ।
डगमगि चलति प्रकट दश हिमकर पद नख
पूजत चञ्चल लोल ॥
गौर अङ्ग महं अधिक बने सखि कदम्ब कुसुम
रङ्ग पीत निचोल ।
पलटि परे तेहूं नहिं जाने रसमें मगन मानो
मदन कलोल ॥
कृष्णदास स्वामी सङ्ग सजनी निशि झूली प्रिय
सुरति हिंडोल ।
मोहन लाल गोवर्द्धनधारी दे सर्वस्व तू लीन्हीं मोल ॥

३

कहां लो वरणों तेरे वदनकी ज्योति झलक ऊपर
वारों कोटि चन्द ।
श्रवण पाल ताटङ्क सोहत मानो रवि शशि युगल
परे मन फन्द ॥
उपमा कहत न ब कमलकी नाक शुक मोहित
भौंह स्वच्छन्द ।
खञ्जन भीत न तजत अलक अलि अति शोभन
लपट मकरन्द ॥
कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर अब मिले मैं देखे
टूटे कञ्चुको बन्द ।
भिन्न सेतु विहरत तू करिणी अति नागर हरि
मत्त गयन्द ॥

४

शोभा वर्णि न जाई री माई जो सुख जीभ होइ
लख कोरी।
नन्दरायकी अङ्गुरी लागी गिरिधर प्रिय बलरामकी
जोरी ॥
बड़े भाग देखे नौ तन भई जेतिक कहूं ते तो
ते तौ थोरी।
कृष्णदास बलि बलि चरणनकी तनमन फूल
गावे नाचे होरी ॥

५

कञ्चन मणि मर्कत रस ओपो।
नन्द सूनुके सङ्गम सुख वर अधिक विराजत गोपी ॥
करति विधाता गिरिधर प्रिय हित सुरति ध्वजा
सुख रोपी।
वदन कान्ति से सुनि री भामिनि सघन चन्द्र
श्री लोपी ॥
प्राणनाथके चित्त चोरन को भौंह भुजङ्गनि कोपी।
कृष्णदास स्वामी वश कीन्हें प्रेमपुञ्जकी चोपी ॥

६

कटितट सोहत है मणिदाम।
पीत काछ पर अधिक विराजित न्याय लजावत काम॥
कीहे न मोहन को चित्त मोहति चपल कुटिल
भ्रू वाम।
अनुचण रटत वेणु कल कूजित शुनि राधे तव नाम॥
तेरे नील पट ओढि रसिक वर लेत दिवसके याम।
कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर शुभग सोमा अभिराम ॥

७

छैल छबीलो लाल रङ्गीलो देखहि किन कानन आई।
रूपनिधान रसिक गिरिधर प्रिय हों तोको लेन
पठाई ॥
सघन निकुञ्ज नवल चित्रसारी विविध लता
कुसुम नि छाई।
पिक अलि सङ्ग करत कोलाहल मलय पवन
वहे सुखदाई ॥
रतिपति मृग बांध्यो खेलनके कमल पत्र ले
सेज बिछाई।
कृष्णदास प्रभु सुरति सुधानिधि युवति सभा इह
कीर्ति गाई ॥

८

सांवरे गोविन्द सङ्ग रङ्ग निशि जागी सोहे लोचन
उनींदे मानो वन्धुकाके फूल।
सुनहि सुन्दर सुजान गोवर्द्धननाथ मिले सुरतिके
हिन्दोलना तें लीन्हीं प्रेमझूल ॥
सदन कला अति रसाल सङ्गीत कला सुनि पुनि
रूपराशि ऐसी कौन तेरे सम तूल।
कृष्णदास स्वामिनी मनोज भेष राधिका वदन
ज्योति निरखि नभसि सघन चन्द्र भूल ॥

९

ए तेरे तन लागी प्यारे अङ्गकी ओप सो रङ्ग
शुनि सखि काहे को दुरावति।
अपने सयान न गणति अवरको जैसे तैसे हमारे
तू नयन चुरावति ॥
बोलनहार तुहो युवतिनि महं मो सिन क्यों
बातन बौरावति।
घरके भेद न जानति नागरि मनकी प्रीति आंखिनि
समुझावति ॥
मोहन लाल गोवर्द्धनधारी सों रहसि मिली कोकिल
स्वर गावति।
कृष्णदास प्रभु नटवर नायक रसिक शिरोमणि
सुविधि रिझावति ॥

१०

ए मेरे मन भावत मदनगोपाल।
छैल मनोहर हेम लता युवतिनि श्याम तमाल ॥
ए री प्रभु दग्ध मन्मथके अनुचण अवहि
करत प्रतिपाल।
वृन्दावन भुवि सुरति सुधानिधि कूजित वेणु रसाल ॥
कृष्णदास प्रभु रसिक शिरोमणि अम्बुज नयन विशाल।
नग भूषण कुच बिच धरि राख्यो गोवर्द्धनधर लाल

११

अरुणोदये आवति है रसमसो सुमुखि उरसि
वर लचकत हार।
पीत काञ्चनी कटितट बांधे तू हि मई मानो
नन्दकुमार॥
मोर चन्द्रिका मुकुट धरे शिर युवति भावको
विगत विचार।
प्रियको मुरली अपने अधर धरे कर कूजति सह
लोचन अनुसार॥
तन्मय रसिक लाल गिरिधर सों देखति दश दिशि
सुरति विहार।
कृष्णदास प्रभु अपने रूपरस वश कियो सर्वस्व
दान उदार॥

१२

प्रियकी प्रीतिको फूल जनावत री तेरे नव लोचन चल।
अरुणोदय सरसोरुहको श्री जीतन चाहत अरुण
तेज बल॥
मिटत नहीं अभ्यास अधरको सुरति सेज कूजो
सुकण्ठ कल।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर सङ्गम भीजे उरज विमल
सुख श्रमजल॥

१३

तेरे उर सोहत सुनि सुन्दरि प्रिय सङ्गमको
श्रमजल बूंद।
कुच ऊपर मञ्जरी विराजत मनहु अमृत घट
दीन्हीं रति मूंद॥
सुख जंभात जीतति अम्बुज वन मोहति रसिक
दशन कलि कूंद।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर रस भरि वश कियो मदन
डगत पद खूंद॥

१४

हरि भज भामिनि शुभग सयानी।
शरत् कालकी घटा सदृश तू कत गरजति अलसानी॥
हौं पठई नवरङ्ग राय पति सांचि अमृत मधुवानी।
विरह अनल सशङ्कित प्रीतम रसिक राय सुखदानी॥
दूत धर्म अति निपुण दूतिका सरल स्वभाव हि आनी।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर प्रिय के अङ्गकी कण्ठ
लपटानी॥

१५

तेरे चपल नयन युग खञ्जन ते नीके।
तापहरण अति विदित विश्व महं देखत शतदल
लागत फीके॥
श्याम श्वेत राते अनियारे गिरिधर कुंवर विशद
सुख जीके।
सुनि कृष्णदास सुरति कौतुक वश प्यारो दुलरावति
अपने पीके॥

१६

तेरे चरण को हों शरण।
राखो राखो दयाल मूर्ति रसिक गिरिवरधरण॥
काम क्रोध यदा दाह्यो कुविधि लाग्यो शरण।
कृपा दृष्टि जिवावन घनश्याम अम्बुज चरण॥
निरखि नखमणि ज्योति वैभव मुदित अन्तःकरण।
कृष्णदास नि तेरोई बल विरह जलनिधि तरण॥

१७

अधरचन्द्र तिलक श्रीराधिके कुङ्कुमको ता महं
मृगमद रसविन्दु।
मानहु श्याम मन लागि रह्यो श्यामसुन्दरको
चिवुक मोहन श्याम विन्दु।
सखिन ते दुराउ करत पोंछत बिच कुच युगमहं
श्रमजल बिन्दु।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर जानो रीझि दियो चुम्बन
सोहत पीक विन्दु॥

१८

देखि री नयननि गिरिवर धर।
सहचरी कहति द्वितीय सहचरी सों प्रेम मुदित
प्यारो राधावर॥

भूषण भूषित अङ्ग मनोहर वसन मनोहर कनक
कान्तिहर।
चित्तवृत्त हरत विश्व युवति निके सर्वस्व देत उदार
कमलकर॥
उपमा कहा कहौं को लायक् वरणों कहा
किशोर वयसवर।
सुरति अन्त लटकत व्रज आवत कृष्णदास बड़ भाग्य
कल्पतर॥

१९

राधा रङ्ग भरी नहिं बोलति।
मोहन मदन गोपाल लाल सों अपनो यौवन
त लति॥
चाहति मिलन प्राण प्यारे को मेरो इ मन ठक
टोलति।
छांट हि बहुत चातुरी भामिनि कत हमसो भक
भोलति॥
प्रात होन लाग्यो सुनि सजनी अब हो तमचरी
बोलति।
कृष्णदास प्रभु गिरिवर धर हेतु सारङ्ग नयन
सलोलति॥

२०

एक हि हाथ टेके ठाढ़ी दधि मथनियां शीर्ष लिये।
झगरति झरि बात कहति ढीठ भई दुजो कर
हरिमुख निपट निकट किये॥
चलति फिरि चलति जाति नाहीं चलि जानत
सतर भौंहें किये।
कृष्णदास प्रभु तन भुकि स्पर्शति नयन और
वैन और हिये॥

२१

चली जाति उत गेहको मुरि मुरि हरि देखति इत।
कबहुं कें इहि मिस ठाढ़ो ह्वै लावण्य हि सुधारति
कबहुं ओढ़ति अञ्चल बनाइ बनाइ ढिम जित तित॥
झूठेइ सोच सोच सोच रहति पुनि डगरति
अटपटानि कछु भूलो सो भ्रमित चित।

कृष्णदास प्रभुके रूपगुण मन अरुझो ताते सुरझि
न सकति सकति अकति हित॥

२२

काहे बांधति नाहिं न छूटे केश।
शशिमुख पर घन धारा छूटी कछुक जु चलो उर देश॥
अङ्ग अङ्ग यह शोभा कहा कहुं निशि जागि आई
और ही वेश।
कुम्भनदास अति ओपते ओप भई गोवर्द्धनधर
मिले व्रज युवति नरेश॥

२३

मोतिन मांग विथुरी शशिमुख पर मानो नक्षत्र
आये करन पूजा।
अञ्चल फरहरात उरपर कांधो कामध्वजा॥
विरह राहुते छूटि सकल कला विमल भई देखत
सुखुजा।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर अधर सुधा कियो पान
कण्ठ मेलि उदार भुजा॥

२४

तू तो आलस्य भरी देखियत है री रसी।
रजनी चोरि ताते आंखिन लागी अरु अकेली
भामिनी कुञ्ज वसी॥
घर विरोधते रूसी काहु जानो नवनको दिन
गति होनसी।
कुम्भनदास गिरिधरके कण्ठको यह जानति हों
तें तो गिरी पाई मोतिन माल लसी॥

२५

अजब देखियत वदन डहडह्यो प्यारी रगमगी
नयन तेरे रङ्गभरे।
मानहु शरद् कमल ऊपर उन्मद युगल खञ्जन लरे॥
रसिक शिरोमणि लाल सुशीतल कमल कर उर धरे।
कुम्भनदास कहि काहे न फूले गिरिधर प्रिय
सब दुःख हरे॥

२६

काहेते आज बिथुरी प्यारी क्यों न बांधइ अलक।
भौंह कमान नयन रतनारे मानो न लागो पलक॥
रतिरस सुखको फूल जनावति मद गयन्दकी
चाल झलक।
कुम्भनदास मिलो गिरिधर को मानो कोटि चन्द्रकी
झलक॥

२७

जानो मैं आजु मिलो प्यारे सों ते अपनो भावतो
हो री कियो।
सकल रैन साथ रसरङ्ग खेलत पलक सों पलक न
लागन दियो॥
कण्ठ लागि भुजा दे शिरहाने रसिक लालको
अधर सुधारस पियो।
कुम्भनदास प्रभु गिरिवरधर को अङ्ग भरि भेंटि
जुड़ायो हियो॥

२८

रसमसे नयन तेरे निशाके उनींदे।
काहेको दुरति जू उलटो बात प्रात हो जो ध्वंनो दे॥
वदन आलस्य में आलस्य को जंभाय वो अति
अलसात वचन छोदे।
कुम्भनदास प्रभु गिरिधर मिले तो हि सकल
अङ्ग सेवो दे॥

२९

सखो री जिनि व सरोवर जाहि।
अपने रसको तजि चक्रवाको बिछुरि चलति
मुख चाहि॥
सकुचत कमल अकाल पाइके अलि व्याकुल
दुःख दाहि।
तेरे सहज आन यह मति इह अपराध कहि काहि॥
यह अद्भुत शशि रच्यो विधाता सरस रूप
अनुसाहि।
कुम्भनदास प्रभु गिरिधर सागर देखत उमंगे ताहि॥

३०

नन्दनन्दनके अङ्कते मुरली सुन्दर चतुर हरति।
नूपुर सुख मूंदिके अछन अछन पग धरणि धरति॥
कनक वलय कङ्कण सुजानि युग उछे पुकरति।
कुम्भनदास गिरिधरके मुद्रित नयन देखति चकित
मन्द हास रस जागनते डरति॥

———o———

श्रीगणेशाय नमः।

श्रीसरस्वत्यै नमः।

श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः।

अथ ध्रुपदादि गान प्रारम्भः।

देवीं सरस्वतीं नत्वा गणेशं प्रणमाम्यहं।
सङ्गीतरागकल्पद्रुम रागसागरप्रकाशितः॥
नीलाम्बरा वेष्टितगौरदेहां
बिम्बाधरां कुण्डलमण्डितास्यां।
श्रीकृष्णवक्षाम्बुजदत्तनेत्रां
भजामि राधां सकलार्थसिध्यः॥

भगवानुवाच—

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद॥

अथ नादमहिमा—

सुखनि सुखनिधानां दुःखितानां विनोदः
श्रवणहृदयहारी मन्मथस्याग्रदूतः।
अतिचतुरः सुगम्यो वल्लभो कामिनीनां
जयति जयति नादः पञ्चमस्योपवेदः॥

अथ भैरवरागध्यान—

गङ्गाधरः शशिकलातिलकस्त्रिनेत्रः
सर्पै विभूषिततनुः गजकृत्तिवासा।
भास्वत् त्रिशूलकर एष नृमुण्डधारी
शुभ्राम्बरो जयति भैरव आदिरागः॥

धैवतांस ग्रहन्यास क्वचित् गान्धार ईरितः ।
प्रथमा मूर्च्छना ज्ञेया भैरवी परिकीर्त्तिता ॥

भैरव—चौताला

सा रे रे ग म प ध नि सप्त स्वर मो मनमें ऐसे आए।
आरोही अवरोही सरगमकी ऐसे होत
नि ध प म ग रे सा ॥
पुनि द्विगुण कीज्यै ता ऐसे लीज्यै स्वरनकी तब
आवे सबनको मतिमें कण्ठ को सुधार।
धानिसा निसारे सारेग रेगम गमप मपध पधनि
धनिसा सानिध निधप धपम पमग मगरे गरेसा ॥

दूसरा आभोग

द्विगुण सरगम कियो विचार गुरुनपे सिखके
स्वरन को सुधार।
सारेसा सारेगरेसा सारेगमगरेसा सारेगम पमगरेसा
सारे गम पध पम गरेसा सारे गम पधनि सा ॥
निध पम गरेसा नि ध प म ग रे सा धप मगरेसा।
पमगरे सा मगरेसा रेसा सारेसा सारे गसा सारे
गमसा सारे गमपसा ॥
सारे गम प ध सा सारे गमपधनिसा सानि सानिधसा
सा नि धपसा सानिधप मगसा सानि धप मगरे सा।
सा नि नि धनि नि धप सानि नि धप मग पमगरेसा
मग रेसा धुरपद मध्य सदा रङ्ग बनाई ॥

२

स नि रे साग ममपनि नि पग सम्पूरण गुणियन
मिल गायो।
सप्तस्वर तीन ग्राम कोमल अति लेहो नि नि नि
धधध पपप ममम गगरेसा ॥

३

गाग मगरेसा सामगा पनिध प म म प म गमगरेसा।
मपधसा सा रे सा नि नि सा नि नि ध निनिसा
नि निध सासा निध निनि धप धधपम पपमग
मम गरेसा ॥

सप्तसुर सम्पूरण में यों सरि गम विचारि सा सा रे सा।
रे रे रे गरेग गगमगम ममपम पपपध ध धध धनि
धनि निनि सानि सासा ॥
सानि सानिनिनि धनि धध धपध पप पमप मम म
गम गग गरे मरे।
रे रे सारेसा सोई गुरुन मन मान अति डरे ॥
निरे सासा गम प ध सा राग भैरव भ्रमत
सङ्गीत गायो।
मम धप मम पधसा सासारे सामगरेसा नि सानि
ध प नि नि नि धधध पपप ममम मगरे सा ध्यायो ॥
संपूरण सप्तस्वर इकईश मूर्च्छना गमधप मगरे
सानि ध सारे गमारे गम ध सानि ध प मगरे सा।
गम धनि सा नि सा नि ध नि धप ससगसा गननि
ध प म ग रे सा ॥

४

जय सारदा भवानी भारती विद्या नाम वेद यश गावे।
वाणी वाक् इड़ा देवी सरस्वती मन भावे ॥
मङ्गला ज्ञानरूपा वरणमालनी वीणा पुस्तकधारिणी
जी तोहे ध्यावे।
कहे विलास त्रय ताप मिटे निर्बोध बोध होवे
वाञ्छित फल पावे ॥

५

महा वाक्वादिनी सम्मुख ह्ज्यै अब ह्ज्यै हो।
याहि तें त्रिभुवन मानी यातें तू भवानी ज्यों
ज्याके मनकी इच्छा सोई सोई पूजे हो ॥
रिद्धि सिद्धि तब ही पाइये मात जब तब चरण
कूजे हो।
तानसेन यह प्रसाद मांगत जहां तहां जुरत फुरत
रसरङ्गकी तहां करतु जे हो ॥

६

चन्द्रवदनी मृगनयनी तारा मध्य तारका गङ्गपुतरी
कालिन्दी इह विधि डोरि बनाय कीन्हीं त्रिवेनी।
छूटि पोत कण्ठ दीपक मुखकी ज्योति होत तामें
गुप्त सरस्वती मिली ऐन मैनी ॥

सुन्दर रूप अनुपम शोभा त्रिविध रजोगुण सतोगुण
तामस गुण राजत लाल श्वेत श्याम तरण तारणी
मुक्ति देनी ।
निर्षत हो आनन्द होत तव दर्श स्पर्शत हो
तेरो रूप अपरम्पार कहां लों बखाने तानसेनी ॥

७

सरस्वती सुप्रसन्न हो मोको वाक्वानी ।
षड्ज ऋषभ गान्धार इन इन स्मरण सावे तब
रागरङ्ग गुरुप्रसाद आवत तानसानी ॥
रूपकी निधानी इन्द्राणी सिंहलानो महिषासुरमर्दनी
जगज्जननी गुणनिधानी ।
तानसेन मांगे तान ताल स्वर ओदुर्गे भवानी
कीजिये दया मोहे दीन जानी ॥

८

जो कोई ध्यावे सरस्वती चरण शरण को ताको
देत विद्या वाक्वानी।
अर्थ धर्म काम मोक्ष चारो फल की दानी ॥
वाक्यवादिनी तू हो माता आदि ज्योति रूप निधानी
इन्द्राणी शिवानी मङ्गला ज्ञानरूपा सारदा वरदानी ।
तानसेन सेवक यह मांगे तान ताल राग रङ्ग दे
दया कर मोहे दीन जानी ॥

९

तू आदि भवानी जगजानी मानी सर्वाणी
सर्व कला दे विद्या वरदानी ।
अम्बे जगदम्बे असुर संहारणी तरण तारणी
तान ताल शुद्ध रागरङ्ग अच्छर देवानी ॥
सप्तस्वर तीन ग्राम इकईश मूर्च्छना उञ्चाश कोटि
तिनके लच्छन सब जियमें आनो ।
बैजू बावरो रावरो सेवक यह मांगे मूर्तिमान
राग मेरे गरेमें समानो ॥

१०

जय सरस्वती गणेश महादेव शक्ति सूर्य सब देव
देहो मोय विद्यावर कण्ठ पाठ ।
भैरव मालकोष हिण्डाल दीपक श्रीमेघ मूर्तिवन्त
हृदय रहे ठाठ ॥
सप्तस्वर तीन ग्राम इकईश मूर्च्छना बाईश स्रुतं
उनचाश कोट ताल लाग डाट ।
गोपाल नायक हो सब लायक आहत अनाहत
शब्दसों ध्याओं नाद ईश्वर बसे मो घाट ॥

११

तुम हो गणपति देव बुद्धिदाता शीर्ष धरे गज शुण्ड ।
सिद्धेश्वर नाम तुम्हारो कहियत जे विद्याधर
तीन लोक मध्य सप्त द्वीप नव खण्ड ॥
जे जे ध्यावे ते ते फल पावे चन्दन लेप किये
भुजदण्ड ।
तानसेन तुमको नित्य सुमिरत सुर नर मुनि
गुह्य गन्धर्व झुण्ड ॥

१२

पूजो रे गणेशको गुनि ।
रिद्धि सिद्धिके दाता विघ्नहरण दुनि ॥
जिन ध्यायो तिन पायो मन इच्छा भनि ।
बख्शके प्रभुको ध्यावत सुर नर मुनि ॥

१३

लम्बोदर गज-आनन गिरिजासुत गणेश एक रदन
प्रसन्न वदन अरुण वेश ।
नर नारि गुह्य गन्धर्व किन्नर यक्ष तुम्बर मिलि
ब्रह्मा विष्णु आर्ती पुजवत महेश ॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि मूषक वाहन विद्यापति तुही
सुमरत तिनको शेष ।
तानसेनके प्रभु तुमको ध्यावे अविघ्न-रूप
विनायक रूप स्वरूप आदेश ॥

१४

साधो विद्याधर गुणनिधान गुणदाता सरस्वती
माताको कर आदेश ।
नमोनमः रिद्धि सिद्धिके स्वामी सकल विद्या प्रवेश ॥

ज्यो इनकों ध्यावे मन इच्छा फल पावे
दूर होत तनके क्लेश ।
तानसेन प्रभु तुम होको ध्यावे ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

१५

ए गणराज महाराज दे विद्या जगदीश ।
सप्त स्वरसों गाऊं बजाऊं सर्व राग रागिणी
पुत्रवधुन सहित छतीश ॥
लेत बाईस सुरति इक्कीस मूर्च्छना उनचास
कोटि तान आवे वेन ।
ताललय सङ्गीत मत सो सप्त ध्याय सो बुद्धि प्रकाश
होय तानसेन प्रथम छः राग तीस रागणी ए ऐन ॥

१६

आगु नी शोस सप्तस्वर तीन ग्राम उरपति रप लाग
उठि भेश ।
अतीत अनाघात सम विषम लेश तानसेन तव
गुणी कहावे वरेश ॥

१७

प्रथम नाम गणेश को लेहे जा सुमरे होवे
सर्वसिद्ध काज ।
गौरीनन्दन जगवन्दन लम्बादर नाम जपत सकल
सृष्ट सुर नर मुनि शेष राज ॥
विघ्नविनाशन सब दुःखनाशन मङ्गलदायक ढुण्ढिराज ।
तानसेन तेरी स्तुति करे सब देवन सरताज ॥

१८

गौरीनन्दन सदा सुखदायक जय जय जय गुरु गणेश ।
कोटि विघ्न भञ्जन खण्डन सर्वदुःख शत्रु गञ्जन
जाके पिता महेश ॥
भक्ति मुक्ति अभय वर प्रसन्नवदन पूजे इन्द्रादि देव
औ दिनेश ।
महानाद सेन कहे मैं मांगत हुं तुमसो दीजे अनेक
सुख सम्पत्ति स्तुति कर थके फणीश ॥

१९

प्रथम मनाऊं गणेश ।
गौरीनन्दन जगवन्दन लम्बोदर नाम जपत सकल
सृष्ट मुख शेष ॥

२०

प्रथम नाम गणेश को लोजिए जा सुमरे होए
सिद्धि काम ।
जय गिरिजानन्दन जगवन्दन लम्बोदर तोहि जपत
आवे रिद्धि सिद्धि होय सुख धाम ॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि पाये सुख विश्राम ।
कहे वैजू बावरो निशदिन सुमिरो नाद विद्या
प्राप्त होय लिए नाम ॥

२१

मुरारी त्रिभुवनपति इन्द्र ऐरावतपति शेष नाम हैं
फणपति ।
चीर उदधि सलिलपति कौस्तुभ मणि रत्न पति ॥
दिनकर दिनपति शशि उडगणपति हनूमान् बलपति
नारद भक्त पति मृदङ्ग बाजन पति ।
चिर चिरञ्जीव रहो शा अकबर नरपति तानसेन
ताननपति ॥

२२

सङ्गत समुद्र सों भेद उक्त युक्ति साधे वानी ।
प्रथम आकार भूमि साधे सप्तस्वर तोन ग्राम
स रि ग म प ध नि कण्ठ वर्ण बनाए तानसानी ॥

२३

कर्तार तुमको कीन्हों सब लायक मेरी मुश्किल
कर दो आसान ।
जो तोहे तक आवे मन इच्छा फल पावे सब दान ॥
गुणियनको सुखदायी महाराज बहादुर गुणनिधान ।
राखत सब को मान सुन्दर सुजान ॥

२४

प्यारे पठई कि धों तू आप होते लागो री मनावन ।
प्राणेश्वरके मुखको बतियां पै न होये री हो नोके
जानत जैसी तुमहो सिरी लागी बनावन ॥
या स्वरनको कान न कराइं ॥

२५

अनन्त ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म श्रीश्रीधर महाराज।
कृपासिन्धु भक्तपाल सुखकर रख ले मेरी लाज॥
यह विनती कबूल कीजिए तुम जगत् शिरताज।
श्रीलक्ष्मीनारायण कार्य पूर्ण करो सरो आछे काज॥

२६

जात न मोपें चल्यो सजनी री जाय कहो क्यों न
आवे सवेरे।
कि धों उपाय तु हीं कर वेग न पाय परे॥
कछु आगे को औरी भांति भई उरको अब और
लखे रङ्ग डारत घनेरो।
काहे ते हो बढ़ आए नितम्ब गई कटि काहे ते
अब मेरी॥

२७

महम्मद रसूल अल्लह कीन्हों तुम्हें ज़ातपाक।
तुम जो रहे कादर की बन्दगी सें मन बिच
करम कर एक ही ताक॥

२८

कीजिए कृपा मोपे दुर्गे भवानी दया करो
जगज्जननि तेरे ही चरण लागी।
योगयोगेश्वरि भोग महेश्वरि जगत्तारणि
तव नाम जपत मय मागी॥

२९

चली चण्डमुण्ड भारवे को महाकाली कठिन कर
मुख लाली दरसत है।
भर भर घटे घट कलन हट्टावन दानव विड़ारत
अट अट कह विहसत है॥
ओढि गज खाल गरे मुण्डन के माल नयन लाल हसे
लाल जजमो लसत है।
महा विकराल देवी दैत्यनको काल ताको वदन
विशाल जगी ज्वाला निकसत है॥

३०

सर्वाणी सर्वकला माई सरस्वती सारदा
श्यामसुन्दरी शूलहरणी।
कुमदहरणी कामदायिनी काली कल्याणकरणी
कुन्दरदनी॥
कमलवदनी क्रूरक्रन्दनी नित्य कारका चली
काशीरानी कारिणी कालहरणी।
परमेश्वरी पार्वती परम पुण्य पावनी॥
परम्परा चण्डपापहरणी पावनी पृथुकरणी।
जगराज दास श्यामवरणी महाकाली तारण तरणी॥

३१

सरस्वती आदिरूप नाद ब्रह्म वीणा बजावत।
मनावत पूर्ण गुणी मन इच्छा फल पावत॥
मणिको मन्दिर सोनेको कलसा जगमग ज्योति
लागी धाता पग ध्यावत।
इड़ा देवी वाक्‌वाणी सारदा तानसेन को दीजे
स्वरताल रानरङ्ग शुद्ध मुद्रा गावत॥

३२

मोहन सृष्टिके आधार तन को अब राख
लीजे गोपाल।
नयन प्राण सुख दीजे तनते दुःख दूर कीजे
इतनी विनती मेरी शुनि लीजे हाल॥
पतितपावन करुणासिन्धु दीन दुःखभञ्जन अनेक
रूप लीलाधारी भक्तवत्सल युग युग भए कृपाल।
मदनमोहन मधुसूदन मुरारी गज सुदामा द्रौपदी
सहायकारो तानसेन प्रभु भक्त प्रतिपाल॥

३३

मो सों ज्यों अवध बद गए सांझ किए आए भोरभए।
ऐसी को चतुर सुघर नारी जिन तुम्हें बिरमाए
ऐसे सुख दए॥
अधरन अञ्जन कहुं पीक पलक लीक औरन सो
चित्त ही बहु भांतन सों लए।
माहनके माह आज वहां पाय धरो जहां कीन्हें
नेह नए॥

३४

तोको प्यारे पठई कि धों तू आपते आई मनावन।

प्राणेश्वरके मुखकी बतियां ऐन होवे नारी हों नीके
जानत जैसी तू मोसो री लागी बनावन ॥
या मुख को अब कान न करहों अनमिल पियसो
कह्यो न परत तेरो भौहें तनावन ।
कहा कहों राजाराम सो तो सी री पठावे हमारे
ग्टह बनावन ॥

अथ होली रङ्गीन गान प्रारम्भः

मङ्गलाचरणम्—

नमामि हृदये शेषलीलाक्षीराब्धिशायिने ।
लक्ष्मीसहस्रलीलाभिसेव्यमानकलानिधे ॥
येषां श्रीमद्यशोदासुतपदकमले नास्ति भक्ति नराणां ।
येषामाभीरकन्याप्रियगुणकथने नानुरक्तारसज्ञा ।
येषां श्रीकृष्णलीलाललितपदकथास्वादरो नैव कर्णौ
धिक् तान् धिक् तान् धिगेतान् कथयति नियतं
कीर्तनस्थो मृदङ्गः ॥
जन्मान्तरसहस्रेषु तपोध्यानसमाधिना ।
नराणां चीणपापानां कृष्णे भक्तिः प्रजायते ॥
मङ्गलं भगवान् विष्णुः मङ्गलं गरुड़ध्वजः ।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षः मङ्गलायतनो हरिः ॥
गोलोके गोकुले राधाकान्तो यद्दिभुजः स्वयं ।
वासुदेवग्टहे साक्षात् चतुर्भुजः स्वयं हरिः ॥
ब्रह्मेति परमात्मेति कृष्णस्तु भगवान् स्वयं ।
परब्रह्म स्वयं ज्योतिः कुतस्तेजस्विना विना ॥
कृषिर्भूवाचकः शब्दः णश्च निवृत्तिवाचकः ।
तयोरैक्यात् परब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते ॥
वसन्ते वासन्ती कुसुमसुकुमारैरवयवै
र्भ्रमन्ती कान्तारे बहुविहितकृष्णानुसरणां ।
अमन्दं कन्दर्प ज्वरजनित-चिन्ताकुलतया
बलद्वाधां राधां सरसमिदमुचे सहचरी ॥

अथ वसन्तध्यान—

चूताङ्कुरे नेव कृतावतंसो विचूर्णमानो ऽरुणनेत्रपद्मः ।
पीताम्बरो काञ्चनचारुदेहो वसन्तरागो युवतीप्रियश्च ॥

वसन्त—यत्

ललित-लवङ्गलता-परिशीलन-कोमल-मलय-समीरे ।
मधुकरनिकर-करम्बित-कोकिल-कूजित कुञ्ज-कुटीरे ॥
विहरति हरिहिह सरस-वसन्ते ।
नृत्यति युवतिजनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरन्ते ॥
ध्रुव
उन्मद-मदन-मनोरथ-पथिक-वधूजन-जनित-विलापे ।
अलिकुल-सङ्कुल-कुसुमसमूह-निराकुल-बकुलकलापे ॥
मृगमद-सौरभ-रभस-वशंवद-नवदल-माल-तमाले ।
युवजन-हृदयविदारण-मनसिज-नखरुचि-किंशुक-जाले ॥
मदन-महीपति-कनकदण्ड-रुचि-केशर-कुसुम-विकाशे ।
मिलित-शिलीमुख-पाटलि-पटल-कृत-स्मर-तूण
विलासे ॥
विगलित-लज्जित-जगदवलोकन-तरुण-करुण-
कृतहासे ।
विरहि-निकृन्तन-कुन्त-मुखाकृति-केतकि-दन्तुरितासे ॥
माधविका-परिमल-ललिते नवमालिकयातिसुगन्धौ ।
मुनि मनसामपि मोहन-कारिणि तरुणाकारण-बन्धौ ॥
स्फुरदतिमुक्त-लता-परिरम्भण-पुलकित-मुकुलित-चते ।
वृन्दावन-विपिने परिसर-परिगत-यमुना-जल-पूते ॥
श्रीजयदेव-भणितमिदमुदयति हरिचरण-
स्मृति-सारम् ।
सरस-वसन्त समय-वनवर्णनमनुगतमदन-विकारम् ॥

भैरवी—धमार-यत्

कान्ह ऐसा वंशी बजाई मोह लई नई नार ।
श्यामसे सैन कर रहो है सनमुख रीझ रहो है
रिझवार ॥
जदे वर्णको जो पहरे है चूनर अंगियाकी रङ्ग
गुल अनार ।
दे अचर मुख ऊपर ठाढ़ी सोहत जरद किनार ॥

२

कान्ह जू कहा दोगे मोको देखो ऐसो नीको नार ।
नख शिख ठीक चन्द्र जैसो मुख वाको कुच मानो
जैसे अनार ॥

वयस की है थोरो उमङ्गकी है पूरो विष थिकरी
ज्यों कचनार।
मतिकी चातुर ज्यों परख की पारखी तुम हू सों
सरस सुनार॥

३

ए री मोसों होरी खेलन आये श्याम कुंवर नन्दलाल।
अबीर गुलाल की झोरी भर भर डारत रङ्ग गुलाल॥
केशर रङ्ग पिचकारी छिरकत डार प्रेमको जाल।
कृष्णानन्द रङ्गमें भीजोई फगुवा लए व्रजबाल॥

४

डारत केशर पिचकारी सखी मोये कुंवर कन्हैया।
बाट घाट मोहि रोकत रुंधत कहा करूं मेरी दैया॥
वन कुंजनमें कुच भुज टकटोरत सङ्ग हो लोभ
खरे हैं चबैया।
लाज सकुच काहूकी न माने देउंगो मैं नन्द दुहैया॥

५

मोरे सइयां ले आए गवनवां री मैं तो खेलों
होरी गर लाय लाय।
बहुत रही बाबुल घर सननो अब पियके रङ्गमें
रङ्गी हूं आय
गुण अवगुण सब माफ करे है कृष्णानन्द में
रही हूं समाय॥

६

श्याम जू डार दई हो धूमधाम होरी की व्रजमें
मग चलन न पावे कोऊ नार।
लरे झगरे मुख मींजि वरवश गारी गावे दे दे तार॥
अबीर गुलाल लाल घुमड़नमें रही न काहूकी संभार।
रसिक सनेह रस वश कर लई मोहन कृष्ण मुरार॥

७

भली वेणु बजाई रावरे हों कान्ह होरी धूम मचाई।
सप्त स्वरन इकईश मूर्छना मधुर मधुर सुखदायी॥
डफ मृदङ्ग औ रबाब स्वरमण्डल मुरली तानन छाई।
रसिक छैल रस वश कर डारो भैरवी गाय सुनाई॥

८

बाबुल घर दुलहन बहुत रही अचपल हूं
पिया पय धाय।
बाबुल तेरो व्याह रच्यो है हरे हरे बांस मंगाय॥
गुड़िया खेलोनों रहे ताकमें नहीं खेलनको दाय।
सास सहेलो में रहो अकेलो सइयांके देश चलि जाय॥
गुण अवगुण ले चलो गहो शरण पिया पै जाय।
श्रीकृष्णानन्द में रङ्ग गई दुलहन ब्रह्म में रहो समाय॥

९

ऐसो ढीठ सांवरो री गोरो कर धर लिपट रह्यो
बरजोरो।
तक झुक झिझक रही मो मनमें सास ननदको
है मोहे चोरो॥
का करूं कित जाउं सखी री श्यामसुन्दर को लागो
मोहे तोरो।
सुन्दर श्याम मनोहर मूर्ति डारो रङ्ग मले मुख रोगे
कृष्णानन्द रङ्ग भरि सुरति फगुवा लेहों कृष्ण पै
किशोरो॥

१०

कछु कहो संभार मनमोहन लाल होरी खेलन
मो से आए हो।
काहू सों लपटत औ झटपत काहू सों काहू से
अङ्ग लगाए हो॥
अतर अबीर अरगजा केशर पिचकारिन रङ्ग छाए हो।
रसिक छैल अब मानत नाहीं होरी धूम मचाए हो॥

११

मोरे बाबुलके घर आज सखी मोरे बाबुलके घर
आज पिया होरी खेलन आए लेके साज।
लोक सकुच सब ही दूर डारूं खोल घूंघट
पट तज हूं लाज॥
पांच पचीस लिए सङ्ग सखियां नानाविध ले समाज।
श्रीकृष्णानन्द में रङ्ग रङ्गे हों नेक न जाइ हों भाज॥

१२

मोरे बाबुल दीन्हों गवनवा मैं तो चली हूं सइयांके नगर।
आ मोरी गुइयां गरे लागो हमरे फेर के न होइ है मिलनवा॥
नेहरमें हम खेल गंवायो सासुर भए है चलनवा।
पांच सहेली तामें अकेली सइयांको भयो है अवनवा॥
चार कहार मिल डालिया ले आवो कहां को करो हो रवनवा।
न्हाय धोय नए वस्त्र पहर केशर तिलक चन्दनवा॥
सज शृङ्गार दुलहन बन बैठो लाज सकुच उनमुनवा।
विदा करन कुटुम्ब सब आये नाऊ और बम्हनवा॥
निरखत हो सब रह गये लोगवा नैनन नीर पुरनवा।
अनृत चले हो बने अब होत कहा है काइको वश म चलनवा॥
अन्त विदा हो चली है दुलहन पिय पिय लगो रटनवा।
कहे कबीर सुन री दुलहन पियके घर ले चरणवा॥

१३

कछु कह न गए समझाय मोरे राम यौवन हमसे विदा मांगी।
काहूके हाथ लिखूं व्रज पाती काहुके हाथ सन्देश मोरे राम॥
आये वसन्त विरहके मांझ में पियके मिलन अन्देश मोरे राम।
एक वन ढूंढ़ सकल वन ढूंढ़ा करि योगनके भेश॥
जबते गए पिया भए वहां होके फेर नहीं मिल्यो प्राणेश।
कृष्णानन्द में रङ्ग रहो हों आय मिलो मोहे नटवर वेश॥

१४

मोरे नयनके ऊपर मारी सइयां पिचकारी।
भर पिचकारी मुखपर मारी भीज गई तन सारी॥
अबीर गुलाल ले रङ्ग में बोरी गावत दे दे तारी।
कृष्णानन्द सों फगुवा लीन्हें तब छांड़े वनवारी॥

१५

इन मोहन वनवारी ने मोहे भोर ही आन जगाई।
कह न सकत कछु लाजको मारी नई नई प्रीति लगाई॥
अङ्ग छुवो जिनि बांह गहो मेरी हा हा करूं परूं पाई।
हा हा सरक जा इस्क रङ्गीले देतो मैं राम दुहाई॥

१६

कोऊ मेरो कहा करेगो मैं तो पिया सङ्ग खेलों होरी।
अपने अपने मन्दिरसे निकसो कोई सांवरो कोई गोरो॥
पिया मेरो मैं पियकी सजनी पिय मोंको रङ्गमें बोरो।
कृष्णानन्द में रङ्ग गई हों फगुवा ले हों बहोरो॥

१७

अजी तुम सांची कहो होरी खेल कहां आए।
अधरन अञ्जन पीक कपोलन भाल महावर लाए॥
डगमगात पग धरत धरणी में तीन तिलक कहां पाए।
रसिक छैल भ्रमर घर घरके वैन तिया विलमाए॥

१८

कैसे समझाऊं कान्ह यौवन कहा मानत नाहीं।
उमंगो यौवन ज्यों श्रावण भादों देतो मैं राम दुहाई।
अब के पिया मिल ले हमसे करो हो मेरी सहाई॥

१९

हम से आंख छिपाए जात गोरी तेरो फैल रहो कजरा।
नासर पिया सों मिल आई सजनी टूट गई दुलरी तिलरी मजरा॥

२०

मोरी चटक चुनरिया रङ्गाव सइयां तो से ना खेलों।
सालू सरम कुसुमकी अंगिया मैं अपने रङ्ग में रलों॥

२१

मोरे सइयां ने कीन्हों अवनवा मैं ते खेलूंगो होरी पीके नगर।

पांच पचीस लेहों सङ्ग सखियां अबीर गुलाल ले
अङ्ग रङ्गी हूं सगर ॥

२२

काहे मार गए पिचकारी मोरे श्याम सुरङ्ग
चुनरिया में दाग परो।
रपट झपट लपट गहो बहियां नयन सैन दे
आय अरो॥

२३

आवो बलमजी हमारे डेरे अबीर गुलाल मलों
मुख तेरे होरीके दिनन में ना कर झेरे।
महम्मद शा पिया चतुर रङ्गीले दूर बसो या बसो
मेरे नेरे॥

२४

कान्ह जो आवेंगे मेरे होरी खेलनको देखूंगी मैं बड़े
खेलार।
फगुवा लूंगी तब जान दूंगी रसिक छैल रिझवार॥

२५

आज रङ्ग है री ब्रज रङ्ग है लिये ग्वाल सखा
सब सङ्ग है।
रङ्ग हो रङ्ग चहुं ओर सखी री फागु खेलनमें
उमङ्ग है॥
रङ्गमहल औ रङ्ग हो मजलिस रङ्ग वसन
कृष्ण रङ्ग है।
रङ्ग सुरङ्ग पिचकारी रङ्ग ले बाजत मधुर मृदङ्ग है॥

२६

रे होरी खेलनको प्यारी आवो नो हमार गली।
अबीर गुलाल उड़ावो मनमान्यो फूलो गुलाब की
कली॥
अतर अरगजा पिचकारी केशर ले घूंघट ओट चली।
प्यारे जियको प्यारी वल्लभ गावत होरी अली॥

२७

होरी खेलनको कैसे जाऊं रे प्रिय मुखसो न
बोले एक बार।
हौं अजान कछु जानत नाहीं परम चतुर प्रिय
सब गुणन भरे हैं श्रीकृष्ण रङ्ग कर्तार॥

२८

जिन भिजवो कृष्ण मुरारी कर गहे पकरत
जात मार।
लपट झपट बरजोरी करत है गावत दे दे तार॥

२९

ए हो निपट ढीठ गिरिधारी लाल मोहे रङ्ग
होमें बोरे री।
अबीर गुलाल मलत मुख मेरे हियसो हिय जोरे री॥

३०

छवि तोरी मोहे प्यारी लगत है कहां लगाए
गुलाल लाल।
सुन्दर छवि देख मन अटक्यो वंशो बजावत नन्दलाल
खेलन आए बनवारी लाल॥

३१

लङ्गर माती फागुनमें एक ओर भीर भई गोपिनकी
एक ओर ग्वालकी बाल।
चहुं ओरते मारत पिचकारी भीजी अतर गुलाल॥

३२

अलबेले बारे कान्ह लाल तेरी मुरली
अधिक सोहावे।
नयन प्राण सब तेरे हो वशमें जो मन रङ्ग बन आवे॥
मधुर मधुर स्वर अधरन धर हरि रस भरी
तान सुनावे।
सुन्दर श्याम मनोहर मूर्ति बार बार बलि जावे॥

३३

सखी मोरे अंगियामें अबीर मलो री।
बहियां मरोरी चुरियां फोरी ऐसो रङ्ग करो री॥

३४

जागे मेरे भाग्य में तो तुम सङ्ग खेलूं होरी।
रसके कारण वश कर लोन्हीं कम्पन लागो छातो मोरो
अपने प्रियसे मैं होरी खेलो घास ननदको चोरी॥

२५

सांवरे रसिया अनेक खेल कहां शीखे वेणु बजाय।
तानन माननसो वश कीन्हीं जादू साज सजाय॥

२६

मयन विरहिया तेरे प्रियारे रङ्ग रस वश कर लीन्हीं
जिया रे।
बांक बखश कहे जादू डारो सुन्दर श्याम मेरी
सूरत विसारे॥

२७

अलबेली भई मदमाती सइयां पै रङ्ग डारोंगी।
चोवा चन्दन अतर अरगजा मुख मींड़के बदला
लेओंगी॥

२८

ए री मैं तो बार बार नित्य नई होरी खेलन
प्रिय पैठाई।
अम्बा बौरे टेसू फूले और फले जाही जुही॥

२९

मैं तो डारुंगी रङ्ग गुलाल लाल सइयां मेरे आए।
मैं तो भर भर केशर पिचकारी पियपै नाए॥
धन्य भाग्य सुहाग है आए श्याम दर्शाए।
मैं तो सोती थी रङ्गमहलमें सुख नींद लगाए॥
अब मैं तो पड़ी हूं अचानक जाग पिया मेरे धाए।
इन विरहने खायो मांस हाड़ भयो साये॥
अब मैं हाड़ ले के कित जाऊं सइयां मोहे चाहे।
इन अंसुवनकी बड़ी बूंद धरणीमें पड़त है
मेरो जरत हियरा बुझाय सइयां मोहे चाहे॥
साभीषमालीकी प्रीति पुरानो नित्य नई।
अब मेरो दिन दिन बढ़त सुहाग सइयां मोरे
आए मैं तो डारुंगी रङ्ग०॥

भैरवी—खेमटा

छि छि हारिले श्याम राधार काछे पारिले ना राधाय।
जिनिलेन किशोरी होरी काज किरे खेलाय॥
जितवो बोले कृष्ण एले बसले प्रतिज्ञाय।
दिये खेलाय भङ्ग हे तिभङ्ग धर्ले राधार पाय॥

२

यदि खेलबे होरी वंशीधारी श्याम निकुञ्जे चल।
राजपथेर माझे मरि लाजे ननदी कि बलबे बल
श्यामल॥

३

सोइ केमने आनबो जल केमने मुख बांचाय।
हाथे लिये पिचकारी आबीर खेलाय॥
मत्त गज जिनि गति हेरि श्यामराय।
हृदय कांपिछे पद भये नयन नाचाय॥
आमार रूप आमार हैल जञ्जालेर प्राय।
व्रजवासी कृष्णे आसि होरी खेलबे गांवो यासी,
छड़ाइचे कुङ्कुम आबीर खेलाय गुलाल उड़ाय॥

४

यमुनाते नीरे याइते ना पारी पथे
मत्त होइये फिरे बङ्कविहारी।
एके मोरा गोपवाला नाहि जानि होरी खेला
तबु नाहि छाड़े काला देय रङ्ग भारी॥

५

भोर ही आये मेरे गृह लाल होरी खेलन को
मदनगोपाल।
लाल गुलाल में लाल बने हैं लाली लाल बने हैं
लाल॥

६

होरी दे ख्याल विचो दिल साड़ा अटका।
सांवरे देलल साड़ा दिल सटका॥
मनमोहन सोहन गऊरू रङ्ग डारत असाड़ा चीर
झटका।
अलबेलो पाग सलोनो अंगिया ज़रकशी जामा
कटि तट पटुका॥
लाल गुलाल ले गालां मलदा अजब खेल है नागर
नटका।
रसिक छैल वृन्दावन कुञ्जन में लगा रहत ध्यान
निशा दिन घटका॥

७

सखी मेरे श्यामने धूम मचाई।
या आंगनमें कोउ निकस न पावें पिचकारिन
रङ्ग छाई॥

८

जन मींजो अनार गुलाबो कर लाई कुम्हलाई
जात नार।
फूलसो होत है चतुर नार काह जाने नाज़ुक
नरको सार॥

९

तोरी गारी मोहे प्यारी लगतु है निकस गई सुन्दर
मुख तें।
चन्द्रमुखी मृगलोचनी कामिनी ऐसे दीप्त चन्द्रकी
झलकतें॥

१०

सन्तो खेलो होरी समाज जगमें माच रहो है धमार।
दम कपट लिए करमें डफ और रबावों कर दे तार॥
पांच पचीस लिए सङ्ग अवला हंसि हंसि मिलि
गावत गार।
ज्ञानको रङ्ग ध्यान पिचकारी हंस हंस नाम रङ्ग
दो डार
कहे कबीर शुनो भाई साधो जगमें खेलो संभार॥

११

नागर है के आप रूप है री।
हारी या नु हारो तरे मोको ये माना चूरी॥
चोखे देह कागू पुन कारे राग नारी पाइये बरजोरी।
को रे दृह निविदम फेरि देवा मानक जो नाहीं
ए मत होरी॥

१२

फगुवा मांगन आयो री मेरी बारी कान्ह मोसे।
अबीर गुलाल केशर रङ्ग ले के उमड़ घुमड़ रङ्ग
छायो॥
ग्वाल बाल सब सखा सङ्ग ले होरी राग जमायो।
कृष्णानन्द में रङ्ग रङ्गे हैं फगुवा लयो मन भायो॥

१३

रङ्ग भर दीन्हीं वसन हमारे रे सांवरे हो कान।
औचक आय झकझोरी मड़को लपक झपक गहो
छाड़ दई कुलकान॥

१४

कान्ह ऐसे अनोखे खेलारी वनवारी ने रङ्ग डार
दई पिचकारी।
सालू सुरङ्ग कुसुम्भी अंगिया भीज गई रङ्ग सारी॥

१५

मस्ती फागुनकी कीजिए ज्यों चाल चलत गज हस्ती।
गुलाब अतर चोवा चन्दन मुख मलि जाने न पावे
भार दूर खिस्ती॥

१६

बरज्यो माने नहीं न नार होरी खेलत सब द्वार द्वार।
बाजत बीन मृदङ्ग झांझ डफ और साज कटो तार
दे दे तार गार गावत है रहो नहीं काहु संभार
डफको ध्वनि धुंकार॥

१७

मोपे मोहन मदनगोपाल दए रङ्ग डार।
नख शिख अङ्ग रङ्गमें बोरी मारि केशर पिचकार॥

१८

मोरे नयनके मार चला पिचकारी।
भर पिचकारी मोरे मुख पर मारी
भीज गई तन सारी॥

१९

सखि मेरे यौवन धूम मचाई।
जो कोउ पकरत बांह लोगनमें देति मैं रामदुहाई॥

२०

पिया मोको सुरख़ चुनरिया रङ्गा दे।
चोवा चन्दन और अरगजो केशर रङ्ग भरा दे॥

२१

होरी खेलत ताहे आवत लाज काहेको प्रीति लगावत।
एक तो रहो करहैयाको पातर उ'मगी जोबनवां
सतावत॥

२२

ता दिन रङ्ग भये हूं जा दिन प्रियको मैं देखन पैहूं।
योगिनी होके मैं वन वन डोलूं अङ्ग विभूति रमैं हूं॥
बालकी गलसैली बने हूं लपक झपक गर ले हूं।
प्रिय मोरा मैं प्रियकी सजनी प्रिय पर जियरा रमैं हूं॥

२३

सखी नयनसे नयन मिलाय रही सैन में फागुवा
मनाय रही।
ताशेकी अंगिया जालीकी कुरती छतियनसों छतिया
जुड़ाय रही॥

२४

अलबेली अकेली प्रियसों खेले होरी रे वृन्दावनकी
कुञ्जगली।
सालू सरस कुसुम्भी अंगिया और रङ्गमें रली मली॥

सिन्धु-भैरवी—यत्

होरी खेले यौवन मदमाती इन सांवरेने वेणु बजाई।
व्रजकी सखी सब दूर निकस गई गोकुल धूम मचाई
राधा रुक्मणी और सत्यभामा कुब्जा खेल खेलाई॥

२

मैं तो आप ही रङ्ग में बोरी कन्हैया मोपे रङ्ग न
डारो।
व्रजकी सखी सब वन वन आई हम ही पे रङ्ग मारो॥
भर पिचकारी मुख पर मारी भीज गई रङ्ग सारी।
बरज रही बरजो नहीं मानि ऐसे ढीठ वनवारी
रसिक छैल व्रज कुञ्जविहारी हा हा कर मैं हारी॥

३

जात कहां हो आज होरी जान न पाय।
सासके तौर छैल नहीं मानि गारी देत बनाय
खैंचत चीर श्याम नहीं मानत मुरली देहे बजाय॥

४

बौरी प्रियको मनाय ले फागुनके दिन चार।
रूप यौवनको गुमान न करिए बीती जात बहार॥
प्रिय चातुर तू निपट अनारी प्रिय चरणन चित्त धार।
कृष्णानन्द में रङ्ग री सुहागन लोक लाज तज डार॥

५

मेरो हरवा चुभि चुभि जाय होरी मैं ना
खेलूंगी फाग।
अञ्चल पकर मेरो सब रस लीन्हों नेक न आई लाग
नासर पिया सों होरी खेलों घर घर तेरो माग॥

६

कान्ह मैं खेलों तोसों फाग मोरे गरवा लग लग जाय।
बहियां मरोरत कुच मुख मोड़त नयनसे नयन
मिलाय॥

७

सखी मैं कैसे खेलूं होरी मोरे नयन वा
लग लग जाय।
मनमोहन मन रस वश कर लीन्हों मेरे मनवाने
पग पग जाय॥

८

पिचकारी मो पर मारी लली घेर घेर बोरत सारी।
अपने री अपने मन्दिर से निकसी कोई सांवरी
कोई गोरी॥

९

कौनकी व्रजको इजारदार मेरी अंगिया कर
दीन्हीं तार तार।
मेरो ही रङ्ग मेरी पिचकारी मोहे भिजावत
बार बार॥

१०

चिते फागुन गावत गारी भगवत भजन विसार
विसारी।
हो हो करत हलाक दिवस निशि घर घर फिरत
है रतनारी॥
नाचत गावत ताल बजावत तरह तरह के वेश
सुधारी।
अशुभ अनेक बनाय विविध विधि मुखसे कहि
सपेति डारी॥
लें ले धूरि उड़ावत धावत मदमाती नहीं टारत
ते टारी।

नग्न गात्र नहिं होश वसन के हंसत हसावत
लागन गारो ॥
देखत लाखन पुरजन रिपुजन मागत फागुन
हा तपसी चोरी करि जनको तन डारत छाती पीटत
होरी जारी।
लक्ष्मीपति नहीं मिले लाभ कछु नाहक हो नर
मरे कुचारी ॥

सुलतानी-भैरवी—पश्तो

होरी वा महरू आमद वक़्त बहार आमद।
मे पा शम्बर आरज़े ख़ूबां अतर अबीर गुलालरा ॥
रङ्ग आमेज़ बख़ूबी करदम् ये गुले रुख़े लालरा।
अज़ मए नाब बरामदे के मौसमे अजब
किनार आमद ॥

२

तुमने ए गुलसन चमन मचाई होरी।
गुल तो सब ख़ार हुये तेरी बन आई होरी ॥
अब गुलाल उठता है और रङ्गकी पड़ती फुहार
जिस तरफ़ देखते हैं अब्रसी छाई होरी।
कुङ्मावाज़ी है और खेल है मस्त मगन
प्यारे क्या ख़ूब तेरे दिलको खुश आई होरी ॥
यह मज़े हमने जो देखे प्यारे के यहां आकर
ख़ूब सा खुश हुवा दिल आई क्या भाई होरी।
बुलबुल चहचहे करे कुमरियां मस्त फिरें
फूल फल झूम रहे हाय क्या आई होरी।

सिन्धु-भैरवी—पश्तो

आया फागुनका महीना होरी सब गाय रहे।
कोई वीण और कोई चङ्ग मृदङ्ग बजाय रहे ॥
कोई कुङ्कुमा उड़े गुलाल घुमड़ उड़ाय रहे।
कोई नाच नाच सङ्गीत भाव देखाय रहे
इश्क़ रङ्ग में रङ्ग के होरी धूम मचाय रहे ॥

सिन्धु-भैरवी—यत्

लाल तेरे वलिहारी प्यारो मान न कीजे।
शेष विहाय धाय हिय सों लग अधर सुधारस पीजे ॥
मौज सरोज मरे हरि हा हियरा हियरा धर लीजे।
भाग्यन सों फाल्गुन प्रिय पायो जन रामलला
सुख दीजे ॥

२

बौरी मान न कर री तेरे यौवन को नवल बहार।
यह यौवन तरुवर की छैयां रहत नहीं दिन चार ॥
भाग्यन से फाल्गुन प्रिय पायो तन मन कर वलिहार।
प्रिय चतुर तू निपट अयानी लाज सकुच तज डार ॥

३

प्रिय विदेश मैं तो भई हूं बावरी का सङ्ग
खेलों मैं होरी।
निशिदिन तरफत वीतत जात है कारी भई
रङ्ग गोरी ॥

४

रे मोरे होरी के खेलैया रङ्ग भरि मारी पिचकारी।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा भारत हमदम मैं तुमपे
वारी ॥

५

गोरी कुञ्ज भवन में हरि सङ्ग खेलो फाग।
धन्य यौवन गुण तेरो तरुणाता धन्य धन्य तेरो सुहाग ॥

६

गोरी मनमोहन तें काहे करत हो मान।
भाग्यनसे फाल्गुन प्रिय पायो ऐसे सुन्दर नवल वर
कान ॥

७

गोरी सोच समझ तू का पर करत गुमान।
यह संसार कोऊ नहीं तेरो शरण गहो हरि आन ॥

सिन्धु-जङ्गला भैरवी—तिताला

सांवरा साड़ा भीज गई रङ्ग चोलियां मानू क्यों
मारदा पिचकारियां।
नागर नन्द महरदा वे छैला तू अलबेला रङ्ग रङ्गीला
मैं भी अकेली तू भी अकेला मैं तेड़े नाल राजी होइयां ॥

२

रे मैं ता भौचक हो रही पिचकारिन काहे को मारी।
भर पिचकारी मुखपर मारी भीज गई तन सारी ॥

३

रे दयो मारे पिचकारिन काहे को मारी।
रंग पिचकारी मुख कुच मारी भीज गई तन सारी ॥
तैंने मेरी सारी भिजाई दैया कुञ्जभवन गिरिधारी
लाल।
अतर गुलाल कुच मुख मींजत गावत है दे दे कर
ताल ॥

४

छैलने डारो गुलाल री मैं तो सगरी भीज गई आज।
चोवा रे चन्दन और अरगजा मारो पिचकारी
व्रजराज ॥

५

हरे हरे हरि हरे हरे होरी हर हरे बेर मेरे घरे खरे।
हरि हरि हेर हेर हरत कहरत मन बेर बेर
रङ्ग भरे ॥
हरे हरे वसव आभूषण हरे हरे हरि हरि मित
सब हरे हरे।
हरि हरि बोलत सब कुञ्जन हो हो हो हो बोलत
ररे ॥

६

धन्य भाग्य सइयां सङ्ग सोई चूक परि जाते प्रिय
बिछुरे योग नेम धन्य रे ई भ्रमत फिरत दार दशो
दिशा उरन देवे कोई कोई।
प्रिय सङ्ग न जाऊंगी गह कुसाज विन धोए
जाके पिया जग मांझ सराहें सोई सोहागन
होई होई ॥
जिन नहीं प्रीति करी सइयां सङ्ग विषय बीज ले बोई।
निशदिन लहर देत उर भीतर मन्त्र न लागे
कोई कोई ॥
गावे गूदर यह प्रीति पुरानी उदित रहे नहीं गोई।
को हरिका गुण गावत सराह रे पिसल तिन पोई पोई।

७

सजनो अज हूं न आयो प्रिय मेरा।
एक विरह जैसे सेज दोपक नाहीं अंधेरा ॥
को ऐसे बिच प्रिय को मिलावे सारी जहां बिच हेरा।
योगिनी होके डारू' फेरा ॥
आन पड़ी विरहके सागर विषय पान न बेरा।
विन प्रिय को मोहे पार उतारे प्राण जीवन धन मेरा
अब रे लहर आवत बहु बेरा ॥
अवध निबरानी प्रिय नहीं आए आगम होत अन्धेरा।
गावे गूदर मोहे शपथ सइयांको काम कटक दल
घेरा अब रे जगत् दो दिनका बसेरा ॥

८

जो कोई राम ररे सोई जाने।
जे जे भजे सो सुरपुर गएऊ नरऊ भक्ति सयाने॥
ताको महिमा क्या कहिवे को सागर दुहु सकुचाने
अजो सागर दुहु सकुचाने ॥
प्रिय मिलवे को सहज भाव है सहज दोनता वानो।
जाके जप तप मान महोये वेदहु कहत बखानो ॥
जाको गति मति ऐसो आवत है तबे भाग कछु जानो।
गावे गूदर जब गुरुको दया तब भो लगे अरु ध्यानो ॥

९

पिया मनमोहन मेरे प्यारे ने सखो भार हो
होरी मचाई।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर सारी सुरङ्ग भिजाई ॥
लपट झपटके बहियां गह पकरी हरि हंस
कण्ठ लगाई।
सुन्दर श्याम कमलदल लोचन चित्त मेरो लियो
चोराई ॥
बाजत बंशी अधर मधुर स्वर रसभरी तान शुनाई।
कृष्ण रसिक रङ्गभीने रङ्ग में होरी धूम मचाई ॥

१०

होरीके रङ्ग माते आए कौन त्रिया सारी रैन खेलाए।
लाल गुलाल सो लाल बने हो बोलत वचन प्यारे
तोतराए ॥

मोतियन हार सुभे हैं उर में अबीर अरगजा
गाल लगाए।
भर पिचकारी मोहे मारी लागी अङ्गके सब ही रङ्गाए
कृष्ण रसिक प्यारे वहीं सिधारो जिन कुच भुज
सो तन लिपटाए॥

११

साची कहो हमसे पिय प्यारे आज होरी रङ्ग
कहां मचाए।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर कौन तिया सो
मुख हि मलाए॥
अधर अञ्जन भाल महावर बोलत वचन सइयां
तोतराए।
होरीमें वनवारी तिहारो कोरी किशोरी जिने रैन
जगाए॥
हमसो अवध बद अनत विलम रहे भोर भए तब
वदन देखाए।
सूरश्याम तुम वहीं सिधारो को पहिंचानत
काके आए॥

१२

सइयां होरी खेलो ताहीं जहां सारो रैन गंवाई।
कौन नवल तिया तुम्हें रङ्ग रङ्गे रस वश कर
विरमाई॥

१३

मेरे नयनके ऊपर मारी सइयां पिचकारी।
भर पिचकारी मोरे मुखपर मारी अंगिया भोज
गई सारी॥
वरज रहो वरजो नहीं मानत हा हा कर कर हारी।
रसिक कृष्ण रस वश कर डारी बार बार वलिहारी॥

१४

कोई मेरा कारे करे गो मैं तो पिय सङ्ग
खेलूंगी होरी।
अपने री अपने मन्दिरसे निकसी कोई सांवरी
कोई गोरी "

भैरवी—तिताला

सुन्दर मनमोहन प्यारे नन्ददुलारे होरी खेलन
आए मेरे धाम।
कौन नवल तिया तुम्हें खेलाए रङ्गाए जगाए
चारो याम॥
अधरन अञ्जन पोक कपोलन जावक तिलक लगाए।
अबीर गलाल मुखसे लपटाए तीन तिलक
सूर प्रभु कहां पाए॥

भैरवी—यत्

होरी खेल कहांते आए कौन तिया सारो रैन जगाए।
अबीर गुलाल लाल मुख लागी रोरी अधिक सुहाए॥
जागी पागी अनुरागी श्याम जू होरी रङ्ग रङ्गाए।
सूरश्याम सांची कहो मोसे तीन तिलक कहां पाए॥

भैरवी—तिताला

पिचकारी मारी वनवारी रे बिगारी है सारी
हमारी रे
बहियां मरोर डारी मुखसे दई गारी हा हा हा
कर हारी रे॥
सङ्गकी सखी सारी देखें निहारी गावत सभी
दे दे तारी।
अबीर गुलाल मुखमें मल डारी फाग रच्यो अति ही
हरि भारी
ब्रजकी नारी रस वश कर डारी छाड़ो सूरश्याम
तेरे जाऊं वलिहारी॥

२

भैरवी उदय आए हरि मेरे सांझके वचन कहां गए
तेरे होरी में कहां रङ्गे रे।
लाल गुलाल लाल ललित लखि लीला लालो ले
लालन लिये संगेरे॥
काके केलि किये कौनके काहूकी कान करो
त्रिभङ्गे रे।

रस वश कर लिए सूरके प्रभुको भगुवा लीन्हें कौन
रङ्ग पगी रे ॥

भैरवी—यत्

मोरे प्रियके यौवन वा ढरकि जात ए हो कासे
कहूं मैं जियकी वात।
सूनी सेज प्रीतम नहीं देखो ता पर विरह
लायो घात॥
सुख सपने की सम्पत् सजनी नयन खुले नहीं
आवे हाथ।
गावे गूदर मोहे चैन न पावे जबते प्रिय मेरो
विछुड़ो साथ॥

काफी-भैरवी—यत्

मोरे प्रियके जोवन वा करत ज़ोर ए री ए हो सूनी
सेज मैं करत शोर।
ताशको अङ्गिया मसकन लागी उमग आए दोऊ
बन्दको तोर॥
ए तो यौबन सइयां का खिलोना कहां छिपाऊं
अङ्गके चोर।
सारी अवध मोहे बैठ गंवाई तरप तरप जिय
भयो हु भोर॥
योगिनी होके मैं भस्म चढ़ाऊं प्रियको मैं ढूंढूं
कौन ओर।
गावे गूदर प्रीतम वश नाहीं जन्म गंवायो कहीं
मोर मोर॥

भैरवी—यत्

हमसे कहा छिपावे छिनरिया तोरी भोज गई
सब सारी।
कर्म करावत नयन दुरावत सेन लगावत मारी॥
वसन भूषण तेरे कहंके कहं देखे रङ्ग परे
तोपे भारी।
हों लो गई थी खेलनको अचपल अबके फाल्गुन
तोरी बारी॥

सिन्धु-भैरवी—यत्

चलो प्यारी होरीके मौसमको बहार री।
तोसे खेलों फाग चलके फगुवा ले हों मन भाए
वाही सुमनके बाग़ री॥

पीलू-भैरवी—यत्

होरी खेलन सइयां अजहूं न आए वीती जात
बहार री।
तुम विन लाल गुलाल अंधेरो वनो अंसुअनको
पिचकार री॥

भैरवी—यत्

अनी मैंड़ा सांवलिया यानी होरी खेले उसी दे नाल।
सांवली सूरत माधुरी मूरत करदा होरी दा ख्याल॥

२

सूरत दा मतवाला मैंड़ा होरी खेलन
योगीया यानी।
कानन कुण्डल गल विच सेली अलख अलख
बुलायानी॥
अमानी एक योगी आया लाल दुशाले वाला।
भिक्षा दे दो लैदा नाहीं सूरत दा मतवाला॥
बाग़ लगाया बगीचा लगाया बीच लगाई क्यारी।
उस क्यारी में क्या क्या बोया इश्क़ महोबत यारी॥

३

श्याम कैसी धूम मचाई होरी खेलत रङ्ग रचाई।
अबीर गुलालके बादर छाए नई नई तान सुनाई॥

भैरवी—चर्चरी

ए हो नन्दनन्दन व्रजराज आज मोसे नाहक्
रार करे।
अम्बर पकर रङ्ग मोपे डारे आंखन अबीर भरे॥
देखत बाल वृद्ध ज्यों ठाढ़े तनक न लाज करे।
छविनायक हम वशवो छाड़ो को नित उठ भगरे॥

२

छिप छिप कुञ्जन में रहत कन्हैया।
जिन कोऊ बेचन जावो ले दहिया॥

अरज् बरज काहू की न मानत दिन हो लूटत कोऊ नाहीं पुछैया ।
सुन लो सीख हमारी सब ही राखो लाज चाहे जो गुसैंया
बैठ रहो गृहमें छविनायक नाहीं तो हंसि हैं व्रजके बसैया ॥

३

मेरी अंगिया भीजि पिचकारी ना लावो ।
ऐसे ढीठ लङ्गर न देखो मनमें कछू तो लजावो ॥

४

क्यों फेकत हो गुलाल लाल मेरी आंखन में खटके ।
हौं यमुना जल भरण जात थी गिरगो चुनरिया झटके ॥

५

धूमधामसे खेले होरी डफ मृदङ्ग लागे बाजन ।
चित्त वृत्त तथन शिखर सङ्गे ले खेल मचावे साजन ॥
अपने री अपने मन्दिरसों निकसो कञ्चन थार सब विध ले साजन
कोई लपट कोई झपट रङ्ग ले कोई मरो जात है लाजन ।
रसिक छैल गोकुलकी गैल मध्य खेल मचो ऋतु फाल्गुन ॥

होरी धूम मचाई हो कान्ह बाजत वीणा मृदङ्ग मुरली तान ।
अबीर गुलाल केशर रङ्ग छिरकत चन्दन वन्दन सों धो सान ॥
ग्वाल बाल सब सङ्ग शोभित नाचत गावत ले ले तान ।
रसिक कृष्ण प्रभु रस वश कर लीन्हीं यौवनको मांगे मोसे दान ॥

७

ए हो री हो री चलो री नन्द महर जू की पौरी होरी होय रही री ।
बहोरि न पैहो री ऐसो री समय री उठो री निरखो री मनमोहन जो होरी ॥
कहो री किशोरी गुलाल लहो री पीत पिछोरी छिरकि रङ्गोरी ।
कृष्णरूप प्रभुको परसो री फगुवा लहो री मन मानो री गोरी ॥

८

श्याम तैं ने होरी में धूम मचाई कोऊ गैल चलन नहीं पाई ।
काहूको लपटत झपटत दपटत काहू काहूको कुच शकाई ॥
जबते लगो है वसन्त पञ्चमी तवते मति बौराई ।
कृष्णरूप रङ्गो व्रज वनिता जादू टोना चलाई ॥

९

इन मनमोहन मोहे रस वश कर रङ्ग डारी ।
व्रजके विहारी बनवारी गिरिधारी मोरी सुरङ्ग चुनरिया भरी सारी ॥
चोवा चन्दन वन्दन कुङ्कुमा अबीर गुलाल केशर पिचकारी ।
बाजत वीणा मृदङ्ग चङ्ग झांझ झनक रवाव किन्नरी गावत सब मिल दे दे तारी
कृष्णरूप रसवश कर लई सब व्रजवनिता चरण स्पर्श कर भई बलिहारी ॥

१०

लङ्गर बिच ठाढ़ो हो री हम ही सों बरजोरी करत है भर भर मारे पिचकारी ।
लपट झपटके मोहे पकर लीन्हीं है अंगिया दई मोरी फारी ॥
बरज रही बरज्यो नहीं माने मैं हा हा हा कर हारी ।
अबीर लगावत कुच सुख मीड़त रङ्गरस देत है तारी ॥

११

मैं तो डारूंगी रङ्ग गुलाल लाल मेरे आए।
केसर रङ्ग बनाय राखूंगी अबीर गुलाल उड़ाए॥

१२

तेरे मनमें कहा रे कन्हैया गुलाल मुख मींजत
वरजोरी झटके।
नयन लगावत अङ्गुरी नचावत हंस हंसके दैया
कैसेके मटके॥
तरुणी बारी कोई नहीं छांड़ी आय देखावत
अपनी चटकै।
रसिकराय पुरुषोत्तम प्यारे अपनो वेरको ययो रे
सटकै॥

१३

मैं लाज मरी नहीं बोली सांवरे कैसो धूम
मचावत है।
पहले तो मोहन सूधे बोलत पाछे गारी सुनावत है॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर पिचकारिन
वरसावत है।
लपट झपट बहियां गहे डारी पुरुषोत्तम अङ्ग
लगावत है॥

१४

मैं गमने नहीं जइ हूं राम॥
नवल बहुरिया चली गमनको कर दुलहनके भेष।
नयन रोवैं जी हंसे मैं तो चली हूं पियाके देश॥
गमने न जइ हूं टोने चलइ हूं नैहर धूम मचै हूं।
जो मेरे गमनेकी बात चलै है तापर विष खै हूं॥
चलत चलत मोरे पांव पिराने सासुर है बहु दूर।
गुण अवगुण मो में एको नाहीं क्या ले मिलहुं हुजूर
कहे कबीर पिया मैं पायो बाजत अनाहत तूर॥

१५

अलबेली भई मदमाता सइयां पै रङ्ग डालूंगी।
चोवा चन्दन अतर अरगजा मुख मीड़के बदलो
निकालूंगी॥
फगुवा लेहौं पकर मोहनको सुन्दर रूपछवि
भालंगी।
पुरुषोत्तम प्रभुसों होरी खेलन नन्द महर
घर चालूंगी॥

१६

सइयां नयन मारो पिचकारी रे।
आय अचानक पकर लई मोहे दई है गारी
उघारो रे॥

१७

मैं तो चली हूं सइयांके देश नगर मोरे बाबुलदी तो
गमनवा रे।
आवो सइयां गरे लागो हमारे भोर कद होवै
मिलनवा रे॥

१८

कहां खेले हो होरी अजी तुम सांचो कहो।
छलको बतियां हमसों करत हो चले जावो छैला
वाहीके रहो॥
नयनन बिन यह अञ्जन दीन्हों नवल तिया को
चाह चहो।
पुरुषोत्तम कहां होरी खेले सगरी रैन मोको
अनङ्ग दहो॥

१९

इन मोहन वंशीवारेने अरे मोहे भोर ही आन
जगाई रे।
कह न सकत कछु लाजको मारो नई नई
प्रीति लगाई रे॥
अङ्ग न छुवो भुज न गहो मेरो हा हा करूं परूं
पाई रे।
हा हा करक जा इशक् रङ्गीले देतो मैं राम
दुहाई रे॥

२०

अब तो रंगाऊंगी सारी सइयां मिले मोहे चतुर
खेलारी।
रङ्ग वाही रङ्गरेज, वाही है हरे रङ्गकी छवि न्यारी॥

बहु रूप बहु भेष किये है सुन्दर सरस अपारो ।
ब्रह्मरङ्ग प्रभुसों होरो खेले एक हो रङ्ग रङ्गारी ॥

२१

ए रो मेरे पिचकारी मारो चटक सों कहा री कहों
साँवरे की मटक ।
हा हा करों सङ्ग लागो हो आवे काहूको नहीं है
साँवरेको अटक ॥
लपट झपट अम्बर गह लीन्हों बहियां पकर लीन्हीं
मोरी झटक ।
अबीर गुलाल केशर पिचकारी पुरुषोत्तम नहीं
माने हटक ॥

२२

साँवरे सङ्ग खेलन दे री अबके फालगुनमें सुन री
सजनी ।
मोहे जिन हटक एरी ननदिया तरपत बीतत
दिन और रजनी ॥
अबीर उड़ाऊं गरे लगाऊं लाज छाड़ कुलकाने
तजनी ।
तब यश गाऊं मोहन रिझाऊं कहा काम है काहू
सों वाहो भजो जो तेरो भजनी ॥

२३

वे छैला रङ्ग डार गयो री भीज गई मोरी सारी
सगरी ।
हों यमुना तट भरन गई जल बरजोरो मोरो
फोरो गगरी ॥
मानत नाहीं श्याम काहूकी चलन न पावे कोऊ
मग डगरी ।
मोहन ढीठ भयो या ब्रजमें कैसे बसे यह ऐसी
नगरी ॥

२४

आज रङ्ग है री ब्रज रङ्ग है री मनमोहन मिले
मनभावन री ।
श्यामसुन्दर प्रिय मेरे हेरे आइला मेरे जियाके
जियावन रिझावन री ॥

२५

बरजोरी कन्हैया मोसे आय कीनो रे ।
आय अचानक रङ्ग भरो मोहे बरबश गरवा लगाय
लीनो रे ॥
हों गुरुजनकी लाज सकुच रहो अम्बर झपटके
लपट छीनो रे ।
मोहनकी छवि देखत रङ्ग गई विवश भई कछु कहत
न आवे अनोखो छेलवा रङ्गभीनो रे ॥

२६

नयो होरी को खेलार होरी खेल न जाने ।
काहूको दलत और मलत काहूको काहूको
सुनावत ताने ॥
लाज सकुच सब डार दई है मानत न काहूको
आने ।
रसिक रङ्ग रङ्ग हो मैं बोरी काहूको न पहिचाने ॥

२७

होरी खेलन कैसे जाऊं री पिया मुखसे न बोलत
मोसे श्याम ।
औरनके सङ्ग रलियां करत है री नकुचावत मोरो
देख छाम ॥
यह यति मोरो भइलो सजनी मौजसे जानत
सगरो ग्राम ।
कंत न पूछत बात री मेरो धन्य सुहागिन
भयो है नाम ॥

२८

चटक चुनरिया रङ्गा दे रे मइको रङ्गा दे ।
यह चुनरी मेरे नई ओढने की लाख यत्नसे
बना दे रे
मैं तो करूंगी भेष योगिनीका लागी लगन मोरो
तुमसे कफायत ढढूंगी वन वन तइको लगा दे ॥

२९

कहां खेले हो होरो अजी तुम सांची कहो
नन्दनन्दन सांवरे पूजों तिहारे दोऊ पांव रे ।

हमसों खेल कहि और सङ्ग खेले कौन नवल तिय
घर धरे पांव रे॥
भाल महावर अधरन अञ्जन तीन तिलक कहां
पाए रावरे।
रसिक रङ्ग रगमगे रङ्गमें पाग पेंचके सवारों ठांव रे॥

३०

उठ चल री पिया सङ्ग खेलें फाग आछे रहस रहस
गरे लाग लाग।
यह अवसर नहीं है झूठनकों मेरे कहे तू तज वैराग
छविनायक आए तोहे मनावन सौत सराहत
तेरे भाग॥

३१

फगुवा मांगे नन्दको छैल मोसे।
सुन री सखी मैं क्या कहूं तोसे इतनी बात मैं
पूछूं तोसे॥
तनियां टटोलत हो हो बोलत आय जुरत है
मोरे अगोसे।
रसिक छैल छाड़त न गैल बहियां पकर सारी
अंगिया कोसे॥

भैरवी—यत्

होरी खेलन आई है बन बन चतुर सुघर हिल
मिलके नार।
हम तो चाहत रससों खेलन वे तो मारत
पिचकार धार॥
बाजत वीणा रबाब मृदङ्ग डफ सुहुवर झांझ
सुरचङ्ग कटतार।
चन्दन वन्दन बूका रोरी छिरकत सबपै
रसरङ्ग डार॥

२

सनमुख आय यशोमतीको लालन मेरे मन को
मोह लियो।
जात रही यमुना जल भरण को कोधों मुरली
फूंक गयो॥
एको घरी नहीं चैन है जीको तबसे वैसे जरत हियो।
कुलकी लाज तजी गोकुल मा सुन्दर श्यामने
दर्श दियो॥
तन मन धन है मोहनी मूर्ति करों न्योछावर
लोक तियो।
नाहीं तो नीच मृत्यु है वियोगिनी बिन मनमोहन
नौज जियो
मोहनको हियो वश कै तुम काजिम प्रेमके मद भर
भरके पियो॥

३

होरी खेलन नहीं आए नन्दलाल कौन नवल तिया
तुम्हें बिरमाए।
रजनी अनत कहां जागी मोहन रहस रहस गर लाए॥
मोतियन हार चुमै कर कङ्कण अधरन तंबोल खवाए।
रसिकराय रगमगे रातके फगुवा दिए मन भाए॥

४

सखी इन मोहन ने धूम मचाई।
होरी अवसर पायके रङ्गरस वश कर डारी सब
प्यारी हमरी चूनर भिजाई॥

५

आज सुहागकी रैन री गावो बधावा सब मिलके
सुवासन।
गुणी गन्धर्व सब मिल मङ्गल गायो जेहों सुमन री
वासन॥

६

कछु कहे न गए समझाय मोरे लाल हमसे
बिदा मांगे यौवनवा मोरे राम।
काहूके हाथ लिखूं व्रज पाती काहूके हाथ
सन्देशवा मोरे राम॥
जबसे गए पिया भए हैं वाहीके किन सौतिन
बिरमाए मोरे राम।
अब तो दर्श वेग दो प्यारे तलपत जिय वेग आए
मोरे राम॥

७

ए री मैं तो बार बार नित्य नई होरी खेलन
पिय पै गई ।
अम्बा मौरे टेसू फूले और फूली है जुई ॥
नए नए द्रुम नए पल्लव नई ऋतु और तरुणी नई नई ।
नवल तिया नव पिया नव यौवन रसिक रङ्ग
पिचकारी दई ॥

८

क्या गुलाल पिया मोपै डारो ऐसो चटक रङ्ग
अङ्ग हमारो ।
आवो सइयां मुझे देख सेजपर चन्द्र जैसा मुखड़ा
यौवन जैसे तारी
कृष्णानन्द लागि उर मेरे आनन्द केलि मदन
विस्तारो ॥

९

बनी आई सइयो होरी दी बहार री ।
अबीर गुलालके बादर छाए रङ्गकी परत फुहार री
केशर दी पिचकारी चलां दे माना बरसत मेघ
अपार री ॥

१०

सूही सारी मेरी बिगर जायगी मत मारो पिचकारी
हो लाला मत मारो पिचकारी हो ।
अधिक मोलकी सारी हमारी जरकशी छोर
संवारी हो ॥
कारो कामर कटि काछनी तुम्हारे कोज न सकत
बिगारी हो ।
प्रेमरङ्ग पिचकार सों भिजई चितवत बश कर
डारो हो ॥

११

नयन गुलाल से लाल बने हो लालो न छिपत
ललाकी सलोनो ।
कुञ्ज गलिनमें अलिन की टोली में टाढ़ो कपोल
मिलो है मिलोनो ॥
रङ्ग रङ्गीली सो पीली पिछौरी छोर सों गीली
गुलाब कलोनो ।
प्रेमरङ्ग प्रभु परकीया मोहन हारे सो हियसों
लगाए लीनो ॥

१२

मेरो चुनरो वनवारी भिजई ।
अब कैसे जाऊं ब्रज मोरी सजनी दधिकी मटकिया
छीन लई ॥
बहुत सही न कही यशोमती सो कौन कौन
सुतकी सिखई ।
छविनायक जो रही सोई राखे जान दे जौन
गई सो गई ॥

१३

देखो अब हीं जात है वनवारी मेरी आंखन चोवा
रङ्ग भर डारी ।
धाय धाय पकरै गर लावै बहियां पकर
अंगिया फारी ॥
राज करै यशोदा तेरो नन्दन दिनकी होत है ठगवारी ।
वरज रही वरजो नहीं मानत लपट झपट
खैंचत सारी
कृष्णानन्द फाग रस मातो चितराती तेरी वलिहारी ॥

१४

रङ्ग भरे घर आए सइयां मोरे धन्य विरहिनोको
भाग री ।
सब सखियन मिल मङ्गल गावो चलो हो
सुमनके बाग़ री ॥
चलि के पूजो गौरी गणपति जिन मोरे दिहल
सुहाग री ।
कञ्चन थार कुसुम केसर रङ्ग तब खेलो प्रियसे
मैं फाग री
गावे गूदर पिया अपना पायो रहसों गरवा लाग री ॥

१५

ऐसो निठुर रङ्ग डारो कन्हैया मोरी अंगियामें लग
गयो दाग़ री ।

अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर हमसे मचायो फाग री॥
ग्वाल बाल सखा चहुं दिश घेरे केह मग जाऊं मैं
भाग री।
गावै गूदर घर जाने दे मोहन रहों चरणमें लाग री॥

१६

कासे कहूं मैं तो जियकी हाल कीन्हीं सांवलिया
ने बावरी।
जा तन लगै सोई तन जानै जाको विरह को घाव री॥
मेरे मन बसी सांवरी सूरत अब पति रहौ के जाव री।
विरहको सागर सूझत नाहीं भई हूं भ्रमरको मैं
नाव री॥
एक विरह दूजी लाज गुरुजनकी तीजी मिलन को
चाव री।
नहीं रोवत नहीं हसत दुर्जन लखि सौतिन
लगायो दाव री
गावै गूदर उर बसहु विहारी मोहे छवि भावत
राव री॥

१७

होरी खेलन अजहूं नहीं आयो मेरे यौवनको नवल
बहार री।
तब कहा करि हो प्रीतम प्यारे ज्यो अब हीं लेहु
संभार री॥
हम को नहीं सहयां तुमको लाज है लायो तू
केहको डार री।
जबते गयो भयो वांही के दे गयो विवश पहार री॥
गावै गूदर मैं तेरी कहाऊं अब भरमों केह द्वार री।
ढरक जात अज हूं नहीं आयो यौवनको नवल
बहार री॥

१८

मैं छोटो तोहे लाज न आवे वरवश गरवा
लगावत री।
लपट झपट झकझोरो महको नयनसो नयन
मिलावत री॥
मैं अबला तुम सुघर चतुर हो पिचकारिन
रङ्ग चलावत री।
रसिक रङ्ग रस वश कर डारो फगुवा लेत मन
भावत री॥

१९

हमारे कर्मगत याही लिखो तुम करहु सौत सङ्ग
राज री।
सब सखियां मिल फाग खेलत हैं नानाविध
कर साज री
कृष्णानन्द तिहारी तिहारो सों तोहि न आवत
लाज री॥

२०

महिमा छाय रही चारो युग अवध पुरी खेलै
फाग री।
सीताहरण मरण दशकन्धर लङ्कपुरी लायो आग री॥
तेंतीस बन्ध छूटे देवतनके आनन्द करण शुभ
लाग री।
लङ्काराज्य विभीषण दीन्हीं मिलते हो बड़ भाग री॥
गावत वेद भेद रघुपति को नारद शारद नाग री।
अज महेश श्री वाल्मीक मुख खग हूं माष्यो काग री॥
त्रेता चरित्र कियो नानाविध ताही भजो भय त्याग री।
गावै गूदर रङ्ग सेऊं सियावर या रङ्ग को अनुराग री॥

२१

मेरो मन उरझियो बार बार होरी खेलत अकेली
नार री।
जाकी इच्छा सब जगको मोह्यो ब्रह्मा रुद्र त्रिपुरार री॥
जो कोई गए भए वांही के मार्ग रङ्ग मोहनी
डार री।
खेलत हार गए मही ऊपर बड़े बड़े नर अवतार री॥
नर वपुरनकी कौन चलावै डूबे वहें मंझ धार री।
गावै गूदर मन समझके खेलो फागुन रूप
बाजार री॥

२२

कौन नगरसे मैं खेलन निकसी वाही नगर को मैं
जांव री।
है वा नगर डगर बहु तेरा लखो न परे वह गांव री॥
जो हेरो मोहे रामनगरमें अनाहत वाको ठाव री।
गावे गूदर गुरुदेव बतायो सब रङ्ग वा को नाव री॥

२३

इच्छाकारी प्रगट भई होरी खेलत उतपत्ति माया री।
आदि ज्योति कर्तार शब्द करि उत्पत्ति तीन
बनाया री॥
इव तीनो विस्तार किए महिमा सब उपजाया री।
पति आप ही उत्पत्ति पुनि आप ही आप ही
आन लखाया री॥
निर्गुण ब्रह्म सगुण हो आए वेद विदित गुण गाया री।
आदि अन्तमें सब जग मोह्यो किन हूं अन्त
न पाया री॥
अच्चर ब्रह्म नाम अनन्त एक है घट घट में
लखाया री।
गावे गूदर यह रङ्ग अलौकिक लौकिक रङ्ग
समाया री॥

२४

इन्द्रादिक सुर सङ्ग लिये उमापति फाग मचायो री।
वृषभ चड़े शिव शोभित सुन्दर सिंहोनाद बजायो री॥
चमकत शिखर रविकी किरण सम लाल पुष्प
रङ्ग छायो री।
नारद मुनि कर वीणा बजावत सारद सङ्कुचित
गायो री॥
मुण्डमाल आभूषण तचन नन्दीगणको पठायो री।
सुनत खबर रम्भादिक आयी नृत्यत सबको
रिझायो री॥
सामवेद ब्रह्मा मुख उच्चारत आनन्द प्रेम बढ़ायो री।
शिवसों फगुवा लीन्हीं गौरी बहुविध नाच नचायो री
रामरङ्ग हर वर धर दीन्हीं लीन्हीं कर सुख पायो री॥

२५

होरी हो रही है नन्दके द्वार।
अबीर उड़त औ कुङ्कुमा मार॥
कोउ व्रजनारी चलत नहीं गैलन गारी गावत
नन्ददुलार।
मृदङ्ग वीणा औ ताल डफ झनकत पिचकारन
परी धार॥
राधा धाय आय मुख मीड़त मोहन तन
धर लीन्हीं हार।
श्याम देख सकुचाने मन ही मन ले गुलाल कर
कुच पै डार
रामरङ्ग प्रभु अपने रङ्ग में बोर दई सब व्रज की नार॥

२६

कौन स्वरूप संवारूं सखी री मोरी आज
गमनवाको रात री।
जब सन्मुख होइ हूं प्रीतम सों कैसे करूंगी
मैं बात री॥
जो सुख कियो भयो दु:ख आखर मोरे जिय
कछू न सुहात री।
मिलनेको आई सखी सहेली भई सइयां के
मैं सात री
गावे गूदर मेरो नैहर छूटो अब सासुरके मैं जात री॥

२७

आज संदेसा आयो सइयांको मोरे करह गमनवाको
साज री।
नैहरमें हम खेल गमायो सासुरको बड़ लाज री॥
सासुर में धौं कहा सुख होइ है मेरो छूटो नैहरको
राज री।
गावै गूदर जो पिया नहीं राजी तो नैहर आवै
मोहि लाज री॥

२८

फाग सुहाग मोरे घर नित्य है भीजी हूं मैं तो
पियाके रङ्गमें।

मो पै कोई पिचकारी न मारे लाल वसत है
मोरे अङ्गमें
भुरमट तनक उ नहीं मोहे भावत जबसे परो हूं
तुरावके सङ्गमें ॥

२९

मोहे बोरो सोई रङ्गमें कान्हा और कीन्हीं जोई
मनमाना।
भिजवत मइको सब छिन जाना घर करि हूं
मैं कौन बहाना ॥
कौन अपना कौन बिगाना राखोंगी जाको काना।
दास रङ्गो है श्यामके रङ्गमें वाहो भावै रङ्ग न आना॥

३०

मनमोहन मोहे अपनाय लई और सबनसों
छोड़ाय लई
मनमोहन रङ्गे मोरे रङ्गमें मैं मनमोहन रङ्ग मई॥
जान अजान जान भए दई ये कैसी आन ठई।
नहीं जानो कछु हरि अन्तर यति दास फंसी है
आय नई

जा दिन सइयांको देखन पइ हौं वा दिन रङ्ग
मचै हौं री।
पिय मेरा मैं पियाको सजनी पिया पै जियरा
लुभै हौं री॥
रङ्ग वही रङ्गरेज वही मैं तो सुरङ्ग चुनरिया
रङ्गै हौं री।
मेरे तो जिय में ऐसो आवत है लपट झपट गरे
ले हौं री॥
बालनकी सेली जो बने तौं अङ्ग विभूति रमै हौं री
कृष्णानन्द यही आशा चित्त हर्षि धाय उर ले हौं री॥

३२

फाल्गुन का मस्त महीना।
अबीर गुलालके बादर छाए बसन रङ्गाय सब ही
को दीना॥
हो हो हो कर गारी गावत कोऊ काहू को नाहीं
सखी चीना।
कोई नाचत कोई मृदङ्ग बजावत कोऊ डोलत है
रङ्ग में भीना॥

३३

चले जावो लला अब हां रे अबीर गुलाल मो पै
जिन डारो।
भर पिचकारी मेरे मुखपर डारो सारी अम्बर फारो॥

३४

श्याम कैसी मुरलिया बजाई है ए हो ध्वनि सुन
उठ धाई व्रजकी नार।
मुरली बजाय सबको मन मोहो मारो केसर
पिचकार॥

३५

आयो वसन्त कन्त घर नाहीं कैसे के चैन आये
मोरी गुइयां।
एक वन फूल सहस वन फूले कोयल कुहुक सुनाये
मोरी गुइयां॥

भैरवी—तिताला

साधो खेल लो जगमें होरी राम नाम है सांचा।
धरणी जल तेज पवन आकाश ए पांचो पचीसो
मिलके जांचा॥
काहेको भ्रम भूलत हो झूठ तजो सब वाचा।
जलसे उपजे जलसे फूले कुबुद्धि तजे यह कांचा
कहै कबीर गूंगेका सपना गूंगा होय कर वाचा॥

भैरवी—यत

गोरी आया होरीका खेलार री।
अबीर गुलालके बादर छाए रङ्गको परत फुहार री
कृष्णानन्द हर्ष घर बाढ़ो नव तनमन दोन्हों
मैं वार री॥

२

ए हो नन्दनन्दन जू ढीठ लङ्गरवा सखी मोरी
बहियां मरोरे री।

सौतन के वे शरण गए हैं सखी मोरा हरवा तोरे री
उनकी चुनरिया रङ्गमें भिजोई मेरी तनियां
टटोरे री ॥

३

ए हो निपट ढीठ गिरधारी लाल ए री मुझे
रङ्ग ही में बोरे री ।
रसिया नेक कहा नहीं माने कर वरजोरे री ॥
अबीर गुलाल मलत मुख सखी री टुक नयन
जोरे री ।
ख्याल खुशाल करत अलवेला नन्द जूका किशोरे री ॥

४

ए हो मनाय लेत गोरी को सांवरो सनुमुख
अबीर चलावे ।
सङ्ग मोरे सोवत अङ्ग हो छिपावत अपनो
भेद न बतावे
अङ्गुरी सैन पिया मोहे जगावे वरवश मरवा लगावे ॥

५

कहि दीज्यो हमारी राम राम जो काहू को
मिलहिं श्याम ।
वगर नगर और द्वारे ही द्वारे होरीके खेलनकी
धूमधाम ॥
उमड़े यौवन पिया मानत नाहीं कैसे के राखूं मैं
थाम थाम ।
भूख पियास राधिका छाड़ा ध्यान तिहारो अष्ट याम
कृष्णानन्द अरज इतनी मोरी क्यों छोड़ो प्रभु
ऐसो वाम ॥

भैरवी—तिताला

हो होरी खेलदा कुंवर कन्हाई ।
कित बल जावां असी जानि न पइयां वे भर
पिचकार चलाई ॥
ले अबीर असी मुख डारदा कुच धर कण्ठ लगाई ।
हा हा करे दियां मन सकुचे दियां मैंनू अकेलो पाई
रामरङ्ग मोहन मैंड़ी गाल सुन कर धर रंगमें
भिजाई ॥

२

हो सांवरिया भर पिचकार चलाई ।
कोटि उपाय कियो री सजनी तब हूं दर्द न आई ॥
कुच मुख करते धर लियो मेरो ग्वाल सों गारी गवाई ।
उरहन देन चली री नन्द पै यशोमती आगे सुनाई ॥
मगमें चली भेंट भई श्याम सो अङ्कमें भर समुझाई ।
रामरङ्ग दोऊ रङ्ग एक भए घरको सुध विसराई ॥

३

डफ ताल बजावे होरी खेले कन्हाई हो नव
ग्वाल बाल ।
मोहन पीत वसन तन पहिरे उर सोहे वनमाल
पूर्ण चन्द्र बनो मुख जाको कंस को है यह काल ॥

४

ए सखी आय भुलाई हो ।
दूरते निरखत है नन्दनन्दन देखत चली पराय
झपट श्याम धर लीन्हीं मन ही मन पछताय कुच
धर लाल बनाई हो ॥
गोरस खाय मटकी धर फोरत कंसको करत पुकार हूं
मैं अवला कछु ज़ोर न मेरो आखर जात गंवार
और अबीर उड़ाई हो ।
सङ्ग सखा मिल इत उत देखत कण्ठ सों कण्ठ लगाय
हा हा करत है चरण परत है कोई न होत सहाय
रामरङ्ग प्रभु लपटाई हो ॥

५

होरी याह व्रजमें नन्दनन्दन जू खेलत ।
बाजत बाजे बहुविध साजन मर मर सर रङ्ग मेलत ॥

पिचकारी मारन आई रे हो सांवरो सलोनो
पिय प्यारो ।
सांवरो सलोनो गोरी बन बन आई मैं अपने
साहब पर वारो ॥

७

नन्द महरवाके सुघर लाल मो को गेंद को चोरी
लगावत री ।

कुच तनियां और अङ्ग निहारत तापर घात
लगावत री ॥
लागो रहत सघन वनकुञ्जन जब देखत मोहे
आवत री ।
ठाढ़े देखत है सब व्रजवासी ता बिच आपत्ति
मचावत री
गावे गूदर मैं तेरी चेरी काहे को हास करावत री ॥

८

कौन खेलाए साजन विन बावरी ऐसो डोलूं
हरि विन होरी ।
तेल फुलेल सभी तज दीन्हों पान खान विसरो री
अब शिर दीन्हों सइयां तोरे वश मैं जावो तो जावो
रहो तो रहोरी ॥

९

होरी के दिनन तोको लाज न आवे
मो को वर वश नयन लगावे री ।
एक तो रही करहैयांको पातर उमंगी यौवन
सतावे री ॥

१०

कहा कहो वाको सब नारी गणमें ए री मेरे
पिचकारी मारी चटक सो ।
एक तो ढीठ और पैंड़ा न छोड़े हो जो डरो मैं
वाके अटक सो ॥
कुछ मुखसे कहों तो निपट लजात है और अञ्चर
गहत है झटक सो ।
हा हा करे और हो हो अचपल फिरके नाचे देया
और ही मटक सों ॥

सिन्धु—भैरवी

मेरा हरवा चुभि चुभि जाय होरी मैं ना खेलोंगो
फाग ॥
अञ्चर पकर मोरा मुख मल लीन्हों नेक न आई लाज।
अबीर गुलाल मल्यो मुख मेरे कृष्णानन्द व्रजराज॥

पीलू—भैरवी

अतर गुलाब और चोवा चन्दन मेरे मल मल
जात वदन में ।
गहे पकरूं तो हाथ न आवे छिप छिप जात कुञ्जनमें॥
लपट झपट बहियां गहे लीन्हीं चिपट जात
छैला तनमें ।
बरज रही बरज्यो नहीं माने कहा जानूं क्या
वाके मनमें ॥
हा हा करत हौं पइयां परत हौं पिचकारी
न मारो अंगियनमें ।
अचपल होके लागो ही आवे जब देखूं तब ठाढो
अङ्गनमें ॥

२

होरी खेलत नन्दनन्दन री भानुसुता प्रिया
चन्द्रवदन री ।
ओड़ल अबीर गुलाल विविध ले अतर गुलाब
चन्दन री ॥
पिचकारिन की मार परस्पर देख रतिपति
लज्जित मदन री ।
वृन्दावन मध्य खेल रच्यो है कुञ्जभवन वन सघन
सदन री
जानकीदास रङ्ग व्रज छायो वीथिन वीथिन सुख
सदन सदन री ॥

३

लाल गाय गाय ले ले नाम हमार मो को गारी
देत सबनमें ।
जात रही गोकुल दधि बेचन जब देखूं तब वन घनमें॥
और सखिन सों मुख हू न बोले मोरे लपट जात
अङ्ग अङ्गनमें ।
कौन उपाय करों व्रज आली ऐसो वसो वाके
तन मनमें
गावे गूदर सास ननद चवाइन झठ सांच लगावे
भवनमें ॥

४

अब जान न पइयो हो लला तुम आन पड़े
वश मेरे लला ।
गारी मैं दूंगी दिलाऊं सबनमें मुख मोड़ूंगी
मैं तेरे लला ॥
पिचकारिन मार गए कुञ्जनमें कलका बदला
हेरे लला ।
कुन्दनदास प्रभु पकर लिए है मन माने फगुवा
देरे लला ॥

५

होरी खेलत हो हो रे लला बहियां न गहो बहियां
न गहो तुम जावो चला ।
काहू को लपट और झपट काहू को पकरत
हो जू चपला ॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर पिचकारन मार दई
है भला ।
नन्द महरके ढीठ लङ्गरवा सुन्दर रूप देखाय छला ॥
आज रङ्ग होरी मा रङ्ग है साजन मिला बुरा भला ।
निज़ामुद्दीन औलिया जग उजियारा मुंह मांगे
बर मला ॥

६

पिया मोसे आंख छिपाए कहा होत ए री तेरो
फैल रहो कजरा ।
पिया नागर को मिल आई जो तुम टूट गई
दुलरो हार गजरा ॥

७

को खेले तो से होरी बहियां पकर झकझोरी लला ।
बरज रही बरजो नहीं माने बरबश मलत
मुख रोरी लला ॥

८

यशोदा लाल ब्रजराज लाडलो होरी खेलन
मोसे आयो री ।
कर लीन्हें कञ्चन पिचकारी केशर रङ्ग भरायो री ॥
अबीर गुलाल लिए भर झोरी चोवा चन्दन
लिपटायो री ।
ख्याल करत अलबेलो मोहन रसिया खेल कहायो री ॥

९

फाल्गुनकी ऋतु आई सखी होरी खेलों गो
कुञ्जविहारी से ।
केशर रङ्ग रंगूंगी पीताम्बर फगुवा लूंगी
गिरिधारी से ॥
चोवा चन्दन लिपटाऊंगी अङ्गमें केलि करूं
बनवारी से ।
ख्याल खुशाल मन भाए फगुवा लूंगो खेल
खेलारी से ॥

१०

अनियारे घनश्यामके नयन रङ्गमें भरे रतनारे री ।
निरखत लगत छके री तरसके उमंग भरे कजरारे री ॥
चितवत चित्त चोराय लेत हैं चञ्चल चपल अपारे री ।
ख्याल खुशाल लोभाय लियो मन नख शिखते
सुकुमारे री ॥

११

आज होरी खेलै पिय प्यारी री ।
अबीर गुलाल को धूम मचो है रङ्ग भर मारो
पिचकारी री ॥
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ गारी देत सब नारी री ।
जानकीदास निरखि या छवि पर बार बार
बलिहारी री ॥

१२

खेलन आए नन्द गांवते रङ्गभीने बरसाने ।
मृगमद रङ्ग अरगजा चोवा नरनारी सब साने ॥
बिन काजर कजरारी अंखियां चढ़ीं मदन खरसाने ।
कृष्णजीवन लछीरामके प्रभु प्यारे जो घर थर
थरसाने ॥

१३

तक तक मारे पिचकारी मोरी अंगिया रङ्ग सों
भर डारो ।

वरजोरी मलत गुलाल वदनमें भीज गई तन सारी ॥
देखत पुरजन गुरुजन सब ही मानो विनती हमारी।
अधर पकर बहियां झकझोरी तापर देत हो गारी ॥
अबीर उड़ावत धूम मचावत गावत दे दे तारी।
कृष्ण रसिक प्रभु होरी खेलत गोकुल गैल में न्यारी ॥

१४

केशर को पिचकारी भर मारी मेरे लग लग
जावे तनमें।
अबीर गुलाल और चोवा चन्दन ले मल मल जावे
वदनमें ॥
मेरे लपट झपट कर बहियां गहे लीन्हीं चिपट
गयो मेरे अङ्गनमें।
जहां देखूं तहां आगे ही ठाढ़ो घर घर व्रज
वन घनमें ॥
लपक झपक मेरे पाछे अरो है भाग जात है सदनमें।
कृष्ण रसिक सङ्ग लागो ही आवे होरी खेलावे
फाल्गुनमें ॥

१५

छवि स्वामीको रङ्ग अनादरी किये बहुत निखेद री।
सूत्रकारको वाणी सुनकर अजमुख भाष्यो वेद री ॥
पायो न आदि अन्त विन वाको ज्ञान ध्यान
कर भेद री।
गावै गूदर सब थाके खेल कर रह गयो भेद
अभेद री ॥

१६

मनमोहन चतुर खेलार बन बनके समझ क्यों न
जइये री।
बनके जइए प्रिय को रिझइए तब मन वाको
लुभइए री ॥
सुघर न होय सुघर ह्वै जइए ना तर क्रूर कहइये री।
अशरफ पिया मेरो अति ही रङ्गीलो वा सों प्रीति
लगइए री ॥

१७

अपने रङ्गमें रङ्ग ले रङ्ग रङ्गीले छैल छबीले।
निज़ामुद्दीन औलिया महबूब इलाही प्रेमप्रीति
प्रसङ्गीले ॥

भैरवी—यत

उमड़े यौवन पर रङ्ग न डार ए हो मनें करूं
तोसे बार बार।
यह विरहन भई नींदको माती यौवन भयो तेरे
गरे को हार
गावै गूदर पिया वेग खबर ले सूखे पत्र नहीं
जुड़ेंगे डार ॥

२

नयन विरहिया तेरे पिया रे रङ्ग रस वश कर लीन्हीं
जियारे।
अंधियारे कारे कजरारे चञ्चल रतनारे हैं मतवारे
बांक बख़्श कहै यदुरायो सो विन सइयां पियारे
सुरत विसारे ॥

३

पिया को मनाऊं मैं यइयां परौंगो करूं योगिनको
भेश री।
गेरुवा वसन भस्म तन ल्याऊं शीर्ष बढ़ाऊं मैं केश री॥
पिया वसै हिय में जानत नाहीं ढूंढू जङ्गल परदेश री।
गावै गूदर पिया अपनो मैं पायो जब गुरु दयो
उपदेश री ॥

भैरवी—तिताला

जो यह फाग रच्यो भवसागर अजब खेलारी को
खेल री।
नटवा एक कला बहुतेरी रङ्ग सबन में मेल री ॥
समझ बूझ मन आदि अन्त तक राख्यो न कोई
अहेल री।
गावै गूदर जो जियके डरे नहीं सोई सोई रङ्ग
विच हेल री ॥

२

श्रीगणेश अहिवात दे हमको फाल्गुन पियको
मनावत री।

कञ्चन थार सुगन्ध पुहुप लै नित्य उठ देव
मनावत री ॥
सोनेकी छत्र धरों शिर ऊपर धूप दीप मन भावत री।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर ताल मृदङ्ग
बजावत री
कहै गूदर सुनो गौरीसुत मैं तेरे यश नित्य गावत री॥

२

सुघर पिया हो रसिया होरी खेलन मो पै आए।
सब ही वसन रङ्गाए तनमन रङ्ग बनाए ॥
गोप ग्वाल बार व्रजके सखा लिए अबीर गुलाल
उड़ाए।
चावा चन्दन और अरगजा केशर रङ्ग छिरकाए ॥

जंगला—भैरवी

होरीके खेलैया भर भारी पिचकारी हो।
सुरङ्ग चुनरिया सब ही बोरो ले गुलाल मुख
डारी हो ॥

४

होरी के खेलैया मोसे कीन्हीं बरजोरी हो।
हौं यमुना जल भरन जात रही बर बश बहियां
मरोरी धर झकझोरी हो ॥
कञ्चनकी पिचकार केशर रङ्ग भर छिरकत
मेरी ओरी हो।
चीर झटकावत ढिग ढिग आवत प्रेमरङ्ग प्रभु मांगे
मो सों दोउ करजोरी हो ॥

५

रे खेलवैया स्वामी आज मैं पायो नन्दकुमार
ऐसो कौन देहों रङ्ग डार।
अबीर गुलाल केशर कुसुम रङ्ग भर भर अपने हार ॥
ऐसी होरी खेलो मोहन से कर गहे करो विहार।
उरझियो सखी मानो तलाद्रुमन में इन मोहे
नाच नचायो बहु बार ॥
सोई सोई नाच करो मोहनके अबके दाव है हमार।
जाने न पावे नन्दमहर को सब सखियन को
करो जुहार ॥

दो कर मैं बांधो मनमोहनको प्रेम मोहनो डार।
फगुवा लेहु देहु रङ्ग भरि भरि डार सुमनको हार
गावे गूदर प्रभु पद गहे लीजे जीवन तन मन सुधार॥

६

श्याम मोहे भोर ही आन जगाई।
कहे न सकत कछु लाजको मारो नई नई तान सुनाई
कृष्णानन्द निरखि प्रभुको मुख आनन्द उर न समाई॥

७

हमरी उमङ्ग चाहे होरी खेलनको सखी तेरे यौवन
ने धूम मचाई।
सोती थी मैं अपने मन्दिर में मोहे विरहने
आन जगाई॥
सब गोपिनमें नाचत राधा कान्ह ने मुरली बजाई।
जो लोगन में बांह पकरि है दूंगो मैं राम दुहाई
अपने सइयां को मैं बालो भोला अंगिया कहां
मसकाई॥

८

रे कन्हैया गुलाल मले और कुच पकरत है तेरे
जिय में कपट।
नयन सैन करे और अङ्गुरी नचावे कहा होत है
लाख मटक॥
तरुणी बारी नारी आवे व्रजमें सबको देखावे
अपनो चटक।
राज करो ऐसो खेल यह अचपल आपो खेले
और जावे सटक॥

९

मोरे सब अङ्ग भीजे मारो सइयां पिचकारी।
अति बारी सुकुमारी नवल तिय अपने सइयां को प्यारी॥

सिन्धु—भैरवी

बीरो डोले डगरमें तुम समझत नहीं गंवार।
फाल्गुन के मिस उर अञ्चल दे यौवन भार संभार॥

२

सखी री आज डगरमें खेलूंगो पिय से फाग।
पिया मेरा मैं पिया को रे सजनी धन्य धन्य
मेरो भाग॥

३

री बौरी पिय को मनाय ले फाल्गुनके दिन चार।
प्रिय चतुर तू निपट भयानी बीती जात बहार॥

४

हमरी सुध बालम अज हूं न लई री।
आए वसन्त कन्त घर नहीं तो यौवन जाय दई री॥

५

मैं तो सगरी भिजोई लङ्गरवाने छैलवाने डारो
गुलाल री।
चोवा रे चन्दन और अरगजा अबीर
उड़ावत लाल री॥

झंझौटी-भैरवी—चौताला

सुन्दर वदन पे सोहत लाल गुलाल मदन गोपाल।
मुकुट लटक भ्रूकुटी मटक कुण्डल झलकन
दृगन चमकन कटि पट पीत बजावत मुरली तान
रसाल॥
बाजत बीणा मृदङ्ग चङ्ग मुरचङ्ग औ जलतरङ्ग रङ्ग
छिरकत हर्षत व्रजवधू डार दई उर सुमन वनमाल।
मन इच्छा सो फगुवा लीन्हीं कीन्हीं सब भाती
नयनन अञ्जन आंज पकर बेबश कीन्हीं नन्दलाल॥

२

अधर धरे री बांशरी नृत्यत मण्डल श्याम।
ध्वनि सुन गोपी झुक झूमत बढ़ो अधिक तन काम॥
ले गुलाल मुख मीड़त मेरी देखत सगरी वाम।
चर्चे रही व्रजकी वनिता सब जाय कहींगी धाम॥

जङ्गला—भैरवी

फाल्गुनके दिन चार खेल ले होरी।
इस यौवनका मान न करिए यह यौवन दिन दो री॥
इत तें आए कुंवर कन्हैया उत तें राधा गोरी।
सखी सखन की सङ्ग ले दोउ खेलत कृष्ण किशोरी॥

झंझौटी-भैरवी—तिताला

गोरी अंगिया तोरी सोंधे में बोरी।
नयन तिहारे कटाक्ष लगत हैं अधरन पर
मोतियनकी जोरी॥
चन्द्र सो वदन तेरो री गोरो होरी की ऋतु थोरी।
कटि केहरि कदली सी जङ्घा औ श्रीफल कुच
दोउ बनो री
रसिक रङ्ग को रस बश कर लीन्हों चितवन
दृगन ठगोरी॥

२

रङ्ग में बाट चलत यशोदाके लालन बोर दई
मोरी सारी।
आवत थी मैं अपने घरते मिल गयो मोहि अचानक
आरी॥
सागर रङ्ग बनाय मुहब्बत बहियां पकर दे मारी।
सारीके बदले सारी लेऊंगो और देऊंगो गारी॥

३

बोर दई अंगिया मेरी रङ्गमें।
धर बहियां झकझोरी मोरी रस बश कर लई
अपने ढङ्गमें॥
गारी गावत नयन नचावत पिचकारी भर
मारी अङ्गमें।
चन्दन वन्दन अबीर गुलाल ले बरजोरी मुख मीड़त
रसरङ्गमें॥

४

ए नन्दनन्दन व्रजराज कुंवर सो एरी मेरी
वाञ्छा अधिक सनेह।
सब सखियन मिल आई महर घर मोहन मांग्यो
दो चार दिना होली को अवसर घटे तो दूनो लेह॥
अबीर गुलाल चन्दन वन्दन ले केशर कुङ्कुम
गालन देह।
रसिकराय को रस बश कर लियो मनमान्यो
फगुवा लेह॥

५

चली जात मदमाती गोरी।
आगे नाचत कान्हर प्यारे पीछे नाचत राधा गोरी॥

बाजत ताल मृदङ्ग चङ्ग रङ्ग वीणा रबाब बांसरी
भोरी ।
भरत परस्पर सखियन मोहन बलिहारी बोलत
हो होरी ॥

६

होरी खेलत व्रजराज आज वनकुञ्जन में ।
अम्बवा मोरे वन घन फूले भ्रमरन पंक्ति
कोयलिया बोले रसिक आनन्द पुञ्जन में ॥

७

चला जा रे कन्हैया मैं गारी देत हूं काहे को
खड़ा मोरे तीर रे ।
भर पिचकारी मेरे मुखपर मारी आखर जात
अहीर रे
लक्ष्यानन्द रहत अलबेलो काहूको होर न पीर रे ॥

८

मनमोहन ने मेरी अंगिया रङ्ग भर डारी ।
इस अंगिया में लाल लगी हैं मोतिन लगो है भारी ॥

९

तोरे लला ने मोसे अचानक प्रीति करी रे ।
प्रीत करी कुछ रीति करी रे ॥
हौं यमुना जल भरण जात रही शिरपर गागर
रङ्ग की भरी रे ।
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में हंस हंस बहियां
आन धरी रे ॥
ऐसो ढीठ लंगर मनमोहन चोलिया टटोलत
घरी घरी रे ।
लक्ष्यानन्द भई मैं बावरी खड़ी पुकारत हरी हरी रे ॥

१०

मनमोहन वनवारी सांवरो होरी को खेल वन
रह्यो री रङ्गमें ।
ग्वालवाल सङ्ग लिए होरी गावें उत राधे सखी
लिए है सङ्ग में ॥

११

सांवरे ने मरोरी गोरी बहियां मोरी ।
मेरो रङ्ग मेरी पिचकारी और अबीर गुलाल
की झोरी ॥
कर झकझोरी छीनके हंस हंस और सखियन सों
खेलत होरी ।
कारे कहूं कछु बन नहीं आवे घर सों निकसी थी
सासको चोरी
नहीं तो वजूहन ऐसो रिझावती जात भूल
वाको बरजोरी ॥

१२

मैं अपने मोहन सों होरी खेलौंगी बनाय बनाय ।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर रङ्ग बरसाय बरसाय ॥

१३

कान्हा कारी कमरिया तो पै कौन रङ्ग डारो ।
सुरङ्ग चुनरिया हमारो भिजोई तुम्हरो कहा बिगारो ॥

१४

रसिया होरी खेलन मोसे आए ।
रंगे वसन अङ्ग लगत सुहाए चोवा चन्दन लिपटाए ॥
अबीर गुलाल उड़ावत गावत ऋतु रस छकन छकाए ।
ख्याल खुशाल करन चित चाहत यौवन उमङ्ग
उठाए ॥

१५

नन्दराय को कुंवर लाड़लो भयो री अनोखो
खेलारी व्रजमें ।
रङ्गत केशर रङ्ग अबीर लगावत करत फिरत
मतवारी व्रजमें ॥

१६

होरी खेलन आई सब व्रज गोरियां ।
कोई कर लिए कञ्चन पिचकारी कोई लिए
भर भर रङ्ग कमोरियां ॥
कोई लिए अतर अरगजा केशर कोई लिए कुङ्कुम
चन्दन रोरियां ।
कोई लिए अबीर गुलाल सखी कर कोई चतुर
कोई लागत भोरियां

करत ख्याल श्याम रङ्ग मिलके व्रजकुञ्जन में मिल
एक ठोरियां ॥

१७

श्याम तेरे देखन को मोरे नयनन बान परी।
मोहनी मूर्ति निरखत हारी चितवन नेह भरी ॥
अब चित चाहत केलि करों व्रज कुञ्ज कुञ्ज सगरी।
ख्याल खुशाल मदनमोहन प्रिय निज वश प्राण करी॥

१८

अभी मन मेरा सखी री मनमोहन मोह लिया।
रूप मोहनी डार ठगौरी चित्त वश कियो हिया ॥
कहा री करूं कछु कहत न आवे क्या जानूं
कहा किया।
ख्याल खुशाल देखाय प्रीति को छकन छकाय दिया॥

१९

होरी माच रही है आज नन्दनन्दन जू के द्वार।
एक गावत एक मृदङ्ग बजावत एक नाचत दे तार ॥
भर भर झोरी गुलाल उड़ावत रही न काहू संभार।
आवो सबै मिल होरी खेलैं यह फाल्गुन दिन चार॥
एक ओर झांझ डफ बाजत और मुरली झनकार।
एक ओर तरुणी और बारी गावत दे दे तार ॥
ऐसी धूम मची है व्रज में होरी होरी पुकार।
अबीर अरगजा चन्दन वन्दन केशर की पिचकार ॥
अम्बर भिजोवत काहू को न मानत ऐसे लङ्गर
बट पार।
काहू को झपट और लपट काहू को काहू को
देत हैं गार
सूरदास प्रभु फागु रची है वार बार वलिहार ॥

२०

हो मृगनयनी चलो होरी खेलन को।
वृन्दावन में खेल रच्यो है उधर उधर रङ्ग झेलन को॥
मनमोहन सोहन हैं रसिया ता सों छाड़ो मान
उठो मेलन को।
कृष्ण रसिक को रस वश कर लो छाड़ देहो सब
फैलन को ॥

२१

दोउ सुघर लाल होरी खेलत नीके समाज।
इत श्रीराधारानी गोरी उत सांवरे व्रजराज ॥
नाना वसन आभूषण पहनके युगल अङ्ग छवि छाज।
राजत है गौरश्याम अङ्ग द्युति कोटि कोटि रतिराज॥
गोपी गोप सब आए बन बन विविध मण्डली साज।
चित्त उमङ्ग सब गावत नाचत बाजत एक स्वर साज॥
डारत रङ्ग गुलाल उड़ावत नेक न आवत लाज।
कुलकी कान मान गुरुजनकी मन चित्त सों
गई भाज॥
लखि लखि हंस हंस करत परस्पर मनमाने
सब काज।
नर नारी सब यह सुख विलसत कोउ अटा
कोउ छाज ॥
है सुरनी सिर मन्दिर मोरी है देव शिरताज।
दासी दास हिय उर निरन्तर यहि छवि सों विराज॥

२२

मोहे भोर हो जगावत रे काहेको आनके।
जिन सखिवन सङ्ग रैन गंवाई आशक वहो
जावो जानके ॥

२३

हाथ मटुकिया रङ्गको भरी रे सइयांको बाट देखों
कब को खरी रे।
उनहीं के रङ्ग में भर पिचकारी मुख पर मार
दा घरी घरी रे ॥

२४

कान्ह रङ्ग डार दियो मो पर मोर सास सुने
देहे गारी।
मैं तुमको पहंचानत नाहीं स्वामी सुने मोहे
मारे अनारी ॥
ऐसे लङ्गर तुम लाला काहे बिगारी सारी।
कृष्ण रसिक मन साथी अब तो मैं तेरे वलिहारी ॥

भैरवी—तिताला

रे कन्हैया सांवरे मोहे रङ्ग भर डारी।
भर मारी पिचकारी केशर रङ्ग सुरङ्ग चुनरिया
बिगारी॥
सङ्गकी सखी सब दूर सटक गई हा हा हा कर हारी।
कृष्ण रसिक ने रस बश कर लीन्हीं गावत दे दे तारी॥

२

रङ्ग डारी अंगिया भीजी चुनरी अब कैसे
घर जाऊं कन्हैया।
सास ननदिया और जेठनिया हंसी करेंगी
नरनारी रे दैया॥
सखी सहेली कोऊ ढिग नाहीं बरबश मोरी
बहियां मरोरी रे वैया।
कृष्ण रसिक रस बश कर डारी अब तो छोड़
लागूं तोरी पैया॥

३

लाला अर नहीं कर रे मोहे छाड़ दे मोहे जान दे
यमुना जीके घाट।
होली में तुम धूम मचाई गारी गाय नचावे लै,काट॥
नगर बगर के लाग सुनत है मोहे सास ननदी नाट।
सङ्गर ढीठ बनवारी सांवरे रोक रह्यो मांझ बाट॥

४

री ग्वालनी खेलतमें मेरी गेंद क्यों लई है चुराई।
ग्वालबाल सङ्ग खेल मच्यो तै अंगियामें डराई॥
झपट झपट बहियां गहे लीन्हीं एक गई दो धाई।
अबीर गुलाल मलो मुख रोरी पिचकारिन सों
भिजाई
कृष्णरूप हो गई री ग्वारन सुधबुध सब बिसराई॥

५

श्यामसुन्दर व्रजमोहन प्यारे होरी खेलन आए हैं।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर पिचकारिन रङ्ग
छाए हैं॥
चन्दन वन्दन बुका रोरी सब थारन में भर लाए हैं।
सखी श्याम को श्याम सखिन को ले ले मुख
लपटाए हैं॥
वीणा मृदङ्ग मुरचङ्ग डफ बाजत होरी राग
जमाए हैं।
गोकुल महावन और वृन्दावन व्रजमें धूम मचाए हैं॥
हो हो कर बोलत सब डोलत आनन्द उरन
समाए हैं।
सुर नर मुनि सब देखत ठाढ़े सुधबुध सब बिसराए हैं
कृष्णरूप अनूप महा छवि निरख सब हो लुभाए हैं॥

झूम—भैरवी

मोहे गरवा लगावे रे अकेली जानके।
भौंह कमान नयन मृगलोचन तक तक मारत
बानके॥

२

डगर मोरी रोके कन्हैया श्याम तोहे मारूंगी
सैनन में।
सुन री सखी मैं का कहूं ता को गारा दे गयो
दैनन में॥

२

मोहे होरी खेलावे लाल मनमोहन।
भर पिचकारी मुखपर मारे अबीर गुलाल लगावे
लाल मनमोहन॥

गारा-भैरवी—तिताला

ऐसो खेलारी रसिया मोरा होरी में करत है
बरजोरी।
आप खेले और महको खेलावे बहियां पकर
मोहे रङ्गमें बोरे और कहे हरि हो हरि होरी॥
व्रजकी सखी सब बन बन आई मनमोहन घर
मची है होरी।
हाथ लिए पिचकारी प्यारी अबीर गुलाल मले
मुख रोरी॥

२

रस माहीं रे बालम बहुत दिनन की थोरी।
जो तेरा जी नहीं माने बालम खोल चोली मोरी॥

३

सखी री खेलों पियासे मैं फालगुनके दिन चारी।
पिया मोरा मैं प्रियका री सजना सइयां मेरा
प्राण अधारी॥

४

सांवरे ने मगमें जात नन्द जूके लाड़लेने रङ्ग भर
मारो पिचकारो।
वरज रही वरज्यो नहीं माने बहुविध से समझाय
वर वश हो मेरो बहियां मरोरत ऐसे निपट अनारो॥

५

नन्दमहर जूके सुघर कन्हैया सो मैं तो उनहीं सो
रङ्ग मचाऊंगी।
कृष्णानन्द सोहाग फाग को हर्षि श्याम सङ्ग
लाऊंगी॥

झंझोटी-भैरवी—तिताला

गोरिया होरिया खेल री ले पिय सङ्ग कर कर प्यार
नन्दनन्दन तेरे द्वारे आए भर ले रङ्ग पिचकार॥
भाग सोहाग तिहारो री आली घर बैठे आए हैं
मुरार।
कृष्णरसिक रसवश कर ले री अबीर गुलाल को डार॥

१

छैल मेरी अंगिया में पिचकारी मार गयो।
लपट झपटके बहियां गहे लीन्हीं अचरा पकर लयो॥
होरी के मिस पाय के प्यारे जो तुम कहा सो सयो।
कृष्ण रसिक अब छाड़ दे प्यारे जो कुछ भयो
सो भयो॥

२

क्यों भर मारी पिचकारी वे छैला।
सुरङ्ग चुनरिया सब हो भिजोई ता पर दई है
गारी वे छैला॥
सङ्गकी सखी सब दूर निकस गई हा हा हा कर
हारी वे छैला।
कृष्ण रसिक सब रङ्ग में बोरी अपने वश कर डारी
वे छैला॥

४

सांवरा सलोना मेरा प्यारा वे होरी खेलन
मेरे घर आया वे
गावदा बजावदा धूम मचावदा साडा जिय
ललचाया वे॥
अबीर गुलाल उड़ावदा आवदा सब सखियां दे
मन भाया वे।
कृष्णरसिक रस रङ्ग दे नाली रहस रहस गर
लाया वे॥

५

होरी खेल ले हरिके सङ्ग प्यारी मान न करिए।
मदनमोहन सोहन तें पायो चरण कमल
चित्त धरिए॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर पिचकारिन रङ्ग भरिए।
कृष्णरसिक को रस वश कर ले चरण जाय तुम परिए॥

६

होरी को छैल बन रह्यो री रङ्ग में।
मनमोहन व्रजवासी सांवरो इत ग्वाल बाल
लिए होरी गावे उत राधे सखा लिए है सङ्गमें॥
ताल पखावज आवज मुरली वीणा मृदङ्ग रबाब
गावे चङ्गमें।
रसिक रङ्ग व्रज धूम मचाई खेल मच्यो भारी
भीजे अङ्गमें॥

७

मैं अपने मोहन सो होरी खेलौंगी रङ्ग बनाय बनाय।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर रङ्ग बरसाय बरसाय॥
लपट झपट मोहे पकर लीन्हीं है कलका
बदला चुकाय चुकाय।
रसिक छैल सो फगुवा लूंगी पीताम्बर लेहुं
छिनाय छिनाय॥

८

सब ही छाड़ मोही रंग में भिजोई आज कान्ह
होरी खेलत देया।

लाज तजो सब जगको रङ्गीले कौन धरो याको
नाम कन्हैया ॥

९

होरी खेलत मनमोहन छैलवा व्रजमें सखी ऐसो
धूम मची है।
केसर रङ्ग लिए फिरत रङ्गीले कोऊ न ग्वालि वाके
रङ्ग में बची है॥

१०

मनमोहन सो तेरी अंखियां लगी होरी खेल ले
गूजर बाल।
फेंट अबीर गुलालकी भर ले तेरे घर आए
मदनगोपाल
कुङ्कुम केशर घोरके मल ले रसिक रङ्गीली ग्वाल॥

११

प्यारी तेरे नयन दो पिचकारियां।
तन मन प्राण सब हो भिजावत गावत यश
सुकुमारियां॥
तोहो ते हरो रहत वृन्दावन मूल फूल फल डारियां।
सुन मृदु बचन लाल व्रज जीवन भर लीन्हों
अकवारियां॥

१२

अब हो जिन लीजे पिचकारी।
कीजे लाज बड़नकी तेरे अङ्ग अङ्ग पीताम्बर
ता में दूर गहो विहारी॥
आवन दे आगे लागि जब तोहे भरण सुकुमारी।
कृष्णदास हित फेर पाछे ह्वै भर लीजे अकवारी॥

१३

सखी मेरो मन हुलसानो वसन्त बहार आई।
कोकिल कूंजत भ्रमरन गूंजत अंबुवा मोराई॥
अबीर गुलाल कुङ्कमा केसर पिचकारिन रङ्ग छाई।
टेसू फूले और फूले कुसुम द्रुम कृष्ण रसिक पाई॥

१४

व्रज में धूम मची होरी खेले नन्दको लाल।
घर घर तें वनिता सब आई अबीर लिए भर थाल॥
कोई सखा ठाढ़ो रङ्ग छिरकत है कोई मुख
मलत गुलाल।
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ घुंघरू औ कठताल॥
प्यारो लाड़लो श्याम नचावत देत सखी सब ताल।
काऊ सखा पटका गहे ठाढ़ो कोई रोक रहो
व्रजबाल॥
फगुवा दे घर जाओ लला यशोमती नन्दके बाल।
लाल सखी चरणन बलिहारी निरखत भई निहाल॥

१५

खेलै सांवरो व्रज में फाग।
डगर बगर में धूम मची है डफ मृदङ्ग सङ्ग मुरली
बजावै गावत वंशी में झिंझाटी राग॥
काहूके भाल गुलाल लगावै अपनी बार को
जावै भाग।
विष्णुदास को पास बुलावै पकर लगावै लाग॥

१६

खेलन लागे व्रज में होरी नन्दमहरके लाल।
बाजत वीणा मृदङ्ग चङ्ग बांशरी औ रबाब कठताल॥

१७

पायन दूंगी लैं जो दान हो कोऊ ऐसो पिय को
मिलावै प्यारो रे।
सांवरे होरीके दिनन में मो पै सब रङ्ग डारो रे॥
अबीर गुलाल केसर पिचकारी भर भर मारा रे।
धर बहियां झकझोरी मोरी फिर हो गयो न्यारो रे॥
सास ननद सो अब कहा कहि हूं लाजन मारो रे।
रसिक रङ्ग रस वश कर डारो कछु चेटक डारो रे॥

१८

छाड़ो छैल मोरी गैल चतुर तोहे मारूंगी सैनन में।
तेरो ई रङ्ग तेरो पिचकारी ताहे बोधूंगी रे नयनमें॥
दृग कटाक्ष पिचकारी कर हो वश करूं वैननमें।
रसिक रङ्ग सो फगुवा ले हौं जब देहौं जाननमें॥

१९

रब्बा आन मिलावै फाल्गुन में माहीवाला।
अपने रो अपने मन्दिरसे निकसो ओढ़ि जरद दुशाला॥

कोई गावत कोई नाचत आवत कोई सखा
देत है ताला।
रसिक छैल प्रभु आन मिलो तुम मोहन
मदनगोपाला॥

२०

अंगिया ताथको रङ्गभीनी यौवनवाके साथ।
दूर से वचन कह्यो मेरे प्यारे छुवन न देहौं हाथ॥
भूषण ढील भए अङ्ग अङ्गके मोतियन बिथुरे माथ।
गावै गूदर दोऊ समय बराबर जब जिय होत सनाथ॥

२१

आज महरके भयो है जगाती।
छीन लेहौं लकुट कामरी मूर्ख ग्वालिन
मद्दो को माती॥
दुग्ध लुटाय छीन लेहुं वसन तेरो कर मींजत
रहि हौ पछताती।
जाकर कहि हौं कंसरावसे पकर मंगावे तेरो
जन्म संघाती॥
असुर संहारन जन प्रतिपालन माता यशोदाको
पूत न नाती।
मारों कंस संशय जिन जानो को सनमाने अहीर को
जाती॥
तव डर वश प्रभु चरण गह्यो है जब सर्वज्ञ
लगायो छाती।
अज महेश सुर नर मुनि गन्धर्व जाको रटना करत
दिन राती
गावे गूदर सो कियो वन क्रीड़ा जो भावे मन
चोर साहाती॥

२२

छैल मेरे नयनन में मनमोहन लागि रह्यो।
दृष्टि परे नन्दनन्दन जब ते सब व्रत नेम बह्यो॥
विन देखे मोहिं कल न परतु है दर्द न जात सह्यो।
सुन्दर श्याम कमलदल लोचन जब ते मो चित्त हो॥

मेरे चित्त बसो है सांवरो सूरत जो कछु भयो
सो सयो।
जानकीदास श्याम रङ्ग राचो जग उपहास लह्यो॥

२३

ढूंगी मैं नन्द दुहैया बहियां नाहीं गह्यो।
देखत है सब लोक नगरके मानौ श्याम कह्यो॥
होरीके मिश मोहन प्यारे जो तुम कह्यो सो सह्यो।
जानकीदास प्रभु फिर मिलोंगो अब टुक
चिपटि रह्यो॥

२४

कौन बदो ऐसो होरी रे छैला।
पचरङ्गी चूनर एकरङ्गी कीन्हीं रङ्ग सरबोरी रे छैला॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर अङ्ग अङ्ग रङ्ग
बोरी रे छैला।
जानकीदास हा हा कर हारी ताछ रसिक नहीं
छोरी रे छैला॥

२५

मेरो मन उमग्यो होरी खेलनको।
मोहनके कुङ्कुम की चोटें उघर उघर अङ्ग झेलन कों॥
उमग्यो मनुवा रहत न रोक्यो पियको भुजन
भुज मेलन को।
जानकीदास विलास रास सुख सरस रङ्ग रस
रेलनको॥

जङ्गला—भैरवी

अरी भायानो हो माई होरीको शृङ्गार री।
अबीर गुलालको बादर छायो रङ्गकी
परत फुहार री॥

२

रे मेरे होरीके खेलैया रङ्ग भरि मारी पिचकारी।
उड़त गुलाल अबीर कुङ्कुमा हमदम मैं तेरे
बलिहारी॥
सइयां मो से रूसो री कोऊ जाके मना लारो।
जो पिया मोसे रूस रह्यो है विनती करूं तिहारी
लिख लिख पतियां पठवों मैं पियाको ऐसो सखो
कोऊ जा री॥

३

जिन मोरी अंगिया भिजोई देया मैं तो उन्हीं को
रङ्ग में भिजाऊंगी।
सङ्गकी सखी सखा सब ले मैं तो कुञ्जगलीन को
जाऊंगी॥
गारी भी दूंगी और रार करूंगी मैं ता राधा कन्हैया
बनाऊंगी।
बदला लूं तो अबीर उड़ाऊं जद अचपल हो होरी
गाऊंगी॥

४

मेरी अंगिया रङ्ग में बोरी भला मेरी जान मला
तुम से खेलौंगी हो हो होरी।
बरजोरी हाथ लगावत छतियां सकुचावत है गोरी
हा हा करूं घर जान दे छैलवा बहुत दिननकी
थोरी॥

५

आए फाल्गुन मास झमाझम खेलूंगी होरी।
मुख मोड़ूं गर लाय पिया सी फगुवा लो री॥
सइयां को सुहाग होहुं फाल्गुन में काकी चोरी।
पिचकारिन रङ्ग केसर छिरकौं अबीर गुलाल
ले हों भर झोरी॥

६

होरी मैं ना खेलूंगी फाल्गुन री मोरे हरवा
चुभि चुभि जाय।
मुख मोड़त बरजोरी कान्ह मोहे बरबश गरवा लगाय
कृष्णानन्द लाल गिरिधरके लागत फिर फिर पाय॥

७

आए फाल्गुन में चल गोरी मद गज चाल चलाए।
लोकलाज कुलकान तजो सब पिय लए गरवा लगाए॥

८

बनवारी गही मोरी बहियां आज।
सब देख सखी गई सगरी लाज॥
हों ज्यों अचानक घरते आई मोहे मिल्यो है
जोर समाज।
धाय लई लपटाय चाय सी निपट ढीठ वाको
नाहीं लाज॥
निश दिन रार करत है सब सो अब वशको
यहां नाहीं काज।
छविनायक यासो तज दीजे अचल करो अब
व्रज में राज॥

भैरवी—यत्

उठ चल री पिया सो खेल फाग आछे रहस रहस
गरे लाग लाग।
यह अवसर नहीं रूठनके मेरे कहे तू तज वैराग
छविनायक आए तोहे मनावन सौत सराहत
तेरो भाग॥

२

बन बन होरी खेलैं व्रजकी नारी मनमोहनके
सङ्ग कर श्रृङ्गार।
बाजत वीणा रबाब झांझ डफ मुरचङ्ग औ
मुरली सितार॥
कोऊ गावत मीठे स्वर रुचि सो कोऊ नाचत गति
दे दे तार।
कोऊ गुलाल कोऊ अबीर उड़ावत कोऊ कुङ्कुम
पिचकारी मार॥
कोऊ कर गहे हंस हंस मुख मीजत कोऊ गर
लावत बहियां डार।
शिव ब्रह्मादिक औ सनकादिक निरख हर्ष बहु
सुमन झार
छविनायक सुख कहां लग वर्णों थाक रह्यो
रवि रथ अपार॥

३

सांवलिया अब न सहौंगी बहुत सही तेरो गारी।
ऐसे भए तुम नन्दके लायक व्रज की रीति बिगारी॥
जो तुम कहियो एक सांवरे तो मैं कहियों चारी।
जाय कहौं मैं नन्द बबा सो तुरत देहि निसारी॥
खेलत फाग श्रीवृन्दावन में गावत दे दे तारी।

अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर मारत भर भरके
पिचकारी
ऐसा ढीठ सूरको स्वामी कैसे बचै कोऊ
व्रज को नारी ॥

४

री जोवन कैसे होय गो इन कान्हा ने चेटक लायो।
उरझ रही मोरी सुरझत नाहीं इन अंखियन
वैर बसायो ॥
ए मन मानत ना सजनी कोटि भांति समझायो।
कल न परत विन देखे सजनी मोहन रूप लुभायो ॥
तन मन नयन में सांवरो सूरत दर्शन हो सुख पायो।
सुन्दर श्याम कमलदल लोचन कोटिक मदन लजायो
मगन रूप दृगन में बश गयो कान्ह हिं कान्ह
छवि छायो ॥

काफी—भैरवी

ग्वाल बाल पिचकारी सङ्ग ले आज कान्ह चढ़ि
आयो री।
होरी गार सुनावत मद को कर में कुङ्कुमा
छिपायो री ॥
छिपत न बनत कहत है राधिका ललितादिक को
बुलायो री।
आय जुरी प्यारी ढिग गोपी होरी को साज
मंगायो री ॥
दोऊ दल झुकत कहत आवत है नयन की सैन
बतायो री।
झांझ मृदङ्ग ताल डफ धुमकत मोहन वंशी
बजायो री
रामरङ्ग श्रीवृन्दावन में होरी खेल रचायो री ॥

पीलू—भैरवी

पकर ले जै हों नन्द बबापि हारे पे धूम मचावत री।
आप गावत गारी मो को सुनावत झपट झपट
ढिग आवत री ॥

कोऊ एक ग्वाल अबीर ले आवत कोऊ पिचकार
चलावत री।
लेके कुङ्कुमा फेंक्यो सखिन पर भोड़ल अबीर
उड़ावत री ॥
बाजत वीणा ताल डफ धुमकत होरी राग
जमावत री।
निकसन नहीं पावै व्रजवनिता फिर फिर वंशी
बजावत री ॥
महल सो झुंड निकल सन्मुख भई पकड़ मोहन
को छवावत री।
रामरङ्ग गिरिधर पर वश भए फगुवा लिए मन
भावत री ॥

जङ्गला—भैरवी

धन्य धन्य भाग्य जीवन जन्म आज होरी खेलन
मोहन मेरे आयो री।
कौन रङ्ग डारों सांवरे पे जिन मेरे मनको
लोभायो री ॥
कञ्चन थार कुसुम केसर रङ्ग अबीर गुलाल
उड़ायो री।
कौन पुण्य प्रगटे मोरे सजनी घर बैठे धन पायो री ॥

काफी-सिन्धु-भैरवी—यत्

आज होरी खेलत में जबसे देखी वा सुन्दर सांवरे
की झलक पे झलक।
सखी कहा कहों मेरी अब लो न लागी नेक हू
तबसे पलक पे पलक ॥
एक तो मुकट पीताम्बरको शोभा निरख
दूजे दृगनको छवि और दशनको चमक पे चमक।
तीजे चाल चलत अति लागो सखी वाके दोऊ
कपोलनकी थलक पे थलक ॥
वनमाला गरे श्रवण कुण्डल परे मीठे वैन करे गाय
मनको हरे नृत्य करत खरो नीको लागो वाके
मुख ते श्रमको बुन्दनको ढलकपे ढलक।

चोवा चन्दन अरगजा काहू से मलत काहू पे अवीर गुलाल फेंकत काहूके सुखपर पिचकारन भर भर
देत है रङ्गको छलक पे छलक
एते गुण देख प्यारेके एरी सखी वाके प्रेमकी जियामें मौज भई मोहि और भी ऐसो के सुध न रही वाको वंशीकी सुन के ललकपे ललक ॥

२

इतनी कोई कहियो हमारो मनमोहन व्रजराज
सांवरे सो ए हो नारी।
पाय स्पर्श कर दर्शन कीन्यो हूं जो दोउ जोर
कर ठाढ़ो
फिर पाछे इतनो कह दीन्या मोहे काहे को
विसारी न लो सुध एक हूं बारी ॥
फाल्गुन आयो झांझ डफ बाजे भोर भई अति भारी
मोहे तो आशा तिहारे मिलनको भूल गई सुध सारी
पिया तरफत हूं न्यारी।
मोहे गुलाल लाल विन तेरे भई है रैन अंधियारी।
अंसुअनको अब रङ्ग बनो है नयन बने पिचकारी
पिया छोरत हूं हारी ॥
वृन्दावनको कुञ्ज गलिन में ढूंढ़त ढूंढ़त हारी।
दो दर्शन मोहि अपनो मौजसे ए हो कृष्णमुरारी
पिया मोहि आशा तिहारी ॥

३

अरे बारे मनको कपट कहां तज रे।
जो तू आपन भलो रे चाहत बोरे नीको बचन
मेरो मान ले रसिया देख प्यारे समज रे ॥

४

आज श्याम मेरे द्वारे हो आए होरी खेलन
अति चाव भरे।
अङ्ग अङ्ग रङ्ग सो भीज रहो है अबीर गुलाल
भुजन पे परे ॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहै और मुरली अधरान धरे।
मौज ऐसो छविके बलिहारो निर्पत हो दुःख
दन्द हरे ॥

५

क्या खुब ऐसो आन बजाई बन में कान्ह बांसरी।
सखो ध्वनि सुन निकसन लागो सांसरी ॥
यमुनाके तीरे गऊ गोकुलकी भूल गई सब चरन
घासरी।
होरी की धूम मची या व्रज में आयो फाल्गुन
मास री
मौज हो तो मोहो या वंशीवारे विरहका
मनमें लागी फांस री ॥

परज—भैरवी

होरी खेलन को जो आए हो मो सों तो आवो
श्याम पर मांझके घटको।
सुखसे विराजो धाम तिहारो उतारो पीताम्बर
खोलो कटको।
करते मुरली धरो औ बढ़ावो शीर्ष ते अपने या
मोर सुकट को।
सरज रङ्ग डारो हरे गुलाल मलो नेक नीक सो
उघारो घूंघट को
ऐसे नरम करके कर पकरो जो न लगे मोरो
बांह को झटको ॥

२

ए तो खेल है मन मिलवे को ना तो बरजोरी
को है नहीं नटको।
जब हम तुम मिल मौज करन लागे तब है
का को डर कौन को खट को ॥

टोड़ी—भैरवी

आज होरी खेलनको में आई हों चित्त धर ले
कर अबीर गुलाल रङ्ग।
सुन्दर चतुर सुघर खेलारी जब आनोंगी तब
होगी मेरो सङ्ग ॥
बाजेंगी वीणा रबाब सुरलिका झांझ चङ्ग और मृदङ्ग।

मौज होवेगी तन तन मेरे जब जिय होवेगी
प्यारे उमङ्ग ॥

२

सुनो री मोरी सकल सभा ए री वाकी खेलसे
राम बचावे।
काहू सो लपट और झपट काहू सो धर पटके
अङ्ग लगावे ॥
हों जो गई होरी खेलन को लाख तरे से रचावे।
हों जो कहत वो मानत नाहीं अपनि ही बात
मन भावे ॥
चोवा चन्दन और अरगजा अबीर गुलाल उड़ावे।
धर बहियां झकझोरी मोरी अचपल होके आवे ॥

३

फाग में स्वांग मचावे अरी तू तो आपी खेले
कोऊ खेल न पावे।
काहू को दलत और काहू को मलत है कोऊ
गोकुल कैसेके जावे ॥
वाके रङ्ग को सब ही जानत है घकर करके मिजावे।
उन को कहा कोऊ कह न सकत है वो तो अचपल
होरी गावे ॥

४

जिन जावोरी आज जल यमुना भरण मग ठाढ़ो
है कान्ह जोरी पकरत रन।
वरजोरी करत खेलत है होरी आपन देह नहीं
काहू धरन ॥
भर पिचकारी मोरे मुखपर मारी छतियन पर
रङ्ग लाग्यो है ढरन।
वा रङ्ग से कैसे घर जाऊं सास ननद लख
लागी लरन ॥
वाही सोचको मारी मरत हूं धक धक जियरा
लाग्यो है करन।
विष्णुदास प्रभु से कहा कहिये उनकी हंसी औरन
जी को डरन ॥

५

नन्दलालने देखो री चुनरिया रङ्ग बोरो।
दया री करत फिरत वरजोरी ॥
होरी धूम मचाई मोरी माई निपट निर्लज्ज भयो
कुंवर कन्हाई कुञ्जगलिन में मटकत डोलत वरजोरी।
हंस हंस घूंघट खोलत विष्णुदास घर सास लरेगी
मोतियन को लर तोरी ॥

६

मन देखत मोर मुकुटको लटक गयो आली री
आज हियते सटक।
केसर तिलक अलक घुंघरारी श्रवण दोऊ कुण्डल
है चटक ॥
हों दधि बेचन जात वृन्दावन मार्ग सो जो गई री
मटक।
बीच मिले यशोमती के छैल होरी खेलत आवत
झटक मटक ॥
बहियां पकर मेरो चूनर झटकी मटकी दधिको
दई जो पटक।
बुद्धिविहारी खेलारी होरी को न मानत काहूको
नेक अटक ॥

७

जिन निकसो कोऊ आज डगर होरी खेलत श्याम
कन्हैया।
वीणा रबाब झांझ डफ बाजे जलतरङ्ग मुरली
सनैया ॥
ग्वालबाल मधुमाते आवत गावत नाचत दे घुमरैया।
पिचकारिन मारत भर भर वा दिन ते जो अचानक
आई मोपर दृष्टि परी बलभैया
झपट करी ठाढ़ो सखियन में छीन लयो मेरो
दूध दहैया ॥

८

वरजोरी तोरी तनो अंगिया विहंस गरे लायो
गहे बहियां मुख मलो अबीर गुलाल अतर।

कोटि यत्न कर सौंह देवाई दोऊ करजोर परी हूं
पइयां बहु विनती हारी कर कर
ब्रजवासी सब लोक बुरे हैं देत दोष मोहे लाग लगैया
छबिनायक जैसे हम देखे तैसे न देखे काहु ठगैया
सुध आवे कांपों थर थर ॥

९

जब मोसे होरी खेलो सांवरे मनकी कपट तज दे रे।
लाजुल काहे को बहियां मरोरत रसिया अंगिया
फारी आवे आवे लजा रे ॥

१०

सांवरो रङ्ग डार गयो मोरी आंखन बीच अबीर।
यमुनाके नीरे तीरे बंसिया बजावे आखुर जात अहीर ॥

११

लागत निकस जात सुन्दर मुखते तेरी गारी
मोहे प्यारी।
बेसर की मोतियन झमक चन्द्रकी चमक सोहत
न्यारी ॥

१२

होत है मूर्ख क्या जाने नारि को सार री कलाई
फूल हू से सुकुमार।
सुख मीजत निपट गंवार री कर लाई कुम्हलाई
जात नार ॥
फूलसी होके चतुर कुम्हिनी कहा जाने मूर्ख
नारकी सार।
केहरिसी कटि शुक नासिका कदली जङ्घा कुच है
मानो अनार
सुन्दर प्यारी निहार रसिक रङ्ग बार बार बलिहार ॥

काफ़ी न'गला—तिताला

कोऊ चलन न पावे बाट।
फाल्गुन में जो देखे सोई मातो डोले रङ्ग
गुलालके ठाट ॥
अबीर गुलाल की धम मचो है गोकुल गांवके घाट।
रसिक छैल प्रिय होरी गावे राग तानकी लिए डाट ॥

२

खेले सांवरो होरी यमुनाके तीर।
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ स्वरध्वनि मिल
उठत गम्भीर ॥
सुन ध्वनि मन्द मधुर मुरलीकी मुनिजन धरत
न धीर।
दुरी-मुरी झपट लपट नन्दनन्दन केसर छिरकत
नीर ॥
बहियां पकर मुसक्याय राधिका हरि मुख लाय
अबीर।
औरसरङ्ग रीझ यह ब्रजको हम क्यों न होत अहीर ॥

३

ए हो मनाय लेत गोरी को सांवरो सनमुख
अबीर उड़ावे।
सङ्ग मेरे सोवत अङ्ग छिपावत अपनो भेद न बतावे ॥
अङ्गुरी में पिया मोहि जगावे लाख तरेसे रिझावे।
ठौर ठौरको भ्रमर है रसिया चितवत मोहि लजावे ॥
लपट झपटके पकर लेत है अङ्ग सो अङ्ग लगावे।
रसिक रङ्ग रस वश कर डारो पइयां पर जो मनावे
कर लिए पिचकारी केसर को भर भर रङ्ग चलावे ॥

४

सांवरो मोहि दे गयो गारी।
भर पिचकारी मेरे मुखपर मारी भीज गई तनसारी
गारीकी गारी टोनाको टोना चितवन में छवि न्यारी ॥

५

हो जानी रा तेरे वश में नहीं आई रे।
आप तो बैठो मानमन्दिर में मेरे जियरा को लयो
है लोभाई रे ॥

६

आन पड़े वश मेरे लला कैसे जान पावोगे
जान न दूंगी।
गारी में देऊं देलाऊं औरन सो फेंट पकर कर
फगुवा लूंगी ॥

७

ऐसो ढीठ बलवीर तेरो वीर री दैया।
अंगिया फार मेरो भाजन तोरो या यमुनाके तीर
री दैया॥

काफी—सिन्धु

होरी खेलत भ्रमर सुजान अपनें पियाके शरन में।
वाको खेल सब वोही जानें आपो मगन है अपनें
रङ्गन में॥
तनमन तार तम्बूर बजत है कहुं कामर कहुं
नीके वरन में।
साज समाज ध्वनि सुन सारी व्रजके खेलैया लुकानि
घरन में
अपनें कन्हैया ले यौवन पद्म देखावत हरिके चरण में॥

१

यह दोऊ खेलत हो हो होरी।
नन्दनन्दन व्रजराज सांवरो श्रीवृषभानु किशोरी
परमानन्द रूप रसभीने अबीर लीए भरभोरी
चलो तब खेलन होरी॥
भुज भर अङ्क सकुच गुरुजनको मिल फिर जात
छुटो री।
छूटी लट कुण्डल सो उरझो वेसर पीत पिछोरी
चली सुरझावन को री॥
कर कङ्कण कञ्चन पिचकारी ले केसर रङ्ग बोरी
छिरकत रङ्ग हुलस हिय हर्षत निरखत हरि
सुख मोरी करै चितवन चित चोरी।
धन्य वृन्दावन धन्य वंशीवट जहां यह रास रचो री
श्रीरसरङ्ग रीझ व्रज ऊपर वारो वैकुण्ठ करो री॥

२

ए री मोहे श्यामसुन्दर रङ्ग डारो केशर रङ्ग
पिचकारिन मारो।
बरजोरो कर पिया मुख मोडत है देखत है
सखी सारो॥
विनती करत हूं मानत नाहीं ऐसो अनोखो
खेलारो।
गरवा लगावत नाहीं डरत है गावत मीठो गारो॥
या व्रज में भयो अनोखो कन्हैया न जानो कहा
गति करो है हमारो।
रसिकरङ्ग प्रभु धूम मचाई तक तक के मारत
पिचकारी॥

४

देखो री बरजोरी मो से खेलत है हो हो हो होरी।
अबीर लगाकर सारी भिजोई अंगिया फारो
तनिया टटोरी॥
कञ्चनकी पिचकारी चलावत नाजुक बहियां
अचानक मरोरी।
रसिकरङ्ग व्रज धूम मचाई हो हो हो हो
धूम मचो री॥

५

आज डफ बाजन लागी री श्यामरो मेरो सगुन
मनावे री।
घरी घरी पल चण कल न परत है उन विन कछु न
सुहावे री॥

६

समुझ दे हो कान्ह लाजको गारो।
गारो देत है तारी देत है सुन ले सीख हमारो॥
तुम तो भए हो व्रजके ठाकुर सास सुनेगी हमारो।
कृष्णानन्द कहत मनमोहन देखहु हृदय विचारो॥

७

देखो चलो जात है बनवारी मेरो आंखन चोवा
रङ्ग भर डारो।
कौन जात तेरो मथुरा नगरिया बीच मिले मोहे
ठगवारी॥
चितवतके मन लियो है मोहन गावत है नाचत
दे तारी।
रसिक रङ्गरस वश कर डारो व्रजमें धूम मचो है
भारी॥

८

नाहक हम सो रार मचावे वरजोरो हम सो
सैन चलावे ।
नित्य हो वसत रहत वृन्दावन वंशोके बीच बीच
तान सुनावे ॥
हा हा करूं मैं पईयां परू मैं घर मद्द को सब
रङ्ग रङ्गावे ।
पूर्णानन्द आशा व्रजचन्द्रको फगुवा मांगूं यही
मन भावे ॥

९

रसिया ना माने मोरो अंखियन भरत गुलाल ।
अछन अछन पाछे अलवेलो निरख नवेलो वाल ॥
रङ्ग भरो गोरी गई वोरो करत अटपटे ख्याल ।
दया सखो घनश्याम लाडले भुज भर करत निहाल ॥

१०

तैं मेरो सारो भिजोई सारो रे ।
रसिया मूर्ख अनारो रे ॥
घेर लियो आ सब सखियन में पिचकारो मो पै
मारो रे ।
बार दियो मोहे आपन रङ्ग मा विनती करके
हारो रे ॥
वहियां पकर मोहे गरवा लगायो सास सुने देगी
गारो रे ।
कहा करूं कछु बन नहीं आवत नेह लगायो
कारो रे ॥

११

होरो मैं ना खेलों मेरो अंखियन डारो गुलाल ।
सारो भिजोय रसिया गारो गावत है मुंह आपन तू
संभाल ॥

१२

रो मन समझत नाहीं कैसेके मन समझाऊं ।
फाल्गुनके दिन रूस रहे हैं जिय चाहे पिया को
ले आऊं ॥
कहा करों गुइयां कौन यत्न सो रसिया के मन भाऊं ।
कृष्णानन्द अब निशि वासर में श्याम सुरति
चित्त लाऊं ॥

१३

सांवरे को मैं रङ्ग में रङ्गूगो ।
यह फाल्गुन ऋतु आई सखो रो चित्त में उमङ्ग
भरूंगो ॥
ले नन्दनन्दन कुञ्ज कुञ्ज व्रज होरोको रैन जगूंगो ।
काहूसे मैं नाहीं डरूंगो ॥
फगुवा लेहों मनाय मोहन को मनमाने हाल
करूंगो ।
वृन्दावन वोथिनको माहीं केलि अनेक करूंगो
नेहरस माहिं परूंगो ॥
अबीर गुलाल मलूंगो कपोलन मिल पिया ना
छुट लूंगो ।
रीझ रिझाय करूं वश अपने मन हो मोह हरूंगो
चिते चित्त माहिं ठगूंगो ॥

१४

होरो को व्रज धूम मचाई ।
नन्दनन्दन वृषभानुनन्दिनो सो भांवरनान जाई
रङ्ग रहे रङ्ग वसन केशरके अबोर गुलाल उड़ाई
कुञ्जन बिच छवि रहो छाई ॥
नाचत गावत ग्वाल ग्वालनो मिल खरराग सुहाई
कोई लिए ताल तम्बूरे सारङ्गो कोई डफ मृदङ्ग
बजाई सरस बाजत सहनाई ।
कोई फगुवा मांगत हरि जो सों दोजी कुंवर कन्हाई
नित्य प्रति ख्याल खुशाल देखावे मदनमोहन यदुराई
चिते चित्त लियउ चोराई ॥

१५

होरो खेलन आए हमारे ।
केशर रङ्ग भरे पिचकारो उमंग उमंग उमंगा रे ॥
फेंटन भरे गुलाल कुंवर नन्द लागत अधिक पियारे ।
छैल व्रजराज दुलारे ॥
ग्वाल बाल सङ्ग शोभित शोभा उर बिच उमंग अपारे ।

वरजोरी रङ्गत सुहो मेरी सारी मुखमें अवीर लगा रे
टरत कहीं नाहिं न टारे ॥
उर लावत न डरत हो रसिया यौवन उमंग अपारे।
ख्याल खुशाल करत व्रजमोहन महिमा अगम
अपारे परे गुण जान तिहारे ॥

१६

होरी खेले कुंवर व्रज गोरी।
अवीर गुलाल उड़ावत गावत ललित केशर रङ्ग बोरी
चोवा चन्दन लिपटावत अङ्ग अङ्ग लेत चिते
चित्त चोरी रूपकी डाल ठगोरी ॥

१७

मचो कैलासमें होरी।
इत गौरी उत शङ्कर शम्भु मारी रङ्ग रचो री ॥
सुर नर मुनि सब देखत ठाढ़े बोलत हो हो होरी।
बजत डमरू घनघोरी ॥
नन्दी भृङ्गी कार्तिक स्वामी सङ्ग लम्बोदर हु वहोरी।
उड़त गुलाल लाल भए अम्बर बाजित्र
बहुत बजोरी
बोले सब हो हो होरी ॥
ब्रह्मा सनक सनन्दन सौनक सनातन प्रेम रहो बोरी।
सारद गुणी गन्धर्व हाहा हूहू नाना यन्त्र सजोरी
नारद सङ्ग वीणा नचोरी ॥
शिवके दास तहां निरखत हर्षत आनन्द उरमें
बढ़ोरी।
वृषभ वाहन जटा गङ्गा है जाके शेष गरे लिपटो री
बोले हर हर हो होरी ॥

१८

ललना नागोहो आवे या गोहन सोहन।
हों तरुणी और नहीं व्रज में है कोई तू
समझावे या मोहन ॥

१९

होरी बाजना बाजम।
निशिदिन मुझको ध्यान है उसका गोयद अजा
जान हूं राजम ॥
मुद्रा पहरौं भस्म चढ़ाऊं खुदरा चूं वैराम साजम।
दिल खुश होके फाग मचाऊं दस्त वगर दम श्रो
अन्दाजम ॥
जो शीरीं लब उसके देखूं वर खुशरो फिरहाद
विनाजम।
आशक हो के होरी खेले गर बोनद जानाए जाजम ॥
मदके माते रैन न सोए खूनी नयन मस्त चि
साजम।
मुचू औघड़ बल बल जावे गर आयद आं बन्दे
नेवाजम ॥

खमाच—अलैया

या मोहनसे कोऊ पूछो तो भला मेरी नाहक
बहियां मरोर डारी।
मैं ने कहा कियो याको नाम लियो मुंहसे बात
कही कोई गारी ॥
दही कछु डारो बिगारो देखो नयन मिलाय कुई
करते पिछोरी।
या तो भई सो भई हों कीन्हीं गई ताहू पर देखो
लङ्गरकी निठुराई चूमो मुख उर लाई अंगिया
दरकाई खोल घूंघट ले अवीर गुलाल दियो
आंखन डारो री
और सिगरो अङ्ग चारो रङ्गसे रङ्ग सखो कहां
लोक हूं वाको मौजमें आयो सो कियो मो सङ्ग
होरी होरीके मिश करके वरजोरी ॥

२

मैं तो आई छैल तेरे द्वारे किये प्रेम अति मनमें
आश होरी खेलनकी मेरे प्यारे।
एक क्षण में मेरे पाप कटे मेरो चूनर पर पिया
अपना रङ्ग जो तू डारे ॥
हों निर्गुण गुण एक न मोमें तुम्हरे चरण निहारे।
बहियां गहो मेरी अपनी मौजसे नन्दनन्दन
व्रजराज दुलारे ॥

३

हो रही रङ्ग हो हो हो होरी।

डगर डगर बगर बगर धूम मची सगरे नगर
श्रो मद मरे निरखत नर नारी चहुं श्रोरी ॥
रङ्ग सो भरत काहूं सो न डरत निशदिन माहि
चितवो करत नटवर वपु भेष धरे छैल नन्दको री।
गहत हार करे विवाद कुच भुज सो करत रार
ऐसि धरो मोहिं श्राय लाज गई मोरी ॥
बाजत मृदङ्ग ताल वीणा खञ्जरी रसाल
झनक झनक घनन घनन श्रानन्द घनघोरी।
नन्दनन्दन श्रानन्दकन्द सब जग उजियारो चन्द्र
वर्षत रसरङ्ग श्राज नन्द जू की पोरी ॥

४

कान्हा सुन ए रा सखी मो से होरी मचाई।
लपट झपट बहियां झकझोरी अबीर गुलाल लगाई॥

५

ए सुन मन मेरे यार।
अपने बिसात को सोच तनक चल रीतिको चाल
कुचाल को तज रङ्ग कुरङ्ग समय को देख या
जग को जब जाने गो तू चौसर खेलनकी सार॥
घटके घरसे दगाबाज़ी को नरदको बाहर वेग निकास
धर्म सत्य को बांधके युग रख पांच तत्त्वके पंजे में
गर्वके छकी रोक ले पहले कपटको पौ पे न पौ
पानो श्रपमानको अपने पासे फेंक डार।
कचो पको सीख ले न काहूको घटी बढ़ी को समझ
जिया में कोज लपेटे तोहे फूल सुंघाके चार खूंटके
बान गर्मके वाके न दावमें श्रा वरसे जसर मेहके गुण
कहीं खेत को होवत है रख अपने हो दमको
गोटों पे शुमार॥
वचन और मेरे तीन कोनो सुन एक तो बद
विचारका नियम मत कर दूजेका माग काहू पे
न कर मुझे पांच दो छे दो श्राठ नव दश ग्यारे दो
कोई सो जिनस होवे बिन दिए साहबके पूरो नहीं
परत है काहू को मांग बाहो पे जो वालत है
सब संसार।
तीजे और सन सीख न कचे बारे गुण चौदह विद्या
मेरो पनूद्रह याद सोले तो से कहत हों जामें तेरो
सत्य रहै पूरे श्रठारे बीसे फिर तो सब खेलारी
तेरे श्रागे है श्रनारी
कर मौज मेरे मित्र तेरे हाथ रहो जीत नहीं
श्रावेगी कबहूं ढिग तेरे हार॥

काफ़ी—देश

श्राज होरो खेल को ए होरो कहो री चलो होरी
होरा होरो कान्ह सों कहीं क्यों न होरी।
गुलाल झोरिन धर होरो रङ्ग पिचकारी भर होरो
कर कर के हो हो री
श्रपनी मौजसे फगुवा लेन कारण फेंट गहो री॥

२

मैं भिजाऊंगी पाग मेरी चूनर भीजे फेंट पकर
मोसे फगुवा मागें श्रपनो वेर जावे भाग।
कहा करूं कछु बन नहीं श्रावे पिचकारन लिए
हाथ श्राज श्रादिल पिया मैं विनती करत हूं रङ्ग
डारोंगी श्राज॥

३

फाल्गुन काम हते तरकारी मेवा भरके लाया है।
सो लीन्हों है वनवारीने यह बात मदनको ब्रज घर
घर सुन हर एक एक अपनो धाम छोड़ बाहर
यहो कहता धाया है॥
बन बनके सगरी व्रजसुन्दरी चली अपने अपने
मन्दिरसे घर मोहनके यही कहते हुई हो हो के
मगन श्रन्दरसे ए वीर वर्ष दिनके पाछे हम
व्रजवधुश्रनके भाग्यन ने फिरके यह बोल सुनाया है।
जो जो गई ताहे ठठोली से कान्हर कहो श्रामे
श्रा री श्रा री श्रा देखोरा तेरी मैन वहमका कड़ी
लील मी कहे रतालूको निर्मूलो भूल गई तू तो
श्राप जो शृङ्गार श्राई श्रब कहीं तूने यह सुन
पाया है॥
तुझ कारण क्या क्या स्वांग करे रूप रनकटू देख ले

तू रख मन में फूट रही फटकी थी मोसे जो लागा
जरने तोसे मैं पूछूं सांच बता कित गई सुकचरी
वो तारी किन सेंध लगा यह बताया है।
गुंइया गई और देखावन को अपनी यौवन डेरे
वाके रङ्ग राता लुगरा पहर हारक पग सुकच नाल
धरती भुई पर गुज़री दहने जाटिन डेरे और बीच
अहीर सब ने मिल यह गीत बनाया है॥
जो ना रस बेगुण पूरी थी वा पे ठाकुरको भयो
कर्म गो भोर में थी सो आए आप गए ले पलकमें
रस यागने वाके मीठे बैनन आगे शकरकन्द दोऊ
भए फीके फिर यह कह गरे ले लगाया है।
तब वो नेह चोलाई घट में कह्यो भई कुशल गम
दूर हुवा मनसे गइयां दुःखकी बतियां चित्त चुका
अब सांवत हुवा कुवखी धरकी आमधीयाले सूहेका
अचरा करमें वाके यह कह मुसक्याया है॥

४

एक छेर छार गोपिनबको प्यारे यह सोच भयो
प्यारी जो रूसी है तिन्हें अब मनाइये।
करके मन में विचार एक मार समझदार पठवाई
उनकी हार कह्यो बुला लाइये॥
सुन के यों उठ बोली मोहे न समझाइये।
कहोंगी करोर वा पर हों नहीं जाऊंगी कहे दोन्हीं
तुमसे एक बार आप जाइये॥

जङ्गला—तिताला

सुन सुनके सुघर चतुर सजनी ले ले कुछ कुछ बनके
नाम समझाने लगी उस नारी जग उजियारीको।
सरस संवारी सब गुण भारी पीतम प्यारी भानु
दुलारी को॥

१

किस मिस तोहे समझाऊं प्यारी और कहूं तो है
कैसे अनार।
जगत् को सब प्रान जो रहीं तेरे तो सो अष्ट याम
फल पावै नरनार॥
दाना होय क्यों बनत वे दाना सहे तू तो प्यारे
को वचन म टार।
काहू को सिखाए मोको आलोबालो मत दे अङ्गुली
पकर चलवार॥
तो पै तो है आ सेवत मोगो बेर बेर जो करत है रार।
याते में क्यों चिरञ्जीव अपने परखो प्रात हो बोल
तिहारे हटको खोवानो समझ जा मनमें कम रख
जिन अदरख पो सो प्यार॥
को ए भी नासपाती है कहा तू और जीव पिस्ता है
हर बार बार।
अब हो आम होंगी बात गाव में फलसे पै लोग
करेंगे विचार॥
हरवा खरबूज़ा पगी फैल यह भी तरबूज़ के मनमें
निहार।
सङ्ग तेरे को लेके लगेइ रहत है आय अकेले
दुष्ट हज़ार॥
वे खांगी कर बाना रङ्गी फाल्गुन में चरचेंगी पुकार।
मान वचच वाहे दवा दाम में अलख अपने नो
उधार॥
छेर छुवार नो कर ते कर देख दाख वा को व्यवहार।
उन तो अब लों तेरो है राखो न नीको भांति सों
बात सुधार॥
सुंघबनो बूतनको बनेके निरख परख रोट को
दे बिसार।
भली हो तू इत में अनन्धा सोखी तेरो वसफ् तालु
रसना से है न्यार॥
कंथ ज्यो होवै मो ठाकुर है वांको नाम नखटा
कर डार।
जैसे सोरी सीताफल पायो रामचन्द्रको दयासे अपार
अपनी मौजसे सदा फल देगो राधा तोहे कृष्ण मुरार॥

२

जब इतनो इतनो समझायो वाको उस सखी
सयानी ने।

तब बारो आभरण सोले श्रृङ्गार किए ले दर्पण
महरानीने
हंस हंस के यही अपनो मौजसे कहतो चलो वा
सजनी से क्या सुनके जिय हुलसाया है
फाल्गुनका महतानीने ॥

४

चञ्चल चवैया रो आलो यशोदाको लाल देखो
हां मोरे ललना हों दधि बेचन जात रही व्रज
नाहक रार मचाई ।
तेरी चेरो तेरे चेरे को चेरो ऐसे नाच नचाई ॥
हा मोरे ललना हमरे सङ्गको दूर निकस गई
मोहन बहियां मरोरो ।
सास ननदिया रिसावे मो सों सुख मल दई रोरी ॥
मैं तो बरसानेको ग्वारनो रे तुम हलधर जोके वीर ।
मीराके प्रभु फगुवा लीन्हीं मोहन श्याम शरोर ॥

५

आज हरि व्रज गोपिन पकरे ।
मोर मुकट मुरली पीताम्बर सब ले छोर धरे ॥
पहिराई चूरी चुनरिया बेंदी अति कजरे ।
चरण गूजरी कर कङ्कण बाजूबन्दन बांह वरे ॥
सीसफूल और नासर वेसर को मोती मांग भरे ।
केश पकर के कंस पछाड़ो ताहू मो नाह डरे ॥
उस मोहन को वश ज्यो कियो नारो न छूटो
पांव परे ।
फगुवा देत लेत नहीं सुन्दर अब धौ कहा करे ॥
नारो श्रृङ्गार सबै पहराए नाच नचाए लगाय गरे ।
सूर श्याम वैकुण्ठ निवासी हा हा करत खरे
मन माया सखी फगुवा लीन्हीं प्रेम मगन में
आन ढरे ॥

६

सखी हों तो रङ्गीलो अपने रङ्गमें कोज जिन
मारो पिचकार ।
हों बौरो होरो खेल न जानों सब जग चतुर खेलार ॥
ना मुख मलों अबीर अरगजा ना तन सजों श्रृङ्गार ।
जब से भई हूं मगन वैरागन बाढो रूप अपार ॥

७

अनोखे कान्ह मेरी चूनर रङ्ग भर डारो ।
बाट चलत मेरो मुख मसलत हो और देत हो गारो ॥
कहा करूं कछु कह न सकत हूं लागो लाज तिहारो ।
मगन कहत निपट जिन बिगरो मानो बात हमारो ॥

८

सुन ए रो सखो आज ए रो ए रो सखो आज
विलम्ब रहे कहूं काना ।
हम को कहत तुम पलङ्ग बिछावो उनको बात
हम माना ॥
आवन दे पिया अपनो बार कहूं नित्य उठ ठग
ठग जाना ।
सोले श्रृङ्गार बतोसों आभरण अङ्ग सजे मन माना ॥
डोलत फिरत और तियनमें मोसे हंस हंस जाना ।
खेलत होइ है व्रजको सखिन में भई है तो
करि है बहाना ॥
गोकुल ढूंढो वृन्दावन ढूंढो उनका कौन ठिकाना ।
सुन्दर श्याम कमलदल लोचन नन्दमहर जूके छाना ॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहत कुण्डल झलकत काना ।
सांवरे मुखपर तिलक विराजे जा सों लग्यो
मेरो ध्याना ॥
वंशी बजावत गावत नोके मोह लिया मेरा प्राना ।
सूरदास स्वामी तेरे दर्श को हरि चरण कमल
लगो ध्याना ॥

९

सांवरे मो पै डार दियो मेरे आंखन बोच अबीर ।
यमुनाके तीर मुरलो बजावे आखर जात अहीर ॥

१०

ए रो अबीर गुलाल मो पै डार दियो
अचानक आन परो री ।
डफ बजावत गारो गावत नाहक उलझ परो री ॥

११

सारी मेरी सारी भिजोई केशर भर मारी पिचकारी।
अंगिया रंगिया रङ्ग में रङ्गो है ऐसे चतुर खेलारी
सङ्गकी सखा सब दूर निकस गई बहियां मरोर
दई गारी ॥

१२

श्याम मोहि चोरी लगाई ऐसी होरी मचाई।
खेलत गेंद गिरो यमुना में तै मोरी गेंद चुराई ॥
हाथ डाल अङ्गिया बीच देखौं एक गई दोय पाई।
दोउ भुज पकर लपट अङ्गन मेरो मुख चुम्बत
मुसकाई ॥
नेक न लाज करत काहूकी ऐसो लगर कन्हाई।
कृष्णानन्द श्याम चोरी मिस लियो मोहि अपनाई ॥

१३

मेरे आंगन खेले फाग री माई सांवलिया।
हमरी चुनरिया रङ्ग से भिजोई अपनो बचाई
पाग री माई सांवलिया
कृष्णानन्द बलिहारी गई मैं धन्य धन्य मेरो
भाग री माई सांवलिया ॥

सोरठ—तिताला

अब मेरी चुनरी में दाग़ परो अनारी से काम परो।
यह मतवरवा मानत नाहीं जियरे के बैर परो
कृष्णानन्द न मानत ग्वालिन दोउ भुज गहि पकरो॥

२

गोरी ए री सांवलिया तै रङ्ग बोरी भीज गई
रङ्गरस में।
श्याम रङ्ग निशदिन सुख बरसत बलिहारी तेरे वश में
कृष्णानन्द अथाह प्रेम में गावत तेरो यश में ॥

काफ़ी—तिताला

अपनो लाल मोहि मांगे दे री फाल्गुनके दिन
चार सखी री।
गजमोतियन सों थार भरोंगी करि के सोरहो
शृङ्गार सखी री
कृष्णानन्द आश मेरो पुजवहु पइयां परों बार
हज़ार सखी री ॥

सोरठ—तिताला

सइयां विदेश मोरे आयो फाग री।
जिनके पिया परदेश गए हैं उनके भाग्य भयो
विरह दाग़ री
कृष्णानन्द मनावत ठाढ़ी आव पिया हंस गरे
लाग री ॥

२

आज कान्ह सङ्ग खेलौं मैं होरी सुन्दर वार
सुगन्ध लगाए।
अधर विद्रुम मुख पानकी लाली दर्शन चमक
चपला चमकाए
दृगन देख मृग हू ललचाने चन्द्रवदन मानो
चन्द्र लजाए ॥

धानी—काफ़ी

नन्दको छोहरा मेरो मन लियो मुरली बजाय।
इत मथुरा उत गोकुल नगरी बीच में ठाढ़ो लजाय ॥

परज—काफ़ी

आज अनोखी नारी श्याम सङ्ग खेलत होरी।
सब सखियां मिल बन बन आई अबीर गुलाल
लिए भर झोरी
कृष्णानन्द प्रेमरस माती चित्त राती सब
व्रजकी गोरी ॥

काफ़ी—भरैया

आज होरी खेलत देखो छवि जो मोहनकी लागी
सुन्दर मेरे मनमें निपट।
उर वनमाला मकराकृत कुण्डल कटि पीताम्बर
शीर्ष मुकट ॥
उत ठाढ़ी व्रजवनिता सकल दृढ़ इत व्रजराज
कुमार किये हट।
वे मारत पिचकारिन तक तक ये फेंकत अबीर
गुलाल झपट ॥

ये उघटत वे नृत्यत हंस हंस त त त ता थेई थेई
उलट पलट ।
मौज निरख प्रभु को ए शोभा को सारद को गई
बुद्धि उचट ॥

काफ़ी—सिन्धु

ए री तू तो कहत हो जात है लेन यमुनातट
शिरपरको बूटो ।
उत जाय अकेली नन्दलाल सों होरी खेलन पे छूटो ॥
भीजि वसन गुलाल मुख लागी अंगिया दरको
माला टूटो ।
तेरो सांच तो प्रगट है मौज भी कैसे कहै हम झूटो ॥

काफ़ी—टोड़ी

जैसो तू खेलत है गो होरी मोहन ऐसो तो काहू
नयन देखो न सुनो ।
तेरे चलन को निरख निरख कर कहत हैं सब
नरनारी पुराने गुनो ॥
चन्दन अबीर गुलाल केशर रङ्ग यह देखो नेक
वहां न दुनो ।
मेरे तो मनको मौज में यह आवत उर लाऊं
मुख चूमूं तेरे पगको झुनझुनो ॥

२

होरी खेलत लपट झपट मनमोहन मनमें कपट
नाहीं काहूको अट ।
झपट पट झटक डारो गुलाल अबीर मौज गई
सारो छक्के गई गट
पट लट छुट हट अङ्ग अङ्ग में बिथरो मौज मेरी
रङ्गी चुनरी चटक ॥

३

मोरे सइयांके मनमें परो है गांठ ए री ए मैं कौन
यत्न सों खोलौं ।
सब सखियां मिल बन बन आईं मैं बैठो विष घोलौं ॥
अबके फाग पिय भए हैं बैरागी नगर नगर में डोलौं ।
कृष्णानन्द बिसूरत निशदिन धोर धरौं मैं को लौं ॥

४

मन छल लीन्हों छैल छलैया छलक ।
नेक देखाय यौवनको झलक ॥
मनमोहनको मोहिनी मूर्ति छूट रहो मुखड़े पे
अलक ढलक ।
जब ते चितवन देखी तबते नाहीं लागत है पलक ॥
अब कहा करि हो उपाय सखी री चित्त चाहत
पिया मिलन कुलक ।
ख्याल खुशाल करूंगी कुञ्जन में जोलों चाहे
जिय तौलों तलक ॥

५

बारी वयस या रस में भरे तेरे नयन मैन है
कन्हैया रे ।
निरखत करत प्राण वश वेग हो चञ्चल चपल
छलैया रे ॥
उरझ रहे पर सुरझत नाहीं ऋतु रस सुख
विलसैया रे ।
यौवन उमङ्ग भरे चित्त चोरत नेहके रङ्ग रङ्गैया रे
ता पर ब्रजमें विहार करत है ख्याल खुशाल
करैया रे ॥

६

तनक सुनो मुरलीको भनक मेरो मन गयो
हाथ सों देया ।
वंशी सुनो बहुतेरो बाजत बहुत देखे हम
वीणा बजैया ॥
रूप स्वरूप लखे हम लाखन वैन मिले चितवनके
हरैया ।
काहू सो अटको न मन अबतक चैन गई जबसे
दिन रजनी या दुःखको है कौन हरैया ॥
विरह व्यथाको मारो मरत हूं औषधको है कौन
देवैया ।
जासों मिटत मोरे जियको कसक काहू व्रजवासी
गरे डारो फांसो कित गयो ज़ालम फांसो देवैया ॥

चित्त वश गयो अब फन्द परो है फांसी डार गयो
घोर कन्हैया।
ऐसी फंसी मैं ता तपक तथक मो पै जादू चलाई रे
मोहन लूट गई अब नाहीं पुछैया॥
मोहनकी छल सोई है काज़म बांच रहे बलराम
दुहैया।
याही सुरत में यरी अबतक राम हो सो अब
काम परैया॥

काफी—सिन्धु

आयो री घर कुंवर कन्हैया।
गटह गटहतें निकसो व्रजवनिता आपु अकेले न
सङ्ग सहैया॥
काहू छीन लई कर मुरली काहू मुकुट काहू
पीत पिछैया।
पहरायो घांघरो चीर अनवट बेसर और हंसैया॥
कर चूरी कङ्कण जरावके तरवन कनक कनो
चमकैया।
मोतिन मांग भरी मोहनकी अञ्जन दृगन दिए
वरऐया॥
हरि हि नचावत ता ता थैया अद्‌भुत खेल खेलावै
लुगैया।
अर्जन छाड़ दयो अपने के पग पग देत है राज दुहैया
सूर श्याम सों फगुवा लीन्हों रसवश कर लीन्हें
बल भैया॥

२

प्यारी तेरे नयनन में कछु टोना।
मोह लियो रस फाग लाग में सुन्दर श्याम सलोना॥
खेल छोड़ तक लाग रह्यो मैं प्यारो नन्द ढिटोना।
व्रजनिधिकी मूठ उड़त है जीव करत है ज्यों
मृग छौना॥

३

मैं तो सांवरे सङ्ग खेलन जइहूं घर बैठे कहां लो
जीव तरसै हूं।
मत वोरेई मुझि हटको री सखी आज बजाको सों
मैं विष खै हूं॥
और रङ्ग सब फीके लागे पियरे पट सों हियरा
हुलसै हूं।
प्यारे गोपाल सोहात वही मनमोहन मित्र हिए
लपटै हूं॥

४

झटको मेरो चीर मुरारी।
रङ्ग गागर शीर्ष से झटको बेसर मुकर गई सारी॥
रेशम बन्ध कुचन के तोड़े ऐसे अनोखे खेलारी।
पार परोसन सखी सहेली हा हा हा कर हारी॥
ऐसी शिक्षा दई काहू तिय ने मानत ना वनवारी।
यमुना तट चीर जो फारी॥

५

आज खेलूंगी फाग बनाय लाल मेरे द्वारे ही आए।
हमरी चुनरिया रङ्ग सो भिजाई अपनो पाग बचाए॥

६

तुम छीन लो छिना लो करसे पिचकार।
अबीर गुलालके बादर छाए केशर रङ्गको
परत फुहार॥

७

श्यामा श्याम सों आज खेलत फाग नई।
नन्दनन्दनको राधा कीन्हीं माधव आप भई॥
यमुना तट विहरत प्रमोद में नव छवि रङ्ग रई।
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ अबीर आकाश छई॥
सखा सखी हो सखी सखा हो यशोमती भवन गई।
उलट्यो रूप देखि श्रीपति को मति गति पलट गई॥
फगुवा दियो मंगाय सांवरे कञ्चन रतन मई।
सूरश्याम को वदन विलोकत उघर गई कलई॥

८

गोकुल में खेलत होरी।
नन्दनन्दन वृषभानुसुता मिल अरस परस झकझोरी
राधा भिजोई पाग पिछोरी उन चूनर रङ्ग में बोरी
निरखि छवि काम लजो री॥

अबीर गुलाल कुङ्कुमा चन्दन वन्दन ले छिरको री
भर पिचकारी श्याम जू मारी भानुसुता रङ्ग बोरी
वाहे हरि होरी है होरी।
सखा सखी मिल देखत ठाढ़े भारी खेल रच्यो री
उन तोरी वाकी मोहनमाला उन लई है पीत पिछौरी
कहां जावो माखन चोरी ॥
उत तें सखी सब दौरके आई श्याम को पकर
लयो री
नारि शृङ्गार बनायके सुन्दर भूषण सब हि सजो री
नचाए है नन्दको पोरी।
फगुवा दे हो तब जानें पै हो भील देहु बलकोरी
वा दिनकी सुध भूल गए हो ता दिन चीर हरो री
करो अब काहे न ठगोरी ॥
अब कैसे जावोगे नन्दलला जु आन पड़े वश मोरी
मुरली बजावो नाचो गावो रिझावो ब्रजगोरी
तताथैया नाच नचो री।
सूरश्याम सो फगुवा लीन्हीं मन इच्छा फल कोरी
नन्द यशोमती देखत ठाढ़े हर्षी सखी चहुं ओरी
आनन्द अति उर हि बढ़ो री ॥

९

ब्रज में हरि होरी मचाई।
इत सौं निकसी कुंवरि राधिका उत सो कुंवर कन्हाई
खेलत फाग परस्पर हिलमिल सो सुख वरणि न जाई
सो घर घर बजत बधाई ॥
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ मञ्जीरा सहनाई
बरसत अबीर कुङ्कुमा केशर रह्यो सकल ब्रज छाई
मानो मेघवा झर लाई।
राधा सैन दई सखियन को झुंड झुंड उठ धाई
लपट झपट गई श्यामसुन्दरको वर वश पकर ले आई
लालको नाच नचाई ॥
फगुवा दए बिन जानें न पै हो करि हो कोटि उपाई
लेहों चुकाय सरस वा दिन को तुम मम चोर चबाई
बहुत दिन दधि मेरी खाई।
मुसकाति हो मुख मोर मोर तुम कहां गई चतुराई
कहां गए वो पिता तुम्हारे कहां गई यशोमती माई
लालको लेत छुड़ाई ॥
छीन लियो पीताम्बर मुरली शिर सो चुनरी ओढ़ाई
बेंदी भाल नयन बिच कज्जल नकबेसर पहराई
मनो नई नारी बनाई।
रहस विलास रच्यो वृन्दावन ब्रजवनिता यदुराई
राधा श्याम युगल जोरी पर सूरदास बलि जाई
प्रीति उर रहत समाई ॥

१०

राधामोहन खेलत फाग ब्रज रङ्ग छाय रह्यो।
सखी सङ्ग ले भानुनन्दिनी सखा लिए ब्रजराज
मुरली बजाय रह्यो ॥
अबीर गुलाल लाल पै डारत मारत केशर पिचकार
लाली ममाय रह्यो।
बाजत वीणा मृदङ्ग चङ्ग डफ झांझ ताल करताल
साज सब साहब बजाय रह्यो ॥
सखा सखिन को सखी सखनको झकझोरत
रङ्ग छाय रह्यो।
ब्रजमण्डल बीच धमार गोपी सब खेल रही घन
ज्यों घुमड़ाय रह्यो
सूर श्याम श्यामा मिलि विहरत ब्रजकुञ्जन
उमड़ाय रह्यो ॥

११

आयो है फाल्गुन मास कहै सब होरी होरा।
एक ओर वृषभानुनन्दिनी एक ओर हरि
हलधर का जोरा ॥
ब्रजनारी गारी देवें कोऊ भजि भजि आवत
तजि तजि खोरा।
जान न पावैं गहो री श्यामको सबै धरे
यौवनको तोरा ॥
रहि न सको कोऊ अपने घर मनो कामको
फिरो है ढिंढोरा।

कृष्ण जीवन लछीरामके प्रभु सों होत है झकझोरी
झकझोरा ॥

१२

तुम चलहु सबै मिलि जाहिं खेलन होरियां।
अपनी अपनी सुरङ्ग चूनरी मोतिन मांग भरो
रोरियां ॥
थरहरात अधरन पर मोरी अंगिया केशर बोरियां।
चावा चन्दन अगर कुङ्कुमा भरि भरि लई
कमोरियां ॥
अङ्ग सुअङ्ग गोपाल विराजत भलो बनो यह जोरियां।
केहरि लङ्क नितम्ब विराजत गजगति चाल
चलोरियां ॥
पिचकारी मोहन पर डारत विहंसी घुंघट मोरियां।
बाजत ताल मृदङ्ग और डफ पढ़ पढ़ बोलत बोलियां॥
नयन आंज मुख मांड़ श्यामको सब मिल करत
कलोलियां।
सूरदास प्रभु सब सुख क्रीड़त विहसत व्रजकी
खोरियां ॥

सिन्धु—भैरवी

आज सांवरे को मैं रङ्ग सो भरोंगी अबीर गुलाल
लिए मुख मोड़ोंगी।
जो सांवरो मोसे एक कहैंगे एकको लाख करोर
कहोंगी ॥

२

जावो रे सइयां को ले आवो रे सइयां नहीं आयो रे
मेरे धन्य धन्य बड़ो है सुहाग।
मैं सोती थी चढ़ मन्दिर सें सुख नींदड़ी मैं तो
पड़ी हूं अचानक जाय ॥

३

अंगिया बैंजनी चटकीली है सुन्दर बाल।
लाल पलङ्ग पर ज़रद किनारी ता पर उड़त गुलाल॥

४

जब लालनको खबर पाई ऐसी होरी मैं खेलूंगी
माई।
तेल फुलेल सखी हम देवे अबीर गुलाल उड़ाई।
यौवन हार शृङ्गार सब भूषण अङ्ग अङ्ग रहे
छवि छाई ॥

५

सांवरेके चरित्र सुनो री।
एक समय व्रजकी बनिता सब हर्षि चलीं
जल ओरी ॥
मज्जन हेत धसी यमुना में कोई सांवरी कोई गोरी।
करे जल सों झकझोरी ॥
वाही समय व्रजराज सांवरो अम्बरतट पहुंचो री।
लेके चीर कदमके ऊपर चढ़ गयो नन्दकिशोरी
मुदित मन आनन्द थोरी ॥
ताही समय सब ढूंढ़न निकसी कान्ह न दृष्ट परो री।
ता में प्रवीण सखी एक बोली देखो कदम पर को री
चीर सब के ले धरो री ॥
जामें एक सुघर व्रजवनिता प्रेम अधिक रसबोरी।
शीर्ष निवाय कहत पट दीजे हा हा करत बहोरी
श्याम सों दोऊ कर जोरी ॥
बोले श्याम मधुर रस बतियां तुम सब लाज तजो री।
लाज छोड़ जब सनमुख ऐहो तो पट देहौं गोरी
टेक यह जानो मोरी ॥
तब सब मिल मन यही विचारो कृष्ण टेक
नहीं छोरी।
लाज छोड़ जब सम्मुख भई वनिता प्रेम प्रीति उरझो री
वसन सब ही के दियो री ॥
मोर-मुकुट-मुरलीवालेको यह होरी रङ्गबोरी।
पलमें पार कियो भवसागर ता सो मन अटको री
सूर सुरझावत गोरी ॥

६

व्रज सें चलो खेलिये होरी।
कञ्चन थार बनावो सखी री तामें अबीर भरो री ॥
भर भर लो रङ्ग की पिचकारी सब मिल खेलें चलो री।
ऐसो गति उनकी करो री ॥

अबीर गुलाल कुङ्कुमा केशर मोहन मुख हो
मलो री ।
नारी भेष बनाय श्यामको पीत पिछौरी छोरी
नचावो नन्दको पोरी ॥
सब सखियन मिल धरो है कृष्णको दोउ कर
पकरो री ।
आंख आंज लहंगा पहरायो चूनर रङ्गमें बोरी
कहे हरि हो हरि होरी ॥
पकर कान्ह यशोमती पै लाई मन भावती करो री ।
सूर श्यामसों फगुवा लीन्हों मन इच्छाफल को री
मोहनको रङ्गमें रङ्गो री ॥

७

मेरे सइयां के मन में परो है गांठ ए री ए मैं
कौन यत्नसों खोलूं ।
सब सखियां मिल बन बन आईं ऐ री ए मैं बैठी
विष घोलूं अबके फाग पिया भए बैरामी ननर नगरमें
ढढोलूं ॥

८

समुझ क्यों न दे रे ए रे कान्ह लाजकी गारी ।
ससुर हमारे अस्सी वर्षके सास हमारी बारी ॥०
सइयां हमारे पलना झूलत हैं हूं मैं झुलावन हारी ।
अगर सुने मेरी बगर सुने रे सास सु ँ दे गारी ॥
भर पिचकारी मेरे मुखपर मारी भीज गई तनसारी ।
मोहे भिगोवत मोहे बिगोवत देत सबनमें तारी ॥
कहा भए ब्रजके ठाकुर तुम सास सुनेगी हमारी ।
ऐसो ढीठ कह्यो नहिं मानत लोक लाज कुल डारी
कृष्णानन्द कहत हौं फिर फिर हौं तेरे बलिहारी ॥

९

काहे हमसे रूसे विधाता गुण अवगुणके हो
तुम दाता ।
तुम हो एक और नहीं स्वामी और झूठ जगत्
कर नाता ॥
जनकी चूक सदा प्रतिपालक गुण अवगुण कर सब
जग जाता ।
गावै गूदर जन शोक निवारण जस बालकके पिता
और माता ॥

१०

गोकुल कैसे जाऊं री दैया बीच बसे बटपार कन्हैया ।
ता मग नाच नचावत आवत मानत नाहिं न
नन्द दुहैया ॥
एकसे एक सखी गुण आगर मधुवन देखो न
कोई जवैया ।
गावै गूदर कोउ कैसेके निबहै सब गलियन बिच
धूम मचैया ॥

११

बीते अवधि तेरो खेल न छुइ है यौवन अकार्थ
काम न अइ है ।
जो कछु रूप संवारो नैहर अन्त समय कोई सङ्ग
न जइ है ॥
मिलनको आई सखी सहेली ऐसो पिया को कौन
मनइ है ।
गावै गूदर हम सासुर जावै नैहरमें को पार लगइ है ॥

१२

होरीके दिननमें गुमान करदा मोहना आवदा री ।
गावदा बजावदा मुरली सुनावदा सांवला मेरे मन
भावदा री ॥

१३

होरी खेलै ब्रजराज दुलारो ।
ग्वालबाल बहु सङ्ग लिए गिरधर नव रसिया उमंग
अपारो ॥
रङ्ग रहे अङ्ग बसन आभूषण अबीर गुलाल क्रान्ति
छवि छारो ।
करनि कनक पिचकारी राजत चितवन मन
चित्त उरझारो ॥
वृन्दावनकी कुञ्ज कुञ्जमें रङ्ग रङ्गके फल खिलारो ।
रसिक खुशाल विलोकत शोभा नित्यप्रति राधावर
सुखकारो ॥

१४

तैं तो सुख हू न बोले री चुनरिया रङ्ग डारी हमारी।
भर पिचकारी मोरे विरहनि मारी भीज गई तन सारी
कृष्णानन्द मैं दासी तिहारी सुनिये अरज विहारी॥

१५

तेरे वशमें गोरी भीज गई रङ्ग रसमें चोलो नहीं
सांवलिया।
रैन कहीं जागी आये बालम झूठी-झूठी खात
कसम दैया॥

१६

जावो लला तुमसे को खेले होरी धर बहियां
झकझोरी मोरी।
यह मोहन तूने मोहिनी डारी मर मारी छतियां
पिचकारी मोसो करत बरज़ोरा ज़ोरी॥

१७

मोरे होरी के खेलैया रङ्गभरी पिचकारी मारी रे।
चोवा रे चन्दन और अरगजा अबीर लिए भर
झोरी रे॥

१८

भीजत चुनरी प्रेमरस बूंदन।
आरती साजके चली है सुहागन अपने सइयांके ढूंढ़न॥
चढ़ी गगन खुल गई किवाड़ी गुरुके चरण लागी
झूलन।
सरस बन्द किनारी लागे प्रेमके लागे फूंदन
कहे कबीर गोरी यही विध भीजे मिट गए
दुःख दूंदन॥

१९

ए दोउ खेलत फूले फाग री।
आयो वसन्त फूले वन टेसू बोलत चातक मोर
जाग री॥
उमङ्ग आनन्द अवधि अधकाई भूपद्वार होरी होन
लाग री।
बाजत मृदङ्ग उपङ्ग चङ्ग ध्वनि मन्द स्वरन भए
मधुर राग री॥
सुनत श्रवण शिव विधि उठ धाए नहीं भावत जप
योग याग री।
इतते राम सखा जुर आए उत सीता लिए सखी
साज री॥
लीन समाज सिया ललित लाड़ली करत हंसी रस
रूप राज री।
अबीर गुलाल राम दिशि छूटत उत सीता लिए
अमृत गागरी॥
मची कीच मग बीच अवधपुर सुनि मण्डित मानो
मकर प्रयाग री।
भीज जात तन चीर चादरे पट आभूषण उरमाला
घांघरी॥
महाराज महाराणीको भयो है अरुण तन
नए बाग री।
वे सखी ओट अटा चढ़ देखत रति मलीव
अति प्रगट उजाग री॥
उझकि उझकि विधुवदन देखावत रस लसत डसत
मानो मन हो नाग री।
ललिता री सिय ललित लाडली चली राणी
कुलकान त्याग री॥
लपट झपट गई लिपट लालको पिय प्यारीके
परम भाग री।
फगुवा ले हौं तब जाने दे हों झीने पट औ झपट
झाग री
तुलसीदास सङ्कुल जानके लीन्हों वरसे मूल मांग री॥

२०

रघुवर से कहियो मोरी।
सुनो हनूमन्त अञ्जनी नन्दन कहियो सन्देशा
निहोरी
सीस निवाय चरण गहे लीजो कीजे विनती मोरी
रामजू सों दोउ कर जोरी॥
भृगुपति कीर्ति सुनी है जिनकी तिनको धनुष
जिन तोरी।

ते भुजबल अब कितहि दुरावत रावण दुष्ट हनो री
कहत यह जनककिशोरी ॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा खान पान विसरो री।
वन उपवनमें जाय परो हूं तेरो ही ध्यान धरो री
राम राम मुखसे कहो री ॥
केतिक दूर लङ्कगढ़ तुमसे जिमसे सृष्टि रचा री।
हा रघुनाथ कौशिल्यानन्दन शीघ्र ही कष्ट हरो री
भक्तन प्रतिपाल करो री ॥
कहै हनूमान् धीर धरो माता लङ्का करूं जिमि होरी।
रावण कुम्भकरण सब मरि हैं मेघनाद हनो री
देऊं तेंतीस बन्द छोरी ॥
तुलसीदास प्रभु तुम्हरे मिलनकी अवधि
आशा रही थोरी।
प्राणदान दीजे रघुनन्दन गावत कीर्ति तोरी
प्रीति अब करहु बहोरी ॥

२१

दशरथनन्दन जनककिशोरी अति सनेह अनुराग
लाग री।
अवध कुंवर प्रिय चतुर शिरोमणि जनक लाडली
परम नागरी ॥
सिया गात रङ्ग श्याम चुनरिया लालनके शिर पीत
पाग री।
जगमगात भूषण अङ्ग दम्पति रत्न यत्न मणि
जरी तागरी ॥
प्रिय गुलाल भरि फेंट कुङ्कुमा सीय सखी लीन्हें
रङ्ग गागरी।
मलत गुलाल सीय मुख लालन लालन मुख सिय
मलत आगरी ॥
गाय बजाय खेलते होरी अवध पुरीके भाग्य जाग री।
सखी जानकी प्रपन्न सीय सङ्ग नाचत होरी
गाय राग री ॥

दोहा

अवधराजके लाड़ले कवि सालनो प्रिय तोर।
सखी प्रपन्न जानकी मोह लखी मति मोर ॥
अवध ओर होरी परो चलो सकल नरनारि।
सखी प्रपन्न जानकी सब विधि सुखी निहारि ॥

२२

वरजत री रङ्ग डार दियो अब डारोगे तो जानोगी।
अंगिया भीजी खुश रङ्ग सारी गारी देगीऊं तो
मानोगी ॥

२३

कौन तरह से फेंकत हो जू अबीर गुलाल
होरीके दिनन में देखो लला मेरो आंखन खटके।
काहु सों न डरों मैं तो तुम सों लरोंगो पाग
भिजोऊंगो अबकी फागमें जैसे श्याम मोरी चूनर
झटके ॥
रङ्ग भरे कुङ्कमा जो प्यारे मेरे पिचकारिन होइ
टटके।
जिन तियनमें मान करत हौं उनहु को मुख ले
मलो उमङ्ग सो अपनी बार देखे कैसेके मटके ॥

२४

मिथला दोऊ होरी मचाई।
इतसे कुंवरी जनककी उतसे अवध कुंवर रघुराई ॥
केसर रङ्ग गुलाल परस्पर डारत मोद बढ़ाई।
मनहुं मेघवा झर लाई ॥
बाजत वीण मृदङ्ग मञ्जीरा जरतरङ्ग सुरनाई।
सखिन घेर सिय वल्लभको तब पकरि लली
ढिग लाई लालको नाच नचाई ॥
कर सों धनु शर छीन वनमाला सारी नील ओढ़ाई।
नथ चूरी चक्षु अञ्जन रञ्जित जावक पग दर्शाई
मनो नई नारी बनाई ॥
अब सब भूल गए मनमोहन कहां खोई चतुराई।
नेह नहीं हम आप लगावैं कहां कौशल्या माई
तुम्हें जो लेत कुड़ाई ॥
बिन पाए फगुवा नहीं छोड़े कोटि करो रघुराई।

सेवक श्रार धर सब रस चाख्यो तुम चित्त चोर चवाई
सदा सौगन्ध खाई ॥
हसत लसत रचि फाग जनकपुर सखी सखा
अधिकाई ।
सीताराम युगल जोरी पर सखी जन तो बल जाई
प्रेम हिय रह्यो समाई ॥

२५

जनक पुरकी सखियन के सङ्ग होरी खेलत
चारो कुमार ।
अबीर गुलाल की फेंट भरी है मारें केसर पिचकार ॥
बाजत मृदङ्ग वीणा मुहचङ्ग गावत दे दे तार ।
राम लच्मण भरत शत्रुघ्न उत जानकी सङ्ग लिए बार ॥
सीता रामको राम सीताको बोले हो हो
होरी पुकार ।
रामदास प्रभुको छवि निरखके वार वार बलिहार ॥

२६

मेरा लेता सन्देसा जाइयो पुन मैं तैंड़ो वल जादियां ।
पुन ढूंढ़न नू हों जो चली री वैरीनें बोया कांटा
के पुन मोहे आन मिलै नाहीं तो मरना कबूल ॥

२७

श्यामसुन्दर सङ्ग खेलत होरी ।
गोपीवृन्द रूपगुण आगर तिन मध्य श्रीवृषभानु
किशोरी ॥
ताल मृदङ्ग बजावत गावत अबीर गुलाल
उड़ावत गोरी ।
जानकीदास निरखि दम्पति छवि हर्ष हर्ष
डारत तृण तोरी ॥

२८

श्यामसुन्दर सङ्ग खेलन आइयां ।
रङ्ग रङ्गीली वारी छैल छवीली चञ्चल चपल
चहुं दिश धाइयां ॥
घतर गुलाल अरगजा केसर पिचकारी भर भर
रङ्ग बरसाइयां ।
जानकीदास विलास सकल सुख निरख निरख
व्रजमोहन को मुख हर्ष हर्ष हिय मोद बढ़ाइयां ॥

२९

बाग़बहार निरखत बन रानी ।
सब सज आई सहेली ग्वाल कहत मनमोहन जानी ॥
उठ धाए बनवारी बाग़में छिप रहे कोउ न जानी ।
जब राधामोहन गुण गाए वंशी शरत् सुनानी ॥
धाय आई जहां मोहन ठाढ़े कर धर मृदु मुसक्यानी ।
फूल रही गुलाबों दी कलियां आनन्द मग्न मनमानी
प्रेमरङ्ग वृन्दावन विहरत जहां नन्दनन्दन वृषभानु
राजधानी ॥

३०

निडर डगरके कगर ठाढ़ो रे ।
हम जानत हैं सब बात विहारी ग्वालबाल क्यों
पुकारो रे ॥
आज हमारे साथ सङ्गातिन चकित चौंक क्यों
निहारो रे ।
फाल्गुनके दिन भाग्यन पाए अबीर गुलाल संभारो रे
प्रेमरङ्ग सौं भिजाय पाग पट सोहत श्याम सो
हारो रे ॥

३१

कारी कामरवारे कान्हा मैं ना खेलौं तो सो जो मैं
होंगी व्रजरानी ।
दान देत मटकी दे पटकी अटकी विलास करो
कहैं ते मोहे सो वार वार बोरानी ॥
आज गई सङ्गकी सखियां सब दुर्जन लोक निहारो रे ।
प्रेमरङ्ग प्रभु मोहे न सुहावत सबसों न हमन
विसारो रे ॥

३२

विरम रहे कासे खेलूंगी फाग ।
हित चित्तको न कहो सुनो आली मोहे दियो वैराग ॥

३३

यमुना कैसे के जाऊं री होरी खेले मोहन पनघटवा ।
ग्वालबाल सब सङ्ग सखा लै वंशो वटको तटवा ॥

वीणा मृदङ्ग बजावत डफ मुरली नाचत सङ्गीत
ज्यों नटवा।
रसिक कृष्ण प्रभु खेल प्यारे धम मचाई नन्द महरके
नागरनटवा॥

२४

कहीं उरझि श्याम गोकुलमें मैं तो ढूंढ़ फिरी
मधुवनमें।
ऐसा यत्न बतावो सखी री जो पिया आवै
फाल्गुनमें॥
विना फगुवा लिए जान न देहौं याही बात मेरे
मनमें।
धूम मचे हं अबीर उड़े हं रसिक कृष्ण रङ्गी रङ्गनमें॥

२५

आए री श्याम नहीं आए यह फाल्गुन विरह बढ़ाए।
इस कुवरीने कछु मन्त्र पढ़ो टोना कियो राखे
हरि विरमाए॥
मैं लेके लाल गुलाल लाल विन क्या करूं मोहे
विन वीरन न सुहाए।
मोहे रङ्ग भयो वेरङ्ग रङ्गीले श्याम विन मेरो
उनसे व्यथा सुनाए
मेरी बुद्धिविहारी लाल सो इतनी जा कहो मोहे
अबके आन जिवाए॥

२६

बुझावो फाल्गुन चलो जात पिया को ले आवो री
मेरे विरह की आग।
मैं तो सोती थी मण्डपमें सुखनींदरी मैं तो परी हं
अचानक जाग॥

२७

कोई पिया मनाए ले चार दिन फगुवाके बहार री।
कृष्णानन्द कहत पुकारके यह झूठो संसार री॥

२८

होरीके दिननमें कन्हैया भला अब तोरी बन
आई हो।
जब रहे राज्य हुकुम कंसासुर तब कहां नन्द
दुहाई हो॥
तब रहे वन वन गऊ चरावत अब पाई
ठकुराई हो।
अब तुम ओढ़े पीत वसन तन कामरिया
बिसराई हो॥
नैन अनन्त नेहके नाते कहो सखी तुम्हरी बड़ाई हो
राज्य दई प्रतिपालके ठाकुर युग चारो चल आई हो
गावै गूदर प्रभुभक्त जान के लीन्हें अङ्ग लगाई हो॥

२९

हो॰होरीके खेलैया सइयां मोरे मोके गरवा न
लगावत।
वालापनको नेह विसारो सेजरिया नहीं आवत॥
ऐसा नहीं मित्र कोऊ जग माहीं चूक मोरो
बख्शावत।
गावै गूदर सइयां चतुर खेलारी वाको कोऊ
समुझावत॥

३०

होरीके खेलैया मेरो अवधि वीत गई सारी हो।
सब रङ्ग नैहरमें हम खेलि गंवाये मोहे निडर है
सासुरारी हो॥
निशदिन चितवा नज़र न आवे बालम सुरत
विसारी हो।
विना प्रिय पीतम कर्म विहीनी सर्व खेल गई
हारी हो॥
अब प्रतिपाल करो मोरे स्वामी अपनी ओर
निहारो हो।
गावै गूदर गिर दियो है सइयां परदेश डारो हो॥

३१

कासन फाग खेलों जगमाहीं वीते अवधि सइयां
नाहीं भइ है।
फाल्गुन जइ है बहुर फिर अइ है गयो यौवन फेर
नहीं रइ है॥

यौवन जोर छांह नर वरकी पल चण ढरत ढरत
ढर जइ है।
बालापन खेलत में खोयो तरुण विषय वृद्ध चिन्ता
जरइ है
गावें गूदर सब फाग खेलें जग हमरा सइयां कबहूं
सखी भद है॥

३२

खेलनके मैं जाऊं देया मोहि यों ही सतावे।
सास खेले और ननद खेले और खेले देवरानी जेठानी
सङ्गको सखियां सब ही खेलें मोहे सास तो
लाज बतावे॥
बाखलमें मोहे छोड़ जात है रङ्गसे भरी सब आवत
है मोहि तो दाव बतावे।
अचपलके देखनको ए सखी देखनको मेरा जिया
ललचावे॥

३३

तेरी हमसे कहा छिपावे छिनरिया भीज गई
सब सारी।
कर मुकरावत काहे दुरावत नैन मिनावत दारी॥
बसन भूषण तेरे कहुंके क ' कुछ रङ्ग परो तो
पै भारी।
तू जो गई खेलनको अचपल अबके फाल्गुन तेरी
बारी॥

३४

कौन शहजादानी तेरी बोलियांनी ठोलियां।
मोहे पड़ो डर गुरुजन दी तू गारी गादा रङ्ग होरियां
ऐसी न कीजिए निडर नन्द दे केसररङ्ग भिजई
मोरी चोलियां॥

३५

बन आई है चतुर नारी होरी रङ्ग भरी।
सूहो सारी घेर घांघरो अंगिया बूटेदार रीरी
आड़ धरी॥
मोतिन मांग भरी वनिता के मानों गङ्गा धसी
हरिद्वार अञ्जन रेख धरी।
छूटी लट वनिताके मुखपर मानो नागिनी सी
डस जाय वेणी पीठ परी॥

सिन्धु—धमार

बांह छुवो जिन कान्ह हमारी हों जानत हों
तिहारी रीति।
औरन सो होरी खेलत हो मोसों करत सुख
देखी प्रीति॥
जावो लला उन ग्वारनके ढिग वांही सुनावो विरह
की गीत।
कैसे जिय पतियाय दर्श विन सुनो न राजा
काके मीत॥

सिन्धु—यत्

मदमाती नारी घर लूं कैसे आवे।
तोरी बांह बनी पहुंची जब वाहको दोष लगावे॥

सिन्धु—बांसवाड़ा-यत्

चल देखन जइये आज दुलहन बन आई।
घर घरते सब बन बन आई ले ले रङ्ग सब रसभरे
छूटी लट मुख ऊपर आई घूंघटके वल जाई॥

२

लला यह यौवन मतवारे अंगिया रङ्गराती।
होरीके रङ्गमें गोरी बनी मुसकाय चली चित्त चोरी
सांवरे से लंगवार खड़े अरे ठगवारेने गारी दीनी॥

३

श्यामा श्यामके सोंधे भोने बाल।
इतते आए श्याम मनोहर उतते गोपी ग्वाल॥

४

होरी खेलन आए कछु खेल न जानो।
उर वनमाला गले पग लो करमें मुरली सुख पानो॥
चन्दन माल विशाल पिताम्बर पाय लगी याही बानो।
जी लगि नारी खेलारि न जाने मोहन कीन्ह पयानो॥
तो लगि जाउ चले चुपके गृह वेग सिखावन मानो।
जो हठ ठान रहोगी इहां तो परमरङ्ग यह जानो॥

५

वर बश गहे कर है ललनागन।
गाल गुलाल मला अलि आयो अनोखा खेलैया
ऐसो खेल कबहूं नहीं दीख नयन ॥
लाल गुलाल दूरतें डारत टारत अञ्चल लेत वलैया।
ले पिचकारी चलाव भायसों हाथ जोरि पग परत
कन्हैया ॥
बांके नयन सन करत सैन औरन और चिति दृग
कोर निहोरत चोरत चित्त चलया।
गावत गारी जोय जोई भावत धावत म धमारि
मचैया ॥
करत परस्पर सरस सैन अङ्क भर चरि वरम
रङ्गसो लगत नाहिं न नेक उपैया।
कहा करूं अब जाउं कहां भजि कान्ह भयो
कुलकान हरैया ॥

सिन्धु—काफी

आज खेलोंगो होरी श्याम मेरे द्वारे हो आय आय।
युक्ति सों अचरा पकर कर ठाढ़ो फगुवा लोंगो
मनाय मनाय ॥
हमारी अंगिया सब रङ्ग बोरी अपनी पाग
बचाय बचाय।
कृष्णानन्द बलिहारी मन मोह्यो रागिणी गाय गाय ॥

२

खेले सांवरो होरी यमुनाके तीर।
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ स्वरध्वनि मिल उठत
गम्भीर ॥
सुन ध्वनि मन्द मधुर मुरलीको मुनिजन धरत न धीर।
दुरि मुरि झपट लपट नन्दनन्दन केसर
छिरकत नीर ॥
बहियां पकर मुसक्याय राधिका हरि मुख लाय
अबीर।
औरसरङ्ग रीझ यह व्रजको हम क्यों न होत अहीर ॥

२

मैं गमने नहीं जइहूं रे राम ॥
नवल बहुरिया चली गमनेको कर दुलहनके भेष।
नयन रोवे जो हंसे मैं तो चली हूं पियाके देश ॥
गमने न जइहूं टोना करि हों नैहर धूम मचै हूं।
जो जो मेरे गवनेकी बात चलैये वा पर माहुर खैहूं ॥
चलत चलत मेरे पाव पिराने जेहर भर गई धूर।
मैं तो हे पूछूं बाट बटोहिया नैहर केतिक दूर ॥

सिन्धु—भैरवी

ऐसो फागु मचाए खेलन पुरवासी आए।
केसर रङ्ग बनाय विविध विध हौज फव्वारे भराए ॥
गहे बहियां एक एक को ले ले तिन मध्य
तिन्हें न्हवाए।
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ ले ले ऊंचे स्वरन
मिलाए ॥
वेणु बांसरी बाले मधुर स्वर सुन गन्धर्व लजाए।
अटन चढ़ी निरखत सब नारी फेंकत कुङ्कुम
गुलाल उड़ाए
नील पीत पटकी चमकन में मानो घन दामनी
छिपाए ॥

२

सखी यशोदाके ललाने मोहे गारी दई रे।
डगर चलन नहीं देत काहुको ऐसो करत नई रे ॥

३

आज सोहाग की रैन बनासे नेह लगाया।
बनरी बनरा युग युग जीवे बनरी ने भर पाया
कृष्णानन्द यही सुख जग का जो ढूंढ़ा सो पाया ॥

४

खेलन आई रङ्गराती होरी बाल।
सांवल गोरी ले ले दौरी भर भर मुठी गुलाल ॥
इतते आई नवल राधिका उतते आए नन्दलाल।
इनके सङ्ग सब गोप वधू हैं उनके सङ्ग सब ग्वाल ॥
बहुत दिनन पर भेंट भई है यह दिन दीनदयाल।
मन माने का फगुवा ले हों जे हो कहां गोपाल ॥

५

आज व्रज होरी खेले नन्द लाड़लो ग्वाल बाल
लिए सङ्ग।
डफ धुंकार मुरली स्वर मिलकर बाजत वीणा मृदङ्ग॥

६

देखो देखो सखी री लाखन आए मोरे।
डगमगात पग धरत धरणी पै आए खोल तन
दृगन की कोरे॥
बदल गई वनमाला गरेकी छुट रही पीत पीछोरे।
छविनायक मुख द्युति कुम्हलानो जैसे चन्द्र भए भोरे॥

७

छांड़े छांड़े छैलवा बहियां नाहीं मरोरे।
नाहक़ रार करत हो हम सों काह लोन में तोरे॥
घाट बाट मेरी कछू न जानो भूल परी याही ओरे।
छविनायक मई वार जान दे अब नहीं अइ हों
बहोरे॥

८

सखी ए री तुम्हारे यौवन बटपार।
चलत मुसाफ़िर मार लेत हैं प्रेमको फांसो डार॥
जौन फंसो नहीं छूटन पावत कर नहीं सकत पुकार।
छविनायक जगमें सोई बाचे जेहि राखे करतार॥

९

होरी खेलैं राधामाधव व्रजकुञ्जनकी खोरी।
अबीर गुलाल उड़ावत गावत बसन केसर रङ्ग बोरी॥
मृदु मुसक्यात परस्पर ठाढ़े श्याम राधिका गोरी।
ख्याल खुशाल करत नन्दनन्दन चितवनमें
चित्त चोरी॥

१०

जावे री पिय पास खबर मेरी कौन सुनावे।
सब सखियां मिल बन बन खेलैं मो जियरा पछतावे॥
ना हमको पतियां लिख भेजी ना फिर आप ही आवे।
सोच सोच तुम बिन दिन बीतत रैन नींद
नहीं आवै
काज़म प्रियको आशा लगी है ना जानों कब आवै॥

११

नन्दनन्दन व्रजराज कन्हैया मोसे नाहक़ रार करो री।
वृन्दावनकी कुञ्ज गलिनमें बहियां पकर मरोरी
कृष्णानन्द न्योछावर तन मन कर दीन्हों मैं तोरी॥

१२

सइयां विदेश गमन कियो है का सङ्ग खेलूं फाग री।
जिनके सइयां नित घर ही रहत हैं उनके धन्य धन्य
भाग री
कृष्णानन्द रहत निशिवासर श्यामचरण मन लाग री॥

१३

छैलवा बहियां पकर मुख मोजन लागे अब तो
तोरी बन आई रे।
हमारे सङ्गको दूर निकस गई मोहे अकेली
कर पाई रे॥
हा हा करत हौं पैयां परत हौं जिन कोउ देखे
कन्हाई रे।
कृष्णानन्द मोहि व्रज बीथिन लियो श्याम अपनाई रे॥

१४

बावरी मोहि कर गयो योगी।
रूप मोहनी डार कियो मोहि सिसकत हौं
ज्यों रोगी॥
पहिले मीठी बात सुनाई पाछे किए उ वियोगी।
कृष्णानन्द ध्यान निशिवासर तेरे हि मिलन संयोगी॥

सरपरदा—तिताला

मनमोहन पिया होरी खेलन आए जागे सखी
मेरे भाग री।
कञ्चन थार कुसुम केसर रङ्ग सुमन सुगन्ध पराग री॥
अबीर गुलाल अतर अरगजा देहों श्याम पै डार
री खेलों मैं हरि सों फाग री।
धन्य धन्य कृष्णचरण सखी पाए कगुवा ले हों लाज
त्याग री॥

२

मनमोहन मन ही में मेरे होरी खेलन कहां
जाऊं री।

पूरणब्रह्म मेरे घट ही के अन्दर नाहक क्यों
भटकाऊं री ॥
ज्ञानको रङ्ग ध्यान पिचकारी अपने सइयां सो
रङ्गाऊं री।
भांति भांति को रङ्ग बना है एक ही रङ्ग रङ्गाऊं री॥
नटवा एक कला बहु तेरी पार न पायो काऊं री।
माया मोह भ्रम सब त्यागी ती कृष्ण रसिक
दर्शाऊं री ॥

३

याही सोचमें मई हूं बावरी रैन गंवाई सोय।
हमरी चुनरिया पियकी पगरी दिन दिन मैली होय॥
पियकी प्यारीको का समुझावे जो पिय चाहे सो होय।
टांड़ा लाद चलो वनजारा हालर हालर होय ॥
बाला रे पन सब खेल गंवायो तरुण तिया मुख जोय।
वृद्ध भए बहु चिन्ता बाढ़ो नैन गंवायो रोय ॥
क्या मुख ले घर जाउं सइयांके बैठी हूं यौवन खोय।
सोवत सोवत बहु युग बीते ना जानों मेरी क्या
गति होय
शाह कबीर दया सत् गुरुको गुण अवगुण सब
गए हैं धोय ॥

४

कारी कामर वा पै कैसो कुसुम मेरो मन तो सांवल
रङ्ग पाग्यो है।
सोवत जागत विहरत निशदिन हरि चरण चित्त
लाग्यो है॥
कामिनी कामिनी कामसे लागत मोह मदन मन
त्याग्यो है।
और रङ्ग मोहे नीको न लागत मोहन रङ्ग मन
पागयो है ॥
भांति भांतिको रङ्ग बनो है कृष्ण रङ्ग अनुराग्यो है।
काम क्रोध मद लोभ मोह सब देख दूरते भाग्यो है॥
सूरदास प्रभु हरि चरणनमें स्मरण चित्त
अनुराग्यो है।

कहे कबीर सुनो भाई साधो आनन्द अनाहत
जागयो है॥

५

सइयां नहीं घर मोरे री सजनी का सङ्ग खेलूं मैं
होरी रे।
कृष्णानन्द आनि मिल प्यारे विनवत दोऊ कर
जोरी रे॥

६

फागकी घातें सौ सौ जाने ऐसे खेलारी सों डरिए री।
सब सखियां मिल बन बन आईं लै गागर रङ्ग
भरिए री॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर पिचकारिन रङ्ग
डरिए री।
जहांपनाके चरणन नीचे चल गोया घर करिए री॥

७

आमदा बूदं रफ़ता बूदं ए बीबी होली कुजा
बूदी तुम।
दर दौलत घर चल शाह यमनके बजावत मृदङ्ग
खेलके खर रङ्ग माय बजाय दिला बूदी तुम॥

८

श्री यशोमतीके ढीठ लंगरवा काहे को मो को
रङ्गमें बोरे।
क्यों तोरी होरीमें आग लयाऊं पैड़ पड़ो है
नाहक मोरे॥
तोरी प्रीति को कौन ठिकाना ऐसे के जोरे ऐसे के
तोरे।
प्रीति की रीति तुराव से सीख ले जियत मरत
कबहूं नहीं छोरे॥

आयो री आयो वसन्त सुहावन।
आवो री सखियां सब हिल मिल के नए नए रङ्गसों
वसन रंगावन॥
नई बहार नई ऋतु लागी नई नई छविसों
पियाको रिझावन।

अबकी बसन्त पिया अङ्गनमें आए मो घर फागु मचावन
भई तुराब पियाकी कृपा काहे न होरीको धूम मचावन ॥

१०

कासे खेलूं मैं होर। हमरे तो सङ्गको सभी मतवारी रे।
भर पिचकारी मुखपर मारी बोर देत रङ्ग सारी रे
अबीर गुलालके बादर छाए रङ्गको परत फुहारी रे॥

गारा—यत

मथुरामें ध्वनि धुकार मचो।
तब खेलन लागे हो होरी आनन्द सुख सो रचो ॥

बहाग—धमार

ए री हो यह मान लेहो जू बात भली बुरी ऐसो अन्तर जैसे दिन औ रात।
प्रथम विहस मधुकर हो लगत है पाछे मन पछतात
बालपनो औ तरुण तब गुण सो समझि जात ॥

२

पियसों कैसो होरी खेलों सखी री मोहनसों जाय अपनो जिय लाने।
चोवा चन्दन अबीर कुङ्कुमा केसर रङ्ग झोकों तब मेरो मन माने ॥

३

चमक चपला सो आई फाग खेलनको चोप।
ऐसो रूप बिराज रहो है जैसे कनक धरो ओप ॥
वर्ण वर्णके बाजे बाजे सुनि जुर आए गोप।
छविनायक भुजा गहे गर लाई लख सखी भई अलोप॥

४

आए कुंवर कान्हैया आज।
काह्न सो लपटत झपटत दपटत रङ्ग भाए चाए करत लीन्हें नाना साज॥

५

लरो दोऊ सौतें आज लरो।
घर घर नाक अङ्गुरिया बोलत रोशन ज्ञात करो ॥

६

आली री नरनारी बौरानी बहुर हो होरी में धूम मचानी।
कौन कौन पर भोर परी है काह्न काह्नको न जानी॥

७

एड़ो फिरत या गोकुलमें ए री वो तो श्याम कहावे।
जा बातनतें लाज लगत है तेहो बात सुनावे ॥
ज्यों ज्यों खोजे मन हो मन में त्यों त्यों अङ्गुरी नचावे।
कारो वदन अचपल बांको री दौर हो दौर मेरे आवे॥

८

या व्रजमें को खेले दई होरी।
अबोर गुलाल आंखनमें डारत ऐसो कहा जोराजोरी॥
माथे तिलक धरे जयमाला गरवा लगाई बरजोरी।
रङ्ग पिचकारो छिप छिप मारत मुखसों बोले हो हो होरी ॥

९

मोहन होरी खेले आज।
वीणा रबाब मृदङ्ग झांझ डफ सब हो बने हैं साज॥
केसर रङ्ग धरो भर गगरो तुम आवनके काज।
सखी समूह भाग्यन हम पायो दूर करो यही लाज ॥

१०

यौवन मदमाती गुजरिया कर आई पिय सों रार।
भर मारी पिचकारी चुनर पर मोहन चतुर खेलार ॥
चोवा चन्दन अतर अगरजा मुख मोड़ो कर प्यार।
छविनायक यह जीवन को फल मिलों गर बहियां डार ॥

११

झपट पिचकारी मारी निपट निडर रङ्ग भरके।
अब कैसे जाऊं व्रज मोरी सजनो सब वैरी भए हैं घरके ॥
ता पर बरबश अङ्ग लगाई कर दोऊ कर सो पकरके।

छविनायक मोहे जब सुध आवै छरक रहीं हिय धरके ॥

१२

मोरी छतियन मारे गेंदवा री होरी अब न जैहौं खेलनवा।
अबीर गुलालको धूम मचावे मोरे मुखसे मले अबिरवा
होरी खेल मोहे गरवा लावे ऐसो ढीठ निलजवा॥

१३

ए री कुंवर कन्हैया चलत फिरत मेरे गोकुल में पास हो पास।
घरतें निकसवो दुरबार भयो मोहे आन परो एक गांवको वास॥
डरत फिरत मन ही मनमें नाहिं न सुन पावे मेरी सास।
पकर कोरे छिपत हैं ऐसे अचपल जो फूलनमें वास॥

१४

मेरी अङ्गिया भीज गई सारी हां रे लाल पिचकारी न मारो।
भर भोरी अबीर गुलाल लिए है मेलो छतियन पर पिचकारो जिन डारो॥

बिहाग—चाचर

मैं छिरको तोपे गुसैया मोरी रङ्ग से भर दे गगरिया।
वो ही रङ्ग मोहे रङ्ग क्यों न दे रे रङ्ग तोरी पगरिया॥

बिहाग—धमार

मोहन मो पै रङ्ग न डारो मैं तो भई हूं रङ्ग सरबोरो।
भर मुठी अबीर गुलाल डारो बोलत हो हो होरो॥

२

चलो री आज कान्ह सो होरी खेलें यामें कछु लाज नाहीं।
अपने जियमें विचार देखो ऐसो को वर है जगमाहीं॥
सुर विरंचि महेश जी हि ढूंढ़त नहीं पावत तेहि काहीं।
धन्य भाग्य वाके दर्श जो हरि सङ्ग रहत डार गरबाहीं॥

३

एरी यह फाल्गुन बीतो जात सखी री कब खेलौंगी होरी।
है अभाग्य धिग् जोबन उनको ज्यो होरो में कोरो॥
जोवन सुफल आज है उनको प्रेम पिया रङ्ग बोरो।
चण चण पल पल अवधि घटत है रहो जात अब थोरो॥
निकस जात पर हाथ न आवे ज्यों पतङ्गको डोरो।
लोक लाज कुलको मर्यादा यह सब मन सो तोरो
हिलमिल एक रङ्ग हो बैठो मग्न रूप हरि सो रो॥

४

हां रे होरो हो रहो।
सब ही सुहागन खेलन निकसो हौं ही दुहागन सो रहो॥

५

यह निधरक भयो व्रज में खेलत हो हो कर होरो।
कैसे के निकसो मग में सजनी सबके मुख मोड़त है रोरो॥
रङ्ग डार गयो मोहे सरबोरा कहा कछु मो पै पढ़ डारो री।
सुन्दर श्याम मनोहर मूर्ति बहियां मरोर मोहे झकझोरो॥

६

रे ऊधो को खेले व्रज होरो।
मन हर लीन्हों नन्दनन्दन जू कुंवर राधिका गोरो॥
अन्तर गति को व्यथा हमारो जानत नाहिं न कोरो।
कहा कहो विश्वासो सूर प्रभु सो प्रीति अचानक तोरो॥

७

यौवन को गोरी अंङ्गिया में जो छिपावत रो।
अति मदमाती चाल चलत है देखत मन ललचावत रो॥

८

ऐसे ढीट कन्हैया सैन मोहि बुलावत री ।
वृन्दावनकी कुञ्जगलिन में फिर फिर वीणा
बजावत री ॥

९

जा सों प्रीतिरीति करि मानो लालन वाही के रहिये।
तुम सांचे कि धों वे सांचो हैं सोहैं करि कहिये ॥
गुण गरबीले गुण न गनत हो यह जोह कैसे सहिये।
आए हो बलिहारी प्रण करि तुम्हें न ऐसे चहिये ॥

१०

लाल कैसे झलकत आवत यह तन में वाको
यौवनको धूम ।
यह शीशे में रङ्ग केसरको उमंगी झांवत जाके
उमङ्ग को झूम ॥

११

होरीके दिननमें कान्ह करत बरजोरी ।
यमुना निकट पनघट वंशीवट घेरे फिरे चहुं ओरी ॥
ग्वालबाल सब सङ्ग सखा ले मेरे द्वारे आय अरो री ।
जानकीदास रसिक व्रजमोहन गोहन रहत परो री ॥

१२

कहें सब होरी होरी मची है धूम चहुं ओर ।
चार दिना हंस खेल ले प्यारे आवत होरी भोर ॥
एक दिन धूर उड़ेगी आखर बचे नहीं कर कोर ।
जानकीदास शरण सत् गुरुको उबरे गगनको खोर ॥

१३

आज मैं निहारे आली रैन में महल माहीं लाल
गुलाल सो रङ्ग रगमगे ।
पेंच छूटे पागके अटपटे बोले बैन नयन सो उनींदे
नयन सुगन्ध सगमगे ॥
सुन्दर सलोने गात अलसात जंभात देखत नयन
अघात मणि नग सो जगमगे ।
विवश अनेक प्रेमरङ्ग अङ्ग लाय धाय धाय सोह
दे सोवाए तऊ नेक न डगमगे ॥

१४

जाऊंगो गंवार खेलारी आंखिन डारो पिचकारी ।
नई सुरङ्ग सारी भिजवत हो कहा यह बात तिहारी ॥
अबीर गुलाल अकाश पै डारत आली खड़ी
सब न्यारी ।
मो पै झक झक झपट झपट अहो प्रेमरङ्ग
प्रभु तिहारी ॥

१५

होरीके दिननमें मेरा मन लोता ।
झटक लई मैंड़ो सुरङ्ग चुनरीया चुम्बन गालों दीता ॥
अबीर गुलाल भर भर के डारदा भए उसदे
मन चीता ।
पुरुषोत्तम प्रभु सांवरे गबरू साड़े नाल करो मीता ॥

१६

व्रजमें धूम मची खेलत होरी डफ मृदङ्ग धुधुकार ।
ताल पखावज आवज वंशी और बाजत कठतार ॥

१७

लाल तुम खेले कहां हो होरी खेलन की यह रीत ।
नख शिख भेष बनाय गोपिन को छलन आए
मोहे मीत ॥
कर कपटी झूठी मुख बतियां याहू तें लियो जग जीत।
कोटि उपाय करो इन्द्रमणि प्रभु इहां नहीं है प्रतीत॥

सोरठ—धमार

यौवनको मदछको डोरे नारी मतवारी करे
कन्त सङ्ग रङ्गरलियां घुनो ।
लरे झगरे मुख मोड़े सबनके कोऊ उर कुचे खोझे
दुनो ॥
रङ्ग बरसे जैसे ऋतु वर्षा में गुलालको बादर उनो ।
वामें तिया मुख यों दीसे मानो जैसे निकस्यो शशि
शरत् पुनो ॥

२

निपट रङ्गभीनी देखियत है तू आज नार ।
उलटी अङ्गिया माथे टेढ़ो सारो को कोर सोहत
हैं झलके बिथुरे बार ॥

लपट झपट मोहन को पकरत गावत दे दे तार।
खेल रचो वृन्दावन वीथिन राधे नन्दकुमार॥

२

हो हो होरी खेलन आए अहो मेरे आए।
बलिहारी तेरे पायनको शोभा आन देखाए॥
धन्य भाग्य मेरे हैं सजनो मोहन दर्शन पाए।
पलकन सों मग झारो सखो री मनवाञ्छित
फल पाए॥

४

तुम विना हिय में भई पीर अति भारी।
आय मिले होरीमें महम्मद शा सदा रङ्गीले वारी॥
चहुं ओर डफ बाजन लागे अब हूं सुध न संभारी।
या होरी मेरे कैसे कटैगी विरह पीर अति भारी॥

विहाग—धमार

राज हो ऐसो चहल सों होरी खेलत महाराज
श्रीनाथ बहादुर कोउ न खेले इस रङ्ग सों।
नर नारिनको ज़री वस्त्र पहरायके तापे ओढर
अबीर ज़रतार उड़ावत है इन ढङ्ग सों॥
चन्दन वन्दन बुका रोरी अतर अरगजा
गावत रागरागिणी बाजत ताल मृदङ्ग सों।
होरी धूम मचो अति भारी रङ्ग नाचत है सब दे दे
तारी लपटत है सब अङ्ग सों॥

सिंदूरा—धमार

तब जानोंगी चतुर खेलैया होरी खेलन मोसों
आवोगी।
हमरो चुनरिया रङ्ग सो भिजोई अपनी याग बचावोगी
कृष्णानन्द कहत गिरधारी रस सागर सुख पावोगी॥

२

यौवन मदमाती ग्वारनो ऐंड़ी डोरे कुञ्जनमें।
नयन रतनारे कज्जर भरे तन छाय रहो मैन
यौवनमें॥

३

नन्दके छैल छाड़ दे गैल जिन छुवो मोरो गगरिया।
हा हा करत हूं पइयां परत हूं त्यज देहों मथुरा
नगरिया॥
केशर रङ्ग को मेह बरसावत है इत अबीर छाय
रहो बदरिया।
जैसो मोजी मोरो सुरङ्ग चुनरो तैसो भिजोऊं
पगरिया॥

४

मारूंगी गेंद गुलाल कुङ्कुमा डारूंगी रङ्ग
घुलाय घुलाय।
चन्दन वन्दन बुका रोरो अतर अरगजा लगाय लगाय॥
गाऊं बजाऊं रिझाऊं मोहन को होरी राग
जमाय जमाय।
सदारङ्ग पिय फागुवा ले हों होरी खेल
मनाय मनाय॥

५

अति मदमाती डोरे सब हो तियनमें तू री
चतुर खेलार।
तन सों रङ्ग भोनो सारी सोहत गर पुहुपनके हार॥
झपट पीत पट खैंचे मोहन को लाज सकुच
सब दई है डार।
सदा रङ्गमें मौज गई है फगुवा लिए छाड़े मुरार॥

६

काहेको री सकाय रहे हो प्यारे होरीमें क्यों न
करत मोसे रङ्ग।
भली बुरी नित्य कहत रहत चर्चा हमारी
सौतनके यह ढङ्ग
अबके फालुगुन पिया रूस रहोगी अबीर गुलाल उड़ाऊं
आज मैं तुम हो राय राजा प्रथम साहब मैं भी
चेरी उमङ्ग॥

सोरठ—धमार

नयन लगी तेरे मोहनके सङ्ग ए री बीरी अब काहे
लाज लजाय।

जित देखो तित आपी आप है दूजा कौन समाव
लाख बातको एक बात है सब तज हरि चित्त लाय ॥

२

निडर निठुर नटवर सो क्या चले हो गोरो।
सुन यह अब कंस मारि राज्य कर लाग्यो री
प्रेमरङ्ग बाललीला हम सो करे ठगोरी ॥

३

बहुरिया बरजत हो तैने काहेको रङ्ग डरवायो
एको भार।
एक झिलमिलो रे ता में दीसत हियके हार
रङ्गमें सगबग तू भई री अङ्गिया फरवाह डार ॥

४

मदमाती बहुरिया होरी बालम सङ्ग खेलिये।
लाज सकुच सब तज गुरुजनकी प्रियके भुजन
भुज मेलिये ॥
केसर रङ्ग पिचकारी भर भर श्यामसुन्दर पर रेलिये।
जानकीदास विलास सकल सुख सरस रङ्ग
रस केलिये ॥

सोरठ—तिताला

चल देखिये बरसाने वहीं है रङ्गीलो होरी।
निकसी भवन भवन सो कर ले गुलाल रोरी
गावत हैं मीठी गारी सब प्रेम रङ्गमें बोरी ॥
अबीरको घुमड़में पकरे है नन्दलाला।
फगुवा हमारो दीज्यो हस कहत है ब्रजकी बाला ॥
कोई ताल मृदङ्ग बजावे। कोई रागरागिणी गावें ॥
होरी खेल खेल आई महल महलमें।
मधुरचन्द्र मोहन प्यारे खेलत हैं चहल पहलमें ॥

२

होरी खेलो पिया सों सारी रैन कहे देत नयन
और सुखके देत कौन रसिया लगाई हगन सैन।
पीक लीक अधरन बसन गुलाल भए जागी पागी
लायो अङ्ग अङ्ग राग रङ्ग रह्यो प्रगट देखियत
मदन मैन ॥

बिहाग—तिताला

सांवरो सखिनमें कैसो वेणु बजावे।
वृन्दावनकी कुञ्ज गलिनमें हंस हंस गरवा लगावे ॥

सोरठ—धमार

आज मन्दिर डफ बाजन लागी प्रगट जहते नभ
सरसत घेरी।
अबीर गुलालके बादर छाए गरजत है औ
वर्षत है री ॥

सोरठ—यत्

प्यारो ने वश कीन्हो कुञ्ज विहारो।
कुञ्ज भवनमें दामिनी सो दमको मार गई पिचकारो॥
चन्द्रवदनी नयन मृग खञ्जनसी बरसाने की नारी।
लाल लाडलोकी छवि निरखत हूं द्रक रङ्ग
बलिहारी ॥

२

पिय मत मारो पिचकारी मोरी भिजेगी चूनर सारी।
वृन्दावनको कुञ्जगलिनमें गल बिच बहियां डारी ॥
हमरे ख्याल तुम ना परो सइयां हम हूं
चञ्चला नारी।
नन्द बबाकी दोहाई देत हैं मानो कुञ्जविहारी ॥
हा हा करत हूं पइयां परत हूं तुम जीते हम हारी।
सेवा सखी चरणनकी दासी बार बार बलिहारी ॥

३

नयन लगे तेरे मोहनके सङ्ग ए री बौरी अब
काहे को लजात।
घूंघट दूर कियो मुख तें जब ज्योति में ज्योति समात॥

४

होरी खेलों सखी मैं तो रसिया कुञ्जविहारी से।
कुञ्ज कुञ्ज वृन्दावन माहीं श्रीगोवर्द्धनधारी से ॥
रङ्ग में रङ्गू घनश्याम लालको वश कर प्रीति
अपारी से।
अबीर गुलाल लगाऊं कपोलन ख्याल खुशाल
खेलारी से ॥

५

नन्ददुलारे ऋतु रङ्ग में रङ्ग रङ्गे हो हो होरी
मेरे आए री।
होरी खेलत लिए ग्वाल बाल सङ्ग नेह उमंग
उमंगाए री॥
गावत फाग बजावत मुरली छवि अपार
रही छाए री।
ख्याल खुशाल करत गोकुल में राधे प्राणपियारे री॥

६

कुञ्ज कुञ्ज में होरी खेले राधा गोरी।
रङ्ग तरङ्ग नन्दनन्दन नेहके अबीर लगा वरजोरी॥
गल बहियाँ दिए बन बन डोलत चितवत
चन्द्रचकोरी।
ख्याल खुशाल करत मन भाए श्रीवृषभानु किशोरी॥

७

ऐसी वंशी बजाई री माई मोहन लाला
सुनत भनक उठ धाई सखी री परसे है मदन
गोपाला।
श्यामसुन्दर मनमोहनी मूर्ति सङ्ग लिये
ग्वाल औ बाला॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै उर वैजयन्ती माला।
कृष्णानन्द रहत निशि वासर प्रेम अमी मतवाला॥

८

क्या बान परी पिया तोरी रे मो सों खेलन
आयो होरी।
अबीर गुलाल के बादर छाए सुख मोड़न की रोरी॥

९

जा दिन पिय सों होरी मचेगी सनमुख होंगी
लजाय लजाय।
और सखी सब बन बन जे हैं नए नए रङ्ग
रङ्गाय रङ्गाय॥
अवगुण मेरो पिया सब जानत किह विध राखों
छिपाय छिपाय।
पद्मतन पाक करम दे वजाइन फगुवा लोंगो
रिझाय रिझाय॥

१०

मेरो सुरङ्ग चुनर रङ्ग बोरो रे तो से अब न खेलों
कान्ह होरी रे।
निपट ढीठ नन्दराय लाड़ले काहेको करत
वरजोरी रे॥
वरज रही वरज्यो नहीं मानत लागो हो आवत
औरी रे।
ख्याल खुशाल करत चित्त चाहत कुञ्ज निकुञ्जन
ठौरी रे॥

११

मन मोह लियो हो होरी श्रीव्रजराज दुलारे ने।
होरीके दिन में नयन मिला के नन्दराय जीके
बारेने॥
चितवन में चित्त चोर लियो है मोहन मुरलीवारे ने
ख्याल खुशाल देखाय परस्पर रसिया प्राण हमारे ने॥

१२

श्यावाश रङ्ग में भीजत अङ्गिया दरकी।
छतियन हाथ लगावत झिझकत चुरियन
मुरकी करकी॥
वरजोरी रोरी मुख मीजत नई नई बात नगरकी।
मोह जान बलिहार छिपाई तें करी घर घरकी॥

१३

मेरो अब कैसे निकसन होय दैया होरी खेलैं
कन्हैया।
हौं दधि बेचन जात वृन्दावन छीन लयो दहिया
महिया॥
सासर जाऊं तो सास लड़त है पीहर जाऊं
लड़े मैया।
इत डर उत डर मोहि सखी री मोहन नाचत
ता थैया॥
चूनर मेरी सब रङ्ग बोरो और भिजोई पामरिया।

सूरश्याम को कैसे भिजोऊं ओढ लई कारी
कामरिया ॥

१४

होरी दोऊ खेलैं हो परस्पर आज।
गुलाल अलक मुख लपट रह्यो है कुङ्कुम
बेंदी विराज ॥
बसन आभरण अतर रस भीने देख मदन आई लाज।
सुखसमूह निरख चित आनन्द युग युग करो
तुम राज ॥

१५

उठ री ग्वारन कर शृङ्गार होरीको आई बहार।
अबीर गुलाल ले फेंटन भर भरे केशरको पिचकार ॥
जब आवेंगे मेरे श्याम कन्हैया शिरको कुङ्कुम
भर थार मार।
सूरदास प्रभु सोई सुहागन जा तेरे आगे
खेले धमार ॥

१६

अब मुख मोड़ोंगी गहे पाए हो मोहन।
लिए गुलाल फिरत थी कबको सुखन बनो
मो गोहन ॥
कज्जर देऊं बनाय लालके जैसे दृग ढिग सोहन।
उदयराज प्रभु मदनमोहन प्रिय निमिष न
करो बिछोहन ॥

१७

सुन्दर श्याम सलोने ने सखी मोरे नयनसे नयन
मिलाय।
जैसे काग भुजङ्ग डसत है सखी मेरो बाल बाल
लहराय ॥

१८

सांवलिया रङ्ग मानो छो जी राज गाढ़ो अरज
करों छो फाल्गुन आयो।
मिलि खेलन री चाव होरी में भाग्यन इह
दिन पायो ॥
व्रज दुलहन था सों पर सों केशरो रङ्ग मिलायो।
रूडा लागो छो वलिहार विहारी रूडो थारो
खेल सुहायो ॥

१९

रसिया जाने न देयां हो राज रसिया अब मैं
खेलोंगी होरी।
अब मैं मोल लई नई सारी देया ता है मुख
मोड़ोंगी बरजोरी ॥

२०

मन पाग गयो श्यामसुन्दर कान्ह प्यारे सो सङ्ग
लागोई खेले होरी।
दधि मेरी खाई मटुकिया फोरी माखन कर
गयो चोरी
अटक गयो मतवारे राजसङ्ग खेलों होरी ॥

२१

होरी खेलन तुम आए रसिया अबीर गुलाल लिए
भर भोरी।
काहूके हाथ में अतर अरगजा काहू खड़ी है
रङ्ग में बोरी
अपने पीसे होरी मैं खेलूं एक सांवरो एक गोरो ॥

२२

कैसे खेलूं फाग देया मैं कैसे खेलूं फाग।
जिनके पिया परदेश सिधारे जियरा नित वैराग ॥
वे ठाकुर ठकुराई करत हैं मैं तो विनकी दासी।
माहे अङ्ग जराय मदन सखो री छाड़ चलो
अविनासी ॥

२३

ए हो नन्दनन्दन व्रजराज श्याम मोरी सखी मेरी
बहियां मरोरे री।
सोतनके घर जायके मेरो हरवा टटोरे री
और को चुनर छू न सके है मेरो घूंघट खोले री
ए री मेरी गागर ढोरे री ॥

२४

हो होरी खेले सब चायन गोपी गोरस रस मचे।
डफ मृदङ्ग ध्वनि बांसुरी बजाए मनके कलोलन
आप ही आप में सब रङ्ग रचे॥
खेल मच्यो ब्रज वीथिन कुञ्जन गावत रागन सचे।
आनन्द बढ्यो अपार गोकुल में नरनारी सब नचे॥

२५

जैये री केहि विधि यमुना तट बिचवा ठाढ़ो
ब्रजराज।
काल को भय अब लों नहीं भ्रम भयो बहोर करे
ढङ्ग वैसो ही आज॥

२६

सुनत डफ दौरी आई ग्वार दौरी आई हार।
अबीर गुलाल के बादर छाए रङ्गको परत फुहार॥
अब तो आन वश परे हो हमारे कहां जावोगे
नन्दवार।
मुरली लई है छिनायके श्याम जू की चलत दे
गई गार॥

२७

अब तुम तो नीकी तानके सुनैया रिझैया रङ्ग में
भिजोई हमारी चीर।
हम वरजत तुम मानत नाहीं ए राजा उमराव
अमीर॥

२८

ए री डफ बाजन लागी री नगर में होरी खेलन
आए कुंवर कन्हैया कुबरी।
पनिया भरन कैसे जाऊं सजनी री बीच ठाढो
श्याम डगरी॥

२९

एक ग्वालन आवे रङ्ग भरी डगरी गोवर्द्धन की
गैल री।
छैला बनी रहत वाके रीझ सो रिझवत मोहन
छैल री॥

३०

कान्हको प्रीति में लोकलाज सब त्यजो एते पर
अपने कोई न भए।
मेरो मन आली यह नयनन उरझायो है कौन
को दोष अब कैसे के दए॥
फूले बन टेसू नहीं भावत है मो को यह देखत हूं
लहलहात पात हरे नए।
कैसे समझाऊं जिय मानत नाहीं दर्श विना
आयो री फाल्गुन दो चार दिन गए॥

३१

प्रेम नगर को पैंडो न्यारो भूल कोऊ मत जाव री।
मनमोहन मुरली ध्वनि टेर सुनाय करत है बावरी॥
अबीर उड़ाय चीर लै भाजत ता पर कहत मेरे
गुण गाव री।
अम्बर गहि मुख मोड़त दरस कतहूं देखो
यह न्याव री॥

सोरठ—धमार

आज मधुवन में कान्हर बन बन खेलत फाग।
मेरी चुनरिया बोरेगो रङ्ग मे मैं भी भिजोऊं
वाको पाग॥
तत वित तघन शिखर बाजत गावत सोरठ राग।
जिन जिन मुरलीको भनक सुनी है धन्य धन्य
उनके भाग॥

२

गोकुल आज धूम मचो है होरी खेलत ब्रजभान।
मृदङ्ग झांझ कठतार डमरू डफ बाजत
मुरली की तान॥
ब्रजकी सखी सब सुन कर धाई उनके भए हैं
आदर मान।
उठ चल अब मिल नन्दलाल सो इतनो कहा
मेरो मान॥

मन्दिर आज हो रहो होरी खेलत कृष्णकिशोरी।

व्रजकी सखी सब बन बन आई कोउ सांवरी
कोउ गोरी ॥
एक के बसन पर रङ्ग डारत है एक के मुख मलत
है रोरी ।
एककी कुच पर मारत है कुङ्कुम कहे कर
हो हो होरी ॥

सिंदूरा—धमार

दस्त पिचकारी भर भर फेंकत प्रिय मो पर
उपजत अनेक रङ्ग ।
मदमातो त्रिया छतियां छैल सो सन्मुख झूमत
प्यारो सङ्ग ॥

सोरठ—धमार

क्यों कर गाऊं मैं देश पिया परदेश जियाको
अन्देश ।
अपने यौवन को विभूति रमाऊं कानों बीच मुद्रा
पहराऊं मैं तो कियो योगिनि को भेश
आदेश हमारी सुन पथिकवा अचपल सो कहियो
यह सन्देश ॥

सोरठ-पहाड़ी

व्रज कुञ्जन जाय पकर ल्याई नन्दके लाला ।
हा हा करावत पाय परावत व्रजको बालगोपाला ॥
एक सखी कर पकर नचावत बहुत बजावत गाला ।
नयनन अञ्जन खञ्जन करके लोग कहें व्रजबाला ॥
आन यशोमति यह छवि देखो मोहन मुरलीवाला ।
पाय पैञ्जनी अधिक विराजे बेंदो भाल विशाला ॥
बेसरको छवि कहां लगि बरनों झूम रहो
मोतिमाला ।
वृन्दावनको कुञ्ज गलिन में खेलत नन्दके लाला
सूरश्याम छवि कहां लग वर्णों मोह लई व्रजबाला ॥

२

सांवरे मोहन होरी भली खेल आए ।
अनुरागी पागी रस पागी दृग अति हो छवि छाए ॥
कहुं अञ्जन कहुं भाल महावर कहुं केशर रङ्ग लाए ।
औरसरङ्ग साचो कहो मो से कौन सुघर फगुवाए ॥

३

चित्त मेरो लाग गयो श्याम रङ्गीले प्यारे सो ।
तब ते उन सो मेरो नेह लगो है मैं तो चाहौं
वाको वारे सो ॥
कारो रङ्ग प्यारो दृग कारो का रे बचे कोउ कारे सो ।
सन्मुख होत चाहत जिय निकसत रहत वाही के
संभारे सो ॥
ठौर ठौर नीको छवि जो है सोहै लाल हमारे सो ।
जो देखे सगुण में काज़म सो देखे निर्गुण न्यारे सो ॥

४

मेरी सुरङ्ग चुनरिया बोरो रे तोसे अब न खेलें
कान्ह होरी रे ।
निपट ढीठ नन्दराय लाड़ले काहे को करत
बरजोरी रे ॥
बरज रहो बरज्यो नहीं मानत लागो हो
आवत ओरी रे ।
ख्याल खुशाल करन चित चाहत कुञ्ज निकुञ्जन
ठोरी रे ॥

देश-पहाड़ी

माई नन्दके लाला कैसो वेणु बजाई री ।
वेणु बजाय के मन हर लीन्हों सुधबुध बिसराई री ॥
सुनत बांशरी ग्वालिन धाई रीझ बूझ दधि खाई री।
मीठे स्वर अधरन धर टेरत जियरा लेत चोराई री
कृष्णानन्द मदनमोहन ने मोहि लियो अपनाई री ॥

पीलू—धमार

मो पर रङ्ग न डारो कन्हैया सास ननदी मोहे
देगी गारी ।
भर पिचकारी मुखपर मारी भीज गई तनसारी ॥

पीलू-पहाड़ी

तेरी बलि जाऊं सांवरे नेक जो वेणु बजाव ।
हा हा करूं औ पइयां परूं तोरी वेग मधुर ध्वनि
मोहे सुनाव
तेरी मुरलिया मन हर लीन्हों घर अङ्गन न सोहाव ॥

१

विनती मोरी मान ले तोहे मोहन ने बुलाई ।
सङ्ग सखी वोमें सभी छिटकाई कुब्जा मन विसराई ॥
तेरी सौं मोहे प्यारी राधिका राधा ए राधा रट लाई ।
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ घुंघरुनकी सरसाई ॥
चोवा चन्दन और अरगजा केसर माट भराई ।
सुन सखियन को वचन लाड़ली हर्ष हुलस उठ धाई
लालदास चरणनके प्यारे देखत कण्ठ लगाई ॥

देश—पहाड़ी

बावरी बन आई तुझे किन होरी खेलाई ।
सास कहे मेरो बारी बहुरिया अङ्गिया तें यह
कहां दरकाई
सासुजीके पुत ननद जूके वीरन जिन मोरो
मति बौराई ॥

पहाड़ी—यत

कान्हर कर पकराई पकर जाय ग्वाल ग्वालनो ।
कोउ कहत गोपी दही को दान दे एक कहे
कंसकी पालनो ॥
एक कहे फगुवा मांगनको आई एक कहे
छाड़ यो मालनो ।
एक कहे रङ्ग भर होरी खेलन आई एक कहे
ग्वालकी बालनी
प्रेमरङ्ग प्रभु फगुवा बनाई लूट में पाई लालनो ॥

२

फिर कपटी कारो कोकिल बोलो सुनत मदन
वश तन मन डालो ।
मैं जान्यो भर गई शीत ते कि म कपोत वन
काबुक खोलो ॥
अलिकुल कुसुम मान तुपक लाए विरहके वाण
वियोगकी गोली ।
प्रेमरङ्ग पिचकार चलैगो प्रभु विना प्रबल
परैगो होली ॥

६

मैंने जान्यो मेरो कान्ह मैं खेलोंगी होरी ।
अक्रूर आय ले गयो अब कुब्जाजीको भोरी ॥

पीलू—यत

मो पर रङ्ग न डारो कन्हैया सास ननदिया
लरैगी मोरी ।
हा हा करत हौं पैयां परत हौं चेरी मैं ए री तोरी ॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा मारत और करत बरजोरी ।
कृष्णानन्द कहत कर जोरे पुनि पुनि करत निहोरी ॥

सोरठ—यत

रसिया हो राज होरी रङ्ग राचे ।
म्हारी चुनर सब ही भिजोई केसर कीच रह्यो माचे ॥
बाज रहे छे वीणा मृदङ्ग ध्वनि गावत स्वर में साचे ।
रसिकविहारी पिय प्यारी मिल खेलैं तत थेई
तत थेई नाचे ॥

२

चुनरी में रङ्ग जिन डारो साँचो कहो वचन दो
हमको जब खेलत तुम सङ्ग ।
हौ मनमें ऐसे ललचाने देख विराने गोरे अङ्ग
उनके मन में ऐसो आवत है अब भर लीजे निसङ्ग ॥

३

रे ऊधो को खेले व्रज होरी ।
मन हर लियो नन्दनन्दन जू कुंवर राधिका गोरी ॥
अन्तर्गतकी व्यथा हमारी जानत नाहिं न कोरी ।
कहा कहौं विश्वासी सुरको प्रीति अचानक तोरी ॥

४

हो हो होरी खेलन मेरे आए ।
बलिहारी इन पायनकी जो पिय तुम आन दिखाए ॥
शीतल भई आज अंखियां सुफल कामना पाए ।
देख अदारङ्ग यों डोरे कैसे सुघर बनाए ॥

५

कहां तोहे टेव परी बनवारी मोहे पैंड़े जात
छेरनकी ।

लाजन सन हौं भीजी आत हौं सङ्ग सखा नैरनकी ॥
हौं यमुना जल भरन पठाई की बैर घेरनकी।
करैगी चवाव मो घर अब सास ननद जेठानी
देरनकी ॥

६

रसिया जानें न देंगी हो राज रसिया अब मैं
खेलौंगी होरी।
अब मैं मोल लई देया तोहे मुख मोडौंगी बरजोरी
हो रसिया ॥

सोरठ—धमार

ए री अति धूम डारी आज व्रज में होरी खेलत
नन्दलाल।
काहूको बहियां पकर झकझोरत काहूको अङ्ग
लगाय करत बेहाल ॥
हौं न जाऊं आली अब दधि बेचन राज करो उनको
अनोखो ख्याल।
जहां पावत तहां रङ्ग में भिजोवत पनिया भरनतें
बैठ रही व्रजबाल ॥

२

हो हो होरी हो हो होरी सब जग होरी हो
रही हो।
सब ही सुहागिन खेलन निकसी हौं दुहागन
सो रही हो ॥
अवसर सब ही बीत गयो है ना जानी कौन
गति बही हो।
गुण अवगुण ले चलहुं सइयां पै जायके चरण दोई
गही हो ॥

३

हो हो होरी हो रही है नन्दलालके द्वार।
व्रजवनिता सब मिलके धाई तनको रही न संभार ॥
अबीर गुलाल के बादर छाए सरस रङ्ग निहार।
नाचे गावे ताल बजावे भरुवा कहे बार बार ॥

४

आयो फाल्गुन मास री सजनी उमंग चोप बैठी
जाय अब होरी खेलिये छत्रपतिके सङ्ग।
दुःख भाजि सुख प्राप्त होये जब सङ्ग लीजै
चरणकमल से रङ्ग ॥

५

आवो री सखी चल अकबरके सङ्ग रीझ भीज
खेलिये रङ्ग।
फाल्गुन मास में रार न कीजै
सौतनके हिय हुलास न दीजै
ए री बजत तार झांझ डफ मृदङ्ग ॥

६

आज रची श्यामसङ्ग होरी सङ्ग नवल राधिका गोरी।
करन कनक पिचकारिन भरत रङ्ग धावत आवत
जोई गावत भावत सोई अबीर गुलाल मुख मलत
चलत हंसि चपल चमकित चोरी ॥
हरि सङ्ग ग्वालबाल करें अनगन ख्याल कौज
डफ मृदङ्ग बजावत गावत फाल्गुन मुरलीकी ध्वनि
घनघोरी।
कृष्ण रङ्ग निरखि हर्षि सुर नर नाग मन में सिहात
लखि गोपिनको अनुराग सुरपति सारद सराहत
सुहाग भाग्य यह व्रजसुख सब ग़ोरी ॥

७

कौज कुंवर कान्ह बरजै मेरो हियरो लरजै।
अति ही चपल छल बल न करत कल लगोई रहत
सङ्ग तजत न एक पल छल बल करत न डरत
काहूको डर कैसे कर जल भरजै ॥
निपट चवाई यह व्रजकी लुगाई माई नाहक कलङ्क
लगाई करत हंसाई आई कहो अब कैसी करजै।
कृष्णरङ्ग अब नन्दको दुहाई नेक भुज गहे चलत
पराई व्रज दुरि जाई बांसरी बजाई गाई अधिक
रिझाई पाई करत अपनी ग़रजै ॥

८

तुम नए भए दधि दानी मानत न काहूकी कानी।

अति ही निडर न डरत गुरुजन डर वर बग्र लरत
अरत नित्य ही नित्य नन्दके छैल बीच गैल चैल
गह बतियां करत छल सानी ॥
कहूं न चलाई अब ताई ठकुराई ऐसो यही पुर
बसत सदाई चल आई हम कंसरायको राजधानी ।
कृष्णरङ्ग अब कोज कैसे के बसाई व्रज तिनकी
चवाई सही जाई न कन्हाई सब ग्वालके बाल
कसहाई सङ्ग पाई नित्य करत ठगाई हम जानी ॥

९

बालम तुम विन कैसे खेलौं होरी ।
वीतो जात ऋतु फालुगुन अजहूं न लीन्हीं सुध मोरी ॥
जैसे मीन जल विन तरफत सो गति भई है मोरी ।
सुन रे पथिकवा जाय कहो उन से सन्देसवा
लोगनको कहा चोरी
कृपा करो आवो लालन अब बहुत गई रहो थोरी ॥

१०

मोरे पिया रे बालम परदेश होरी मैं ना खेलौं ।
होरी अहोरी सब जग होरी मैं केहे सङ्ग रङ्ग
भर रेलौं ॥
सोना लेने पी गए सूना कर गए देश ।
सोना मिलो न पी मिले रूपा हो गए केश ।
अपने सइयां को ढूंढ़न निकसो कर योगनको भेश ॥

११

हेरो मस्त भयो डोले होरी को निपट निडर
घनश्याम ।
डगर चलन नहीं देत लेत गहि रोकत है सब बाम ॥
मन में धरत सो करत डरत नहीं उभकक फिरत
घर घर आठो याम ।
जानकीदास हंस मन्दिर में धंस ले ले बुलावत नाम ॥

सोरठ—यत्

नाहक ननदी वैर परी है यो होरीको दांव रसिया ।
देत गारी व्रजनारी बोले न भूखो कठिन स्वभाव
रसिया ॥
नेड़े आय हंसिके दुःख हरिये जो तुम प्रीतिन चाव
रसिया ।
बलिहारियां री आशा पुजावो हंसत खेलत घर
आव रसिया ॥

२

कान्ह मूंद घर में छिप बैठो ए री बोरी फेर होरी
आई री ।
डफ मुरली ध्वनि बहोर बजैंगो जीन लो लाई री ॥
तनमन नयन में मोहिनो मूर्ति निशदिन छाई री ।
लाल गुलाल भरे मुख देखन उठ उठ धाई री ॥
गुरुजन दुर्जन करत चवाई लाज लजाई री ।
प्रेमरङ्ग में मौज रहो हौं मति बौराई री ॥

सोरठ—तिताला

कान्ह तोहि ऐसी मति कौन दई ।
देख पराई नारो सलोनो होरी करत नई ॥
डार गुलाल आंज आंखन में भुजा भर अङ्क लई ।
केसरको पिचकार मारके बहियां पकर लई
कृष्णजीवन अबलाको वह गति देखो कहूं न भई ॥

२

मुख मल डालौंगी बहोत चले इतराय लाल ।
सब सखियन में ऐंड़ोई डोले मुख में मले गुलाल ॥

३

ऐंड़ी बैंड़ो डोरे कुञ्जनमें अरे लाल मतवारी
व्रजनार ।
कान्हके मुखसे अबोर मलो री कान्ह पै भर पिचकार ।
ऐसो होरी खेले किफ़ायत रङ्ग दियो संसार ॥

जयजयवन्ती—तिताला

माई आज तो मोहन सङ्ग रङ्ग भर खेलौंगी ।
लोकलाज पायन सो पोछोड़ोय पे लौंगी ॥
निदरोंगी आर्य पथ न डरोंगी ।
ह्वै निधरक अङ्कवार पियको भरोंगी केसर रङ्ग
रङ्गीलो करोंगी ॥
बेसरके मोती काज फगुवा अरोंगो ।

ललित त्रिभङ्गी रसढरनि ढरोंगो
रतियति रण व्रजपति सों लरोंगो ॥

२

आए हो रगमगी रैन के लाल गुलाल से रङ्गरङ्गीले।
सोंधे भीने बालको बालके अङ्ग लगी ताते
अङ्ग अङ्ग ढोले ॥
कर सङ्केत कही निश आवन भोरे बोरे नखशिख
खगीले।
प्रेमरङ्ग अवगुण गुण मानत लगत हो कण्ठ लगत
हो रसोले ॥

३

आज सखी होय रही होरी नन्दनन्दके द्वार।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर भर भर रङ्ग पिचकार॥
छिरकत रङ्ग श्याम पै राधा श्रीवृषभानु कुमार।
मलत गुलाल श्याम मुख मोहन गावत मिल व्रजनार॥
ताल मृदङ्ग झांझ डफ बाजै नाचत गोपीग्वार।
रागरङ्ग आनन्द नन्दके बार बार वलिहार ॥

४

अद्भुत फाग मचो गोकुल में गोपग्वालनी
देखन आई।
फाल्गुनके दिन चार सखी री चर्चा करेंगे सब
लोग लुगाई ॥
एक गावत एक मृदङ्ग बजावत एक सनमुख
लड़वे को धाई।
छिपत फिरत भोजन कुञ्जन में पकर मोहन जू को
आंखें अञ्जाई ॥

५

हों कहा करों री कैसे रहे कुलकान या व्रज में माई।
एक यौवन मद छको फिरत है निडर करनको
होरी आई ॥
नयो यौवन सुन्दर नारिन ले पकर करत मन भाई।
गुलाबको प्रभु माधव मनमोहन रसकी धूम मचाई॥

६

ऐसो खिलारो रसिया मोरा होरी में करत है
वरज़ोरी।
आप खेले और मद्दको खेलावे बहियां पकर मोड़े
रङ्ग में बोरी ॥
व्रजकी सखी सब बन बन आई मनमोहन घर
मचो है होरी।
हाथ लिए पिचकारी प्यारी और आय कहे
हरि हो हर होरी ॥

७

होरी खेलों मैं तो मोहनके सङ्ग रङ्ग में लेहों
भिजाय।
फगुवा लेहों तब जाने देहों पीत दुकूल लेहों
छिनाय ॥

८

व्रजकुञ्जन में खेलत होरी नन्दनन्दन वृषभानु
किशोरी।
अबीर गुलाल उड़ावत गावत रङ्गत केसर रङ्ग
अङ्ग वरज़ोरी ॥
चितवत चित्त चोराय लेत है रसिया नागर
श्रीराधा गोरी।
कहीं यमुना तट कहीं वंशीवट धूम फाल्गुन
ऋतु चारो ओरी।
निरखत रसिक खुशाल श्यामसुख जैसे
विलोकत चन्द्र चकोरी ॥

९

कैसे मरों दिन रैन लङ्गर सङ्ग लागो ई डोले
फाग को अवसर पाय सखा मेरो अञ्चर खोले ॥

१०

खेल ले कुब्जा पिय सङ्ग होरी पूरी भई मन
इच्छा तोरी।
श्यामके नयन लगे हैं तो सों सनमुख आव न
कर चित्त चोरी ॥
बहियां पकर झट छीन ले कामर बोर दे रङ्ग में
पीत पिछोरी।
कैसे मोहन को वश में किए तै हाथ मलत है
राधागोरी।

मान तुराव का कहना इतना मान न कर
वृषभानु किशोरी ॥

११

अबीर मलौंगो कपोल तिहारे यशोदा लाल
व्रजराज दुलारे ।
यह ऋतु फाल्गुन छाय रही है जो तुम आए हो
धाम हमारे ॥
रैन जगाय लेहौं रस रसिया छैल छबीले
प्राण पिया रे ।
ख्याल खुशाल भरे मनमोहन यौवन उमंग उमंग
उमंगा रे ॥

१२

अबको फागुका रङ्ग न पूछो धूम मची है
श्रीवृन्दावनमें ।
श्यामविहारी चतुर खेलारी खेलत है होरी
सखियनमें ॥
कर में लिए कञ्चन पिचकारी अबीर गुलाल
भरे दामनमें ।
अङ्ग निहारत ताक के मारत दाग लगावत
उजरे वसनमें ॥
कैसे कोउ अब घर से निकसै ठाढ़ो है ढीठ
लङ्गर अङ्गनमें ।
मो को कहा वो ढूंढ़े पावे मैं तो छिपी तुराव की
मनमें ॥

१३

डगर डगर डगमगे डगन सों होरीके मदमाते आए ।
सगर वगर जिय झगर झगरके रससमुद्र
आनन्द बहाए ।
अगर तगर ले जगर जगर सुख कृष्णानन्द रूप
अन्हवाए ॥

१४

मन छीन लियो कियो वशकी एक बात कभू
न कियो वशकी ।
प्रेम प्रीति को यह फल पाया बात करो डर है
तू देशकी ।
कृष्णानन्द मोहिनी मूर्ति रहै करेजे मेरे कशकी ॥

१५

ऋतु फाल्गुनकी आई माई श्याम हमारो
लाज गंवाई ।
बरबश चूनर छोर लई वह देत रही मैं राम दुहाई ।
कृष्णानन्द एक नहीं मानो ऐसो लङ्गर ढीठ कन्हाई ॥

१६

य री लाल मिले औ लाज रहै ऐसो बतावो
कोउ युक्त ।
जामें प्रकट न होय प्रीति यह ऐसो मन्त्र देहो
मोहे गुप्त ॥
सास ननद औ गुरुजनको डर एकौ नाहीं
बनत यह सुक्त ।
श्याम दर्श होरी गावत है देखो लेत तान नई उक्त ॥

१७

आतुरको भए छिन में जो सूरत रूप सजैगो ।
अब झकझोरूं बोरूं रङ्ग में तारी दै दै आलो
पुञ्ज नचैगो ।
कृष्णानन्द कराऊं हा हा प्यारे निशदिन मोहि
भजैगो ॥

१८

होरी रङ्गरातो अङ्ग यौवन उमङ्ग मातो सांवरो सो
छैल गैल मांझ ढिग परिवो ।
मैं तो केतो कीन्हीं अभी बीच में हो निकसवे को
धाय अति निडर अरेल श्याम धरिवो ॥
केतिक ठगोरी एक ठौरीके निहारो ऐसो सुझको
निहारन में चित्त सब हरिवो ।
चेटक हो हाथ में कि धौं गुलाल हो न जानों
ताहो साथ कहां मेरी आंखनमें भरिवो ॥

१९

अति रङ्ग रसिया व्रजको वसिया होरी में मोहि
श्याम मिलो री ।

अतर सुगन्ध गुलाब अति भीने प्यारे अङ्ग
लगो री लगो री ॥
कर कञ्चन सोहत पिचकारी केसर रङ्ग
भरो री भरो री ।
चट घूंघट पट खोल लाल मुख अबीर मलो री
मलो री मलो री ॥

२०

बाग़के बगर अनुराग भर भर खरी खेलती है फाग
मनमोहिनी गोपालकी ।
राज करै इन्दु अरविन्दुसेन काज आज देखत ही
मञ्जु शोभा वदन विशालकी ॥
भृकुटी तिलक पर वारुणी पलक पर ए बईं
अलक पर झलकै गुलालकी ।
कालीदास ललक ललौं ही छवि ढलकै छवि
मुक्तनमें कपोल और भालकी ॥

२१

होरी लागी कान्ह अब ही तें उमदात फिरी
जरै ऐसो ख्याल जी मैं लाज टर जायगी ।
चलेगो पौ पिचकारी तो तिहारी सौं बिगर जै है
नई ज़रतारी मेरी सारी मर जायगी ॥
झूठी मान मूठी लेजे मुख तुम तानत हो गइयां के
चरैया हो बलैया डर जायगी ।
परैगो गुलाल मेरी आंखन में लाल तो गोपाल
आज व्रजमें ज़वाल पर जायगी ॥

२२

भली भई होरी आई घर आए घनश्याम ।
लोग कहै टोनवा पढ़ डारो ए राधाको काम ॥
धन्य तेरो भाग्य सुहाग भावती और न दूजी वाम ।
कृष्णजीवन लक्ष्मीरामकी इच्छा पूजिए वेग हो श्याम ॥

२३

बनवारी लाज विसारी ऐसो रङ्ग डारत मोज गई
तनसारी ।
धाय धाय नन्दधाम कहै तो हे मुख मोड़ौं
गिरिधारी ॥
पाछे ठाढ़ी सब पार परोसन हंसत खेलत सब
नरनारी ।
लाज सकुच सब तज डारी है एक मूंठ तै लाब
विसारी ।
एतो निठुराई कौन बदी कान्ह जिन देही गारी ॥

२४

सखी आज बाग़ में फाग रच्यो होरी खेलत
संसारचन्द ।
जित जावत तित रङ्ग मचावत बाजे मन्दिरला
घर घर आनन्द ॥
उड़त गुलाल अबीर अरगजा विचित्र अतर सुगन्ध ।
रङ्गमहलमें रङ्ग मच्यो मानो कुञ्ज भवन में खेलैं
गोविन्द ॥

२५

ए री आज खेल ले पिया सङ्ग होरी बांह जोरी ।
हौं जो मनावत तू नहीं मानत सुन री राधा गोरी ॥

२६

ए री आज पिया अपने सङ्ग खेलौंगी होरी ।
अबीर गुलाल अतर अरगजा सुगन्ध लिए भर झोरी ॥
फाल्गुन मास में लाज कौन काम की वे हैं
कृष्णकिशोरी ।
खेलैं फाग सब अपने पिया सों कोई सांवरो
कोई गोर ॥

२७

सखी मांगि दे री अपनो नाह दिन चार ।
अम्बा मौरे टेसू फूले और फूली कचनार ।
कृष्णानन्द सोहाग भरी तू देखहि लाल बहार ॥

२८

फाग खेलत मार मार माजत हो हो हो री बड़ो
फागको खेलैया ।
लगाए लगत न छुटाए छूटत अब कहा करौं ए
मेरी दैया ॥
हंसन अभिरतें देत न मोहे नन्दको है दईमारो
कन्हैया ।

भाजत भाजत लागत लागत को वह नयो
लाग लगैया ॥

२९

आवो सइयां तुम सन होरी खेलैं केसर रङ्ग
बनाय बनाय ।
आनन्द केलि मचावैं दोऊ अबीर गुलाल
उड़ाय उड़ाय।
कृष्णानन्द सुफल कर जीवन पइयां लागत धाय धाय॥

३०

कैसे भरौं दिन रैन सखी सङ्ग लाग्यो है डोरै।
मैंरे तो सङ्गकी दूर निकस गई मेरो अञ्चर छोरै।
कृष्णानन्द प्रेम रस मातो प्रीति मथानी आनि टटोरै॥

३१

मनाई ऋतु लाल सों धन्य धन्य माई तेरो सों
देखाई देत चैन सुखपर नांह।
मोंडल मोड़ो और तियन मिस जानत मन मांह ॥
दरकी चोली प्रगट क्यों करे कुछ सरकाय
राखो दोऊ बांह।
हित मेरो आंख सुख सकुचो है क्यों मैं सांचे
कहूं छांह ॥

३२

होरी के दिनन में सुनिए री बौरी मोहे लग्यो
वैराग हो।
जो आवे सो रङ्ग हो में बोरै जो जिये सो खेले
फाग हो।
कृष्णानन्द विचार कठिन है प्रीतमको अनुराग हो॥

३३

गौनेकी रात में भोर हो दुलहिन बैठ रही बिन हो
अनबोले।
गात सो छाती छिपायके सुन्दर नारि निवाय
दुराय कपोले॥
देखनको जुर आई सबे तिय ननद जेठानी करे
सों कलोले।
एक हंसे एक बांह गहे एक अञ्चर खेंचके
घूंघट खोले॥

३४

आयो फाल्गुन मास लाल अब खेलूंगी फाग
बनाय बनाय।
भली बनी अवसर आली सब खेलन बाग़
बनाय बनाय।
होय एकट्ठी अब घेर लिए हैं दोजे सब हो
गिनाय गिनाय॥

३५

होरी में मोहि श्याम ठगो री।
वदन जोर सुख मोर चोर चित्त ले गयो कर
बरजोरी अछोरी ॥
फिर फिर पूछत राधे सबनको मेरो मोहन कित
गयो है चोरो।
केलि खेल सब भूल गयो मोहे मन तो नेवाज
कहां अटको री॥

३६

नन्द महरको लाड़लो खेले होरी सङ्ग लिए
वृषभानु किशोरी।
अबीर गुलाल कुङ्कुम केसर चन्दन वन्दन
बुक्का ले रोरी॥
राधामाधव खेल रच्यो है सुख बाढ़्यो चहुं ओरी।
रसिक छैल रस वश कर लीन्हीं श्रीवृषभानुकी पोरी॥

३७

आये फाल्गुन मास कह पठवेको ना रहो।
सुख मल हों अब रस वश कर हों अब लों
बहुत सहो॥
मेरे मनकी भांवर प्यारे जब पिचकारन रङ्ग छहो।
रसिक छैल प्रभु व्रजके रसिया मनमाने फगुवा लहो॥

३८

होरी खेलिये माई अपने लालन सङ्ग धाय।
रूप यौवनको अति हो मातो रहस रहस गर लाय॥

चोवा चन्दन वन्दन रोरी अबीर गुलाल उड़ाय ।
रसिक छैल को रस वश करि हौं लै हौं
फगुवा मनाय ॥

३६

होरी आई माई अपनो करके ख्याल मेरो कहा
मान ले ।
एकन पै छिरके रङ्ग एकन पै अबीर गुलाल
एक नीको तान ले ।
जानत नाहीं अपनो परायो रसिक छैल समझ
बूझ पहंचान ले ॥

४०

जो खेलौ तो सूधे खेलौ हो तुम चतुर खेलार ।
आंखि गुलाल लाल मत डारो सुनिये जु नन्दकुमार॥
रस राख्यो जो चाहो मोहन समझ अबीर
भरो एही बार ।
हमरे तुम्हरे खेल दूर तब कस बजाव वलिहार ॥

४१

होरी में होरी कहो री किशोरी जाय के कोऊ
व्यथा यह मोरी ।
फागमें लाग बढ़े अनुराग सुहाग सनेह को
चाहत गोरी ॥
प्यारे तिहारे निहारे विना यह भारे कटे दिन
रैन निगोरी ।
सासर आगर रूप उजागर नागर हो के मोहे
किशोरी ॥

४२

अहो री चलो री खेलो री होरी नन्दकी पोरी
मचोरी है होरी ।
बाजोरी साजोरी ज्यों घनघोरी खेल रच्यो री
वृषभानु किशोरी ॥
अबीर मलो री मुख मींजत रोरी हो हो री हो
हो री बहोरी कहो री ।
रागसागर प्रभु गुण आगर नागर रूप उजागर
दृग देख ठगो री गोरी ॥

सखी होरी ख्यालमें गोरी किशोरी आज
अनुपम रीति लही ।
पहले झपट पीत पट खैंच्यो ठाढ़े रहे हरि
जा के तहीं ॥
गुलाल सो छायो गोपालको प्यारी फगुवा ले हो
हंस बात कही ।
पिचकारिन बहुरङ्ग मारी लला अब आन पड़े
वश मेरे सही ॥

४३

होरी खेलिये री मेरो सजनी अपने प्रिय सङ्ग जाई ।
रूप यौवनकी अलि हो माती देखिये तेरी सुभाई ॥
ये फाल्गुन भाग्यन ते पायो मन में समझ बनाई ।
पीको पाय के जान न दीजे फेर अवसर कहां पाई ॥
रस ही हाथ रहैगो तेरे हौं जो कही तेरे
हितकी सुनाई ।
मान किए लालन कहां पइ हो सौतन हो को चाई॥

सिन्धु—धमार

होरी होय रही है नगर में खेलत कृष्णकिशोरी ।
एक गावत एक मृदङ्ग बजावत एक नाचत है गोरी ॥
अपने अपने घर तें निकसो एक सांवरो एक
रङ्ग में बोरी ।
केसरकी पिचकारी चलावत वारी वयस
दिननकी थोरी ॥

२

अचानक रङ्ग भरी कहा धरी जिया में तुम आए
बदो मैं ठांव ।
अपनोसो को करत न चूको मत कहियो राधे नांव ॥
ए हो लाज के रङ्ग में बूड़ रहो हों देखत सगरो गांव।
तेरी चतुराई तोहे बनाई पूजौं तेरो पांव ॥

३

फाग रच्यो व्रज में अब खेलत है श्रीनन्द कुंवर
वृषभानु किशोरी ।
जैसे हो राधा वैसे हो माधव दोउ करत बतियां भोरी ।

चलो सखी मिल देखन जइये आन रूप सब
व्रज ही बनो री ॥

खम्भावती—तिताला

आज ऐसी होरी सइयां मैं ना खेलूं मेरे मुखपर
अबीर मलो री ।
कृष्णानन्द पकर उर लावत नागर नवल किशोरी ॥

२

रङ्गभीने आए होरीके दिनन में धाय धाय ।
महाराज तुम जशन मुबारक भई प्रीति अधिकाय ॥

३

तुम आए हो मेरे होरी खेलन को भूल गई
कालहकी बात व्रजलाल ।
जिन सो खेलिये उन सो जाय खेलो अपनी उमंग
ल्याए बिनागुण उरमाल ॥
सूधी नज़र क्यों न हमसन बोले अञ्जन अधर
महावर भाल ।
लक्ष्मणदास जागी भाग्य मेरे नयनन निरखत
अब तो भई है निहाल ॥

४

मेरी सौंह न मानत धाय धाय डारत झोरन गुलाल ।
भर पिचकारी रङ्ग झर लावत धूम मचावत ओट
पाय के कर ख्याल ।
प्रभु नन्दलाल हठ धरयो बरजे होत गरे की माल ॥

५

होरी खेलत नन्दनन्दन व्रज में सखी भर पिचकारिन
न बोरत ।
कैसेके जाओं सखी पनघटवा धर बहियां
झकझोरत ॥
ले गुलाल वर वश मुख मीड़त अपनी बार
मुख मोरत ।
मञ्जुल मधुर बजाय बांशरी दृग जोरत चित्त चोरत ॥

६

होरी खेलिए प्यारे बिना अब कैसे ।
अम्बा बौरे टेसू फूले सखी हमरे बालम कित
बिलम्ब रहे ॥

७

मेरे सुघर कन्हैया गोकुल खेलत होरी रे ।
एक ओर सङ्ग सखा लिए मोहन एक ओर राधा
गोरी रे ॥
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ पिचकारिन रङ्ग
बोरी रे ।
श्रीरसरङ्ग निरख दोउ छवि चिरञ्जीव रहे
यह जोरी रे ॥

खम्बावती—तिताला

रङ्गभीने कान्हा रङ्गभीनो कैसी होरी मचाई ।
हौं यमुना जल भरण जात रही पैड़ेमें गगरी छिनाई ।
श्याम तोहे देती नन्द दुहाई ॥

सिन्धु—धमार

झगरा मैं क्यों ठानोंगो पिया मोरा इन
सो तनियां वश कीनो ।
तुम बिन मेरो और कौन है ऐसो सुघर प्रवीनो ॥
याहू वास को बसबो कठिन है सौतनके आधीनो ।
आज़म पिया सों बिनती करत है मैं तेरे हो रङ्गभीनो॥

२

होरी धूम मची अति ज़ोर शोर सुनि डफ मृदङ्ग
धुधुकार ।
फूल रहे वन उपवन कुञ्जन पुञ्जन भ्रमर गुञ्जार ॥
प्रथम फाग अनुराग श्याम पर सब ही नारिन तन
मन वार ।
जानकीदास भए पूरणआश सुर वर्षत सुमन फुहार ॥

३

खेलत है लाल फाग बाजत मृदङ्ग चङ्ग वीणा
रबाब सङ्ग ।
अबीर गुलाल चोवा चन्दन अरगजा वर्षत रङ्ग ।
छूटे पिचकारी हंस मुख हो डारत केशर रङ्ग ॥

४

फाग रच्यो है व्रज में अब खेलत है श्रीनन्दकुमार
वृषभानु किशोरी ।

गुलाल अबीरकी मूठें छूटत रङ्गकी परत फुहार
मुख बोलत हो होरी ॥
जैसे ही राधा वैसे हो माधव दोऊ करत हैं
बतियां भोरी ।
चलो सजनी री मिलके देखें आनन्द रूप स्वरूप
बनो री ॥

खम्बावती—तिताला

अब मेरे मुखपर डारो गुलाल कान्हर वाके
जियमें कछु और ।
लाज धर्म काहूको न मानत मूंठ चलावत दौर ॥
ए बातें कहूं देखीं न सुनीं जियमें करत नहीं गौर ।
सुमतिको साहब लोन तिनको मोह दृष्ट को मौर ॥

सिंदूरा—चाचर

तुम नीको मानके सुनैया रिझैया रङ्ग में भिजोई
हमरो चीर ।
हम वरजत तुम मानत नाहीं वे राजा उमराव अमीर ॥

२

ना देया मैं अब न जाऊंगी बीच ठाढ़ो दधिको
छिनैया कन्हैया ।
नाम ठाम वाको भूल गई कहत है व्रजको
वसैया कन्हैया ॥
डर लागत है कांपत है यातें बांह गहे कोउ
देखे लुगैया ।
आन पड़े जब मो पै मेहरबान कौन वहां हटकैया ॥

३

लाल पहंचाने हैं जु तुम वाही सङ्ग नीके नीके हो
निशा जागे ।
अरुण वरण नयन कहे देत और रैन कहे देत
ऐसे प्रेम प्रीति रस पागे ॥
और सङ्ग रङ्ग मदमाते तापे सुरङ्ग रङ्ग केसर बागे ।
भोर भए जब आए मेरे गृह तुम बात बनावन लागे ॥

४

आयो फाल्गुन मास महा सुख सजनी रजनी
लागत प्यारी ।
त्यज हठ मान लाज गुरुजनकी भर मारो पिचकारी ।
कृष्णानन्द हियो हुलसायो अब क्यों रुकत विचारी ॥

५

अबीर गुलालकी धूम मची है पिचकारन झर लाय ।
चोवा रे चन्दन और अरगजा सुख सोंधे लपटाय ॥
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ ध्वनि रह्यो है
चहुं दिश छाय ।
बार बार बलिहारी अब खेले फगुवा ले है मनाय ॥

६

भलो री तेरो यौवन तू हो जात है आयो है
फाल्गुन मास ।
पिय नहिं आवत विरह सतावत उलट जात तब
आश्वास ॥
कहा कहों कछु कहे न सकत हूं जैसो सास
ननद कीन्हीं है त्रास ।
नित्य कसकत है आय जियमें मेरे मोहन
प्रेमको फांस ॥

७

होरी हो रह्यो है या व्रजमें खेलत नन्दकुमार ।
बाजत ताल पखावज मुरली नाचत दे करतार ॥

८

हो होरी वे खेले माई जिन लालनकी सुध पाई ।
उड़ रे काग भ्रमर अति कारे उड़ क्यों न पिया
पास जाई ॥
जो पिया देखहुं स्वप्नमें मन राखों समुझाई ।
तेल फुलेल सभी हम छाड़ो अङ्ग विभूति रमाई ॥
योगन हो के वन वन ढूंढ़ा मैं जाय पण्डित पुछाई ।
तीर्थ व्रत किए बहुतेरे गङ्गा यमुना में न्हाई ।
सूरदास स्वामी तो हे मिलन को जो मिलिया सो
सुखदाई ॥

९

कृष्ण कंवर सो होरी खेलन सब व्रज वनिता मिल
कर आई ।

झोरी भरी गुलाल कुङ्कुमा हाथन ले मोहन
पर धाई ॥

१०

जो सो होरी खेलों अपने प्रिय सो रिझाय
रिझाय रिझाय ।
गुलाल अबीर मुख माड़ोंगी महाराज महीप को
रङ्ग में भिजाय भिजाय भिजाय ॥

सिन्धु—तिताला

होरी खेलिए री अति मदमाती नारी पीतम
ढिग बोरी ।
अबीर गुलाल कस्तूरी कुङ्कुमा पकर पकर
बांह बरज़ोरी ॥

२

अति मदमाती डोरे सब तियन में तू री चतुर खेलार ।
तन सोहे रङ्गभीनी सारी गर पुहुपन को हार ॥

३

फाग खेलौंगी लाल सों बन बन शुभ घरी पल पल
दिन दिन गन गन ।
अबीर गुलाल ले मुख मोड़ौंगी केसर छिरकों
गारी दोंगी छन छन ॥

४

सकल व्रज धूम मची है आयो फाल्गुन मास ।
बाजत मृदङ्ग पखावज आवज करत परस्पर हास ॥

५

धूम मचाई वगर में आवत है ढीठ कन्हैया
खेलत होरी ।
केसर रङ्ग में सर्वस्व बोरी नेक न छोरी पोरो ॥

६

फाल्गुनके दिन च्यार रहे अजहूं न आए लाल मेरे ।
सुहाग भरी खेलूंगी अपने पिया सो करूंगी
रङ्ग नए नए ॥

७

काहे को रिस खाय रहे प्यारे होरी में क्यों न
करत मो से रङ्ग ।
भली बुरी नित कहत रहत चर्चा हमारी सोतन
को याही ढङ्ग ॥
अबीर गुलाल उड़ाऊं आज मैं सङ्ग ।
तुम्हारो राव राजा प्रथम शाह मैं भी चेरी उमङ्ग ॥

सिन्धु—धमार

लाल जू लाल तन मेरे भीनी चनर अब तुम
केह विधि जे हों ।
कोऊ काहे रावरी बतियां छतियां कैसे छुवे हों ॥

सिंदूरा—धमार

लाल मेरो बहियां मरोरी डगर बिच ठाढ़ो
मुख मौंड़त है रोरो ।
अतर गुलाब केसर रङ्ग पिचकारी रङ्ग को
परत है झोरी ॥

२

आज धन्य भाग्य सखी री फाल्गुन में पिय पायो ।
धन्य वसन्त धन्य होली रङ्ग है धन्य प्रभु मेरे आयो ॥

३

वनवारी लाल बिसारी ऐसो रङ्ग डारत भीज
भई सारी ।
पाछे ठाढ़ो सब पार परोसन हंसत खेलत सब ही
नरनारी ॥
लाज सकुच सब तज डारा है एक मूंठ तें
लाज बिसारी ।
ऐसो निठुराई कौन बदो है को कहे तो है गिरिधारी ॥

खम्बावती—तिताला

आज असाड़े फाग है सइयो नाल मोहन दे
खेलोंगी होली ।
अबीर गुलाल मलो मुंह उसदे रङ्ग चन्दन रोली ॥
सबे सइयां देहो वधाइयां गावो फाग अमोली ।
बुद्धिविहारी साड़े अङ्गन आया चन्द्र पया
मेड़ी झोली ॥

२

वेखोनी यह नागर नन्ददा व्रज बीचे क्षेल कहावे ।

रत्ते हत्थ गुलाल नाल दाबे ज़ोराज़ोरी मुंह लावे ॥
कुडियां नाल मज़ाक कर दा हंस हंस गालियां गावे।
बुद्धिविहारी फाग बहाने घर घर धूम मचावे ॥

३

सालू मैड़ा रङ्ग लाइस मोहन रङ्ग नाल भरया।
डोल दहीं भरो मैड़ी चाली कीन्हा में करया ॥
एह तां होय नन्द घर ज़ुल्मी इसको लों जी डरया।
बुद्धिविहारी मनदा नाहीं ना मिन्नत लाल डरया ॥

४

लड़ छड़ सालूदा सांवले बड़ो दूर असानें जाना।
होया सगुन तैड़ा होली दा सालू भीजा साहाना ॥
ज़ालम सच पूछे जो मैड़ी कहो की करसां बहाना।
डोली दहो नाही यों ममकाई केहा हुण पछताना।
बुद्धिविहारी तेहारी जटेती कर दा ज़ोर धिगाना ॥

५

वे ऊधो नाल परायां की ज़ोर।
पुत्र पराए होत न अपने कीते यत्न करोर ॥
व्रजवासी असीं दिल दे कचे औ सबहिं एक ठोर।
कंस बहाना कर के साथों लीता कान किशोर ॥
कीथे वंशी तां कीथे नच्चां कीथे माखन चोर।
बुद्धिविहारी दे विछुरन सानू पएमा मले होर ॥

६

जिन करो रार मो सों जाओ जी जावो अपने द्वार।
जिनके रस वश भए मनमोहन जहां जावो तहां
नई बहार ॥
मेरो प्रीति की कौन भरोसो जहीं रहो तहां इतवार।
इच्छा पुरवी वाही तिया की जिन गर लिपटाए
भुजा डार ॥

७

अब सखी कैसे निकसे बाहर मग में रोकत
टोकत व्रजनार।
ग्वालबाल कान्ह अपने सङ्ग ले मारत केसर
पिचकार ॥
डगर बगर तिय चलन न पावे ऐसे ढोठ होरी के
खेलार।
आनन्द रसिक व्रज वीथिन डोलत छैला नन्दकुमार ॥

८

यौवन मदमाती नार अञ्चर संभार रे।
मस्त महीना फाल्गुनका रङ्ग छिरको पिया
पर डार रे ॥
गहेली गहेली डोलै अपने अङ्गन में पिया को
नयन निहार रे।
अनुरागी रस पागी जागी मद छकी नावत होरी
दे तार रे ॥
हंसत मुसकात देत है गारी मचल रही कर के
रार रे।
न डरत करत न काहूकी कान इच्छा ऐसी
अधिक छिनार रे ॥

९

कैसे कर कोऊ निकसे पनियां भरन विच ठाढ़ो
लङ्गर वटपार खेले होरी।
रङ्ग पिचकारी ले सबन पै डारी और मुख मींजत
है रोरी ॥
ऐसो निर्लज्ज भयो डोरे व्रज में तरुणी वारो नाहिं
न छोरी।
रस वश कर लेत मनमोहन होरी रङ्ग रचो री ॥

१०

ए री आज मथुरानगर में दधि बेचन को गई।
मोर मुकट कुण्डल को छवि देखत सुध बुद्धि भूल गई।
इत डर है मोहे सास ननद को उत नेह
लागो री नई ॥

११

मोहन होरी गावै सुन जियरा है लरजे।
छण भीतर छण बाहर अङ्गन वैरन ननदी बरजे ॥
रहन न पावत विरह सतावत ज्यों ज्यों
डफ ध्वनि गरजे।
यह फाग बलिहार मिलौंगी मनमोहन सो परजे ॥

१२

जाग परूं तो नींद न आवै मोहन होरी गावै।
डफ धुकार सुन कान वाणसी मन में मैन जगावै॥
तो हि सुनाय कहत हौं ननदी विरह व्यथा
कोई नहीं पावै।
दे अकोरी बलिहार तन मन जो तू आन मिलावै॥

१३

होरी होय रही व्रज माही।
जिन नहीं खेलो श्यामसुन्दर सङ्ग वृथा जीवन
जगमाही॥
जब तें वेणु सुन्यो वृन्दावन कल न परै मनमाही।
वरसानेकी बनठन आई मैं न गई तहां नाही।
गावै गूदर सुन सखी सुन्दरि पहुंचा हौं हरि पाही॥

१४

होरी कैसे खेलूं सइयां नहीं आवै री।
निशदिन मइ को विरह सतावै पिया विन भवन
न भावै री॥

१५

लाज भरी नहीं बोलूं सांवरे देख यह धूम मचावत है।
पहले तो हम सन सूधे खेलत पाछे ते गारो
सुनावत है॥

१६

दई दई कर रही भला या रङ्ग में बोर दई।
अनवादी खादी यह नन्द को इन मोरी बांह गही॥
घर वर तज हठ मान अकेली नाहक पनिया गई।
लाक कहत वलिहार दोष मोहे हो गई बात सही॥

१७

अरे लाल नई रे ललनियांकी मीठी बतियां पिय
जाने के मोरा जिय जाने।
निज़ामुद्दीन औलिया है पिय मोरा पिय के विछरन
में भई हूं बावरी॥

खम्बावती—यत

यौवन मदमाती अम्बर संभार रे।
फाल्गुनके दिन मस्त महीना सुरख रङ्ग पिय
पे डार रे॥

१

सखी री पिय विन कछु न सोहाय सो आज मोरा
रह रह जिय घबराय।
घर से निकस वृच्छ तर ठाढ़ी सखी री वचन सहो
नहीं जाय॥

२

लाल मेरे आये री जावो रे सइयांको ले आवो
मेरे दिन दिन बढ़त सुहाग।
सखी सोती थी अपने मन्दिर में सुख नींदरिया
इन विरह ने खायो है मांस॥

४

सासु ननदिया लरेंगी मोरी मो पै रङ्ग जिन डारो
सांवलिया।
हा हा करत हूं पइयां परत हूं चेरी मैं हूंगी तोरी
सांवलिया।
कृष्णानन्द मान मनमोहन काहे करत वरज़ोरी
सांवलिया॥

५

ए री हां लाजको गारी दे गया दे गया दे गया
ए अनारी।
जाय कहि हौं मैं तो मुहम्मद शाह सौं तुम जीते
हम हारी॥

६

होरी होय रही है नन्दमहरके द्वार।
अबीर गुलाल के बादर छाए रङ्गको परत फुहार॥

७

कैसी होरी आई ए जी सुनो व्यथा हमारी।
डफ धुकार परी श्रवणन में विरह अग्नि हिय बारी॥
नयन नीर भर भर डारन लगी मानो छोड़े पिचकारी।
निशदिन मइ को कल न पड़त है तलफत बीतत
रैन भारी॥
देख तो दोउ मिल होरी खेलत इत प्यारी
उत प्यारी।
परम कृपाल श्रीवल्लभ नन्दन मागहुं अम्बर पसारो।
दास कृपापर कृपा कीजे बेग मिलावो गिरिधारी॥

८

निशा नींद न आवे होरीके खेलन की चोप।
श्याम सलोना रूप रिझोना उलहो यौवन कोप॥
अब ही ख्याल रच्यो जु परस्पर मोहन गिरिधर भूप।
अब वरजे मोरी सास ननदिया परो विरहके कूप॥
मुरली की टेर सुनाय जगावे यही बगर में अनूप।
यह जिय सोच रही हो अपने जाय मिलि हों
हरिके सो ह्रप।
आनन्द घन प्रभु गुलाल घुमड़न में एक ही रङ्ग
रङ्गे हों रूप॥

९

छोटे जान न दूंगी तुम खेलत हो होरी।
कुङ्कुम भर भर कञ्चुकी मोरी दरक गई मुख
गुलाल मीजत वरजोरी॥

१०

यशोदाके लाल तुम इस गैल न आव रे।
वरज रही वरज्यो नहीं माने तेरो ऐसा स्वभाव रे॥

११

यशोदाके लाल तुम मो पै न रङ्ग डार रे।
वहियां पकर मोरी चुरियां करकी मोह अकेली
कर पाए रे॥

१२

यौवन मदमातो नारी अञ्चर संभार री।
यह फालुगुनका मस्त महीना रङ्ग सइयां पर डार री।
इस अङ्गिया पर लाल लगे हैं मोती लगे हैं
हजार री॥

१३

वामें कहा कछु झूठ कहा मेरे पियके मिलनकी वारी।
गुलाल मलों तो सुकर जात है बहियां मरोरत
मारत पिचकारी॥
अबीर उड़ाऊं तो कागा बोलत है मैं हंस हंस
देत हूं तारी।
अचपल हो के मैं पिया सो मिलोंगी पहन
केसरिया सारी॥

१४

होरी खेलन तुम आए रसिया।
चोवा चन्दन अतर कुङ्कुमा अबीर गुलाल
उड़ाए रसिया॥

१५

झकझोरी कर होरो खेले म्हांरो रसियो राजकुमार
बहियां मरोरी।
औचक आन गहो या व्रज में अबीर लिए भर
झोरी कर होरी॥
अगवारो पिछवारो ननदल मुख माड़े छे रोरी।
वलिहारो कांई धूम मचावे नन्दमहर जूकी पोरी
कर होरी॥

१६

आवो वलमजी हमारे डेरे अबीर गुलाल मलों मुख
तेरे होरीके दिनन मोसे मत उरझे रे।
जो पिया मोसे रूस रहे हो बल बल जाऊं सब ही
घने रे।
महम्मद शा पिया सदाहो रङ्गीले दूर न
बसो बसो मोरे नेरे॥

१७

मैं तो लाई केसर रङ्ग भरके छिरकत रङ्ग
हुलस पिय हरखे।
अपने री अपने रङ्ग बनाय लाई अरे लाला डोरी
बनो वा के कर से।
महम्मद शा पिया सदा हो रङ्गीले फगुवा लूंगी मैं
झगरके॥

१८

होरी की ऋतु आई सखी री चलो पियापे
खेलिए होरी।
अबीर गुलाल उड़ावत आवत शिरपर गागर
रसकी भरो री।
महम्मद शा सब मिल मिल खेले मुखपर अबीर
मलो री॥

१९

चलो देखिये मेरी सखी री मोहन धूम मचायो री।
व्रजगोपिन सङ्ग होरी खेलत रहस रहस
गर लायो री।
बरजोरी कुच गहे कर पकरत ऐसो नाच नचायो री॥

२०

नन्दलालके सङ्ग होरी खेलन को आई री।
अबीर गुलाल लेहों भर झोरिन भर पिचकारी
लाई री॥

२१

एसे चतुर श्याम सो को खेले ऐसी होरी रे।
अबीर लगावत रङ्ग में भिजावत और करत
बरजोरी रे॥

२२

आवो सइयां मिल होरी खेलें धन्य धन्य मेरो भाग।
चोवा रे चन्दन और अरगजा सइयांको रङ्गाय
द्यों पाग।
सइयांको सुहागन सइयां सङ्ग सूतें दे बहियां
गरे लाग॥

२३

सब रसभीनी माती अरे हो राधा गोरी खेले होरी।
एक ओर तें श्याम आये एक ओर तें कुआ बोरो।
राम परस्पर रङ्ग रच्यो है कोई सांवरो कोई गोरी॥

२४

हम से अनोखो कौनसी नार ता सो नयन लाग
रहो री।
जल विच कमल कमल पर कलिया भ्रमर
लिपट रहो री॥

२५

आज मोरे ऐसो होरो सइयां तोसे ना खेलूं
मोरे मुखपर अबीर मलो री।
सब सखियां मिल बन बन आई हम हो सो उरझ
परो री।
हों निर्गुणी कछु गुण नहीं जानों कुआके
विलम्ब रहो री॥

२६

आज पिया मिलनको बारी श्याम मोरो अङ्गिया
रङ्ग भर डारी।
अगर सुने मोरी बगर सुने रे सास सुने दे गारी॥

खम्बावती—धमार

नहीं आयो सांवरो कैसे के मन समझायो रे।
मधुवन ढूंढ़ वृन्दावन ढूंढ़ो गोकुल में उरझायो रे॥

२

छैल मनमोहन मोरी अङ्गिया रङ्ग भर डारो रे।
अबीर गुलालकी मूठ ज्यों मारो चितवन बश
कर डारो रे॥

३

किन रङ्ग डार दियो मोरी अङ्गिया भीज गई सारी रे।
नन्दमहर जूको कुंवर कन्हैया अबके फाग मोरो
बारी रे।
कृष्णानन्द पकर पाऊं जो मुख मोड़ौं दे तारो रे॥

४

सखी पिय सन खेलिये होरी को ऋतु आई चलो री।
अबीर गुलाल उड़ावत आवत शिरपर गागर
रङ्गको भरो री।
मनमोहन सुन्दर पिय सोहन अबीर गुलाल मलो री॥

५

भर मारी पिचकारी रे अङ्गिया भिजोई
केसर रङ्ग सों।
ऐसो कौन मनमोहन पिय सो गुप्त छाप
दोजे ढङ्ग सों॥

सिंदूरा—तिताला

व्रज में होरीको धूम मची है ले चल तमाशे को
रे दैया।
अबीर गुलाल रङ्ग सो भोने मोहन नाचत ता थैया॥

२

लखि नयन कनोड़े प्यारी मुसक्यानी।

जावक भाल लगी दृग अञ्जन आए साजन पहंचानो।
वारो सारो रैन जगाय रहो प्रगटो लेहो विहानो॥

२

मानो चन्द्र छिपे री घूंघटरा में तिहारे।
जगमग ज्योति जराव को टीको जैसे शुक्र के तारे।
मोतिन मांग भरे वनिताके मानो गङ्गा धसी
हरिद्वारे॥

४

कज्जर कारे दृग तेरे विराजे।
नाशाको मोती अति राजत मानो शुक्रके तारे।
कान तरौना यों बिच चमके मानो उदित भए
भिनसारे॥

५

अब न जाऊं व्रज में दधि बेचन गोरसके मिस
सब रस चाहे।
औरन सो पिय हंसके बोलत है हमसे झगरत है
अब काहे॥

६

गोरी गोकुल ग्राम न बसिये जौ लौं फाल्गुन मास।
बाहर दुर्जन लोग चवाई घर में वैरनि सास॥
जो रहिये तो पिय में होरी खेलिये हियमें
आनन्द हुलास।
रहो लाज बलिहार जावो कि न श्याम मिलनको
आस॥

७

रङ्ग डारत कज्जर ढर गयो।
ताती ताती छतियां घात आपनो हाथ अचानक
पर गयो॥
हों निकसी घर बाहर अपने रसिया पाने पर गयो।
कहा कहों बलिहार चवाई घरको कार्य
बिसर गयो॥

८

दारो मतवारी डारे या हु डगर में पो सुख मले
गाल गुलाल मानत न नवतन काहू ग्वारि।
उन्मद मदन लर झगरत सबनको गावत गारि
दे तारि॥

सिंदूरा—परज

यौवनको मदमातो होरी में देत सबन सुख गारो
झिरको।
डारो अबीर खुलत नहीं निपट सदा रङ्ग घूंघट
खिरको॥

२

बरसाने तें आए अरसाने हम जाने जू लक्षण
तिहारे पहंचाने।
कहुं कज्जर कहुं पीक लीक अनगन स्वभाव न
मो पै जात बखाने॥
नयनन नींद ध्यान मन हृदय बसत तीय ताहीके
लगत गुण गाने।
धन्य तेरो नेह तानसेनके प्रभु ऐसे नट नागरको
छल कर नाच नचाने॥

३

ओढे सारो प्यारो केसर को रङ्ग छिरको छिरको।
चितवन में वश कीन्हों मोहन को यातें फिरत
थिरको थिरको॥
अबीर गुलाल लिए भर झोरी रङ्गको कमोरो
गिर ढिरको ढिरको।
तानसेन सो फगुवा लीन्हों यातें डोलत
हिरको हिरको॥

४

श्रीनन्दको नन्दन खेले जो हो हो होरा।
ग्वार बार सब सङ्ग सखा ले व्रजको वीथन हो डोरा॥
ताल पखावज आवज बाजत ढोलक और तंबोरा।
वीणा रबाब सुरभ डफ मुरली मधुर मधुर
ध्वनि थोरा॥
कुङ्कुम केसर चन्दन वन्दन अबीर गुलाल
भर झोरा।
तानसेन प्रभु फाग रच्यो है खेलत किशोरी किशोरा॥

५

छिनरिया धूम मचाई यह व्रज में हंस हंस खेल रचाई।
दशन चमक और मुखको हसन नयन सैन कर भौंह मटकाई॥
पकर लिए मनमोहन सोहन फगुवा लीन्ह मन भाई।
रसिकरङ्ग प्रभु रस वश कर लीन्हों होरी अवसर पाई॥

६

चलो तुम हूं देखो कैसो मची होरी गावत रङ्गमहल में नारी।
एक गावत एक मृदङ्ग बजावत एक नाचत दै दै तारी॥
अबीर गुलाल केशर पिचकारी तक तक मारत गावत है सब नारी।
तानसैन प्रभु खेल रच्यो है फगुवा लीन्हों भारी॥

सिन्धु—परज

नन्दमहर जू को पौरी मची है हो हो होरी हो हो होरी।
नाचत गावत करत कोलाहल इत नन्दनन्दन उत वृषभानु किशोरी॥
दुहुं ओर रङ्ग छाय रह्यो है अबीर गुलाल मुख मलत है रोरी।
भरत भरावत पिचकारी चलावत रसिकराय प्रभु फाग मचो री॥

२

कजरारे कारे तेरे नयन विधि संवारे।
मृगमद खञ्जन चोप लगत आलो इन छुतें पाए सरस अपारे।
रसिकरङ्ग रस वश कर लीन्हें बार बार वलिहारे॥

३

रङ्गकी पिचकारी प्यारी किन मारी।
वदन रङ्गीलो भयो अङ्गिया तरक गई भीज गई तनसारी॥

ए सजनी मैं तोसे बूझूं सांचो कहो तो है सौंह हमारी।
रैन की जागी भोर हो आई अंखियन बीच खुमारी॥
यह अपने जिय ठान रहो हौं जो कुछ बन रहो तरह तिहारी।
लाख कहो मैं एक न मानौं मिल गए विष्णुविहारी॥

४

सब मिल डारो फाग निवार।
ऐसो व्रज में उलझ परो कोउ न सुनत पुकार॥
करो ए कहा चैन नहीं मनको तन जर भयो अङ्गार।
वा विना मिल है न बूझे क्योंइ को ते गावै मलार॥

५

हो हो हो हो होरी खेलै चलो देखें कैसी मच रही है धूम।
इत सखा सङ्ग लिए सांवरो उत सखियन सङ्ग लिए राधा झूम।
मृदङ्ग बजावत और डफ गाजत गुलाल लाल भई सिगरी भूम॥

६

चलो तुम हूं देखो कैसो मचो होरी गावत रङ्ग महल में नारी।
कोउ गावत कोउ मृदङ्ग बजावत कोउ नृत्य करत कोउ बहक देत है तारी।
कोउ काहूको अञ्चर गह राखत कोउ तुतराई देत सबन मुख ह्नै ते गारी॥

७

होरी को चतुर खेलारी चुनरिया रङ्ग डारी हमारी।
हा हा करत हूं पइयां परत हूं इतनी अरज मोरी मानो विहारी।
अङ्गिया भिजोई मोरी बिगारी तुम जीते हम हारी गिरिधारी॥

८

जिन मोरी अङ्गिया भिजोई देया मैं तो उनही को रङ्ग में भाजोऊं गी रे।

फगुवा लूंगी तब जाने दूंगी राधाको बहियां
गहोय लूंगी रे ॥

९

मैं तो उनही को गारी देऊंगी जिन मोरी
चूनर रङ्ग में बोरी।
वृन्दावनकी कुञ्ज गलिन में धर बहियां झकझोरी ॥
हा हा करत मोरी एक न मानी मोतियनकी
लर तोरी।
चोलिया पकर लपट उर मोरी वर वश गागर फोरी॥
कृष्णानन्द मदनमोहन मन मोहत नेह भरो री ॥

सरपरदा—तिताला

वारी हां मीठी बतियां पी जाने के मेरो जी जाने
मेरी नई लगन।
इत बहे गङ्गा उत बहे यमुना छांह कदमको
मिलो मोहे कान्हा लग गई वाण मोहे श्याम तकन ॥

सरपरदा—परज

श्यामसुन्दर तो से खेलूं होरी।
होरी खेलनको मोरे सइयां आई लो फगुवा लूंगी
वरजोरी ॥

२

होरीके खेलेया तोहे लाज न आवे मो सो काहेको
प्रीति लगावत रे।
नदिया किनारे एक बङ्गला छवे हों नयन झरोखे
लाग रहे ॥

३

होरी खेलेया ब्राह्मण यार।
जो तुम ब्राह्मण जात हो रसकी नींद गंवाई ॥

४

कौन जाय व्रज में दधि बेचन रङ्ग डारी चूनर
सारी रे।
एक हाथ मोरा अञ्चर रे पकरे दूजे हाथ मोरी
सारी रे ॥
माई बापकी बड़ी दुलारी कबहुं न दीन्हीं गारी रे।
आन परे वश तेरे ई मोहन नित्य उठ देतो तारी रे।
कृष्णानन्द श्याम मनमोहन नोखो छैल खेलारी रे॥

५

तेरो अङ्गियामें कुङ्कुम रङ्गके काहे छिपाए
जात सखी।
वरज रहे घरज्यो नहीं माने रङ्ग रूप औ गात सखी।
कृष्णानन्द पकर कर निरखत श्यामसुन्दर
मुसक्यात सखी ॥

६

कजरारे कारे तेरे नयन राम संवारे।
मृगमद खञ्जन चीण लगत अलि इनहुं ते पाए
सरस तिहारे।
पशुपची और जीवजन्तु मन सबको रञ्जन रङ्ग डारे ॥

७

अंखियां रतनारी बालम काहूं जागी।
सगरी रैन मोहे तरफत बीतो किन सोतनके
गरे लागी॥
डगमगात पग परत शिथिल अति पीकलीक
हिय लागी।
मोहन यह ढङ्ग कौन सिखाए अनहोनो आगी आगी॥

सरपरदा—पहाड़ी

तू बेंदी भालों न दे री तेरो ऐसे ही सब जग वैरी।
लटक मटक कर चलत री सजनी तेरो अंखियां
आमको केरी ॥

२

गमनेका सन्देशा सुन के मुसक्यानी।
बाट चलत मोरी बिछियां हेरानो देख छैल अठलानी।
एक गोरी दूजे यौवन मातो बात समझ सकुचानी ॥

३

कोऊ चलन पावे बाट फाल्गुन में।
जो देखूं सोई मातो हो डोले रङ्ग गुलालन
ठाट फाल्गुन में ॥

सरपरदा—खम्बावती

नयन तेरे दूलहन मतवारे री।
कज्जर रेख दई कोरनमें मीन खञ्जन दोऊ वारे री॥

२

होरी खेलन मेरे आए मनमोहन जानी ।
ग्वाल बाल सब सङ्ग सखा ले पिचकारिन मिहमानी॥
बाजत तालमृदङ्ग झांझ डफ गावत नीको तानो ।
कृष्णरसिक सो फगुवा ले हौं तब छाड़ौंगी गुमानो ॥

३

श्याम आज रङ्ग रङ्गाए कहां रैन जगाए ।
सगरी निशा अनत हो जागि बोलत वचन अति
तोतराए आए है घबराए ।
अधरन अञ्जन भाल महावर मुख अबीर
गुलाल लगाए ॥

४

जो कोउ होरी में नारी बाहर निकसे वापे मोहन
रङ्ग डारत है ।
लपट झपटके बहियां गह लेत है कुचकी
तनिया फारत है ॥

५

जागे भाग्य हमारे आज सखी मोहन आए ।
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर मुख मीड़ूं गर लाए ॥

६

ललचावो जिन बालम दिननकी थोरी ।
जावो जो जावो रहो उनहो के जा सों
खेलत हो होरी ॥

विहाग—तिताला

होरी दे ख्याल बिच यह क्या कीता ।
मैं नू लगाय छरी फूलांदी शिर ते घूंघट खोल लीता॥
परा गुलाल आंखिन बिच मेड़े देखन दा सुख छीता।
सखी देखे दी लाज मरे दी चुम्बन मालां दीता ॥
ऐसे न कोवी नागर नन्द दे कहावत है व्रज मीता ।
रसिक प्रीतम सो हा हा खांदी हौं हारी तू जीता ॥

२

बरसानेकी ग्वालनी खेलत फाग वसन्ता हो ।
शङ्का न काहूकी मानही माता पिता सुत कन्ता हो॥
चन्द्रभागा चन्द्रावली मध्य नायक राजत राधा हो ।
सहज स्वरूप सुहावनो शोभासिन्धु अगाधा हो ॥
चली सब चतुर शिरोमणी खेलनको रस फाग हो ।
रसिक कुंवर वृषभानुको तुम सो अति अनुराग हो ॥
सकल साज सब ले चली आई वट सङ्केत हो ।
पठई सखी एक आपनी नन्द कंवरके हेत हो ॥
बल मोहन हंस यों कह्यो सुनो सखा श्रीदामा हो ।
हम पर आई सब जुरि उन्मद अतिशय वामा हो ॥
वेग चलो मिल ग्वाल ले देखावो अपने हाथ हो ।
जासे बहुरि न आव ही छाड़ि आपनो साथ हो ॥
अनन्त गुलाल अबीर ले देहु निशान घुराई हो ।
बहुत कलस सोंधे भरे कुङ्कुम भरि पिचकाई हो ॥
दलबादल जो देखके सन्मुख आई धाई हो ।
मेघघटा ज्यों वर्षे हो अद्भुत फाग मचाई हो ॥
कमलन ले ले नवलासी कुसुम गेंदको रार हो ।
मुड़ि माजे बल मोहन हो हो कर है व्रजनार हो ॥
चन्द्रावली बल जू गहे श्याम गहे श्रीश्यामा हो ।
सखा गए सब भाजि के ले गयो छिड़ाय दमामा हो ॥
शङ्खर्षण सोंधे भरे श्याम भरे सुख मारी हो ।
आनन शीर्ष संवारो के भेष बनायो नारी हो ॥
बर वश भई व्रजसुन्दरी शोभा कही न जाई हो ।
चतुर्भुज प्रभु इन वश किये गिरिगोवर्द्धन राई हो ॥

परज—यत्

मचाई आज कुञ्जन में अनोखे सांवरे होरी ।
गई जो नारी देखनको भई छवि देखते बौरी ॥
सखा लिए श्याम सङ्ग डोरे सो एक ओर
राधिका गोरी ।
बजत हैं झांझ डफ वीणा मधुर स्वर मुरली घनघोरी॥
सकल मिलके वधू आई भई एकठी एकठोरी ।
चले बहु गेंद कुङ्कुमा न सुध रही तनको तनोको री॥
सखिन लिए पकर मनमोहन दिए दृग आंज
बरजोरी ।
कहूं हंस के दियो गुलचा कहूं लई बांसुरी छोरी ॥
छुड़ाई बांह यदुनन्दन गह्यो वृषभानु किशोरी ।

लगाई अङ्ग सो प्यारी छिरक रङ्ग मोज मुख रोरो ॥
गगन चढ़ सुर सुमन वर्ष मची जो ध्वनि चहुं ओरी।
निरख सुखसिन्धु छविनायक दियो तनमन
ज्यों तृण तोरी ॥

२

वृन्दावन माह सखी री फाल्गुनकी ऋतु आई।
विलम्ब रहे मधुवन में मोहन मोहे कछु न सुहाई ॥

३

कैसो होरी आई सजी सुनो व्यथा हमारी।
डफ धुंकार परी श्रवणन में विरहने हृदय
आग बारी ॥
नयन नीर भर झरन लागो मानौ छाड़े पिचकारी।
निशदिन मो को कल न परत है एक दिन नींद
न आई मारी ॥
देखो दोऊ मिल होरी खेलत हैं इत प्यारो
उत प्यारी।
परम कृपाल श्रीवल्लभनन्दन मांगहु अञ्चर पसारी।
दास कृपापर कृपा कीजो वेग मिलावो गिरिधारी ॥

योगिया—यत्

जाको पिया सपने हुं न आवे वाको फाग है कैसा।
तू तो कहत है आई होरी खेले मोको तो यहै
अन्देसा ॥
नयननको पिचकारी करी है अंसुवन रङ्ग बनैसा।
विरह ताप सो होरी मैं खेलौं मेरे तो हाल है ऐसा ॥

योगिया—परज

सखी आज गोकुल धूम मची है होरी खेलत
कृष्णमुरार।
नन्द गांवते ग्वार आए सब बरसाने की नार ॥
मान कह्यो मेरो उठ चल हिलमिल अब जिन
कर मो सो रार।
सब त्रियन में अधिक रूप तेरो तब ही कृष्णको
है प्यार ॥

२

ए री व्रज में बन होरी खेलिए आयो है
फाल्गुन मास।
अबीर गुलाल कुङ्कुम पिचकारी ले चल
कान्हर पास ॥
बसन भूषण पहर शीषफूल धर अङ्ग सुगन्ध सुवास।
उठ चल हिलमिल श्याम सो अपने पूज ले
मनकी आस ॥

३

नन्दलाल महाराज नगर आज धूम मचाई।
गाय बजाय नाचे नृत्यकारी गुणीजन बीणा बजाई ॥
देखा सभा जैसो इन्द्र विराजत द्युतिनको
आंख लजाई।
तानमान को इनाम दान कर सबनकी आशा पुजाई ॥

४

आज होरी खेलन आए मथुरा नगरके लोग।
चलो सखी मिल बन बन ढूंढ़ौ जहां हो
श्याम से संयोग ॥
कूक मचाय नाच गति विरहन भरी है वियोग।
आंज सभा में ना आई है कान्ह रति कैसे
सुने हो भोग ॥

५

ए री आज मथुरा नगर में दधि बेचनको गई।
मोर मुकुट कुण्डल की छवि देखत सुध बुध भूल गई ॥

६

रङ्ग सरसाने बरसाने आये नन्दग्राम बरसाने।
इत राधे उत कृष्ण कांवर सङ्ग सखी सखा हर्षाने ॥

७

यमुना घाट कैसे जाओं जित तित खेलत कृष्ण
हो हो होरी।
जैसो ही लाज तैसो त्रास बरजे न कोऊ उनको री ॥
ऐसो बावरो भयो है व्रज में काहे तो लाज बिसरो री।
भौंह मरोरत नयन सैन दे मैन ते होउ न होरी ॥

८

हो हो अब तो हरि होरो खेलन लागि खेलन लागी।
सब मिल पहरे आभूषण नीके गरे केसरिया बागी॥
अति सुगन्ध रङ्ग पुहुपवसी ले ले चलो उन आगी।
चोहल भरी सबे व्रजनारी भाग्य हमारे जागी॥

९

ऐसो व्रज में उलट परो कोउ न सुनत पुकार।
यह कान्ह होरो खेले गोकुलमें सङ्ग लिए व्रजनार॥
एक नृत्य करत है ठाढ़ो एक गावत दे तार।
एक अबीर गुलाल उड़ावत एक भरत रङ्ग पिचकार।
एवा सांवरो और गोरो सुन्दर और भोरो है सब नार॥

१०

खेलन लगी फाग मोहन व्रजपतिकी पुरी नन्दके
राजदुलारे।
चोवा रे चन्दन अतर अरगजा केसर परत फुहारे॥
कृष्ण खेलत सब गोपी खेलत हैं खेलत मुनिजन सारे।
सन्मुख चोट परी राधा पर सूरदास बलिहारे॥

११

होरी का सङ्ग खेलौं फाल्गुनको दिन आयो री।
प्रिय परदेश खबर नहीं लीन्हीं विरह आन
सतायो री॥
जब के गए गए वाही के कौन तिया बिलमायो री।
रसिक सनेही काहू रस वश कर लीन्हीं उन बिन
कछु न सुहायो री॥

परज—कलिङ्ग

बार बार तुम रङ्ग जिन डारो ना खेलूं ऐसो
होरी सइयां।
विनती करौं तोरे लागूं पइयां धर बहियां
झकझोरी गुइयां॥
बरजोरी कुच गह मुख मोड़त फिर फिर आवत
मोरे छइयां।
काज़म अपनी ओर निभावो वर वश भयरा ठइयां॥

२

अब रङ्ग काहेको डारो लला मैं तो सगरी भीज गई।
उड़त गुलाल लाल भए बादर रङ्ग केसर
पिचकार दई॥
हा हा करत हूं पइयां परत हूं दई दई कर निभई।
रसिक छैल रसवश कर लीन्हीं भुज भर अङ्क लई॥

३

मेरो कृष्णकुमार होरो खेलन आयो री।
वर्ण वर्णके रङ्ग बनाय लायके सङ्ग ग्वारन को लायो री॥
बाजत वीणा मृदङ्ग झांझ डफ मृदु मृदङ्ग बजायो री।
कृष्णरसिक रसवश कर लीन्हीं होरी राग जमायो री॥

४

मैं तो उलटो उरहनो लाई री।
सासजीका पुत्र ननदजीका वीरन जिन मोरो
मत बौराई री॥
अङ्गिया रङ्गी भीज गई सुधबुध सब बिसराई री।
कृष्ण रसिक के रसवश भई धर बहियां मुरकाई री॥

५

पिचकारी रङ्गकी भर मारी भीज गई तन सारी
मेरो नट नागर पिया गिरिधारी।
चञ्चल चपल उधमी रसिया निपट मिला है बनवारी॥
बरजोरी मलत गुलाल कपोलन छैल बेसिया वारो।
उर लगावत नहीं डरत अनोखो कर खुशाल
बिना निहारी॥

६

होरी खेल ले श्याम सो गोरी अब हो दिननकी थोरी।
अबीर गुलालकी भर ले झोरी
रसिक रङ्गको रसवश कर ले मान ले विनती मोरी॥

परज—खम्बावती

आये नहीं ए री मेरे मनभावन।
बरसै बून्द परत मेरी छतियां पिय परदेश नहीं आवन।
को छावे हमरा मन्दिर गरजे शिर ऊपर आवन॥

परज

दूर न दुराए न डरे नयो नेह दूरे न दोरे।
डगमगात अरसात गात नाहीं रङ्ग निचुरत थोरे।
नयन सारी रैन रङ्ग हो बीते आवत लजाय भोरे॥

२

नयन कनावड़े हो पिया पीक रची है अधरन
लखि चरण धरत आंवड़े बांवड़े।
यही आवन पर तनमन वारो नयन करें निज पांवड़े॥

परज—धलैया

आज व्रजवासी की छोहरा डफ बजावत आवत है
कछु बोलन लसी।
श्यामवर्ण अति अरुण नयन किए लेत अङ्क
भर कसी॥
कहा भयो घर जान दे बोरे भई सो भई घर बसी।
जो सुन पावे दुर्जन लोगवा होवे नेकमें हंसी॥

२

हमारो कन्हैया राधा ने वश कीन्हीं।
एक वन भूली सकल बन ढूंढ़ी ढूंढ़ी गोप ग्वारीका
अति रङ्गरस दीन्हीं॥

३

चन्द्रकी झलकन तेरे माथे कौन लगाय दई अहो
फाल्गुनमें ए हो प्यारे।
घट गई रैन छिप गए तारे जागे भाग्य हमारे।
हो ललना होरीके दिननमें निकसि आवत
उजियारे॥

४

राधा छवि छाई होरी खेलन आई।
ललिता सङ्ग लिए राधा इत उत बलवीर कन्हाई॥
देख गुलालकी घूंघर में अबला चपला सी लखाई।
दीनबन्धु व्रजराज छकी मन मूठ गुलाल चलाई।
भाल लगी हंस गारी दई पिचकारी दई मन माई॥

५

बरसाने ते पुरोहित आयो होरी रङ्ग खिलायो।
कोऊ सखी कीच ले डारो कोऊ कारख ले मुख जो
लगायो॥
कोऊ गूलरकी माला गल डाली कोऊ भंटा
उरहार बनायो।
कोऊ धोती खेंच लई हो हो हो कर होरी में
नचायो॥
हा हा कर छूटे पांड़े जू समधाने तें दच्छिणा पायो।
हंसत ठाढ़े व्रजके वासी सब कौतुक देख आनन्द
उर न समायो॥

कलिङ्ग—योगिया

री आली श्याम बजावत बीना।
अन्न बिना जैसे प्राण दुःखत है जल बिना जैसे मीना॥
बारह वर्ष की वयश जात है यौवन अधिक सलोना।
कर स्नान चीर पहनायो सूर्य अर्घ ले दीना॥
हाय दई तेरो का रे बिगारो छोटे बालम मोहे दीना।
करि हों शृङ्गार पलङ्ग चढ़ बैठी अङ्ग अङ्ग रसभीना॥
चोली के बन्द करकन लागे के पीतम पोंछ पसीना।
मुरलीको ध्वनि वश भई है कामिनी मोहन मन
हर लीना।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दर्श को चरणकमल चित्त दीना॥

कलिङ्ग—परज

होरी खेलत मेरो मन हर लीन्हों या व्रजबाला
कुंवर कन्हैया।
चीर नई चूनर रङ्ग में भिजोई कैसी करों मैं
अब मोरी देया॥

२

होरी हो रही हो रही हो रही री सखी री
आज अवध नगर।
धाम धाम पुर गलिन गलिनमें भई चहुं दिश
भली धूम मजर॥
विना रङ्ग बोरे निकसन न पावत कोऊ भूप
कुंवर ठाढ़ो छेके डगर।
बाजत मृदङ्ग डफ नाचत विविध नट उड़त अबीर
रङ्ग लेत सहर।
रामसहाय मोहे छवि रसवश कीन्हीं सुघर सलोने
रङ्गभीने रवर सु॥

३

सखी तेरी बेंदलिया पर वारी।
क्या बेंदिया गढ़ी सोनारनको केहुं सांचे में ढारी॥
श्रवर्ण वर्ण अनूप मनोहर चित्र विचित्र संवारी।
ना या बेंदी गढ़ी सोनारन ना केहुं सांचे में ढारी॥
अगम देशते आई बेंदलिया प्राण पिया की चिन्हारी।
सोना सनेह सुकीर्ति कुंदन नाम नगीना भारी॥
सत्गुरुकी शिक्षा माणिक्य मोती घर बाहर उजियारी।
यह बेंदिया पर नारद रीझे शम्भु लगायन तारी॥
शुक सनकादि और ब्रह्मादिक मुनि मन मोहन हारी।
सब सुहाग भरी या बेंदिया तीनौ गुणसे न्यारी।
रामसहाय सुहाय तबै जब होए पियाकी पियारी॥

४

रङ्ग नयो तेरो ढङ्ग नयो तू कान्ह नयो तेरो
आन नई है।
तेरी सभा सब रङ्ग रङ्गीली हरिको छवि और
खान नई है॥
या के रूपको कौन पहचाने ध्यान सो हरिको
पहंचान नई है।
हाफ़िज़ छैल ने होरी में मोहा मुरली नई तेरो
तान नई है॥

५

यह रात कब जायगी सजनी भोर भए मिलौं
अपने पोसौं।
खेलौं रङ्ग उन सङ्ग निसङ्क काढौं अरमान जोसौं।
हो सुनि है या व्रज में कोऊ हाफ़िज़ आय निकसो
हो यह ठानी अभोसौं॥

६

तेरे नयन कहे देत प्यारो प्यारे सो मिली आय
कहा भयो जो न मान।
लीक पीक अधरन पर राजत अङ्गिया अङ्ग दरकान॥
प्रीति छिपाई छिपे नहीं ए री रतिके चिह्न मनमें
बसे हैं तेरे अधरन पर मुसक्यान।
खेलत फाग अबीर उड़ावत मुखपर देखत
मुक्ताहल मानो शोभित रङ्ग वरसान॥

७

रसवादी रे कान्ह तोसे को भगरे।
अबीर गुलाल ले गाल मलत हो गुणन भरे
रसके अगरे॥

८

मो पै तो रङ्ग डारे री दैया और आप न भीजे।
अबीर मले और कुच मुख मोड़े कहो री सखी
क्या कीजे॥
बात कहे सो कहवे को नाहीं आप कहे और रीझे।
अचपल हो बटपार बनो बांको गारी भी दूं तो
ना खीजे॥

९

फगुवा मांगन आवै री मैं तो मोहन जानूं कौन
गांवको वसैया।
फगुवामें भला कहा होत है हम न जानैं ए री
मो को बता मोरी दैया॥
मोसे तो कछु और भी कहत है कासे कहूं मोरी
बाखल सगरी चवैया।
मैं अचपल मेरो रङ्ग यह अचपल ए री मेरो राम
नाम है खिवैया॥

१०

जिन मोरी चुनरिया भिजोई रे कोई वाको जाने।
घूंघट में मैं तो काहू न देखो लाख कहो तो न माने॥
ले पिचकार कुञ्जन में निकसके मेरो ओर को धाने।
अचपल होके भिजोई मोको महने परे मोहि ताने॥

११

होरी खेलन आयो मेरे कृष्णमुरारी।
वर्ण वर्णके रङ्ग बनाय के सङ्ग ग्वारन को लायो
आन बगरमें धूम मचाई मुख मोड़े दे गारी॥
वारो कान्ह वो तो हो कर छूटे हों कहा कहों
लाजको मारी।
बबरू आधीन निर्लज्ज भयो याते नाचत दे दे तारी॥

१२

आज दुलहन बन आई चल वेखण जैये।
घर घरते सभी बन आई ले ले सब विध रङ्ग
छूटो लटें मुख ऊपर आई घूंघट के बल जैये ॥

१३

आज पिया मिलनेकी बारी श्याम मोरो अङ्गिया
रङ्ग भर डारो।
अगर सुनें मेरा वगर सुनें रे सास सुनें दे गारी।
कृष्णानन्द काहत तोहो सो समुझ छाड़ पिचकारी ॥

१४

हां रे लाल मैं तो भीज गई रङ्ग में।
व्रजकी मग में निकस गई सब सखियां सङ्ग में ॥
पिचकारिन सो तक तक मारी रसवश कर डारी
अपने ढङ्ग में।
धर बहिंय । झकझोरी मोरी मुखसे बोलत हो हो
होरी लिपट गयो मेरे अङ्ग अङ्ग में।
हा हा करत हूं छाड़ दे रसिया फगुवा लीन्हों
याही अनङ्गमें ॥

१५

नयन तेरे सब रसरङ्ग भरे गोरी।
जमल आड़ा विमल कमलदल लोचन पाय
भङ्गावर रोरी।
रेशम जाल में लाल परो है की मृग खञ्जन जोरी ॥

१६

रे बरजोरी करत हो को खेले तोसो होरी।
अबीर गुलाल केसर पिचकारी और मलो मुख रोरी॥
सारी हमारी रङ्गसों भिजाई नाजुक बहियां मरोरी।
बाजत वीणा मृदङ्ग चङ्ग डफ भारी रङ्ग मचो री ॥
काहूको लपट और झपट काहूको काहूको
गह पकरो री।
राजा गुर्जरमल फगुवा दीजे करूं विनती कर जोरी॥

१७

होरी खेलत व्रजराज दुलारा मधुवन धूम मचावे।
अमीर पिया सब सखियां सङ्ग लिए विधना
पै गुण गावै ॥

१८

अरी वश तेरे आए री फाल्गुन मास लाल वो तो
नई प्रीतिको चाह परी।
जाको रङ्ग ताहो पर छिरकत अङ्गसों अङ्ग
लगाय रह्यो ॥

१९

यह होरीको ढीठ लङ्गर निकसन नहीं देत दैया।
नेह लगन और वश भई उनके मैं चेरो वो मेरे सैया॥

२०

नारसों नार खेलन तब लागी अपने मनसों होरी।
लाजसों नार अबीर मलत है अब भई है
सांवरी सों गोरी ॥

२१

सखी सब हो भिजोई मनमोहन मेरी सारी रे।
सारी तो सारी चोलिया भीज गई भर मारी
पिचकारी रे ॥

२२

खेले री शिवशङ्कर होरी।
सुर नर मुनि कैलास चलो री ॥
सप्त स्वरन और तीन ग्राम धर गावत किन्नर रूप
धरो री।
सिंही नाद सुहावन बाजे डमरु डिम डिम बाज
रह्यो री ॥
ब्रह्मादिक सुनकादिक देव केसर रङ्ग भर
भीज रह्यो री।
अबीर गुलाल भस्म अङ्ग सोहै फेंकत चतुर
सुघर चहुं ओरी ॥
पञ्चवक्त्र तिनेत्र गङ्गाधर चन्द्र ललाट सोहै एक ठोरी।
देखत ब्रह्म प्रसन्न भयो है यह प्रकार हर रूप
धरो री ॥

२३

एरो सखी बन बन होरी खेलिए आयो फाल्गुन मास।
अतर गुलाब कुङ्कुमा केसर ले चल कान्हर पास ॥

वसन भूषण पर शीर्ष फूल धर अङ्ग सुगन्ध सुवास ।
मेरो शिक्षा मान उठ चल हिल मिल पूर ले
फगुवा मनको आस ॥

२४

खेलन लागे फाग मोहन व्रजके पति नन्दके राज
दुलारे ।
चोवा चन्दन अतर अगरजा केसर परत फुहारे ॥
कृष्ण खेलत सब गोपी खेलत खेलत व्रजजन सारे ।
सन्मुख चोट परी राधा पै भर भर रङ्ग पिचकारे ॥

२५

सूधे खेलो होरी अनोखे लाल ।
उत हो रहो न मझो बहियां मोरो टूटो है
मोतिन माल ॥
छिरकनके मिस अङ्ग भरत हो और मूठ लिए
गुलाल ॥
औरसरङ्ग लाज नहीं आवत देखत सारो व्रजबाल ॥

२६

चतुर श्यामसों को खेले ऐसो होरी ।
अबीर उड़ावत रङ्गमें भिजावत और करत बरजोरी ॥
मनमोहन तुम चिर चिरञ्जीवो विनती सबनकी
आनन्द भयो रो ।
कहत रसिक कृपाकर मोपर रख ले लाज अब मोरी ॥

२७

भीज मेरी चुनरी रही है रङ्ग होरी खेलत आप
बना मोरे सङ्ग ।
आवज डफ बाजत झनकारन और बजत है
ताल मृदङ्ग ॥
केसरकी पिचकारी रङ्ग भर भर मारत है अङ्ग ।
अबीर गुलाल घुमड रहे बादर उमंग वर्षत है रङ्ग ॥

२८

सोमा नागर नन्द दा सांवलड़ा होरियां साड़े
खेलन आंवदा है ।
गावदा बजांवदा मेडे मन भांवदा वंशीदी तान
सुनावदानो जांवदा है ॥
केसर दी पिचकारियां चलांवदा साड़ी सारी
सुरङ्ग भिजांवदा है ।
रसिक कृष्णदीकी गल आंखां माड़े दिल नू
ललचांवदा है ॥

परज—कलिङ्ग

अरे छैला कहा लेगा मोसे लरके ।
कुछ दूंगी न लूंगी न कहूंगी न सुनूंगी मुखसे
अबीर गुलाल मलूंगी पकरके ॥
जानत हूं नन्दको नटखट शिर मोर मुकुट तेरे
कर में लकुट ओढ रह्यो पीत पट मत खोल घूंघट
तेरे मनमें कपटको लटक परे हट सट सब जागा
काई अब लरके ।
किन शिखलायो भुलायो बहकायो मोह लगायो
बिहायो ना सरके ॥
छाड़त नाहीं लङ्गर लङ्गराई करत ढिठाई औ
लराई धूम मचाई ते कुंवर कन्हाई विष्णुदास
अपनो पराई
तो राम दुहाई सोगन्ध खाई सांची सुनाई छाड़ोंगो
नाकर लरके ।
तरके भरके गुलचा जरके मैं अपनो कर के ॥

२

पनिया भरन हूं न पाई होरी कान्ह मचाई ।
जे जे गई ते रङ्ग में भिनई हों दई दई कर आई ॥

३

फाल्गुनको दिन आयो री ।
कौन सङ्ग खेलों पिय परदेश खबर नहीं लीन्हीं
विरह आन सतायो री ॥

४

गारियां मैंनू दे दे जांदा है ।
नागर नन्दमहर दानो सहयो होरी दा तू छैल
कहांदा है ॥
अबीर गुलाल सबन में डाले पिचकारियां
चलांवदा है ।

बोलियां ठोलियां करदा निहोरियां वलिहारियां
मुसक्यांवदा है ॥

५

होरी खेलन आए कछु खेल न जानो।
उर वनमाल लगी पलको कर अतर सुगन्ध
अङ्ग लपटानो ॥
चन्दन भाल विशाल पीताम्बर जो लग नारी
खेलारि न जानो।
मोहन कीन्ह पयानो तो लगि जाओ चले चुपके
गृह वेगि शिखावन मानो।
जो हठ ठानि रहोगी यहां तो परम रङ्ग यह जानो ॥

६

हां रे लाल मैं तो घेर गई रङ्ग सो देखो मेरो
हाल रे चतुराई लाल मैं।
मोहे अकेली जान लाल मेरो मुख मल लीनो
सोतिया छाड़ गई घर घरको लाल मैं ॥
फगुवा मांगन आई उमंग मो मोहे लगा लीन्हीं अङ्ग।

कलिङ्ग—तिताला

डार दीयो मो पै रङ्ग वरजोरी लङ्गर भर पिचकारी
मुखपर मारी अब न खेलों तोरे सङ्ग।
फाल्गुन में इतराय चले हो कृष्णानन्द उमंग ॥

२

साहवां हो राज म्हां सो अबीर लगावो निर्लज्ज
गावो गारी।
लेके ननद खड़ी अगवाड़े पिछवाड़े दै तारी
वलिहारी बोलत संभारी ॥

३

ना खेलौं मैं बार बार तुम रङ्ग जिन डारो
ऐसी होरी सइयां।
विनय करौं तोरे लागूं पइयां ऐसो होरी खेलो
नाहीं रे सइयां ॥
वरजोरी कुच गहे मेरो मींजत फिर फिर आवत
मोरे ठइयां।
काजम अपनी ओर निभावो देखो सखी तेरो
चेरो गुइयां ॥

४

होरी आई पिया परदेश।
अपने पियाको मैं ढूंढ़न निकसो कर योगिनको वेश ॥

५

रङ्गभीनो होरी खेलत है रङ्गभीनो।
हों जो अचानक गृह तें निकसो औचक कर
गह लीनो ॥
छीनी लाल माल मोतिनकी अबीर माड़ मुख दीनो।
चितवन माह ठगोरी डारो ऐसो श्याम प्रवीनो।
छविनायक वंशी अधरन धर सगरो व्रज वश कीनो ॥

६

एरी गोरे मुख गुलाल कैसे झलके।
मानो शशिमें भौम आनके कीन्हीं वास अचलके ॥
रूप सिन्धु सो उमंग रहो है काल कपोल लसो
अलके।
छविनायक मानो सुधापान हित व्यालबाल
युग ललके ॥

७

होरीके दिननमें गुमान कैसे मान रे गुमान कैसे।
वृन्दावनकी कुञ्जगलिनमें मांगत दधिको
दान मान रे गुमान कैसे ॥

८

सांवलियाने मो पै रङ्ग डालो रे केसरको
पिचकारी रे।
नवल लाल उड़ावै गुलाल मेरी सारो भिजोई
सारो रे ॥

कलिङ्ग—परज

माई री ऋतु फागको आई।
जबसे गए मोरी सुध हू न लीन्हीं किन सौतन
बिलम्बाई ॥
जागत जागत नींद न आवत दागत है विरह
दुःखदाई।

छविनायक कैसे मन समझाऊं वीती अवधि पत्री
न पठाई ॥

२

नयन री वरजोरी न माने।
उरंगी रहत रैन दिन सजनी देखत ही घनश्याम
लुभाने ॥
छूटी लाज सकुच गुरुजनकी घर सुजन दुर्जन
सब जाने।
छविनायक वे अपने गरज़के सुन सुन लोग देत
मोहे ताने ॥

२

भयो री नयो होरीको खिलैया।
हमरो रङ्ग हम ही पर डारत आंखिन अबीर
भरे मोरी ग्वैया ॥
तनकी पीर तनक नहीं जानत नहीं मानत काहूकी
दुहैया।
छविनायक कोऊ कह न सके कुछ वे यशोदा जीके
कुंवर कन्हैया ॥

४

व्रजकी गैलनमें हो हो होरी गावत।
मिल दश-बीश जहां तहां ठाड़े यमुना जान न पावत।
व्रज पनघट घाट कन्हैया रोकत ग्वाल बालको गावत ॥

परज—धमार

पर वश आन परी वो इन गलियनमें तिहारे
कौन खेल वनवारी।
भीज गई अङ्गिया रङ्गमें क्यों निधरक दे दे गारी ॥
जो तुम्हरो गुलाल सांवरो उधर परेगो प्रीति हमारी।
अबके घरे वलिहारी जान दे हा हा कर हों हारी ॥

परज—कलिङ्ग

पिया न गहो पग पायलया घुंघरू बजनू।
जागत है देवरनिया जेठनिया सास ननद अपनू ॥
भोर भए सुनके हंसि है पिय लाज नहीं तुजनू।
वाञ्छन यार कनक पुरियनकी विछुवन झनक घनू।
जो रस चाहो रहो पिय हा हा आवन दे रजनू ॥

२

सुन्दर श्याम सलोना सखी वाको बात बातमें टोना।
सुन्दर श्याम कहो नहीं माने बातनको परचो ना ॥

३

तुम्हरो पगरिया हमरो चुनरिया एक हो
रङ्ग पिया बोर रे।
तब जानोगी चतुर खिलैया ऐसो रङ्गे मोय रे।
उघरन चोप खेलौं फाग वजहन द्विविधा भ्रम
सब खोय रे ॥

४

अपने ही रङ्गमें चटक चुनरिया मो छके
पिया रङ्ग दे रे।
ऋतु फाल्गुन की उमंग यौवनको विरह सतावे
मोहे रे ॥
व्याकुल होके मन्दिर सो निकसी लोकलाज
सब खोये रे।
लाग लगी तो लगी रहे वजहन होनी होय
सो होये रे ॥

५

केह विधि होरी खेलौं पिया सात।
अबीर गुलाल रङ्ग पिचकारी याहो तें मेरो जिय
सकुचात।
हों मूर्ख सइयां चतुर सुघर है वजहन लाज
हरिजीके हात ॥

६

हां जो म्हारो मनड़ो थां लियो छे जो काई ले घर
जावां जो।
नन्दजीरा प्यारा थे कान्ह छवीला अरज करां
छां जो फेर वावां जी ॥
थानो बात रहे सोई कीजे थाने कांई कहि
समझावां जी।
वैर परी छे वलिहारी ननदल क्यों कर प्रीत
दुरावां जी ॥

७

ए छैल खेलार लङ्गर मोहे गारी न गावै।
केसरि रङ्ग भरी पिचकारिन ढीठ बजावत तक तक
मोहे चलावै॥
भुज भर लेत दौर आगे ते काहुकी लाज
सकुच न आवै।
हौं वलिहारी चलौं कैसे मग या गोकुलमें रसिया
कान्ह कहावै॥

खम्बावती—परज

रङ्गभीने कुञ्जनमें खेलत हैं दोऊ होरी।
नन्दनन्दन मनमोहन नागर श्रीवृषभानु किशोरी॥
अबीर गुलाल उड़ावत सखियां कोई सांवली
कोई गोरी।
रसिक खुशाल विलोकत शोभा पिय प्यारीको जोरी॥

२

होरी खेलें कुञ्जनमें रङ्ग रङ्गीले लाल।
अबीर गुलाल उड़ावत गावत सङ्ग लिए ब्रजबाल।
ख्याल खुशाल करत कुञ्जनमें गावें होरी दै ताल॥

३

कैसे हो निपट खेलार री बीर देत रङ्ग सारी
हमारी।
नन्दरायके लाल लाड़ले रसिया कुञ्जविहारी॥
वारी वयश चञ्चल बहुत तन श्रीगोवर्द्धनधारी।
नेक न मानत वरजोरी ठानत ख्याल खुशाल खेलारी॥

४

खेलूंगी फाग कुञ्जनमें पिया सङ्ग यही बात
मन भावै री।
रङ्गूंगी केसर रङ्ग यशोदा लालको उर हो उमंग
उमंगावै री॥
अबीर गुलाल कपोल लगाऊं याही विचार
मन आवै री।
करिए ख्याल खुशाल श्यामसङ्ग रुचि हिय
मैन बढ़ावै री॥

५

शोभा कुञ्ज पुञ्ज अति छाई।
ऋतु वसन्त फूली फुलवारी मधुकर गुञ्ज मचाई॥
यमुना तीर सुहावन भावन विहरत तहां यदुराई।
सङ्ग ब्रजबाल रूपकी सीमा मोहनी रही प्रगटाई॥
बोलत पच्छी द्रुम द्रुम ऊपर सुगन्ध पवन महकाई।
निरखत रसिक खुशाल कृष्णमुख नखशिख
सुन्दरताई॥

६

नयन काहे न संभारो जूरकशो अङ्गिया कुचन
पर सोहै बन्द गले अधिकावे री।
मैं बौरी मेरो पिय बहुरङ्गी काहे को रार बढ़ावे री॥

७

मेरो कृष्ण कन्हैया ढूंढ़ फिरी नहीं पायो री।
अबीर गुलालको वादर छाया रङ्गको मेह वर्षायो री।
कृष्णानन्द विसूरत निशदिन मदनमोहन
विसरायो री॥

८

सांवरे सो मैं खेलूंगी होरी।
निकसी थी मैं अपने मन्दिर सो सास ननदको चोरी॥
ना जानो के बीच नगरमें ढीठ खेलार खरो री।
करेगो एती झकझोरी॥
छीन लियो मोसे रङ्ग पिचकारी अबीर
गुलालकी झोरी।
बहियां पकरके ऐसो झटकी कमर लचक गई
मोरी कहां अब नेह रहो री॥
सुनो री सखी पति सब को है प्यारो कहा भयो
ब्रजमें बसो री।
कान न सुन्यो कहीं आंख न देख्यो होरी मित
वरजोरी भला तुम सांची कहो री॥
जिधर जात उधर याही गति यह ढङ्ग शिखो री।
कौने यत्न समुझावे वजहन ऐसो मयमें छको री
कहो नहीं मानत गोरी॥

९

सांवरे मोहि रङ्गमें बोरो ।
जात हती मैं तो पनघटको सखी बाटमें मिल गयो
किशोरी ॥
हा हा करत रही पइयां परत रही
एक न मानी मोरी ।
देखो तो एती बरजोरी ॥
तन रङ्गो मन रङ्ग गयो है सगरो विरह
अधिक भयो री ।
छूट गयो डर सास ननदको अब काहेको चोरी
चलो बजहन अब खेलिए होरी ॥

१०

रङ्ग डारो सांवरे मोहि आज सांवरे चितवन हो
रङ्ग डारो रे ।
ना मोसे कबहूंको प्रोति रीति सखी नाम सुनो
बनवारी रे ॥
व्रजको भलो कोऊ कैसेके निकसे जहा बसे
ऐसो खेलारो रे ।
भूल गयी सब सुधबुध बजहन छवि देखत
वाको न्यारो रे ॥

सोरठ—परज

निपट भयो मतवारो रे ।
जबतें पियाने फाग रच्यो है प्रेमको मद्य नित्य
आपो पीवत ललचत जियरो हमारो रे ॥
आनो रे नोचढ़िके मोहन मोहन दई को
संवारो रे ।
जाको आप चाहत है बजहन तन मन सब रङ्ग
डारो रे ॥

परज—तिताला

आज कान्ह सखी खेलत होरी ।
प्रेमको हाथ लिए पिचकारी फेंटमें अबीर
गुलालकी झोरी ॥
छवि देखत सकुचत है जियरा जानि परत जैसे
मद्यमें छको री ।
ऐड़ी एड़ा आवत है बजहन पति राखे भगवान
अब मोरी ॥

२

मैं तो उलटा उरहना ल्याई री ।
हों जो जात रही बछरा दुहावन बछराने उझट
चलाई री ॥
सास कहे मेरो नवल बहुरिया अङ्गिया कहां
मसकाई री ।
सासुजोके बेटवा ननदजीके भैया जिन मोरी मति
बौराई री ॥

३

वृन्दावनको कुञ्जगलिनमें मोहन खेलत होरी हो ।
इत आए मोहन उत आई राधा ख्याल रच्यो
अति भोरी हो ॥
सब सखियां मिल रङ्ग बनायो केसर कुङ्कुम
घोरी हो ।
लाल गुलाल लाड़ली डाले मोहन मले मुख रोरी हो ॥
भर से बदन भए मनमोहन सब हो हंसे दे तारो हो ।
बाजत ताल मृदङ्ग मुरलिया गावत दे दे गारो हो ॥
भर पिचकारी मुखपर मारो भोज गई तन सारो हो ।
उड़त अबीर अरुण भए अम्बर शोभा बढ़ो है
अपारो हो ॥
महल चढ़े यशोमतीजो जोवे खेलत व्रजके
मंझारो हो ।
मोहन पकरके फगुवा लेहों छोड़ावेंगी महतारी हो
सूरदास मनभावतो फगुवा दोन्हीं कुञ्जविहारी हो ॥

४

लागो लगनिया को छुड़ावे कोऊ लाख कहो
जिय एको न मावे ।
घूंघट खोल मिलो क्यों न पिय सो लाज गई जब
जिय तरसावे ॥
और बन फूले फूल फुलवारी हमरे फूल मन जिय
अकुलावे ।

प्यारे गोपालकी आंखन सों उरझो अंखियां को
सुरझावै ॥

५

केसेके देखन पाऊं देरन हो ननदुल जागै।
जान देत नहीं निपट चवायन नित उठ बोलन दागै॥
मेरे द्वारे मधुर डफ बाजे सुन सुन मन अनुरागै।
हरिदयाल पुरुषोत्तम प्यारो निरख निमिष न लागै॥

६

सब रसभीनो गात राधा गोरी खेलै होरी।
एक ओर राधिजू ठाढ़ी एक ओर नन्दकिशोरी॥

७

आज लाल रङ्गभीने सखी तेरे बांके नैना।
खञ्जन ढलक कपोलन लागी अङ्गिया मसक गई
सुख सैना॥
सुध न रही कछु अङ्ग बचावत जागी कहां तुम
सारी रैना।
डगमग चाल चलत मारगमें स्थिर न रहत जीव
तेरो चैना॥
अब यह बात काहू मत कहियो कर जोर तेरे
मैं लागूं पैना।
गावै गूदर हंस बाली सखी वह घर जाय देख
रेख सुख ऐना॥

८

अपनें यौवन मदमाती सखी तेरो यौवन फीको।
जिन नहीं खेल्यो अपने सइयां सङ्ग सो जीवन
जगमें नहीं नीको॥
ता को कौन सुहाग बखानो कर गुमान रही जीको।
आपन रुचि और नहीं भावत मञ्जन संयम कियो
अधीको॥
चाल सोई जो चले सब कोई जो भावै जिय पीको।
मान किये कहो किन सुख पाया सुरनर मुनि सब
देख महीको।
गावै गूदर जगमगत पियारी अरधङ्गी छोड़्यो सीको॥

९

व्रज में खेलन मत जा रे तो को कोऊ रङ्ग डार
दै है।
ग्वाल सखा सब मदके माते देखत ही चहुं
दिश ह्वै धै है॥
एक एक अङ्ग सों पिचकारी तुम्हरे शीर्ष विसै है।
व्रजवासी विश्वासी है सब मार्ग में भूमि विलसै है॥
बोचे तुम हो जावोगी बौरी गोकुल जानि न पै है।
कहा मान तुम नवल वहुरिया नाहीं तो पाछे
पछतै है।
गाव गूदर मेरी नेह सांवरो काहेको लाज लजै है॥

१०

ना खेलूं ऐसी होरी सइयां ना खेलूं ऐसी होरी।
अबीर गुलाल लगाय कुचनमें छतियां छुवन
चाहै मोरी।
वरज रही वरज्यो नहीं मानै मुखमोड़न को रोरी॥

११

गोरी तेरो आज हाल और ही और वा ने रङ्ग
तो पर और ही छिरको।
तू जो गई कुञ्जन में छिनरिया तो आवत ही
देखत फिर फिर को॥
वसन भूषण तेरे कहूं के कहूं जैसे कोऊ
निकसत है घिरको।
कहा कहूं तोसे सुन मेरी अचपल मोहे ता सोहै
तेरे सिरको॥

परज—कलिङ्ग

होरी अब न खेलो मोरा सइयां बालम परदेश।
अपने सइयां को मैं ढूढ़न निकसी कर
योगन को वेश॥

२

ऊधो रे अरे मोरा बाला सङ्गाती यार ओ रे मेरा
जनम सङ्गाती यार।
हा हा करत हूं पइयां परत हूं कर ले अब सुख प्यार।
कृष्ण रसिक मनमोहन प्यारो काहे डारो विसार॥

काफ़ी—यत्

राघवजी खेलत होरी।
इत रघुनाथ साथ अनुजन लिए उत मिथिलेश
किशोरी॥
केशर कीच मची चिति ऊपर रङ्ग वर्षत चहुं ओरी।
चलो सखी देखन शोरी॥
सुख माड़ो पिय जनकनन्दिनी चन्दन वन्दन रोरी।
वन्दन करत सकल जनवन्दन केशर भाल लगी री
करी सब सुधबुध भोरी॥
फगुवा दियो सबै मन भायो ठाढ़े युगल कर जोरी।
रीझ खीझ हग लालके आंज्यो लियो पीताम्बर
छोरी हंसी सब सखी मुख मोरी॥
सीतारामको ध्यान वसत हृदि गौरश्याम रङ्ग जोरी।
रामदास वलि वलि दम्पति छवि निरखि वदन
त्रण तोरी द्रगन तें पल न टरी री॥

२

राधा नागरी नन्दकुमार कदम तले खेलत होरी।
विपरीति रीति सुधारि श्याम को बनाए गोरी॥
लहंगा लाल बनाय ज़री को सुआ रङ्गको सारी।
कञ्चुकी कलित कनक कटि किङ्किणी अलता
पग ही सुधारी अङ्गुरी बिच बिछिया डारी॥
चन्द्रहार उर मणिगण राजत मोतियन मांग संवारी।
कानन बाली नासिका वेसर रम्भा रूप बना री
पीठ पर वेणी सुधारी॥
कर चूरी भुजा नीके बाजूबन्द रूप अनूठो नारी।
बेंदी ललित चलत गजगमनी मोहिनी सब पै डारी
निरख मन सारद हारी॥
ताल तम्बूर लिए कर गोपी नाचत कुञ्जविहारी।
ता ता थेई थेई होत परस्पर टेरत मुरली
प्यारी लच्छण छवि आनन्दकारी॥

३

गारी जिन दे रे कान्हा लाजकी मारी।
तुम तो ढाटा नन्दमहरके हम ब्रजकी हैं नारी॥
सुन्दर श्याम जान दे मोहन मत मारो पिचकारी।
लपट झपटके चीर खैंचत हो गावत दे दे तारी।
कृष्णानन्द बढ़्यो गोकुल में मैं तेरे बलिहारी॥

४

सखी ए री मैं कौन तरहसे डोलूं मेरे मोहनने
धूम मचाई।
मग मग रोकत टोकत मोहन कैसे के घनिया जाई॥
गैल चलन नहीं पावत नारी पिचकारिन रङ्ग चलाई।
काहूं सो लपट और झपट काहूं सो काहूको
घर मसकाई।
कृष्णानन्द आनन्द में डोलत फगुवा लेत मनभाई॥

५

मङ्गल दाहनी होरी खेलत राम नरेश।
उड़त गुलाल लाल भए बादर वर्षत सुमन सुरेश॥
रामके हाथ कनक पिचकारी लच्छमण भर भर देत।
राम कीना वैकुण्ठ लाड़िले हो हरि हरत कलेश॥

६

अलवेल डा वे मोहना मैंड़ा होली खेलन आयानी।
अबीर उड़ावदा गारी गांवदा ताल मृदङ्ग बजायानी॥
वैड़े असाड़े आंवदानी नन्द दे होरी राग जमायानी।
कृष्णानन्द गबरू महर दे पिचकारियां रङ्ग चलायानी॥

७

उनसे कोई कहियो जा री।
मनमोहन व्रजराज कुंवर सो अरज हमारी॥
यह चर्चा छ्वै रही है व्रजमें कह गए सुघर खिलारी।
सब सखियां मिल फागु खेलें मोरे नयन भर
पिचकारी पिया छाड़त हौं ठारी॥
अपने अपने कन्त सङ्ग खेलत हमरी सुरति बिसारी।
गोपी ग्वाल सबे होरी खेलत मैं सांवरे को पुकारी
भोर भई है मो पै भारी॥
वन वन ढूंठ फिरी मैं सजनी पिय पिय कर मैं हारी।
अबकी बार मोहि दर्श देखावो मैं तेरे बलिहारी
कहां है वह वनवारी॥

आप तो जाय कुब्जा रङ्ग राते हम भई अति
दुखियारो।
विरहने मो को फूंकि दियो है झरन लगो
चिनगारी आनके बुझावो विहारी ॥
अबीर गुलाल औ गेंद कुङ्कुमा रङ्गको परत फुहारी,
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ आशक् हौं तेरे बारो
तकत नित्य आशा तिहारी ॥

८

मोहे मिल गयो कुंवर कन्हैया जात हतो
यमुनाके निकट।
वे आवत हौं जात हती उत बीच ही भेंट भई
नेक चिते तिरछो चतवन सो गति मति मोह लई
जबतें परी चित्त में चटपट ॥
विधि वश नीर भरनकों सजनी आज हो आप गई
सोहत सुहाग फाग अनुरागी ग्वारन घेर लई
आय गए कित तें झटपट।
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल अलक कपोलन छई
नाक बुलाक अधर धर मुरली गावत तान नई
बोरी भई सुनके लटपट ॥
चैन न परत रैन दिन जबतें नयनन नींद गई
पञ्चबाण शर तान हिये को छेदत हाय दई
या तें बन निकरत सटपट।
मैं पूछत तुम सो डर उपजो अब हो पीर नई
जौन उपाय मिले सोई कीजे श्यामा श्याम मई
जातें मिटे मनको खटपट ॥

९

मतवारे नयन कामिनी वश करो री।
खञ्जन नयन महामृग लोचन कञ्चन रूप धरो री ॥
केहरि कटि कदलो सो जङ्घा नासिका शुक हरो री।
चन्द्रवदनी गजगमनी प्यारी ॥
सब को मन जो हरि ग्रीवा कपोत श्रीफल
सो छाती देखत वश जो भयो री।
कृष्णानन्द चपला सी चमकत वारो मदन करोरी ॥

१०

तोरे अङ्ग में रङ्ग भरो री सांवरे कैसे खेलोंगो
मैं होरी।
अधरन अञ्जन भाल महावर नयन तंबोल लगो री ॥
धरणी धरत पग डगमग आवत रैनके चैन कहो री।
हम सो अवधि बदो होरो खेलन को अनत हो
रङ्ग रङ्गो री।
कृष्णानन्द प्रभु सांची कहो तुम कौन तिया
सो पगो री ॥

११

कुब्जाको छवि सुन्दर कोन्हीं हम सो करत बरजोरो।
लाजको चूनर ना भिजोऊंगी सास ननदकी चोरो ॥

१२

तुम काहेको देत हो गारी तुम नोके बोलो।
कौन तियासे रङ्गे मनमोहन मनको घुंडो खोलो ॥
और सखिन सों रसको बतियां हम सो पतियां बोलो।
कृष्णानन्द रङ्गे रङ्ग अनत हो घट घट बतियां छोलो ॥

परज—धमार

मेरो घूंघट छाड़ छैल अब मैं बहुत सही।
बाट घाट मो है रोकत टोकत मानो मेरो कहो ॥
अब जिन छुवो चूनर मोरो जो कछु भई सो भई।
कहा मानो व्रजराज लाड़ले मैं जो आई नई ॥

२

यौवन मदमातो डोले फाल्गुनके दिन जान।
रङ्गभीनो निशा जागो पीतम सङ्ग कपोल लगाए
लालो पान ॥

३

चलो जा री नारि गंवार भला तोसे को बोले।
सखिन सङ्ग मिल होरो खेले व्रजकुञ्जनमें डोले ॥
ऐसी अनोखी कहांसे आई तनक न घुंघट खोले।
कृष्णरसिक सो ऐंड़ी फिरत है गढ़ गढ़ बतियां छोले॥

मुलतानी—धमार

अब रङ्ग दे मोरो चुनरिया।
अपने री अपने बगर से निकसो कोई सांवरो
कोई गोरिया ॥

दुलहन बन आई मेरे गृह शुभ दिन बाजत
नौबत सुघरिया।
सकल सभा में धूम मची है कृष्णरसिक रिझवरिया॥

काफ़ी—धमार

चलो होरी खेलिए रङ्ग रचाय श्याम सो ब्रजमें
धूम मचाय।
काल्ह ए री कछु कहि न सकी मैं आज लेहुं यह दाय॥
श्याम भिजोऊं बहियां पकरके लेऊं कुञ्जमें नचाय।
कृष्णरसिक सो फगुवा लूंगी मन इच्छा फल पाय॥

काफ़ी—यत्

श्यामसुन्दर उरपार री तेरे नयन सलोने।
मुर मुर बैठत काहे सखी री कर कर टेढ़ो भौंह री॥
चितवत चपल चतुर गति सो बल ग्रमै मर्याद
न को है।
मौज सरोज भरे हर हा वलि कौन हिये तरसो है॥

२

तेरे नयन सलोने मनमोहन रिझवार री।
बांकी भौंह कटाच्छन हेरत कोरनमें सुख प्यार री।
कृष्णरसिक उर मैन बढ़ावत सो तू नेह संभार री॥

३

तुम भए हो अनोखे खेलारी।
तुम समझ चलावो पिचकारी॥
भर पिचकारी मोरे मुखपर मारी भीज गई तनसारी।
झीनो पट झीनो है अङ्गिया गिरो जात हो
लाज की मारी।
रसिक कृष्ण मानो मेरी बतियां हा हा कर मैं हारी॥

झंझौटी—यत्

इन श्याम कन्हैया ने रङ्ग मो पे डार दियो री।
लपट झपट के मटकी पटकी उघारो घूंघट हियो री॥

पीलू—यत्

रङ्ग होरी रे मचाई रङ्ग होरी रे।
वन प्रमोद में आय अचानक बांह गहत बरजोरी रे॥
रामसीता रङ्ग होरी खेले सखासखी चहुं ओरी रे।
राम सखा फाल्गुनके मिस में करत फिरत
रस चोरी रे॥

गारा—यत्

माई री मोसे आ लिपटो री।
हौं दधि बेचन जात अचानक ता में आन धरो री॥
इत उत देखत लोग लुगाई मटकी घटक अरो री।
गुरुजन पुरजन सब हो देखे सबे मुसक्यात खरो री॥
हा हा करत रही मैं वासो वो मोसे उरझ परो री।
अबीर गुलाल मलो कुच मुखपर और कछु घात
चलो री॥
छीन लई बनमाल मुरलिया सुधबुध सब बिसरो री।
देत दुहाई नन्द बबाकी मोहन करत ठठोरी।
कृष्णरसिक गह लीन्हीं मोहे एरी सखी दौर परो री॥

सिन्धु—यत्

ए री मैं कैसे खेलूंगी फाग लाल सो अबीर
गुलाल उड़ाय उड़ाय।
वे आवत सब ही हिलमिल कर तारी दे दे गाय गाय॥
ऐसो नटखट ढीठ छोहरा किन दीन्हीं सिख
लाय लाय।
मारत डारत ले पिचकारी केसर रङ्ग भराय भराय॥

२

छैल छलबल कर धाय गही मोरी बहियां यह
रसवादी गांव।
गावत गारी नारी नर पिय सङ्ग ले ले मेरे नांव॥
जाके डर घरसे मोरी सजनी बाहर धरत न पांव।
नर नरेन्द्र मुख सुघर सो डरिये करि है याको दांव॥

काफ़ी—यत्

सखी री सठ चल हिलमिल मोहन सो
तुम काहे रिसानी जात।
सौत घात में बात न मानो तू इतरात उत रात जात॥

२

काहे गोरिया दहलकी चुनरिया काहे गोरिया
महलकी चुनरिया।

यमुनाके तीरे कदमकी छइयां सांवरे ने झटको
मोरी चुनरिया ॥

३

सङ्करवा मुकर जात मोरे सइयां ने पठई बुलाय।
सुनियो री मोरी रैन परोसिन मोरे बूते रहलो
न जाय ॥

४

मैंरो मोहन लागो हो डोरे कालो कामरवालो हो
सांवरो।
अब हौं के ते दिन फाल्गुन के हैं यह अब हौं ते
भयो बावरो ॥
कबहुं लपट और झपत बहियां नन्द महर को
डावरो।
राते माते फिरत मोहु सो जैसे फूलको भांवरो ॥
लाजको बातें कहा कहूं तो से यशोदा पायं कुवं
रावरो।
हौं वरजत मानत न नेक हूं करत अटपटो दावरो।
तबसे लगी वसन्त पञ्चमी कृष्ण रसिक भयो चावरो।

५

लोग कहें कहीं और हैं सइयां सइयां हमारे
हमारे ठइयां।
बाट चलूं तो साथ मोरे सइयां बैठ रहूं ढिग
बैठत सइयां ॥
बात कहूं हंस बोलत सइयां ऐसे सइयांके मैं
बल वल गइयां।
सइयांको डर है सब गुइयां देखमसी उला
बावर हुइयां।
ग्रीषं निवायके देखूं तो सइयां सइयां डाल रहे
गल बहियां ॥

६

क्या मुख ले घर जाऊं पिया मोसे रूस रहा री।
श्याम पियारे मैं चेरो तिहारो हों विरहन
वलिहार विहारो।
कर्म करो तो पिया मिला दे विनती सइयांको
कर मैं हारो ॥

७

लिये रङ्ग रहियां भीज मेरी चुनरी होरी खेलूं
मे आप बना सङ्ग।
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ अबीर गुलाल
छाए बदरा उमङ्ग ॥

८

मोरो अङ्गिया पर रङ्ग डारो रे होरोके खेलैया।
केसरको पिचकारो भर लावत अबीर लिए
भर झोरी रे होरोके खेलैया ॥

९

याको कौन भांत समझाऊं सखो मनमोहन
मानत नाहीं।
लाज न करत डरत न काहु सो गह पकरत
मोरो बांहो ॥
गड़ी जात हूं लाज कोई घरको मोरो यह सुन पाई।
याको कहा बिगरे जा अरो यह लाख गारो
हम पाई ॥

१०

तेरो बारो कान्ह मो सो फगुवा मांगन आयो री।
वृन्दावनको कुञ्जगलिनमें अबीर गुलाल उड़ायो री ॥

झंझौटी—यत्

ए री कैसे मनमोहन पिय होरी खेलन आए
बैठो है राधा प्यारो।
अबीर गुलाल लाल सब रङ्ग लिए केसरको
पिचकारो ॥
रङ्गसो भिजोई श्यामसुन्दर को भीगिगो पाग
औ तनसारो।
उत ते आये ग्वार परस्पर इत ते व्रजको नारो।
कृष्णानन्द आनन्द में खेलत फगुवा लेहों गिरिधारो ॥

काफी—यत्

बहियां मरोरो रङ्ग डारो सांवरे औचक भेंट भई।
रङ्ग पिया मोपै डार दियो री रङ्ग भर भेंट भई ॥

२

ए री मोहे मोरे बालम रङ्ग डारी।
सरस रङ्ग पिया अबीर उड़ावत बहियां पकर
मुख मल डारी॥

श्रीगुसाईं गोकुलनाथजीकी होरी।

चैती-गौड़ी—धमार

होरी खेलन हों गई जहां यमुना पुलिन सघन
द्रुम छाय।
लङ्गर ढीठ छैल नन्दजूको खेल करे यह विधिके भाय॥
कुञ्जनतें दुरकि मुरकि आवत औचक छतियां
लेत लगाय।
जो जानत ऐसो वरजोरी बैठ रहत अपने घर माय॥
अब तो आन परी या मगमें परवश भई करो
मनभाय।
सरस रङ्गरस रसिक भिजोई ले गुलाल कपोल
लगाय॥

कलिङ्ग—यत्

रङ्ग गुलाल भरी पिचकारी फाल्गुन मास
करोंगो होरी।
इत सखियनके झुण्ड लिए उत सखासङ्ग बल
मोहन जोरी॥
गहिरो खेल मच्यो अति व्रजमें गह्वर कुञ्ज
सांकरी खोरी।
मोहन पकर नचावत सजनी सरस रङ्ग रस
लूटत गोरी॥

सरपरदा—यत्

और सो रङ्ग करों न करों मैं तो सांवरे रङ्ग सो
रङ्ग करोंगो।
लोकलाज कुल छाड़के सजनी मनमोहन सो
जाय भरोंगो॥
फाल्गुनके दिन मदको माती होरी खेल मैं आय
डरोंगो।
सरस रङ्गको मनभायो मन मतङ्ग मन पीर हरोंगो॥

दीपचन्द्र—यत्

व्रजराज वगरमें खेलें रस होरी।
नन्द कुंवर बलवीर धीर सङ्ग सखा लिए सब जोरी॥
खेल मच्यो अति गहरो सखी री आप करे वरजोरी।
उत गोपिनके झुण्ड मनोहर ता में श्रीराधा गोरी॥
इत उत धूम मचो अति भारी देख हगन चितचोरी
रङ्ग गुलाल अबीर कुङ्कुमा बाज रही घनघोरी।
नृत्य भेद गति सब नाचत है सरस रङ्ग रसबोरी॥

बिलावल—चौताला

आली तू जो जात मधुवनको गलियन उत व्रजराज
कुंवर खेले होरी।
गुलाल अबीर रङ्ग कुङ्कुमा भाजन भरे
भरी है झोरी॥
सङ्ग व्रजबाल ग्वाल अरु बालक करत कोलाहल
अतिशय भोरी।
यह खेले क्यों सह्यो सके जिय गोकुलेश प्रिय
रसिक किशोरी॥

काफी—यत्

आली मोहन खेलत फाग सखिन सङ्ग रङ्गभीनो।
जियरा आकुल होय देखे बिना चित्त लाग रह्यो
है नवीनो॥
ऐसो टेर दई कहा कीन्हीं वंशी बजाय मेरो
मन हर लीनो।
मानत नाहीं जियरा मेरो री तन मन प्राण
मोहन हर लीनो॥
मिल बालन सङ्ग खेलत प्यारो पहरे पञ्चरङ्ग
चीर जो झीनो।
गोकुलेश होरी खेले गोकुलमें कालिन्दीके
तीर प्रवीनो॥

लङ्कर—यत्

अहो यह मार्ग नित्य आवै कोऊ बाट चलन
नहीं पावे।
मार्ग रोकत बात बनावत बातन सुख उपजावे॥

बातन अम्बर खैंच लेत कर कुच सो कर लपटावै ।
गोकुलेश होरी रङ्ग विलसत सखिजन पाछे धावै ॥

काफी—यत

बरजोरी खेल को वो नागरी प्यारी रसिक रसीली ।
मोसी करे है आली कठि नहि लगको लागरी
वह निपट अरीली ॥
शीर्ष मुकुट कटि काछनी पहिरे सङ्ग क्रीड़त वाके
भाग री उपरना रङ्गीली ।
गोकुलेश होरी रङ्ग विलसत सङ्ग लिए सब नागरी
पट पहरे नीली ॥

२

होरी खेलत मोहे सुध न रही तनमन हर लीन्हीं
मेरी कंवर कन्हाई ।
रङ्ग रह्यो सब ब्रजकी डगरमें ध्वनिको घोर सुन
गहती आई ॥
आलिङ्गन चुम्बन मोहे कीन्हीं भुजा भर भेंट लई
उरमाई ।
सरस रङ्ग कियो बहु विधि सो सो वरणी नहीं
जाई माई ॥

अथ श्रीगुसाईं श्रीवल्लभजीकृत होरी ।

परज—यत

मो सङ्ग खेलोगी होरी तब जानों खेलारी ।
मोहे अकेली न जानो सांवरे छीन लेहों पिचकारी ॥
नन्दमहरके कुंवर कान्ह तुम हौं वृषभानु दुलारी ।
परस परस दोऊ खेलन लागे श्रीवल्लभ वलिहारी ॥

सोरठ—यत

तू तरुणी सुन्दर मनमोहन काहे मुखहुं न बोले री ।
काहे मान कियो तें प्यारी क्यों अब छतियां छोले री ॥
विरह व्यथा काहे न बतावे सांचे क्यों नहीं खोले री ।
पाय परी मिलि प्रिय वल्लभ सो प्रेम रङ्ग क्यों न
घोले री ॥

बहार—तिताला

आई बहार हौं सब गुणीजन मिल गाय सुनाई ।
अम्बवा टेसू फूल रहे हैं गुल गुलाब चटकाई ॥
वसन्त हाथ लिए व्रजसुन्दरी नवसत सजि
जुरि आई ।
प्यारी वदनकमल छवि निरखत श्रीवल्लभ मन भाई ॥

काफी—सारङ्ग

सखी मैं तो प्यारे को जान न दोंगी इन मोरी
बहियां मरोरी ।
बरजोरी मैं फगुवा लोंगी मुख मोड़ोंगी रोरी ॥
चोवा चन्दन अगर कुङ्कुमा केसर भरी कमोरी ।
वल्लभ पियको रङ्ग में भरोंगी सङ्ग खेलोंगी होरी ॥

२

डफ बाजत है अलवेलिनके अलवेलिनके नवेलिनके ।
सुघर सुन्दर सहेलिनके गुणरूप भरी गरवेलिनके ।
वल्लभ प्यारो आयो महलमें होरी खेलन
रस केलिनके ॥

३

सखा सङ्ग लिए निकस सांवरो जाय घेरी व्रजनारी रे ।
परस परस सब खेलन लागे बाढ़्यो रङ्ग अपारी रे ॥
सुर विमान चढ़ि शोभा निरखें डारत तनमन
वारी रे ।
अबीर गुलाल रङ्ग में छायो बहुत पिचकारिन
मारी रे ।
रङ्ग मच्यो गलियन गोकुलको वल्लभ नित्य विहारी रे ॥

काफ़ी—गारा

सुन्दर सुघर प्यारी नारी प्यारे सङ्ग खेलत होरी ।
केसर छिरकत अङ्ग प्यारी मुख माड़न देहो री ॥
लई पिचकारी छीन कर प्यारी प्यारे सो वरजोरी ।
प्यारी है चतुर सुजान अङ्ग भर लीन्हीं गोरी ॥
होत परस्पर रङ्ग सखिन मिल गांठ है जोरी ।
गारी गावत ब्रजनारी करत है चित्तकी चोरी ।
वल्लभ भए निहाल निरखि यह अद्भुत जोरी ॥

झंझौटी—तिताला

बोर दई प्यारे मोहे रङ्गमें सुध न रही आली
मेरे अङ्गमें ।

मैं अपने वगरसों निकसो आन गही मोहि
सखियन सङ्गमें ॥
अबीर गुलाल सों मुख मलोंगो केसरि छिरकों
प्यारे तनमें ।
वल्लभ प्रियसों उघरि मिलोंगी यही आशा
प्यारी मेरे मनमें ॥

२

नन्दमहरको सांवरो ए री मोसो होरी खेले आज ।
चोवा चन्दन उड़त कुङ्कुमा बाजे है
बहुविधि साज ॥
मन चाहे सोई करत है कछू न राखे लाज ।
ऐसी धूम मचाई वगरमें और न सूझे काज ॥
राग रङ्ग तानन को वानन निकसि सके नहीं भाज ।
श्रीवल्लभ प्रभु रसिक शिरोमणि या व्रजके सिरताज ॥

काफ़ी—यत्

मैं अपनी उमंग सों खेलों फाग प्यारे सङ्ग
जान न दे री ।
हा हा खाति तोरे पइयां परत हूं फाल्गुनमें
यश ले री ॥
वर्ष दिनको एक विनती सांची तू सुनि मेरो ।
वल्लभ पिया विना अब न रहोंगी मन माने
सोई कहे री ॥

धानी—खेमटा

आवो प्यारे खेलैं इतै होरी रे ।
चोवा चन्दन उड़ावो मन मान्या अबीर गुलाल
लो भर झोरी रे ॥
परस परस छूटत पिचकारी प्यारे मुख माड़त
प्यारी गोरी रे ।
फेंट पकरिके फगुवा मांगत वल्लभ प्रिय सङ्ग
नाचत गोरी रे ॥

सिंदूरा—धमार

प्यारी होरी खेलन चलिये व्रजमें आयो
फाल्गुन मास ।
अपनी उमंगसों मुख माड़ोंगो याही मनमें हुलास ॥
सब सखियन मिलि फगुवा लेहां राधामोहन पास ।
वल्लभ प्रियको अब नाहीं छाड़ों चरण कमलको
आस ॥

२

री मैं तो वा सङ्ग खेलोंगी होरी प्यारी मेरे प्यारे
ने वेग मिलाय ।
मस्त महीना फाल्गुन का रे प्यारेसों कहियो सुनाय ।
अब जिन देर करो तुम वल्लभ प्यारीको कण्ठ लगाय ॥

काफ़ी—धमार

प्यारो आयो खेलन होरी मोसों करत वरजोरी ।
मैं अपने मन्दिरमें सोती आनि अचानक गही री ॥
फाल्गुन मांझ डरो जिन सजनी ऐसो यत्न करो री ।
सखी सब मिल एकठौरी ॥
नयन आंजि याको मुख माड़ो री भूषण वसन हरो री ।
नारीको भेष बनाय नचावो चित्त चाहे सो करो री
फिरि नहीं करि है चोरी ॥
नन्द यशोदा वेग बुलावो हंसो बोलावो गोरी ।
सखा सङ्ग बलदाऊ भैया कहा करि हौ अब झोरी
प्यारेको देखि किशोरी ॥
नगर नगर और वगर वगरके नर नारी सब दोरी ।
अद्भुत फाग रच्यो वृन्दावन वल्लभ प्रियको जोरी
सखी सब गावत होरी ॥

काफ़ी—यत्

सांवरे नहीं जानी मोरी ।
पहले प्रीति करी तुम हमसो करि दीन्हीं
अब थोरी ॥
हम तो दासी तिहारी सांवरे कौन गुण अब तोरी ।
प्यारे तुम का सङ्ग जोरी ॥
नन्द यशोदा बलदाऊ मोरे तुम सोखे चित्त चोरी ।
अब कित भाग जावोगे सांवरे बंधे प्रेमकी डोरी
प्यारे कहो करि हों थोरी ॥
चोवा चन्दन अगर कुङ्कुमा केसरि भरो है कमोरी ।

सारी वल्लिरायके सङ्ग नचाऊं सुख माड़ोंगी
तोरी प्यारिको बनाऊं किशोरी ॥
वृन्दावनमें फागु मचो है सब मिल गावत होरी।
श्रीवल्लभ छवि निरखि मगन भए चिरञ्जीवे
यह जोरी सखी तृण डारत तोरी ॥

२

प्यारी आवो री आज इत होरी खेलन।
तुम सुघर सुनो एक मोरी बात तुम हो मिलाऊं
सुन्दर मोहन ॥
नगर नगर और वगर वगर में मच रहो होरी को
धम डगरमें नगर नारी सब नाचन लागी कित जावो
अब भाज लाज।
अबीर गुलालको उमड़ घुमड़ में नाचत है प्यारी
सखी भुण्डन में ॥

धनाश्री—तिताला

लाग्यो हो आवे मेरे या मोहन।
हों तरुणी कोऊ और न ब्रजमें कोई सखी
समुझावो या मोहन ॥
वे इत निकसे योष द्वार ह्वै हों जरतक लागो
उठ यौवन।
मोहि न दोष देय इन नयनन मैं कज्जर त्याग्यो
इन छोहन ॥
होत चवाव या वगर डगर में सास ननद मानत
नहीं सोहन।
सीधन प्रभुकी अटपटी बतियां अबको फागु कछु
मोहि कोहन ॥

झंझौटी—तिताला

हो मोहन रङ्गन बोर दई।
बरज ननदिया पहरन काढ़ी साड़ी सुरङ्ग नई ॥
गा बलि बावत नार अनोखी ए सीख कौन ठई।
चोवा चन्दन बुक्का वन्दन कुङ्कुम मार दई।
इच्छाराम या गोकुल वसके ऐसी कबहूं न भई ॥

२

जब काहू मिस चढ़ों अटारी मोहन लखि सचपाऊं।
मेरो नाम श्याम सो मिलवत गारी सुनत लजाऊं ॥
लाल अली मुरली में टेरत सुनि सुनि अति
सकुचाऊं।
होनी होय सो होय धैर्य प्रभु हिलमिल रङ्ग
बढ़ाऊं ॥

देवगिरि—धमार

कछु ऐसो मन्त्र पढ़ रङ्ग छिरकत होरीके दिनन
में या मोहन वनवारी।
सकल त्रियनमें कौन सिखायो हों न जानूं ऐसो
कौन है नारी ॥
दौरी मोय जान वृषभानु दुलारी मन हर लीन्हीं
नन्दके दुलारी।
जो मैं जानूं मन रङ्ग वाको सेस गारो दे दे हो
मतवारो बजाय तारी ॥

बिलावल—धमार

हमारी कन्हैया कृष्णमुरारी राधाने वश कीनो।
हो हो होरी होय रहो है ऐसो रङ्ग रसभीनो ॥
ऐसो धूमधाम से खेल रहे होरी वृन्दावनको
कुञ्जनमें।
होंगी गैर देखत वाहू कान खेल रह्यो सगरे भुण्डनमें ॥
राधा जू ढिग गये से सोवत मानु नीलम बीच
कुन्दनमें।
रङ्ग लाल भीजी तरुणीके मिसे समूह सांवरेको
नीको लागत फूल गुञ्जनमें ॥

कनड़ी—तिताला

होरी खेलैया अनोखे लालन जू।
कौन बान व्रजवधुवनको ये मार्ग देत नाहिं
चालन जू ॥

भैरवी—तिताला

होरी खेलनको प्यारी आवो न हमारी गली रे।
केसर रङ्ग उड़ाव्यो मनमान्यो फली गुलाबको
कली रे ॥

अबीर गुलालकी उमड़ घुमड़ में घूंघट ओट चली रे।
प्यारे पियकी प्यारी वल्लभ अङ्ग सो अङ्ग मली रे॥

भैरवी—एकताला

होरीके बावरे हैं जू विहारी।
मुख मोड़ओ सब देखत मेरो लोकलाज तोर डारी॥
नन्दग्राम बरसानेके बीच धूम मचाई भारी।
काहूको डर नेक न मानत व्रजनिधि निडर खिलारी॥

सोरठ-मलार—धमार

पिचकारिन झर लायो सजनी पिया रङ्ग बादर
छाये हो।
चोवा कीच मचाये डफ घोरत घन गरजन लाग्यो
व्रजवासिन मिल गाये हो।
श्रीसहचरी चमक चपला ज्यों श्याम अङ्ग
लिपटाये हो॥

सोरठ—दीपचन्द्र

छैला तू मेरो कह्यो मानत नाहीं परो रे
अनोखे ख्याल।
औरहि दशा भई तेरी सौं मेरी हो नन्दलाल॥
तुम होरीके हरवा भरवा मैं भोरी व्रजबाल।
मार्ग माहि लई नागरिया करिया करि
डारी बेहाल॥

१

पेंड़े पड़ी छे सास।
रसियोने माने निकसन न देत निगोड़ी घर ते
आयो फाल्गुन मास॥
कैसे रहूं होरी खेले विना एक वगरको वास।
इच्छाराम गिरिधर सङ्ग मिल हों कोई करो
उपहास॥

२

नन्दनन्दन गारी दई।
कहो कैसे जात सही नयन लाज नई॥
सुन्दर रूप सलोनो सो अंखियां निरखति नारी नई।
यों बटपार छल्यो मग डोलें छाई है मान मई।
होरी में शृङ्गार गई करि बात भई सो भई॥

अड़ाना—धमार

काल तुम हा हा कर छूटे हो मोहन आज अब हो
वहीर वही ढङ्ग लीने।
हा हा इतने ही से भूल गये हो निपट चतुर प्रवीने॥
हा हा ये होरी तो हौं न बन्दगी सारी गरा हो
सगरे महीने।
ऐसे लङ्गर तुम कबके भये हो अति हो सदा रङ्गभीने॥

जलद—तिताला

हुसन तमाशे का ईजाद ये होरी को खिलवार।
पिचकारी भर दस्त अजब सो शिर फेंटा कजदार॥
वो है प्यारा हसन उजारा काला है दिल दे अन्दार।
नागरिया श्यामा साहबा का है फ़रमां बरदार॥

शाहाना-जलद—तिताला

नन्दरायकी कंवर कन्हाई रोकटोक के नोक करे।
सनमुख आव तो मारी न माने विना सनमुख यों
आन अरे॥
विनती तिय तो हा हा खाती तिय असुवन नयन भरे।
खिरकी न खोलूं झंझरो न झांकूं तो यों फ़ेल
करे न टरै॥
निकट गये ते लिपट जात है दूरते तानन प्राण हरे।
कैसे बचूं छली व्रजनिधि बली अली ये परो गरे॥

काफ़ी-जलद—तिताला

गोरी लटके दी चली यौवन दे बहार।
क़हर कदर कमर नाज़ुकपर सिर सटकारे बार॥
मतवारी अंखियां जो निमानी करे नज़र
बरछी दे घार।
नागर नवल अजब महिरेठी मोहन दी चङ्गीयार॥

सिंदूरा—धमार

आयो फाल्गुन मास री सजनी खेलोंगी उघर
बनाय बनाय।
केसरकी पिचकारी भरोंगी अबीर गुलाल
उड़ाय उड़ाय॥

२

गोरी हो गोकुल ग्राम न बसिये जो लों होरी
फाल्गुन मास।
बाहर जाऊं दुर्जन लोक चवैया घरमें बैरन सास॥
खेलों तो पिया सङ्ग खेलों हिय में अधिक
हुलास।
रहो लाज बलिहार जाओ क्यों न श्याम
मिलनकी आस॥

बरारी काफ़ी—धमार

तू जो न बोले री देन दे वाहे गारी।
है लबारजी भार जगत्‌को तुम हो सुलक्षण
नागरी नारी॥
वाके मनभावे सो ही गावे तुम कहा करि हो
लाजकी मारी।
या होरी में कौन बिगोई कृष्णजीव
लक्ष्मीराम जच्छारी॥

काफ़ी-जलद—तिताला

मनमोहन रिझवार री तेरे नयन सलोने।
तू अलबेली आन ग्रामकी अब ही आई गोने॥
अबकी होरी तेरे वगरमें केतिक केतिक होने।
सन्त सखी या गोकुल वसके नयन निभायो कोने॥

२

झटक्यो मेरो चीर मुरारी।
गागर रङ्ग ओर्षते झटको बेसर सुर गई सारी॥
छुटी अलक कुण्डल ते उरझो झड़ गई कोर किनारी।
मनमोहन रसिक नागर भए हो अनोखे खिलारी।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर चरणकमल गिरधारी॥

३

मोरी चुनर भोजी में रे भिजोऊंगो पाग।
नन्दमहरजी को कुंवर कन्हैया जान न देऊंगो
मैं आज॥
फेंट पकरवो फगुआ ल्योंगो मुख मोड़ोंगो व्रजराज।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर सदा रहो सिरताज॥

काफ़ी—एकताला

होरी किन वदियां लाजन मारो रे।
अङ्गिया दरक गई अनवादी मर पिचकारी डारो रे॥
देखत निकट परोसन घरकी तैसी दोन्हीं गारो रे।
नन्दनन्दन बलिहार वगर में हा हा पांय परौं हौं
हारी रे॥

सोहनी—धमार

भीजो मैं तो रङ्ग में सखी री आज वनवारी रङ्गीले
कान्हरके सङ्ग में।
हौं यमुना जल भरन जात थी सब सखियनके
सङ्ग में॥
बहियां पकर मोहे रङ्ग में भिजोई अबीर
मलो अङ्ग में।
कोऊ गावत कोऊ रीझ रिझावत कोऊ तान
लेत है ढङ्ग में।
कृष्णानन्द आनन्द में खेलत कोऊ चलन न
पावत मङ्ग में॥

२

समझ गारी दे रे कन्हैया रे मानो मेरो बलमैया।
गारी देवे जिह्वा बिगारे ऐसी चतुर व्रजनारी दैया॥
हों तो तिहारी लाज करत हौं और करो तेरी
चाह मुसैया।
हौं यमुना जल भरन जात थी बहियां पकर
झकझोरी ग्वैया॥
राधामाधव होरी खेले चिरञ्जीवो यह जोरी कन्हैया।
हा हा करत हौं पइयां परत हौं मानो विनती
दधिके चखैया।
कृष्णानन्द आनन्द करो तुम श्रीगोकुलके वसैया॥

३

आली मेरे भाग्य जागी री सो लालन होरी खेलन
मेरे आए।
चोवा चन्दन अबीर अरगजा केसर रङ्ग वरसाए॥
अतर गुलाल और भोंड़ल चमके केसर रङ्ग झरलाए।

हती आशा सो सब विधि पूजो मनइच्छा फल पाए ।
होरी में खेलों अपने पियासङ्ग कन्त सुहाग लगाए ॥

४

आए मोसों होरी खेलनको सखी कुंवर व्रजराज ।
ले गुलाल मुख मोड़ सबनको नेक न करत है लाज ॥
पिचकारी भर मारत सब पर ऐसे ढीठ महाराज ।
पिचकारी भर मारत सबन पै कठिन करत है लाज ॥
डफ मृदङ्ग औ बांसरी घर घरते ले दौरी भाज ।
ऐसो लङ्गर समझत नाहीं ढीठन को सिरताज ॥

५

मला मैं कैसे दुहूं यह गोरस मेरे करते छूटो
जात दोहनी ।
निरखत ना नाथद्वारे मेरे आगे ठाढ़ो बजावत
नीको तानसों सोहनी ॥
रूप रङ्गको कह्यो न परत मोसों बतियां
करत ठगोहनी ।
श्यामसुन्दर वश कियो मेरो मन बांको चितवनमें
है मोहनी ॥

६

मो झुक आवन लागे हो प्यारे तुम होरोके
दिननमें प्यार ।
जो तुम जिय धरी सो हम समझो इन भांतनको
हम नहीं नार ।
कृष्णरसिक मन समुझ बूझके राखो मनमें विचार ॥

७

लङ्गर लंगराई न कर रे हमो सन आय आय
अठिलात ।
डगर चलत नहीं देत लेत गह गागर नागर
बोले वचन इतरात ॥
जब तुम पकर घावत हो तरुणी तिय दशन उघारी
दे दे हा हा खात ।
जानकीदास छूट जात श्याम तब कछु लाज तजो
मटक मटक मुसकात ॥

८

ए री आज व्रजमें कान्हर श्यामने देखो फागुकी
धूम मचाई ।
झांझ मृदङ्ग कठतार डमरु डफ तापर वेणु बजाई ॥
नर नारिनको मोह लियो मन एसो है सुघर कन्हाई ।
गोपी ग्वार सङ्ग लिए नृत्य करत है चल तो है
राम दुहाई ॥

९

अङ्गिया रङ्ग भर डारो होरीके खेलैया छैल मोरी ।
बातनके मिश हंस हंस भुजा भर भला वो मोरी ले
चूनर रङ्ग बोरी ।
चन्दन वन्दन बुक्का रोरी ले गुलाल मुख
अबीर मलो री ॥

१०

ए री जोरी होरीके मिश कीन्हीं दैया मोरी नरम
कलैया सइयां तोर डारो ।
रङ्गको कमोरी ढोरी सरस कञ्चुकी तारी अब तोहे
लाज हु न आवे मुख देत है गारी ॥
केसर पिचकारी मारी गुलाल भर मुख पै डारो
हा हा करत हारी लङ्गर वनवारी ।
मोह लीन्हीं व्रजकी नारी दैया सखी पांय परी
लीन्हीं बलिहारी ॥

११

थोरे रे दिननको नवल दुलहैया नव यौवन नव रङ्ग ।
नव शृङ्गार नव आभूषण नवल पीतमके सङ्ग ।
रसिक रङ्गरस वश कर लिए जब जिय उठत उमङ्ग ॥

१२

हो मत डारो रङ्ग गिरिधारी ।
निर्दय तोहे दया हु न आवे भीजे पचरङ्ग सारी ॥
हा हा करत हूं पइयां परत हूं मानो अरज हमारी ।
जानकीदास प्रभु ऐसो न कीजे सास सुने ननदल
दे गारी ॥

१३

आज मैं नवल मोहन प्रिय पायो।
नव वसन नव गुलाल केसर रङ्ग नवल हो
होरी राग जमायो॥

१४

व्रजमध्य होरी देखे सखी चल सुघर श्यामको चोरी।
केसर रङ्ग पिचकारी ले भर अबीर गुलालकी झोरी॥
डफ मृदङ्ग लिए नाचत आवत नन्दकुंवर श्री किशोरी।
फगुवा देखत कैसे बनेगो बोरत है वरजोरी॥

१५

वो होरीके खिलैया मेरी अङ्गिया रङ्ग भर डारी।
चोवा रे चन्दन और अरगजा केशरको पिचकारी
मो पर डारी।
कृष्णानन्द अनोखो छैला मोहन कुञ्जविहारी॥

१६

मेरे कियो कहा होत है वाके किये सब होत है रङ्ग।
जो होली सो होली अब साहबसो मिलनको
कर ढङ्ग॥
गुलाल कीना फरमानी कीन्हीं यह अबीर तन सङ्ग।
अपने साईं सो विनती कर तू छूट लाय देख
सब अङ्ग॥

१७

कैसे तनियां कसन पाऊं सखी री रङ्ग भर लिए
पिचकारी।
बहियां मरोरत धर झक झोरत और करे वरजोरी॥

१८

रङ्गी में रङ्ग सखी री आज रङ्गीले कृष्णसङ्ग धन धन
मेरे भाग।
लाल गुलाल ले मलो मुख मेरे खेलें मोहन
मोसे फाग॥
धन्य दिवस धन्य घरी पल सजनी धन्य धन्य है जो
सुहाग।
कृष्णरसिक प्रभु मेरे गृह आए होरी खेल अनुराग॥

१९

नन्दके नन्दन पे कोउ चलत न पावत गैल।
ग्वालबाल सब सखासङ्ग लिए बने फिरत हैं छैल॥
एक तो यौवन दूजे मस्त महीना करत फिरत है फैल।
कृष्णरसिक ले धूम मचाई यह गोकुल की मे हैल॥

मुलतानी—यत्

टाना टामल कछु नाहीं जानूं मैं तो राजदुलारी है।
मए यदुलात में कुल उजियारी मैं अपने सो की
प्यारी है॥
पिया मेरा मैं पियकी सजनी पियके रङ्ग रङ्ग डारी है।
दूधक् रङ्ग में रङ्ग रही हूं तनमन धन वलिहारी है॥

काफी—यत्

जिन निकसी कोऊ आज डगर होरी खेलत
श्याम कन्हैया।
वीणा रबाब झांझ डफ बाजे जलतरङ्ग मुरली
सहनैया॥
ग्वालबाल मदमाते आवत पिचकारिन मारत
भर भर गावत नाचत दे घुमरैया।
वा दिक्ते ज्यों अचानक आई मो पर
दृष्टि परे री बलभैया।
झपट करी ठाढ़ी सखियन में छीन लयो मेरी
दुग्ध दहैया॥

२

मुख मलो अबीर गुलाल अतर।
वरजोरी तोरी तनी अङ्गिया विहस गरे लायो गहे
बहियां कोटि यत्न कर॥
सोह देवाई दोऊ करजोर परी हूं पइयां बहु
विनती हारी कर कर।
व्रजवासी सब लोक पूरे है देत दोष मोहे लोग
लोगैया छवि नायक जैसे हम देखे तैसे न देखे
काहू ठगैया सुध आवे कांपो थर थर॥

ककुभ—यत्

कोई प्रेमको कोई प्रेमको पेंग झलावो री।

भुजाके खम्भ और प्रेमके रस से मन महबूब
झुलावो री ॥
उमगी यौवनकी पेंग सोहावनो मन में अलस
न लावो री ।
सूहा चोला पहन अमोला पी घट पीको रिझावो री॥
आवत आवत सुरतकी राह में फ़िकर पियाको
सुनावो री ।
नयनन बादरकी झर लावो श्याम घटा उर छावो री।
कहे कबीर सुनो भाई साधो हरि को ध्यान
चित्त लावो री ॥

सरपरदा—तिताला

फाल्गुन में मान क्यों करत है बौरी खेल तू
अपनें पियाके सङ्ग ।
ज्ञानकी रङ्ग ध्यान पिचकारी मनमोहनके अङ्ग रङ्ग ॥
बीती जात बहार चारि दिनकी बहोर न पैहै
मनकी उमङ्ग ।
कृष्णानन्द आनन्द मगन होय नाचत गावत रागरङ्ग॥

घट—तिताला

रङ्गभरी रसभरी रूपभरी प्यारी होरी खेलन
आई गोरी री ।
नवल किशोरी भोरी नन्दकी पोरी अबीर लिए
भर झोरी री ।
यौवन भरो गुण भरो लाज भरो पिचकारिन
झकझोरी री ।
सरस रङ्गरस वश कर लीन्हें भौंह मरोर दृगजोरी री॥

२

रङ्ग रङ्गी ब्रजवासिन सों मिलि होरी रङ्ग मचावे हो।
चलो कुमार वृषभानु रायके अपनो जीत बनावे हो ॥
बनठन साज रङ्ग पिचकाई फाल्गुन गीत सुहावे हो।
डफ मोहचङ्ग झांझ अरु झालर अद्भुत रङ्ग
जमावे हो ॥
जो भावे सो करे सबन सो समाधान को जावे हो ।
सरसरङ्ग सुखमें हैं दोऊ दिश सबहिनके
सुख पावे हो ॥

भैरवी—यत्

या ब्रजमें रस होरी सुहाई नरनारिन सुख हो
रह्यो मारी ।
लङ्गर कान्हा बगर में चलत तेरो रङ्गन मार
भिजोई सारी ॥
इत खेलत कोऊ कान न मानत देखो अनोखे
छैल खेलारी ।
वंशीवट कुञ्जन सुख विलसत सरस रङ्ग पिय
गिरिवरधारी ॥

भैरवी—जङ्गला

मनमोहन ब्रजवीथन ठाड़ो होरीको धूम मचावो री ।
रङ्गभरे गुलाल कुमकुमा भर मुठी अबीर उड़ावो री ॥
भेटो भुजन सुख रोरी मीजत अङ्ग अनङ्ग बढ़ावो री।
सरसरङ्ग रस करे निसङ्कन पिया प्रीति उर लावो री॥

ईमनकल्याण—धमार

होरी खेलत कुञ्जगलिन में रसभरे छैला कुंवर
कन्हैया ।
पनघट घाट रोक मार्ग ठाड़ो घूंघट देत उघारे सैया ॥
फाल्गुन मास करे वरज़ोरी जित तित धूम मचावे
ग्वैया ।
सरसरङ्ग रस लेत निसङ्कन वृन्दा-विपिन
कुञ्ज द्रुम छैया ॥

२

सरस रस भावन वसन्त ऋतु आवन मनोज
प्रगटावन ए जू सोहाई ।
ऋतुराज कुसुमद्रुम सुहावन कोकिल सुर गावन
तरसावन विरहन को धाई ॥
विन मनमोहन कछु न सुहावे न भावे विरह सताई ।
सरसरङ्ग होरी में मिलावे ताके वलि वलि जाई ॥

भैरवी-काफ़ी—यत्

रसिक छैल नन्दजीको छोहरा मार गयो कि रह्यो
मेरी ग्वैया ।
यह होरी वरज़ोरी की अवसर माने न काहूको
कह्यो मोरी दैया ॥

कहा करूं कछु वश नहीं मेरो करत है अपन
चह्यो री गुसैंया।
सरस रङ्गरस भीज रही हौं सब सुख तन लह्यो
कुञ्ज ठैया॥

जङ्गला—यत्

सखी यह फागुन में पिया अज हूं नहीं आयो री।
बीतो जात बहार होरीको विरहनि मदन जगायो री॥
जबतें गए पिया भए वांहो के किन सौतन
बिलमायो री।
रसिक मोहन कोउ आन मिलावो यही ध्यान
उर लायो री॥

२

मनमोहन मेरे घर आयो री सखी रङ्ग रङ्ग में री।
कुच गड़वा और यौवन मोर ले वसन्त बनाय
अङ्ग ए री॥
तनमन धन सब अर्पण कर के चरण-कमल रङ्ग दे री।
धन्य मेरे भाग्य सुहाग आज दिन कृष्णानन्द
उमङ्ग हे री॥

पीलू—यत्

ऐसो रङ्ग डारो मोरी गुइयां सइयांके रङ्ग में
रङ्ग रह री।
पिया हमारा मैं पियाकी सजनी एक ही रङ्ग बह री॥
उनमें हममें कछु भेद नाहीं अद्धे अङ्ग लहरो।
ब्रह्मानन्द आनन्द में रङ्गके एक ही रूप ठहरो॥

भैरवी—यत्

कैसे खेलो कन्हैया कुच मुख मोड़त भिजावत तनैया।
लपटत झपटत दपटत छतियां बहियां पकर
रङ्ग रेलो कन्हैया॥
अपनी बारी भज जात है छल बल कर बलभैया।
बरज रही बरजो नाहीं मानत कृष्णरसिक रिझैया॥

रवी—सिन्धु

फागुन बीतो जात सखी री क्यों नहीं खेलो फाग।
भाग्यनसे फागुन पिय पावो जागे तेरे भाग॥
बहुत दिनन तें दाव लग्यो है धन्य धन्य तेरो सुहाग।
कृष्णानन्द चार दिन होरी सइयांके गर लाग॥

पूर्वी—धमार

रङ्ग न रङ्ग रङ्गे है विहारी लाल गोवर्द्धनधारी।
ग्वालबाल सब सङ्ग सखा लिए और सकल व्रजनारी॥
बाजत बीणा मृदङ्ग नङ्ग डफ झांझनको झनकारी।
गोकुलेश प्रभु होरी खेले गावत दे दे तारी॥

विहाग—धमार

होरी खेलत व्रजकुञ्जन मइयां।
नन्दकुंवर सङ्ग अतिरस बाढ़ो विहरत लाडली
कदमकी छइयां॥
पौढ़नकी समये के अवसर और कोउ न रह्यो
तिहि ठइयां।
परस्पर रङ्ग रच्यो अति भारी सरसरङ्ग बलि बलि
तहां गइयां॥

२

व्रजमें होरी रङ्ग सुहाव।
कुञ्ज महल यमुनातट सजनी प्यारी पियकेमन भाव॥
पौढ़नके समये के अवसर ललिता रङ्ग जमाव।
चिरञ्जीव युगल यह जोरी सरस रङ्ग छवि छाव॥

सरपरदा—धमार

होरी खेले व्रज केल विहारी राधा नागरी
सङ्ग लिए प्यारी।
बीथिन धूम मचाई चहुं दिश रसिया अनोखे
खेल खेलारी॥
रङ्ग गुलाल अबीर कुङ्कुमा डफ मुहचङ्ग
बजे ध्वनि भारी।
सरसरङ्ग बाढ़यो सब हिय मन देख दृगन
छवि पर मनोहारी॥

पीलू-भैरवी

या बातको सुख मान सखी री तोहे मान मनावन
मोहि पठाई।
तू बड़ भाग्य रही री प्यारी तोहि विहारी जू
नाहीं बिसारी॥

तो विना हरिको रङ्ग नहीं है विधिना जो करी
तोहिं मानमत्ता री ।
प्राणपियाकी तू जो प्यारी सरस रङ्ग रङ्गी वलिहारी ॥

षट्—यत्

गिरिधर पिय सङ्ग रङ्ग भर खेलत नवल कुंवर
वृषभानु-किशोरी ।
अरगजा कुङ्कुमा रङ्ग रञ्जित कर मुख मण्डित
कियो हो गोरी ॥
पगड़ी छुड़ाय लेत गुलचान गाल देत अङ्ग भुज
भेंट हेत मुख मलवी री ।
रङ्गके खेलार रसरङ्ग रसिया फगुवा लियो
प्यारी नवल किशोरी ॥

केदारा—धमार

खेलत फाग सुहावनो माई रङ्गरस सरसावनो ।
श्रीवृन्दावन कालिन्दीतट पिय प्यारी मन-भावनो ॥
ताल तरङ्ग रङ्ग बहु उपजत सप्तस्वरन गीत गावनो ।
गोपिनके मण्डल मध्य राजत राग केदारो जमावनो ॥
गारिन गावत सब हिन मावत अपनो जीत बनावनो ।
फाग खेल व्रज रङ्गरस रेलन सरसरङ्ग छवि छावनो ॥

काफ़ी—धमार

मति डारो श्याम मुख बोरी मेरे आंखन रङ्ग भरो री ।
ऐसो रङ्ग दियो पिचकारिन भीजि गई चुनरी कोरी ॥
अतर गुलाब भरे कञ्चुकी पट कुङ्कुम चुभि गड़ी
तन मोरी ।
चलो री सखी अब अपने घर को खेले ऐसी होरी ॥
ऐसे निठुर कछु दर्द न जानत श्याम चतुर हम बोरी ।
रूठि चली सब नागरी राधे श्याम फिरत कर जोरी ॥
नयनन सैन दियो सब सुन्दरी घेर लियो बरजोरी ।
कोउ पीताम्बर छोरत मुरली कोउ अबीर भरे
भर भोरी ॥
भई है लटापटो चीरा चुनरी छैल छबीले गोरी ।
लेत उचङ्ग उचङ्ग सबे मिलि अपनो अपनो जीरी ।
श्रीपति रूप कहां लगि बरनों लक्ष्मीपति मति थोरी ॥

काफ़ी—यत्

होरी खेलत नन्दकुमार यमुनाके तीरमें ।
सङ्ग गोपाल सखा व्रजनागरी नाचत नटवर
विविध भीरमें ॥
बनि बनि बनि वनचर पशु खग मृग करत कलोल
घोल तरु तीरमें ।
गाय बजाय ताल दे दे कर धरि धरि धावत
धसत नीरमें ।
प्रथम वसन्त दिवस लक्ष्मीपति ऋतुपति घर घर
पूजत होरमें ॥

१

चलो देखन नन्ददुवार में होरी होय रही है ।
मोहन गोपसखा बिच राजित मानो पूर्णशशि
उमंगि रही है ॥
गगन गहागहि होतु दुन्दुभी सुर नागरी स्वर
गाय रही है ।
अतर गुलाब अबीर अरगजा गागर मागर घोर
रही है ।
लक्ष्मीपति ऋतुराज गुणीजन कनक कलस भरि
पूजि रही है ॥

२

हां हां हां मोहे नित्य अपना सङ्ग दे रे जगमें
नहीं कोई सङ्गी हमारा ।
अपने चोखे रङ्ग प्यारे सो तन मन मोरा रङ्ग दे रे
एसो रङ्ग है कौन वियारा ॥
जासों प्रेम भक्ति बनि आवे सोई सकत मोरे
अङ्ग दे रे भक्ति विना कर है निस्तारा ।
मायामोह छुड़ाय दे जो सो नीके साधनके ढङ्ग दे रे
अवगुणसे करूं तोकों न्यारा ।
जो मांगे ते पाये साहब सो काजम हमहु को
मांग दे रे जासो न छुटे वाको दुवारा ॥

४

ए हो हम हो सो राखे बिगार अछो सब हो
बो बोलेरो ।

हमरी ओर कब हूं ना निकसो सोई सबके घर
डोले री ॥
जो ले प्रीति हमारी जचतु है तौ ले जीको तोले री।
अन्त हमारे होके कन्ता जो ले न बोले तो ले री।
हमसे घूंघट राखे सुखपर काजिमसे नित्य खोले री॥

धनाश्री—यत्

छबीले री रङ्गीले नयन रसभरे नाचत मुदित अनैरे।
खञ्जरीट मानो महामति दीज कैसे ह्र धीर न घेरे॥
श्याम श्वेत राते रङ्ग रञ्जित मानो चित्त चितेरे।
कुम्भन दास प्रभु गोवर्द्धनधर श्याम सुभग तन हेरे॥

२

मेरी मन मोह्यो सांवरो अब घर हो मो पै रह्यो
न जाय।
चपल तिरीछी भौंहसों सर्वस्व हो मेरी लियो चुराय॥
माई हौं गोरस ले निकसी वृन्दावन होरी मंझार।
आय अचानक औचक मटुकी वहीं मेरी दीन्हीं ढार॥
गहि अञ्चर मो सो यों कह्यो कौन हो तुम का
की नार।
कै बेरी या मार्ग गई दान हो हमारो डार॥
कछुको ओढ़नी बेग हो लीन्हीं बहुत कितियक मोल॥
तिलक खुभी के व्याज में परसे वह मेरे पात कपोल॥
हंसि बीरो वर मुख दई ग्रीवा हो मेरे मेलो बांह।
यह मिस मोंहि वह ले चले गहवर री
अंधियारो मांह॥
जिय औरे मिस दानके बतियन में मेरे परसे पाई।
करत बसीठी मिलनकी सन्मुख री मेरे नयन
चलाई॥
और कहां लगि वरणिये कह तब री जोई
आवे लाज।
जन त्रिलोक प्रभु सो रङ्गी देखी मेरे तनको साज॥

२

होरीके खेलार भावत तोहि जान न देहौं।
रङ्गभीनी बागे बनि आए जागी भाग्य हमारे नयनमें
भरि राखूं फगुवा लेहौं॥

चोवा चन्दन और अरगजा केसर कलस नहे हौं।
अग्रस्वामी सो कहति स्वामीनी मिलि तन
ताप नसे हौं॥

काफी—यत्

तुम चलहुं सबे मिल जाई खेलन होरिया।
अपनी अपनी सुरङ्ग चूनरी मोतिन मांग भरोरिया॥
थरहरात अधरन पर मोती अङ्गिया केसर बोरिया।
चोवा चन्दन अगर कुङ्कुमा भरि भरि देत
कमोरिया॥
अङ्ग सो अङ्ग गुलाल विराजे भलो बनी यह जोरिया।
केहरि लङ्क नितम्ब विराजत गज गढ़ चाल
चलोरिया॥
पिचकाई मोहन घर डारत विहंसी घूंघट मोरिया।
बाजत ताल मृदङ्ग और डफ पढ़ि पढ़ि बोलत
बोलिया॥
नयन आंजि मुख माड़ि श्यामको सब मिल करत
कलोरिया।
सूरदास प्रभु सब सुख क्रीड़त ब्रजकी खोरिया॥

धनाश्री

हो होरीके खेलैया अहे नेक मोहड़ो माड़न दे हो।
जो तुम चतुर खेलार कहावत अधरनकी रस ले हो॥
गोरी गोरी बहियां हरी हरी चुरियां हियरा को
रस ले हो।
चतुर-शिरोमणि सूरदास प्रभु फगुवा हमारो दीहो॥

२

होरीके रङ्गीले लाल गिरिवरधर रङ्ग मचायो।
केसर बहुत गुलाल अरगजा मदन वसन्त भिजायो॥
ताल मृदङ्ग झांझ डफ वीणा होरी राग जमायो।
सुनि निकसी गृह गृह ते सुन्दरी भावभागी
फल पायो॥
आवति भावति गारी न गावति रस भरि लाल
खिलायो।
श्रीविट्ठल गिरिधर युवतिन होरी त्योहार मनायो॥

ठुमरी

रङ्ग न डारो गोरी भीजत चुनरिया।
पैयां परत हौं सौंह करत हौं रामलाल तुम
नवल खेलरिया॥
लपटि झपटि कर गहि रघुनन्दन मसल गुलाल
लाल कर धरिया।
रामसखा गाय कहा के न गए हंसि हंसि कहत
सकल सहचरिया॥

२

होरीके खेलेया मोरा नयन जनि भरो जू।
अरज मान अवधेश लाड़ले वार वार वरज़ोरी
जन करो जू॥
अपनी बार ऐसे औरन भरत कैसे ठाड़े रहो वाहो
ओर वहियां जनि धरो जू।
जनकराजलली कहत मधुर अली वन्दौंगो खेलेया
जो पै आगे से न टरो जू॥

३

सांवरे अब न खेलौं तो सो होरी मेरी आंखिन
मेलो अबीर।
एते पै दे तारिन मारिन गावत वेणु बजाई कुलकी
वानि न तजत कान्ह अलि आखिर जाति अहीर॥
नाहिन खेलन जानत मानत आप हो कान्हा खेलारो
झौनि चले आवत हो कान्हा काहूको हीर न पीर।
जाय कहो विश्वनाथ नन्द सो तेरो सुत इतरानो
अव हमरो व्रज वसिवो नाहीं न काज करे वलवीर॥

४

लङ्गर मोहि काल हि गैल में दीन्हीं गनि गनि गारो।
दाव परो अब जान न पै हो लागो चहुं दिशि ग्वारो॥
रङ्ग भरि वनिता भेष बने हैं छुड़ि है दे दे तारो।
विश्वनाथ प्रभु अब न चलेगी तेरो तो यह छलवारो॥

५

होरी खेलत राधानवल किशोर अब तो लाल तुम
शुभग रङ्ग रङ्गे लेहु कामरो बोर।
चहत अहीर फागु सङ्ग खेलन भांतिन विविध निहोर॥
विश्वनाथ सुख लखहु आरसी राधाको नहिं जोर।
गोरी आवत लाला नन्दकिशोर मोर मुकुट दिए
बन छवि छावत मुरकि लखत यहि वोर॥
अति सुन्दर मन हरे हि लेत है त्यजत लाज मन मोर।
विश्वनाथ लखि कको हो रहत है तन यही है
चित्तचोर॥

इति श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागरोद्भव सङ्गीतरागकल्पद्रुमे वसन्त-
समय नाना रागरागिणी रङ्गीली होली रङ्गीन
गान सम्पूर्ण:।

——✻——

श्रीकृष्णाय नमः

तथा होलीगान।

भैरवी—चौताला

लालन भोर हो आए होरी खेलनको ग्वाल
वाल लिए सङ्ग।
अबीर गुलाल केसर पिचकारो बाजत ताल मृदङ्ग॥
इत सखा उत सखी परस्पर छिरकत नाना रङ्ग।
राग विलास गावत फगुवा आनन्द बढ़त उमङ्ग॥

२

लालन मदन सो मदन से मतवारे नयन सो
लागत परम रसाल।
पञ्च रङ्ग पाग पिछोरी को रङ्ग बोरो भौंहे
अलक में गुलाल॥
भोरे भंवर से भांवरी देत भवन में कठिन कलिन
त्यागे पाए निकाल।
शङ्कित से चकई के घर आए चकवा से प्रेमरङ्ग
कीन्हीं निहाल॥

३

रैन बिताय आए हो मोहन कहां जागे रङ्ग रागे।
कौन त्रिया सङ्ग विलम्ब रहे हो होरी खेल
कहां पागे॥

तोतरात बतरात वैन हू न आवत आलस्य वश
अनुरागी।
नादसेन मनके मतवारे से आए भाग्य हमारे जागी ॥

४

रैन विहाय गई भोर भयो होरी कहां खेले प्यारे।
कौन नवल तिय पिय विलम्बाए गिनत बीते
मोहे सब निश तारे॥
कहूं काजर कहूं पीकलीक अधरन अञ्जन
माल महावर धारे।
तानसेनके प्रभु तुम बहु नायक सांझके गए हो
सिधारे॥

५

नयन रङ्गाय आए हो लालन या होरी की रात।
सकुच सांवरे हित अपनेकी कहन न पाए बात॥
कहूं कहूं लाग्यो गुलाल कपोलन ढीले बोलत
अतली जंभात।
वलिहारी वा मोहनी पर कैसे आवन पाए कहो
ज कहो तुम प्रात॥
मन अपने की सो कह न सकत एक बात।
यत्न यत्न वलिहार करे कैसे आवन पाए प्रात॥

भैरवी—धमार

लाल अरसाने भोर हो आए।
कौन वाम हित सो परचाए सगरो रैन जगाए॥
ढिग ढिग कज्जर फैल रह्यो है जावक तिलक
लगाए।
झपक रही वरनी अति सोहै मोहन अधिक सुहाए॥

२

होरी खेलै प्यारी अबकी या भांत सो लालनके सङ्ग।
आप भीजि औ उनके भिजावै लपटत पट दीजि
लीजि अङ्ग॥
मनमोहन को पकर वश कीजि फगुवा लीजि उमङ्ग।
कृष्णानन्द सो फाग रचोंगी एक हो रङ्ग हूं रङ्ग॥

३

जे तिय ते सब ठाड़ो भई आप आप गड़वा बनाय
आगे धर दीने।
महम्मद शाह दक्षिणके लक्षण क्षणकमें टोनासीं
मन वश कर लीने॥
डफ वीणा मृदङ्ग रबाब गावत तान नवीने।
सदारङ्ग रङ्गन में भीजि बाल लाल सम लोने॥

४

देखियत लालन जागे भाग्य हमारे आज रसभीने।
कर वसन्त जिन सबको ओर देखत हो कृपा ते
कर लिए सुगन्ध नवीने॥
जे गर्व भरी तेऊ आय ठाढ़ी भई सब अपने गड़वा
बनाय आगे धर दीने।
सदारङ्ग महम्मद शाह दक्षिणके लक्षण समझि क्षण
एकमें टोना से मन वशकर लीने॥

५

लङ्गर बटपार खेले होरी।
बाट घाट कोऊ निकस न पावे पिचकारिन रङ्ग बोरी॥
मैं जु गई यमुना जल भरने गह सुख मीजो रारी।
तानसेन प्रभु नन्दको ढोटा वरज्यो न मानत गोरी॥

६

आज रसमातो होरी खेलै लाल।
तारी दै दै नाचत गावत सङ्ग ग्वाल व्रजबाल॥
केसर रङ्गको छींट परी सुख मानो छविको जाल।
नट नागर प्रभुको छवि अद्भुत निरखत भई निहाल॥

७

अनटन नहीं कीजे आनो अपने वालम सो यह
फागुनके बीच।
भाग्यको रीति कहां जाने ग्वालन केतो कही है
आखर ज़ातको नीच॥

८

आज सखो फाग आयो ऋतु वर्षा लिए सङ्ग।
अबीर गुलालके बादर छाए वर्षन लागे रङ्ग॥
भोड़ल चपला मृदङ्ग घन पिचकारी झर सङ्ग।
कृष्ण रसिक फाग खेले बाढ़ो है मन रङ्ग॥

९

लगवार लगाए आवत होरी में ऐसो देखी
अनोखी नार।
एक गावत एक मृदङ्ग बजावत एक नाचत
दे ताल धमार ॥
बांह पकड़ जब ठाढ़ी कीन्हीं का सो करीं
यह पुकार।
रङ्गरस रसको धूम मचो है द्वारे खड़े नन्दवार ॥

१०

ता पर तू करन लागो री यह बात एक तो बांको
कंथ लियो परचाय।
मिलत न काहूको अपने आगे ऐसो तेरे हो
घर न्याय ॥
निशदिन हंसत बोलत डालत रहत तेरे ही गुण गाय।
ऐसो तू क्या कीन्हीं सजनी री डर पूजे तिहारे पाय ॥

११

बाजन लागी डफ होरी कानर नारी डारत है रङ्ग।
बसन रतन सब पहर कर आई चतुर देखि नीको रङ्ग ॥
वीणा रबाब मृदङ्ग बजावत कर गहे कन्हैया
सबके अङ्ग।
चतुर नहीं देखे बरजोरी लगावत उनके अङ्ग ॥

१२

हो नादान गारी दई अकेली पाय धरि बरजोरी
होरी कर।
बश जाय परी हो हो होरी बलिहारी बिहारी
तेरी सो मैं अबीर भर होरी पर ॥

१३

योगी रङ्ग है आज रङ्ग है योगी रङ्ग है तुम रङ्ग
भीजे शाद।
बहु रूप बहु भेष तिहारे अलख जगावे अनाहत-नाद॥
अङ्ग अङ्ग वस्त्र तान तार को अधर मिलो भभुताद।
अबीर गुलाल को बुरको डारे होरी होरी सेज
सुवास चली चलो लाद ॥

१४

अद्भुत मचो फाग मोहन घर देखन चलो व्रजनार।
अबीर गुलालके बादर छाए रङ्गको परत फुहार ॥

१५

मो पै वा बिना रह्यो हो न जाय री आली कौन
करी मिलवे को उपाय।
सुध न रही वाकु तन मनकी सखी जब तें दीन्हीं
मोहन मुरलीकी ध्वनि सुनाय ॥
उन को देखके लुभाय रह्यो मन अटक्यो हरि सो जाय।
जन्म जीवन फल तब ही जानींगी जब वो
मिल है आय।
आदि वसन्त अन्त फाल्गुन को याही सोचन मोहे
दिन कटत जाय ॥

१६

प्रभु कैसी होरी मचा सब जग देखत गुलाल
रङ्ग से बादर।
एके प्रगट भई छवि देखत उन का वला जानेको
कोज करन आदर ॥
उनही केसर रङ्ग डारियत जे सबही मैनादर।
अबके जो फाग जगत्में मच्यो सदा रङ्गीले कादर ॥

१७

लङ्गरवा ढीठ है मो सो करत है अनोखी बात।
छाड़ और मग मेरे ही आवत ग्वार सखा ले सात ॥

१८

जागी सगरी रैन होरी खेलत पिय सङ्ग भोर भए
उठि बिथुरे बाल।
मानो तरु बड़ डारन बीच चन्द्रको जात किरण
मानो दिनमणि लख्यो है गुलाल ॥
मानो श्याम डोरिन तें ठाढ़ी कञ्चनको पाल।
यह छवि निरखि निरखि काम दृष्टि रीझ रहे नन्दलाल॥

१९

अब धूम मचो फाग मोहन घर देखन चलिये व्रजनारी।
एक हाथ अबीर एक पिचकारी लिए एक नाचत
एक गावत दे दे तारी ॥

एक वीणा रबाब साज लिए एक करन कठतारो।
कृष्णानन्द आनन्द सो खेलत फगुवा देत गिरिधारो॥

२०

खेलन आए होरी आज रस सो लालन मेरे घर ए री।
नव नव वस्त्र पहरे और आभूषण नगन जड़ितके धरे
तैसो मुक्तमाला गरे ता ऊपर नीको लागो वेरो॥

२१

आवो री मिल देखो होरी खेलें प्यारो प्यारो
रासमन्दिरमें वर्षा समानो।
उड़त अबीर घटा घिर आई पिचकारी झर भोडर
वक पंक्ति तामें झलकत नारी चपला ऐसो चमकत
मोहत सुरनर ज्ञानो॥
ततश्रो वितत गरजन सम बाजत सुघर गायन श्री
पिक नित्यकारी चातक मयूरनके भेदन मो घुरत
निशानो।
फागुनमें वर्षाऋतु उनई उमड़ घुमड़ वर्षत रङ्ग
कृष्णरसिक रङ्ग रस झर लाय मानो बुन्दन
वर्षत पानी॥

२२

आज व्रज भोर ही भैरव रागमें गावत होरी खेलत
व्रजनाथ।
सप्त स्वरन इकईश मूर्च्छना लाग ठाढ़ लिए साथ॥

२३

लालन लोच्ये ताल ललित स्वरनमें लाड़लो रीझि
प्राण प्यारो महारानो।
मुरली अधर धर मधुर सप्तस्वर राग ठाठ मूर्छानो॥

२४

ऐसो होरो मचाई भोर हो मोहन मानो ऋतु
वर्षा झर लाई।
डफ मृदङ्ग जानो घन गरजे है भोरल चपला
चमकाई॥

२५

मोहन भोर हो रङ्ग रङ्गाए होरो खेल रचाए।
ग्वालबाल सब सखा सङ्ग लिए अबीर गुलाल उड़ाए॥
नयन रङ्गाए नवल तिया सङ्ग अनत हो होरी मचाए।
भोर हो आए हम पहंचानत नाहों लाल हो
लालो लगाए॥

२६

ता पर तुम सांच बोलत हो मोहन रात कहां
सारो रैन जग आए।
सांझके वचन सांचे करनको भोर हो मुख देखलाए॥

रामकली—धमार

बरसाने में खेलत होरो श्रीवृषभानु किशोरी।
कोऊ चन्दन वन्दन अतर अगरजा ले अबीर गुलाल
लिए भर झोरो॥
कोऊ गावत कोऊ मृदङ्ग बजावत धूम मचाई
नन्दरायकी पौरो।
उत तें सखा सङ्ग लिए कृष्णप्रभु पिचकारिन
रङ्ग छोरत भारो रङ्ग रच्यो री॥

२

आई मिल कर अब हो सहेलो खेल रच्यो नन्द द्वार।
धाय पकर लिए नन्दलालको फगुवा लेन व्रजनार॥
काहू ने पीताम्बर पकरो है काहू मुरलिया लई
दे तार।
अब कहां भाग जावो फगुवा ले हो तब जो चीर
हरे है मुरार॥

३

लङ्गर लागो हो आवे यह फागुनमें नित नई
धूम मचावे।
कहो सुनो कछु मानत नाहिं न मेरो नाम ले ले
गारो गावे॥
अगर बगर के लोगवा सुनत हैं सास ननदिया रिसावे।
कहा कहों मैं रसिक कृष्णको मोहे वर वश
गरवा लगावे॥

४

फागुन मासमें धम मचाई व्रजमें नरनारी बौराने।

कोउ काहू की सुध नाहीं न सजनो अबीर गुलाल
उड़ाने ॥
कोऊ लपटत कोऊ झपटत ले अङ्क भरत कोऊ
पिचकारी रङ्ग छोराने।
कृष्ण हो रूप रङ्गे व्रजके जन मानो मेघ चढ़ी
घोराने ॥

५

रामकली देखो फूलो वन घनमें चले हैं खेलन
वसन्त होरी।
लक्ष्मण भरत शत्रुहन सङ्ग लीन्हें केशरकी
पिचकारी छोरी ॥
सीता जु सङ्ग लई सब सखियां श्रुतकीर्त्ति
उर्मिला माण्डवी दुहू और भारी रङ्ग रच्यो री।
तुलसी यह रघुनन्द फाग मच्यो है श्रीदशरथराज
जूके वारे उत जीती है जनककिशोरी ॥

६

आए हो रङ्गभरे लालन होरी खेलन सो सो
औरनके चिह्न लिए।
अधरन अञ्जन मुख तंबोल की को लागत ऋतु किये॥

७

पट दे दे ले ले सुख नयनन फगुवा मांगत
मुख गाय गाय।
मिलन वनो नन्दलाल लाल सो होरी अवसर
पाय पाय ॥
त्यजी लाज गुरुजन दुर्जन की तिया नेक न
सकुचाय चाय।
जे मच धरी रली रङ्ग बतियां ते सब करत मन
भाय धाय ॥

८

झूम सब आईं गोपी लिपट रहे नन्दलाल।
मानो श्याम घन में चपलागत यों राजत व्रजबाल ॥
अञ्जन आंज मांड़ मुख रोरी दे गुलचा और
ऐंचत गाल।
चतुर खेलार नवल धैर्य प्रभु कर पाए है ख्याल ॥

९

तू तो ए री प्रीतिकी रीति न जाने गंवार।
जा सो मन लगाइये ता सो और निभाइये नार ॥
वे मनमोहन सोहन सजनी बहुत हैं रिझवार।
एतो मान काहे करत है आली उठ चल
हरि हि निहार।
कृष्णानन्द आनन्द में विहरत सुन्दर रूप बहार ॥

१०

धूम मचाई मोहन व्रज में अब कैसे मान रहैगो।
अबीर गुलाल केशर पिचकारी डारत अनेक रङ्ग
बहैगो ॥

११

दम्पती खेलत होरी महल में शोभा वरनी न जाय।
सकुच छाड़ अङ्ग अङ्ग लपटाने सरस माते दोउ
राजबहादुर फगुवा सुघर मचाय ॥

१२

या व्रजमें धूम मचाई खेलत होरी।
हों सकुचत हों जान न पाऊं पनिया भरन को री।
कृष्णरसिक रसरङ्गन बोरत अद्‌भुत ख्याल रचो री ॥

१३

चतुर अधिक खेलार नार नयनन मध्य पिय सो
खेलत होरी।
श्वेत अबीर गुलाल से डोरे चितवन में सब
रङ्ग भरो री ॥
डफ पुतरी पै चाटी पलक की झपक लगावत
ले नमसोरी।
नाचत कटाक्षन भाव बतावत रिझावत ललना
लालन को री ॥

रामकली—धमार

भोर हो श्याम तें कहा खेलो होरी नीथि सो होरी।
चटपट नयन सो नयन मिलतही झटपट पीत
पगो री ॥
वे तो चतुर खेलार कन्हैया तुम बहु गुणी हम
निर्गुणी भोरी।

वतरस उपजात हसन रुचिरस सुनात श्रवण
नासा री रङ्गरस में भीजो री ॥

टोड़ी—धमार

ए होरी खेलो सखी री रङ्गराग साजबाज सों।
ऐसी होरी में फाग मचावो फगुवा लो रघुराज सों ॥
चन्दन वन्दन बुक्का रोलो अबीर गुलाल समाज सों।
कृष्णानन्द सो रङ्ग भर लाऊं खोल घूंघट जो
लाज सों ॥

मुलतानी—धमार

आली री कैसो यह होरी पिया मोहि चैन न देत।
अञ्चर मोरा सुख मोड़त है मिसही मिस रस लेत॥

धनाश्री—धमार

माई री कैसे बसिये वाहु नगरमें होरी खेलत वगरमें।
चोर मुसे कोतवाल हंसै डर नाहीं नगरमें ॥
एक ही रङ्ग में रङ्गे हैं पुरजन नेक न शङ्का सगरमें।
रसिक सनेही मानत नाहीं बड़ो ढिठाई लङ्गरमें ॥

पूर्वी—धमार

काहे री तोहे लाज न आवे री बार बार तू आवे।
ऐंड़ो डोले मदको मातो नयन सैन नचावे ॥
बिना ही कहे तुम नाचत गावत नाना रङ्ग उपजावे।
रसिक कृष्णको रस वश कर लीन्हीं तो ही को
नित्य चावे ॥

श्रलैया—धमार

कैसे भरन जाऊं पनिया मा ए निपट अचपल
खेले सांवरो।
काहू सो लरत और झगरत काहू सो ऐसे होरीमें
भयो बावरो ॥
कही सुनी काहूको न मानै ऐसे ढीठ छैल उमावरो।
डगर वगर चलन न देत है ढीठ भयो ढोटा
गोकुल गांवरो।
कृष्णानन्द आनन्द में डोलत नन्दमहर को है
जुड़ावरो ॥

श्रलैया—यत्

लाल जू पाई अकेली नवेली नारी सुघर रङ्ग गोरी।
हमरे सङ्गकी दूर निकस गई मोसे कीन्हीं वरजोरी॥
बाट घाट मग रोकत टोकत दधि विथार मोरो
मटकी फोरी।
कृष्णानन्द कैसे निकसन पइ है जो व्रज आवत
सोई रङ्ग बोरी ॥

विभास—धमार

चौंक परी गोरी होरी में श्याम अचानक
बांह गही री।
समर कुड़ाय रिसाय चढ़ो भुवि अनख अधर कछु
बात कही री ॥
चितै चितै रसके वसके कसके भुजमें रसरास लही री।
जय श्री कृष्णलाल छवि लाल जाल छवि ख्याल
रिसाले देख रही री ॥

भैरव—धमार

लाल रसमातो खेले हो हो हो कर होरी।
इत गोकुल उत मथुरा नगरी इत चन्द्र उत अजोरी ॥
ग्वालबाल सखा सब लिए उत ललितादि किशोरी।
कृष्णरसिक अवलोकत है छवि पिया
प्रीतमकी जोरी ॥

विभास—धमार

वे भासत तेरे तनमें मोहन नवल तिया जिन
रैन जगाए।
विवश भए भोर हीं आए सारी रैन जगाए ॥

२

छाड़ देहु मुरारी तेरी अटपटी बात पियारी।
हम आगे तुम झूठ कहत हो नवल तिया बलिहारी॥

३

चकई चुहचुहात भोर हो मेरे आन तमचर
बोलत दियो है दरस।
रैनके उनींदे तोतरात नयन मूंदे मानो
बीत गए वरस ॥

४

तुम कौन हो जु होरी खेल कहांते आए वसन
रङ्गीले रङ्गाए।

पहंचानत हम नाहीं न तुमको अबीर गुलाल
लपटाए ॥

५

नव कुञ्जन प्यारी सो भोर भए हरि होरी
खेलत आए।
धन्य धन्य प्यारी धन्य प्यारे हो तुम धन्य धन्य
धमारमें विभास गाए ॥

विभास—चौताल

आज तो छबीलो लाल प्रात ही खेलन चल्यो
सखा सङ्ग लाय लिये गारी गावै गायके ।
खेलत खेलत वृषभानु जूको पौरी आए हो हो
होरी बोले प्यारे मन भायके ॥
छबीलो रच्यो उपाय श्यामको लीन्हा बुलाय मैयाको
दृष्टि बचाय लीन्हें उर लायके ।
अरस परस दोऊ महा रसभीने सहचरी सुख पावै
रसिक सुख लायके ॥

विभास—धमार

खेलावन आवैंगो ब्रजनारी ।
जागो लाल चिरैया बोली कहै यशोमति महतारी ॥
औट्यो दुग्ध पान करि मोहन वेग करो स्नान
गोपाल ।
करि शृङ्गार नवल बानिक बन फेंटनि भरो गुलाल ॥
बलदाऊ ले सङ्ग सखा सब खेलो अपने द्वार ।
कुमकुम चन्दन चोवा छिरको घसि मृगमद घनसार ॥
लेकिन टेर सुनो मेरे मोहन गावत आवें गारी।
ब्रजपति तब हिं चौंक उठि बैठे कित मेरो पिचकारी॥

२

चिरिया चुहचुहात भोर हो तात होरी खेलन
आए मेरे प्रात।
डग मगात पग धरणी धरत हो श्याम सलोने गात॥
कहा इतरात उत रात बीती जात नवल तियाके
सङ्ग खेली रात।
कृष्णानन्द तुम सांचो कहो तुम कहां जागे
मोहे कहो बात ॥

२

जान दे हो बनवारी मेरी अङ्गिया रङ्ग भर डारी।
देखत हैं गुरुजन पुरजन मानो बात हमारी ॥
काहे को पकरत हो मनमोहन काहे मारत
पिचकारी।
एक डर है मोहे सास ननदको मानो
कृष्णरसिक विहारी ॥

ललित—धमार

हौं तोको कौन सीख दे हौं री नागर ।
तू तो होरी में अत छिन छिन में रिझावे
उनके मनही में सब रसगुणके आगर ॥
अब तुम मान गहे राखो सखी ए रिझए प्रेमसागर।
अबके मुहम्मद शाह कोऊ मनाय ले आवे तो
मरूंगी री कची गागर॥

२

मदमाते हो लालन खेलन आए री मेरे धाम ।
नीको बान कबहूं नाहीं पहनाऊं ता पर
मुक्तनकी दाम ॥

३

हौं तो हाथ बिकानो लालके जो भावे सो कहो ।
तन मन धन सब तुम ही को दीन्हों जो होनी सो
होय चहो ॥

४

मदमाते आए होरीके कहै नहीं सकुच दृग
खञ्जनमें ।
स्थल विचल हो रहे मैन नयन पान ते अधर मर
रहे रेख खञ्जनमें ॥
दृग लोचन लाल लाल हो रहे तिहारे अति
प्रेम रञ्जनमें ।
ऐसे हो आए कहांते लालन तुम जमर में भ्रमर
खञ्जनमें ॥

५

हौं गोरस बेचन जाय ना सकों सोच ठाढ़ो
कृष्ण श्याम खेले हो होरी ।

मदमाते छके बक बक सब देत गार ता पर रोकत
टोकत झकझोरत बांह वरजोरी ॥

६

नयन पिचकारी प्रेम रङ्ग भर भरके सैननहूं
तक मारी।
कुच कुङ्कुमा गुलालन हाथनके हरवा डारत
गरे प्यारी ॥
गोद अबीर नयननसे कज्जर मांग टीको हितकारी।
लाल कपाल सो होरी खेल ले पाए चतुर खिलारी ॥

७

सहज नहीं कुंवर श्याम जू अब क्यों पूछत घर मेरो।
यह तिहारे जियमें रहत है मिलवेको मन तेरो ॥
धूम धाम फागुन की या तें सब जग लोग अजान।
समझ जावो जया अपने यातें वसिये मो ढिग आन॥

८

आज आली होरी खेलनको मान न कीजै
परम पियारी।
सुख तानन नीके होरी गावत गुलाल उड़ावत
ब्रजयुवतिनके सङ्ग बनवारी ॥

९

साजन विरह वियोग खेलत है नयनन मध्य
विरहन होरी।
श्वेत अबीर गुलाल मिलो चितवन में सब
रङ्ग भरो री ॥
सियरी सास मनो पिचकारी आह कड़ाड़ होय
मांझ धरो री।
तनको चिता लगाय चित्त गह मदन अग्नि निज
जराय दयो री॥

१०

धूमधाम फाग में यातें सब लग लो आन।
समुझावत सब सखियां ऐसे वसियो मोढिग
वसियो प्रान॥

११

आज रङ्गभीने दम्पती मिल खेलत नीके रहस
रहस हो होरी।
ज्यों ज्यों खेलत त्यों त्यों रीझत सङ्ग सब सांवरे ले
और गोरी ॥

१२

यह कौतुक देखिये रुचि सो मोहन ब्रज में रचो फाग।
एक उड़ावत अबीर गुलाल एक तारी दे दे
गावत राग ॥

१३

होरी खेलें सब चायन गोपी गोप गोरस रस माते।
डफ मृदङ्ग और वंशी बजावत मनके कलोलन
सब आप आपमें रङ्गराते ॥

१४

कान्हा चञ्चल छैल चतुर चपला सो खेलत
हो हो होरी रे।
अबीर गुलाल के बादर छाए रङ्गकी परतङ्
फंहोरी रे ॥

१५

आयो होरी खेलनको सखी सखा मिल सङ्ग लिए
डफ वीणाको धुंकार।
अबीर गुलाल धुंध अति बाढ़ो गावत बजावत
मृदङ्ग कठतार ॥
चहुंओर तें नरनारी मिल गावें सब सखी दै दै तार।
राजबहादुर युग युग जीवो कायम राखे करतार ॥

१६

सारी गोरी मग मध्य माधव पाग रङ्गमें रंगारे।
सङ्गम धनो धन्य गोरी गोरी मधुर मधुर ध्वनि
राग मध्य रङ्ग सो धमारे।
सो रङ्ग सो रङ्ग गगरी में धे धे गोरी सुरङ्ग सो
श्याम मध्य सिर सो पग सो पग सो रङ्गे सोधारे ॥

१७

अच्छे होरी हो नन्दनन्दन राधा खेलें होरी।
इत श्यामा उत श्याम मनोहर अबीर गुलाल
रङ्ग घोरी ॥

ललित—पञ्चम

देखो देखो व्रजकी वीथिन वीथिन खेलत है
हरि होरी ।
गीत विचित्र कोलाहल कौतुक सङ्ग सखा लख कोरी ॥
आई झूम झूम झुण्डन जुरि अगणित गोकुल गोरी ।
तिन में युवती कदम्ब-शिरोमणि राधा जु
नवल किशोरी ॥
छिरकत ग्वालबाल अबलन पर बुक्का वन्दन रोरी ।
अरुण आकाश देख सन्ध्या भ्रम मुनि मनसा
भई बौरी ॥
रपटत चरण कीच अरगजा केसर कुङ्कुम घोरी ।
कहो न जात गदाधर प्रभु कछु बुद्धि बल मति
भई थोरी ॥

अलैया—धमार

ऐड़त कहां नन्दके ठोटा खोल गांठ कछु दे रे दे ।
बाट घाट में बोलो ठोलो रार न कीजे प्रात कन्हैया
गरज परे तो दे रे दे ॥
बिना बोहनी तोहे जान न देहौं मोल तोल
कछु हे रे हे ।
बिनै जमाल गोपाल जीके प्रभुको तिहारे दर्श
मोहे जी रे जे ॥

२

होरी खेल आई ते फाग पिया सो मोसों दुरावत
है अपने जियकी बात ।
सुरतके चिह्न दुरे न दुराए नयनन रहे कज्जर
और लसत नख शिख गात ॥

३

ए जू कालकी ग्वारन मेरो मन ले गई ।
सांझ भई अज हूं नहीं आई झूठो वचन दे गई ॥
कबहूं कबहूं परोसनके घर आवत आय देखो
है के गई ।
वा बिना तो सों कैसे खेलूं वे तो विरह की
बीज बे गई ॥

४

छैल मदमाती हो हो होरी बोले ।
हो निशङ्क वो अङ्ग लगावे और घूंघटपट खोले ॥
बातन घातन हंस हंसके आवत अपनी हो सब गोले ।
मोहन मुख निरखत री आली चेरी भई बिना मोले ॥

५

ए री चल खेलन जइये सांवरे सो होरी ।
ऐसे समय बहोर नहीं पै है मेरो मान कह्यो री ॥
अबीर गुलाल कुङ्कुमा केसर भर पिचकारी
रङ्ग पीत पिछोरी ।
मोहनके गर लाय कर जोवनको फल लो री ॥

६

होरी खेल न जाने भयो री अनोखो छैल ।
कहा कहूं कछु कहत न आवे रोकत है मोहे गैल ॥
रङ्ग भर भर और बातन घातन करत अटपटे फैल ।
मोहन मुख देखत सुध बिसरी मिटी जगत्‌को मैल ॥

७

तारी डफ बाजत मोहन छबि छाजत नाचत
गति सों आनन्द दे तार ।
बाजत ताल मृदङ्ग वीणा ध्वनि नेवरकी झंकार ॥
ग्वालबाल सब सखा सङ्ग ले भर मारो पिचकार ।
अदा रङ्ग व्रज धूम मचो है नन्दमहर दरबार ॥

८

आज तुम कैसे बन आए हो मेरे लाल ललोहे
नयन रैनके जागे ।
याही लक्षण कहे देत तुम्हारे होरीके रस पागे ॥
शीतल गात पेच लटकत पगिया के रङ्गभीने
तन सोहत बागे ।
जो तुम कीन्हीं सो सब जानत सकुच सोच रुच
होत हो मेरे आगे ॥
कहूं कज्जर कहूं पीकलीक है सबे चिह्न अनुरागे ।
महाराज स्वरूपचन्द्र पिय मुकर ले देखो अबीर
गुलाल अलक मुख लागे ॥

९

ए जू रङ्गके भोने मदमाते खेलत हो हो होरी।
कर मध्य लिये सुरासुरया मुखतें तान स्वरको बोरो॥
अबीर गुलाल उड़ावत सब पै भर भर ले ले झोरी।
ये कौतुक चल देखिये राजा उदित-नारायण
ढिग ऐसे समोरी॥

१०

डफको धुंकार सङ्ग लिए व्रजकी विथिन डोरे।
एकन को मुख कुचकुच सो मोड़त एकन को गह
बहियां रङ्गमें बोरे॥

११

श्याम बजाई मुरलोको ध्वनि सुनि मेरो मन बौरानो
सुध न रहो मोरे तनमें।
मटक पटक गज विसराई मटक रही वनमें॥
लाज सकुच सब जियातें त्यागो कहा करों
फागुनमें।
मेरे तो जियाको चैन न आवत घरना बाहरना
सोरी अङ्गनमें॥

१२

ए हो नन्द को ढोटा तेरो लङ्गराई मोसे कहो
न जाय।
राज करो यह व्रजको बसवो तापर सुख अति पाय॥

१३

हमारो फगुवा दोजे नन्दके ढोटा नहीं तो हों
लरोंगो झगर झगर।
के मुख मोड़ोंगो फेंट गहे श्याम निडर निडर॥

१४

ए री कन्हैया होरो खेलन लागि व्रजमें धूम मचाई।
बाट घाट मग रोकत टोकत मुरलो फेर बजाई॥

१५

कज्जर देहों नयनको अब कैसे भजि नन्दलाल चु मोर।
मोरी अति चटकोली कोनो है सोराबोर॥

१६

अरे हां रे कन्हाई कहा मेरे पाछे परो है सेन दे
सुध न लेन दे ऐसो वेणु बजाई।
लाज तजूंगो गांव कौरे राम राम दुहाई।
विरह वियोगको ध्वनि मोपै सुनि न जात अनसुनी
सुनाई।
सकल सभा सब सुनोरो कान दे कान्हको मारो
निकसो जात हों सताई॥

१७

अब कित जैहो भज नन्दलाल कज्जर देहों
नैनन कोर।
चूनर मेरो अति चटकोलो कोन्हीं है सोराबोर॥

१८

होरो कैसेके खेलिए आयो फागुन सङ्ग श्याम।
सगरो सखो मिल बन बन ढूंढ़े ले ले कृष्णको नाम॥
डफ मृदङ्ग लिए सङ्ग चलत है और करो यह काम।
अबीर गुलाल अरगजा रङ्ग लेके घेरो नन्दको धाम॥

१९

श्याम वलिहारो मुरलो बजावत हो प्यारो।
गोपो ग्वार मिल होरो हैं गावत कृष्ण देत हैं तारो॥
एक गुलाल ले लाल मुख करत हों और लिए
पिचकारो।
सगरो सखिनको बोरे हों रङ्गमें गोकुलके गिरिधारो॥

२०

मोहन गोपोजन सङ्ग मिल कर खेलत होरो द्वार।
अधर धरे मुरलो पोताम्बर कटिपट सोहे देखत
छवि सब नारो सुर नर मुनि मोहे वार॥

२१

अब नहीं जैहों फागुनमें उत श्याम लियो मोहि
अङ्क भरो।
मैं न कहो काहूसे जियको बालापनको बात यह रो॥
जब सुध आवत वा मुरलोको युग सम जात
मोहे एक घरो।
यो यह दर्श प्रोति है सांचो तो घर बैठे
मिलि है हरो॥

२२

धूम मचाई हो मोहन कैसेके मान रहे गो।
अबीर गुलाल केसर पिचकारी डारत अनेक रङ्ग
ढरे गो ॥
कुङ्कुमकी चोटें जब परि हैं गारो गाय डफ
सुघर घुरे गो।
डर लागत फागुनमें रसिकवर सन्मुख आय
झपट धरे गो ॥

२३

अलीया किधर रङ्ग में रङ्गे हो भोर ही आए मेरे।
सांची को रङ्ग रसिक विहारी कहां सीखे ढंग
अनेरे ॥
तुनरात बतियां सुख उघरत नयन बैन
सुख कहत है टेरे।
रसिक भ्रमर घर घर हो डोलत कहां रङ्ग
रङ्गे रङ्गे रे ॥

बिलावल—धमार

बेला वर बीत गई भोर भई अजहूं न सुध लई।
सगरी निशा मार्ग जोवत भई फाग खेलनको
चर्चा भई ॥
किन दुतियन विरमाए प्यारे होरो रङ्ग ठई॥
कृष्ण रसिक अलबेलो सांवरो कौन तिया मन लई ॥

सरपरदा—यत्

रङ्गमें भिजोई चुनरिया हमारी रसिया कुञ्ज-
विहारी ने।
देख फाल्गुनऋतु उमग उमग चित्त पूरण
ब्रह्म मुरारी ने ॥
कोजे कहा ढीठ मनमोहन त्रिभुवननाथ
उदारी ने।
करत ख्याल खुशियाल कुञ्जनमें वरजोरी
खेल खिलारी ने ॥

अलैया—धमार

रङ्ग केसर मोपै डार दियो है रसिया कुञ्जविहारी ने।
कहे रही बहुत नेक नहीं मानी मनमोहन
गिरधारी ने।
छल बल करे गुलाल मुख मसलत अबीर
लगावत वारी ने ॥
ख्याल खुशाल करत नन्दनन्दन ब्रजमध्य
खेल खिलारी ने ॥

१

रङ्ग में रङ्गगो श्रीकुञ्जविहारी फागुनको ऋतु
आई है।
तुम तो उमंग भरे यौवनको वारी वयस मनभाई है ॥
कुञ्ज कुञ्जमें होरो खेलोंगो याहो उमंग उमगाई है।
ख्याल खुशाल करो जोइ रुच चित्त वृन्दावन
छवि छाई है ॥

२

रङ्गमें रङ्गगो अङ्ग श्यामके।
आई बहार फागुनकी सखो री उमंग भरी चित्त
रुकत न रोके बसी या गोकुल ग्रामके ॥
अबीर गुलाल मलोंगी कपोलन नन्दनन्दन
सुख धामके।
ख्याल खुशाल करोंगी कुञ्जनमें उर लिपटा
अभिरामके ॥

अथ ज्ञानतत्त्व अध्यात्म-सागर।

श्रीपरब्रह्मणे नमः

स्नातं तेन समस्त तीर्थ सलिलैदत्ता च सर्व्वावनी।
अयज्ञानाञ्च कृतं सहस्त्रमखिल देवाश्च सम्पूज्यता ॥
संसारा च समुद्धिता स्व पितृस्त्रैलोक्यपूज्योप्यसौ।
यस्य ब्रह्म विचारणं क्षणमपि मनस्थैर्य्य प्राप्नुयाद्ध यदि॥

सवैया

स्थावर जङ्गम जीव जिते जगभांतिन भांतिन
भेष धरे है।
ता मह सत्य चिदानन्द भास सुआतम एक
प्रकाश करे है ॥
ता बिन जाने ते सिन्धु सो लागत जाने ते गोपद
तुल्य तरे है।

वन्दत ताहि कहै सुखदेव जो ब्रह्म सदा सब हो
ते परे है ॥

दोहा

व्यास मथन करि वेद सब सूत्र निकारे सार।
श्रीगुरु शङ्करदेव जू कीन्हों बहु विस्तार ॥

२

तिन ग्रन्थनिको समुझि मत हिय धरि पर उपकार।
भाषा करि सुखदेव यह रच्यो ग्रन्थ अति चारु ॥

३

जैसे रविकी तेज ते अन्धकार मिटि जाइ।
अध्यातम परकाशते त्यों अज्ञान नशाइ ॥

४

गुरु शिष्यको वाद अरु वेद बचन उपदेश।
अध्यातम परकाश यहु भाषा सरल सुवेश ॥

५

अधिकारी जिज्ञासु अरु शिष्य कहावे सोइ।
तप साधुनु करि देहके पापनि डारै धोइ ॥

धनाश्री—तिताला

वेद स्मृति ज्यो कहे धर्म शुभ क्रियाकर्मके।
तिन कर धोवै पाप जन्म बहु जन्म धर्मके ॥
फल अभिलाषा छाड़ि कर्म हरि प्रीति करे सब।
हृदय विमल जब होइ होइ वैराग याग तब ॥
श्रुति युकति सहित उपदेश गुरु करै शिष्य हि
पर्म धरै।
विज्ञान सहित सुखदेव कहि प्रकट ज्ञान मारग ररै ॥

२

जैसे वर्षा पाइके जोतै खेत किसान।
त्यों प्रारब्ध हि पाइ के देह सुकर्मनि जान ॥
देह सुकर्मनि जान खेंचि इन्द्रिय मन सोधे।
बवे बोज उपदेश वेदवचनमि गुरु बोधे ॥
तब उपजे दृढ़ज्ञान रीझि खेती किए ऐसे।
अनुभव फूल हि फल हि कहै सुखमारग जैसे ॥

कवित्त—चौताला

इन्द्रिन की जीतो नहीं खेंचि कीन्हों हाथ मन
परउपकार हो लो तन भाइयत है।
वेद के बखानिवे को सारासार जानिवे को वेदग्रन्थ
भानिवे को रूप गाइयत है ॥
एकरूप पंचान्यो सब हो में सोई जान्यो आपु
ते न जुदो मान्यो सो बताइयत है।
ईश्वरलो ध्यावै जो पै भक्ति दृढ़ावै जब ऐसो गवैरपा
तब ज्ञान पाइयत है ॥

दोहा—तिताला

गुरु सों पूछै शिष्य यह नमस्कार करि ध्यान।
नीके करि समुझाइये का सो कहियत ज्ञान ॥

गुरु उवाच

दोहा

भूलि गयो अब कहै सुख मार जै ज्ञास ते अपनो
आत्म भेव।
ताही को फिरि जानिबो ज्ञान कहत सुखदेव ॥

दोहा—तिताला

साधन चारि कहै गुरुन प्रथम एक वैराग।
पुनि विवेक समाधि अरु सुनि मुमुच्छ बड़ भाग ॥

अथ वैराग्य लक्षण

तिताला

ब्रह्मा इन्द्र हि आदि दे होत देह धरि भोग।
काकवोट सम यौवनै वीतरागते लाग ॥

अथ विवेक लक्षण

दोहा—तिताला

देहप्रपञ्च अनित्य है आतम नित्य वखानि।
सारासार हि जानिबो यह विवेक सब मानि ॥

अथ समाधि-लक्षण

सवैया—तिताला

वासना त्याग सदा सम है दम वाह्य सुहन्ति को
निग्रह ठानै।
दोष निर्दोष विषै उपरा मतिज्ञा सहै दुख ज्यों
सुख ही मानै ॥
सासमा वेद सुप्रमाण हि दे शरधा सो वखाने।
एक ह्वै चित्त समाधि वसै यहि भांति समाधि
अचारजको कुछ साध न जाने ॥

अथ मुमुक्षु-लक्षण

दोहा—तिताला

जन्ममृत्यु संसारते कैसे छूटिये मित्त।
सो मुमुक्षु कहिये सदा यहै विचारत चित्त॥
चारी साधन जो कहे तिन्हें युक्ति जब होइ।
तब जो पूछै आत्म गुरु कहै तब सोइ॥
नमस्कार दण्डवत् करि भेंट हस्त में लाइ।
कहौ गुरू जू आत्मा कैसे जानो जाइ॥

गुरु उवाच

दोहा—तिताला

शिष्य मुमूक्षु विचारि कै बोले गुरू दयाल।
वहै कहतु हौं जो काह्यो अर्जुन सो गोपाल॥
सामवेदके वचन हैं तत्त्वमसी पद तीनि।
जानो इनको अर्थ जिन कह्यो सार तिन वीनि॥

चौबोला—तिताला

तत्त्वमसि जीवत्व पद है असि पद ब्रह्म कहावै।
माया ते ए तीनि भेद हैं एक वेद बतावै॥

शिष्योवाच

चौबोला—तिताला

कहौ गुरू जू एक ब्रह्म ते तीनि भेद क्यों भाषे।
कैसे भए कौनके कीन्हें कौना मति अभिलाषे॥

गुरु उवाच

चौबोला—तिताला

एक ब्रह्म चैतन्य अखण्डित इच्छासी झलकति है तामें।
ताहो सो माया कहियत है नीके करि सुनि गुनि शिक्षामें॥

चौबोला—तिताला

माया जड़ चैतन्य ब्रह्म है ता सो भए आभासा।
सत रज तम त्रयगुण उपजाए तिन ते द्वैत विलासा॥
माया है प्रतिबिम्ब ब्रह्मको गुणनि सहित द्वै कीन्हें।
एक मांझ तम गुण अधिकारी दूजो रज-तम लीने॥
सत गुण अधिक ब्रह्म अरु माया सोई एइ कहायो।
रजगुण अधिक विश्वतम माया प्रकट जीव पद पायो॥

दोहा—तिताला

विश्वौ भूल्यो आपुमें तमगुणके अधिकार।
माया करि वैचित्रता कीन्हें जीव अपार॥
सो पाछे करि कहै गो जीवनिको सब मर्म।
अबै कहतु है ईशको रूप शील गुण धर्म॥

सवैया—यत्

शुद्ध सतो गुणके गुणते प्रतिबिम्बन आपन भूलन धायो।
माय हि खैंचि कियो अपने वश ईश वहै सर्वज्ञ कहायो॥
चौदह लोक रचै क्षणमें अरु मिटतु है जब चाहै मिटायो।
शक्ति अनन्त कहै सुखदेव वहै पुरुषोत्तम वेदन गायो॥

२

आपुन ही चतुरानन है सुख स्थावर जङ्गम जीव उपावै।
रक्षा करै सबको हरि है अरु जीवका ताको तहीं पहुंचावै॥
रुद्र है अन्त संहार करै सब कालनि काल है सर्व नशावै।
यो जग खेल विश्वम्भर को जैसे बालक खेलिखेलौना मिटावै॥

दोहा—तिताला

तीनि देह है ईशकी कारण सूक्षम स्थूल।
अब ताको वर्णन करौं पुरुष विराट् समूल॥

चौबोला—तिताला

प्रथम देह कारण है माया।
जाके बल सब जगत् उपाया॥
जाको आदि न कोऊ लहै।
सत्य असत्य न वेदो कहै॥

दोहा—तिताला

पञ्च तत्त्व ताते भए पहले सूक्ष्मरूप।
शब्द स्पर्श अरु रूप रस गन्ध कहत कवि भूप॥

चौबोला—तिताला

सूक्षम तिनको देह भई जो हिरण्यगर्भ कहायो।
सब जीवनको आपुन हो त्रयलिङ्ग शरीर बनायो॥

दोहा—तिताला

इन्द्री मन बुद्धि प्राण ए सबके रचे विचार।
सूत्र आत्मा कहत है ताही सो निर्धार॥
स्थूल तत्त्व पांचो प्रकट तिनते सब ब्रह्माण्ड।
नभ अरु पवन सुतेज जल अरु पृथिवी नवखण्ड॥

२

स्थूल देह वह ईशको सकल तत्त्वको जानि।
याही सो सब जीवको देही लीजो मानि॥

बिलावल—तिताला

शिर अवकाश श्वास नासिका पवन वास सूर शशि
नयन मुख अनल की करे है।
हरि-हर भुजा दोऊ हियो चतुरानन है उदर सकल
लोक वाणी वेद ररे है॥
पर्वत है अस्थि रोम सकल वनस्पति मेघमाला
वीरज पताल पांइ तरे है।
अलख अरूप जाको महिमा अनूप देखो वहै
विश्वभूप वहै विश्वरूप धरे है॥

शिष्योवाच

बिलावल—तिताला

समुझो पुरुष विराट् जो कीन्हों आपु बखान।
कबते हो कब लौं रहत कहिये सब परिमाण॥

गुरु उवाच

बिलावल—तिताला

ब्रह्मा हो की आयुते यासौ वर्ष्यो पुमान।
सुनि अब तो सो कहतु हौं ताको सबै विधान॥

बिलावल—सवैया

सत्रह लाख हजार अठाइस है युग सत्ति चहू
पद जानो।
बारह लाख नव्बे छ हजार को त्रेता तहां पद तीनि
बखानो॥
आठहु लाख हजार सु चौसट्टि द्वापर उद्वपद
धर्मके बानो।
चारियै लाख बतीस हजार कोहै कलि एक पदौ
ठहरानो॥

तितारा दोहा

लाख तितालिस बरष अरु बीते बीस हजार।
एक चौकरी जुगनको ताको कह्यो विचार॥

२

ऐसी ऐसी चौकरी जुग जब जाइ हजार।
ब्रह्मा जूको एकदिन तब कहिये निरधार॥

३

जैते जुगको दिन कह्यो तैतीये पुनि राति।
सृष्टि रचै दिनके उदै राति पुलै ह्वै जाति॥

४

ब्रह्माहीके दिवस को कल्प कहत सब तात।
जामें चौदह इन्द्र ह्वै राज्य करि करि मरि जात॥

५

वर्ष जो एक सहस्त्रको इन दिवसनको होइ।
आयु दिव्य सौ वर्षको ब्रह्माजीको सोई॥

६

ब्रह्माहीके जन्मते प्रकट होत संसार।
महाप्रलय है मरणते यहै जानि निरधार॥

७

कही कहां लगि ईसकी माया को विस्तार।
याही ते संक्षेप सौ कछु कछु कियो विचार॥

८

तत्पद ईश्वर की कह्यो जोहै सबु व्यवहार।
अब सुनु त्वं पद जीवको ज्यौ न साध संसार॥

९

प्रथमहि उत्पत्ति इसको वहै जीवको जानो।
वाके शुद्ध सतो गुण याके तम गुण अधिक बखानो॥

शिष्योवाच

तिताला

सत्त्व रज तमगुण तीनि ए माया ते कहि आए।
तिनके लक्षण कृपा करि मोहि नहीं समुझाए॥

गुरु उवाच

खट्राग—तिताला दोहा

सकल वस्तुको ज्ञानकरी बुद्धि विमल जब होई।
वहै सतो गुण जानि यै कहत सयानि लोई॥

२

लोभ लिए व्यवहार जो सो रजगुण पहिचानि।
आलस निद्रा विकलता मोह तमो गुण मानि॥

३

सच्चिदानन्द स्वरूप अनन्त सु आपु तमो गुण ते बिसरायो।
एक ते जीव अनेक बनाइ के माया कियो अपनो मन भायो॥
कारण न देह अविद्या वहै अरु वाही को नाम अज्ञान कहायो।
सूक्ष्म स्थूल उपाधि को मूल वहै प्रतिकूल सुखानं गायो॥

तितारा—दोहा

मायाको द्वै शक्ति है विक्षेप रूप आवरण।
चेतनि रूप भूलाइ के ढांक्यो अन्तःकरण॥

शिष्योवाच

तिताला

मूल अविद्या तुम कही सब उपाधि को देव।
देह लिङ्ग अरु स्थूल को आनो चाहत भेव॥

गुरु उवाच

तिताला

नासिका नयन त्वचा रसना मिलि कानए इन्द्रिय ज्ञान वखानी।
वाक नियानि निपाउ उपास्थ पदो मिलि पांच है कर्म्म विधानी॥
प्राण अपान समान और व्यान उदान हि और मनो बुद्धि मानी।
सूक्ष्मन पांचइ तत्त्वनिते ए हम चह तत्त्वको सूक्ष्म जानी॥

शिष्योवाच

तिताला—दोहा

पांच तत्त्व सूक्ष्म नित ते स अह क्या को करि कोन।
कहियै मोसो प्रकट करि को मे को प्रवोण॥

गुरु उवाच

तिताला

वाक् श्रवण आकाश ते प्रकट होत इनि जान।
वह बोले वहई सुनै दोउ शब्द निधान॥

२

तुचा पानिए पवन ते प्रकट होत रे नित।
दोउ परसन धर्म्म को निके जानत चित॥

३

नयन चरण ए तेज ते इन्द्री दोई कही जु।
वे चाहत है रूप को यै ले जात तही जु॥

४

रसना नाभि द्रवौ भई जल ते सुनि रे तात।
जानत रसके स्वाद को समुझि देखु यह बात॥

५

मूल द्वार ओ नासिका ए पृथिवी ते दोई।
वहै ठिकानो गन्ध को वाहि ज्ञान सबु होई॥

६

प्राण अपान समान अरु व्यान उदान हि जानु।
पांच ठिकाते सब नर्कनि धा वै॥
पुण्य औ पाप समान दोउ महिमा न सहै कुल मे छवि छावै।
जो सुखदेव ललाट लिखो सुघटै न बढ़ै अरु जाइ न आवै॥
आत्म एक विचार बिना हि भांति सुजोवनि।
कर्म्म नशावै नेति भए एकै पवन बपांनु॥

७

पांच भूतके अंश मिलि उपजो मन अरु बुद्धि।
सब इन्द्रिनके स्वादको है ताही ते शुद्धि॥

८

पांच प्राण ह्वै बुद्धि मन इन्द्री दसौ गनाइ।
पांच तत्त्व ते ज्यौ भए त्यौ सवर पे जनाइ॥

९

कारण जो पहिले कहि आए अरु या लिङ्ग समेत।
कर्म्म भोग कोबेके काजे स्थूल देह धरि लेत॥

शिष्योवाच

तिताला

कारण सूक्ष्म देह ह्वै कहो सु समुज देव।
अब कहि ये करि केकशल देह को भव॥

गुरु उवाच

चौबोला—तिताला

महाभूत पञ्चो कृत ह्वै करि सञ्चित कर्म्म उपावै।
सुख अरु दुखके भोग करन को स्थूल देह छवि छावै॥

शिष्योवाच

दोहः—तिताला

पञ्चीकृत समझो न मैं जो तुम कह्यो समान।
ताते फिरि विस्तार सों कीजै प्रकट विधान॥

गुरु उवाच

तिताला

महि कठोर अरु द्रवत जल तेज उष्णता जानु।
चलति वाउ खाली जहां तहां अकाश वषानु॥

२

एक तत्वं के पांच करि पांच न ते पच्चीस।
पांच अंश न्यारे रहें निश्चित कीने बीस॥

३

अस्थि मासत्व गरी मनाटिका प्रगट पञ्चभूय।
रेत पित्त अरु स्वेद लार पुनि रुधिर नीर ह्वय॥
भूख प्यास सुखप्रभा नींद आलस हितै जगनि।
धावनि कूदनि चलसिकुर पसरनि जु पवन भनि॥
शिर कण्ठहुं दय अरु उदर कटि यह अकाश
विधि पञ्च लहि।
इमि पञ्चभूत पञ्चीकरण करि पचीश सुखदेव कहि॥

४

एक एक ते पांच करि कहेसु सव पच्चीस।
कौन तत्त्व में को मिल्या सुनौ सो चिन्त देवीस॥

५

एक एकके नौ करे पांच सो पैंतालीस।
पांच राखि चालीसके है द्वै कोनि बीस॥

६

हाड़ मध्य पृथिवी रही मास नीर रसतेजु।
त्वचा पवन मिलि कै भई रोम अकाश कहे जु॥

७

बीज मुख्य जल जानिये पित्त तेज मिलि होइ।
स्वेद पवन मभू रुधिर मवला रङ्गगण जुत जोइ॥

८

छुधा मुख्य तेज रसो प्यास पवन मन आनि।
सुखमा जल आलस अवनि नींद अकाश बखानि॥

९

धावनि मुख्य समीर है गगन पसारनि माहि।
कूदनि तजु सकोचु भुय चलनि नीर बिन नाहि॥

१०

शिर अवकाश जु शब्दमय कण्ठवा पुहिव ते जु।
उदर नीर जुत जानि यै कटि भुयगन्ध कहे जु॥

११

भूमि अस्थि जल रेत अरु तेज भूख पहिचानि।
धावनि पवन अकाश शिर पांच नि गालिस जानि॥

१२

पञ्च अंश ए राखि कै भए बीस यौ लीन।
ज्यो नर पगिया परसपर बदलत परम प्रवीण॥

१३

यहु सबु पञ्चीकरण को तो सौकह्यो विचारु।
देह स्थूल धरि जीव यह करत भोग संसारु।

१४

धे कुमोह जल अग्नि पुनि क्रोध मूल यह जानि।
वाई काम सकै वेर तु है लोभ अकाश वखानि॥

१५

तीनि देह तो सो कही कारण सूक्ष्म स्थूल ।
पञ्च कोसको भेद पुनि ताही माह समूल ॥

कवित्त

अन्नमय स्थूल जानि प्राण प्राण मैव जानि पांच
कर्म्म इन्द्री अरु मनु मनोमय है ।
पांच ज्ञान इन्द्री अरु बुद्धि विज्ञानमय कारण
अविद्या सो तो आनन्दमै लय है ॥
तीनि देह माह पञ्च कोष सुखदेव काहि नीके
कै विचारि देखु भ्रम ही को भय है ।
कोसु है न कोऊ कहि देहऊ न सोऊ एक आत्मा
को जोऊ जा मै आनन्द को चय है ॥

शिष्योवाच

चौबोला

सञ्चित कर्म्मनिके पहिले हो स्थूलदेह तुम माषो ।
कर्म्मनिके लक्षण सुनिवे को मेरो मति अभिलाषो ॥

गुरु उवाच

दोहा

सञ्चित अरु प्रारब्ध ए क्रीयमान त्रय कर्म्म ।
सुनि हो नीके कहतुहौं तिनके अद्‌भुत मर्म्म ॥
एक जन्मके कर्म्मफल भुगुतै जन्म अनेक ।
सञ्चित ता सो कहत हैं सुखदुख सहित विवेक ॥
एक जन्मके कर्म्मफल भुगुतै दूजो देह ।
सो प्रारब्ध कहावई सुनि अब सहित सनेह ॥

सवैया

गर्भ वसै नरकै पशुदेह जरायुज योनि तहां
पद पावै ।
पक्षिन आदि जो अण्डज योनि निरंतर जाइ
तहां छवि छावै ॥
खेदतै खेदज को उत्पत्ति जु चीलर और
जुयासु कहावै ।
उद्भिज्ज वृक्ष तिन कनि भो इहि भांति सुजोवनि
कर्म्म भ्रमावै ॥

२

पुण्य करै सुरलोक है अति पापनिते सब
नरकनि धावै ।
पुण्य औ पाप समान दोऊ मद्दिमाव सह कुलवक्ष
विछावै ॥
जो सुख देवलिलार लिख्यो सो सुघटै न वढ़ै अरु
जाइ न आवै ।
आत्म एक विचार बिना इहि भांति सुजोवनि
कर्म्म बनावै ॥

३

कीट पतङ्ग करै पशुपच्छि अधोगतिमैं जल जीव निभावै ।
कै सुरलोक बसै सुर ह्वै कबहूं सुरराजको
सम्पत्ति पावै ॥
मानुष ह्वै सुखदुख सहै घर नीचके ऊचके लै प्रकटावै ।
आत्म एक विचार बिना इहि भांति सुजोवनि
कर्म्म भ्रमावै ॥

४

✓जाग्रत मै सब विश्व बनाइ विलास करै बसि
नयननि हेरै ।
ताही को वासना वासित ह्वै सपने मह आनि
मनोरथ घेरै ॥
सूक्ष्म स्थूल शरीर दुयो भ्रमते अति होत
सुषोपति नेरै ।
तोनि अवस्थाव मै सुखदुःख लहै सो तो एक
अदृष्टके प्रेरै ॥

दोहा

इच्छा अनिच्छा परइच्छा त्रिविध कर्म्मके भोग ।
जन्म आदि आमरण लौ कहत विवेको लोग ॥
कर्म्म होत प्रारब्ध ते मूरख जानत नाहि ।
मानि लेत अब मै कोए क्रीयमान सो आहि ॥
अन्न वरावत करममा मिलेते फिरि अन्न ।
वो इह प्रारब्ध ते यो सम उत हैं तन्न ॥
ज्ञान उदय विहोत हो सञ्चित कर्म्म विलात ।
क्रियमान हो ते नहीं प्रारब्धै रहि जात ॥
देह तीनिम जीवको कहो सहित विस्तार ।

जाते तेरे चित्त मैं उपजे आत्मविचार॥
पांच भूतते देह यह ता काउ वोजानि।
सांचों एकै आत्मा सो विचारि मन मानि॥

सवैया

भौतिक देह सदा जड़ है कहं आत्म चेत निजो तिहि सानी।
देह अनित्य मरे जन्मे वह आत्मा नित्य अखण्डित जानी॥
देखिये देह अमङ्गल रूप सुआत्मा शुद्ध अदृष्ट वषानी।
ता कह एक कहै नर मूढ़ कहा उनते पशु और हि मानी॥

दोहा

षट् विकार हैं देह मै ते आत्मा के नाहि।
सुनि अब तिनके नाम पुनि समुझि देखु मनमाहि॥
उपजति है अरु बढ़ति है काल जुवा पुनि होइ।
वृद्ध होति अरु मरति है षट् विकार ए जोइ॥
दोष दसी है देह मै ता करि आत्मा हीन।
सुन पुनि तिनके नाम अब यथा कहत प्रवीण॥

दशदोष लक्षण

सवैया

शुद्ध अशुद्ध मरो दुर्गन्धि लसै बहु षंड़ सुस्थूल निहारी।
रोग ग्रसे बहुं भाति जरे शिथिलै पुनि आमिष अध्रु पकारी॥
हो तिनि होति घनै दिन मै छिन मै मिटि जाति न लागत वारी।
देह सदा दश दोष भरो यह आत्म ब्रह्म अदोष विचारी॥

दोहा

वेद कहत सो मै कहत तू पुनि चित्त विचारु।
आत्म चेतनि नित्य है देह अनित्य निहारु॥

शिष्योवाच

दोहा

तुम जो कहो सो सबलषो स्थूल देह मे नाहि।
याहि छाड़ि उरहो धरत लिङ्ग देहमें आहि॥

गुरु उवाच

पञ्चभूत जड़ ते कहे सूक्ष्मकी उत्पत्ति।
अलख अनादि अखण्ड है तु तो आत्मसत्ति॥

शिष्योवाच

देह होत चेत त्यजि हि इन्द्री तेहि समतूल।
प्राण होऊ की और नहि यहो कहति हौ मूल॥

गुरु उवाच

सोवत मे भूखन हरत जानत नाहो कोइ।
प्राण सोई चेतन्य तो पकर चोरहो सोइ॥

सवैया

कानको कामुन नाक करे अरुणके कोका मुन कान पै होई।
आंखि कोका सुन आंखि न जोई॥
हाथ को कामुन पाइ करे अरु पांइ को कामुन हाथ हि सोई।
जानत आपनी स्वादहि को दश इन्द्रियन माहन चेतनि कोई॥

शिष्योवाच

दोहा

स्वाद परस्पर औरके इन्द्री जानत नाहि।
तते एज वुहै सवे हो चेतनि मनमाहि॥

गुरु उवाच

पञ्चभूतके अंशके मनु उपज्यो पहजानि।
सब इन्द्रिनके स्वाद को ताते है पहिचानि॥
वात सुनत हूं सुनत नहि कहत नहीं मनु ठौर।
ताते यहै विचारि पै चेतनि है कोउ और॥
सुखपति इन्द्री सहित मनु मिलत अविद्या माहि।
जाग तु है तव कहतु है आजु कछु सुधित गहि॥
सपनोऊ देखोन कछु सोइश पोइहो रीति।
यह जानि जेहि जानते हि यहै ज्ञानकी नीति॥
पञ्च तत्त्व ते होत मनु ज्ञान भए मिटिजात।
ता को नश्वर कहत है जाके उतपत्ति पात॥

सदा अनादि अनंश है सो आत्मत आई ।
ताहे यहै विचारि के छांड़ि अज्ञके माई ॥

शिष्योवाच

सतह मै सोरह कहे रहो जु वाको बुद्धि ।
जानत हौ चैतन्य यह जाको सबको शुद्धि ॥

गुरु उवाच

अहङ्कार मन बुद्धि चित्त एक कहत है चारि ।
एक कहत है बुद्धि मन अन्त:करण निहारि ॥
जैसे एक पवनके प्राण कहे है पांच ।
तैसे अन्त:करणके चारि भेद पुनि सांच ॥
जब चाहतु है वस्तु कछु चित्त कहत है ताहि ।
जतन कल्पना जब करे मन कहियत है वाहि ॥
मय हलो नोले तुही अहङ्कार यह जोइ ।
सबको जब निश्चय करे बुद्धि कहावे सोइ ॥
जैसे वांभन एकके नाम क्रिया ते दोइ ।
रोटी करे रसोइ पाप टेते पाठ कहोइ ॥
आत्म है बुद्धि ते परे यह जो कहो भगवान ।
अरु पुनि आत्मबोध मे शङ्कर बोध निधान ॥

गीतायां

इन्द्री पर है विषयते मन इन्द्रिन पर जोइ ।
बुद्धि कही ताते परे बुद्धि आत्मा सोइ ॥
सुखदु:ख इच्छा राग ए सवे बुद्धिके धरम ।
सुखपति मेए सब मिटे रहत आत्मा परम ॥

शिष्योवाच

कही आपुत सुझो सो मे देह दोइ मे नाहि ।
अब आत्म काशो कहत या शरीरके माहि ॥

गुरु उवाच

अज्ञाना वेधनोया न्यारे न्यारे तैं लखे सब होके गुण रूप ।
जानत नाहो आपको यह अज्ञान अनूप ॥
कारण मुख्य उपाधिको है तीसरी देह ।
आदिन ताको जानिये अन्त ज्ञानको गेह ॥
अहङ्कार बुद्धि को कहे तू जानि देहि जगाइ ।
जगि है परमानन्द जब मे तु जगत नसाइ ॥

यहै अविद्या नींद है स्वप्नतुल्य संसार ।
ब्रह्म लखे जब आपु को जागत यहै विचार ॥

शिष्योवाच

रूप कौन है ब्रह्मको का विधि बसै शरीर ।
कहिये मो पर करि कृपा जो नसाइ भय भीर ॥

गुरु उवाच

तानसेनोक्त कवित

मन बुद्धि इन्द्रिनको कारण चलाइवे को सकल
उपाधिन ते न्यारो रहै गात मे
जैसे घट मोह व्यापक आकाश अरु न्यारो सुखदु:ख
निते देसो अवदात मे ॥
जैसे रवि ज्योति आगे सोवत ते जीव जागे
उठि उठि काम लागे सबै प्रभात मे ।
अज अविनाशी परिपूर्ण प्रकाशी सुखदेव सुखराशि
औसो नित्य लसै आत मे ॥

२

दाहक प्रकाश कहै काट की अग्नि जैसे चेतनि
प्रकाश कहै मन बुद्धि गात मे ।
मन चक्षुरादि छुते न्यारो सबकाल जानि मन
चक्षुरादिहु को मन चक्षु तात मे ॥
मन चक्षुरादि निते पाई येन रूप जाको अतिहि
अरूप एक अद्भुत गात मे ।
अज अविनाशी परिपूर्ण प्रकाशी सुखदेव सुखराशि
एसो नित लखे आन म ॥

३

मुखको आभास जैसे दर्पण मे देखियत मुखते
न न्यारो ताहि सुनियत बात मे ।
ऐसे ब्रह्म चेतनि को बुद्धि मे आभास यरो ताही
सो कह जीव बहुविध गात मे ॥
दर्पणके टारे प्रतिबिम्ब मिटि जात जैसे ब्रह्मको
विचारि देखे जीव मिटि जात मे ।
अज अविनाशी परिपूर्ण प्रकाशी सुखदेव सुखराशि
ऐसो नित लखे आत मे ॥

४

रविके प्रकाश पाए लोचन विलोके रूप तैसे
रवि ब्रह्म प्रकाश अवदात मे।
जैसे एक सुतमा उड्ड निगम पोहियत तैसे एक
चेत बुद्धि मनमके गात मे॥
सबही मे एक वहै सबही ते न्यारो रहै गगन
समा नयन मिलत काहु वात मे।
अज अविनाशी परिपूरण प्रकाशी सुखदेव सुखराशि
ऐसो नित लखे आत मे॥

५

सच्चिद आनन्दस्वरूप एक आत्माको बिम्बपरे
बुद्धिन अनेक लेखियतु है।
जैसे एक रविके अनेक सर्वमा उजलके प्रताप
न्यारे न्यारे पेखियतु है॥
कर्मनिके बस जीव सुखदुःख भोग करे नीच उच्च
मध्य जोनि मध्य भेविषतु है।
पवनके वस सरवरनिके जल जैसे चञ्चल है कोउ
थिर देखियतु है॥

६

दीठि को छपावे घनु अज्ञ जाने भानु छप्यो ऐसे
शुद्ध आत्मा को बुद्धि उन मान्या है।
कहै सुखदेव जैसे श्वेतमणि मे न रङ्गपाश धरे
जाके ताके रङ्गनि मे सान्यो है॥
जैसे जलमा उपजो चन्द्र प्रतिबिम्ब आई जलके
हलावतहु हालत सो जान्यो है।
ऐसे जड़बुद्धि माउ देखि प्रतिबिम्ब चिर मूढ़ निले
ब्रह्म को जगत माह आन्यो है॥

शिष्योवाच

दोहा

मम शरीर है आत्मा जड़ शरीर सी नाहि।
विषय भोगको करतु है यह संशय मन माहि॥

गुरु उवाच

विषय भोग विजम रचे यारो स्थूल शरीर।
इन्द्री कर सो करत है भोजन बुद्धि मन धीर॥

गीतायां

इच्छा सुखदुःख है अरु धृति चेत निसम्धात।
यह सब छेद विकार है न्यारे आत्मतात॥
देह कहतु है आपु सील वलगि कहिये अन्न।
ब्रह्म लखे ज्ञानी वहे आत्म अज्ञानतम॥
तु छुरो संसारने निश देह रहि नित।
लखु आयनको आत्मा यहे मुक्ति है मित॥

कवित

सदचिद आनन्द स्वरूप स्वप्रकाश जाको सम
सबहीके उर अन्तर रहतु है।
अचलअखण्ड अक्रिय अनन्त अति अद्वय अरूप
इन्द्रि मनन गहतु है॥
निर्विकार निराधार निर्विकल्प निराकार कूटकत
निर्गुण निरन्तर लहतु है।
आत्माको ब्रह्म जानि देहको असत मानि पण्डित शयाने
ज्ञान याही सो कहतु है॥

दोहा

वनाश्रम अभिमान है जोलो हियमें जात।
वेद स्मृतिको सासना तोलो सबे प्रमाण॥

कवित

पाप अरु पुण्ये दोऊ मटिया प्रवल जाके लोक
अरु वेदरीति वासनको वारीके।
काम क्रोध लोभ मोह कोल निसो राख्यो जरिका ते
सुखदेव चक कर्मनिके चारिके॥
आश्रम वरण अभिमानको जञ्जीर जन्यो सुखओ
दुःखकी किवार तोरि डारिके।
भूलको मिशावारिरूप आप नो सत्यारि सिंह
निकसो प्रबोध जग पिञ्जरा को कारिके॥

२

देही नाही इन्द्री नाही मन बुद्धि प्राण नाही कारण
अविद्या नाही ओर सुख जे कहै।
वर्ण आश्रम करो माउ नाही जाति कुलधर्म नाही
करता अकर्म नाहि भोग तान ते कहै॥

मायाको विलास नाही इसको प्रकाश नाही जीव
चिताभास नाही भांति भांति से कहे।
जागरत स्वपन सुषुप्तिको लखैया सदा तुरिया
प्रकट बोधरूप ब्रह्मए कहे ॥

शिष्योवाच

दोहा

यह तो जानो आत्मा तुव प्रसादते देव।
अब कहियेत तुमस्यको कहिवेहे भेव ॥

गुरु उवाच

यहु सवुत्वं पद जीवको तुम हि सुनायो रूप।
अब सुनि असिपद अर्थको जोहे सवको भूप ॥

अथ असिपदका अर्थ

गुरु उवाच

दत्त्व दुई स्वर सो कहे त्वं पद जीवन खानि।
असिपदब्रह्म अलिप्त है यामे दोनो जानि ॥
वह ईश्वर सर्वज्ञ है जीव सदा अल्पज्ञ।
सम कहिये जो दुहुन को तो न मानि हे अज्ञ ॥
तत्त्वपद मानो सिन्धु है त्वं पदहन्द समान।
असिपद यानो दुहुनमें ताहि एक करि जान ॥
तत्त्वपद मानो भूप है त्वंपद जान किसान।
असिपद मानसको कहे ऐसे मानत जान ॥

शिष्योवाच

देवदत्त वहमानई मिल्यो विभो जुत मित।
फिरि वह देश्योधिपति जुतक्यो करि आवे चित ॥

गुरु उवाच

वास गएको विभो त्यजि अवको त्यजो विपत्ति।
दृष्टि करे जो देह पर तो वह इहे मुक्ति ॥
ईश्वरको सर्वज्ञता सो विद्याते जानु।
जीवनको अल्पज्ञता ताहि अविद्या मानु ॥
जे उपाधिको मूल हे तिनको उठो जासु।
शुद्ध गई जो ब्रह्म हे एक आत्मा मानु ॥
जैसो देहे जीवके ते सहे जगदीश।
न्यार नारो कहु तु हो दुवो एककरि रोस ॥

कवित

जैसो देह वाके ब्रह्म अखण्ड है प्रकट रूप सोयाके
स्थूल जामे हाथ पांइने पिये।
वाके हे हिरण्यगर्भ दूसरो शरीर याके सक्ष्म कहा
वेतन्त सचह शुभे पिये ॥
वाके आदि विद्याजाते होत सब काज सिद्धि
याके है अविद्या जाते भूलो अवरे विये।
वा सो जगदीश यासा जीव वहि परे एक ब्रह्मके विचा-
रे तो न जोव ईस देखिये ॥

दोहा

त्यजो ईस को ईसता और जीव अविवेकु।
तीनो पदको अर्थ यह तत्त्वमसि है एकु ॥
तत्त्व तुहो है यह कह्यो तत्वमसिको अर्थ।
यह श्रुति जाके भई सो सब भांति समर्थ।
जो कोई जग जानई अर्थ तीनिको भेउ ॥
मेटे द्वै एके गहे अमर होउ सुख देउ।
सामवेदके वचनको कह्यो सबै विस्तार ॥
तैसे चारो वेदके महावचन है सार।
अहं ब्रह्मास्मितिजयर्वेदस्य ॥
प्राज्ञामानन्द ब्रह्मो स्मिन् वेदस्य।
अयमात्मा ब्राह्मति अथर्वन वेदस्य इति महावाक्य ॥

२

ईश जोव अरु ब्रह्म है जैसे एकु बखान।
यहे अर्थ सब वचनको बुधिबल जानो जान ॥
सद चिद आनन्द अद्वैत अचल अखण्ड अनन्त।
स्वप्रकाश कूटस्थ अज अलिप ब्रह्म अमन्त ॥

शिष्योवाच

द्वादश एके ब्रह्मके कहे विशेषण ताम।
न्यारे न्यारे है कहो अब तिनके गुणगाम ॥

गुरु उवाच

दोहा

असत जगत सत सो लगत जाको सत्ता पाइ।
सो सद ब्रह्मस्वरूप है ज्ञान विना नल पाइ ॥

कवित

जाग रत स्वप्रकाश जो होति जाको चेतनाते सुषुप्ति
तवा में वहै साक्षो सो विशेषिये ।
तीनि हु अवस्था निते भावा माव भाव रूप तुरिया
स्वरूप एक रस अवरेखिये ॥
जैसे लोह चुम्बक समीप करै चेतना कौ तैसे
देह इन्द्री मन आत्मा सो लेखिये ।
एक रूप जगमैं जगमगाति जाकी जोति जहां तहां
जानु चिद चेतनिसो देखिये ॥

आनन्दरूप कवित

देख सुनै सूंघै खावै चन्दन तुचाकी लावै वचन
बनावै नोके जाकी जे लगतु है ।
हाथन ग्रहन करै पाइन चलन करै जोई छिप धरै
ताहे सुख मैं पगतु है ॥
कहै सुखदेव विखै मिले गव भावतो तो सुख सो
लगत पाछ मानहु टगतु है ।
आनन्दस्वरूप ब्रह्म आनन्द अखण्ड जानि स्वप्नेको
आनन्द सो आनन्द जगतु है ॥

अद्वतीय लक्षण

दोहा

एक आत्मा मे वसत स्थावर जङ्गम देह ।
जैसे मणिका मालके सूत माझ गणि लेह ॥

अचल लक्षण

देह होति अरु मिटति है ताते चञ्चल मानि ।
जन्म मृत्यु जाके नहीं आत्म अचल वखानि ॥

अखण्डलक्षण

कवित

नाहिन जाके सुजाति कहै अरु दूसरो जाति
सुकौनु गणावै ।
आपुहु नाटन भेदु कछू श्रुति नासिका नयन
सुपाइनि धावै ॥
रञ्जनन सूक्ष्म वेद कहै मन इन्द्रिन के सुनि
कैसेहु पावै ।
चेतनि एक अखण्डलरूप कहै सुख आपु को
आपु लखावै ॥

अनन्तलक्षन कवित

प्रथमहि माया सो प्रवेश है अकाश वाई तेज नीर
पृथिवी मे व्यापक अनन्त है ।
थिर चर जीन्द जे तें जगमैं जगमगत सबमें प्रकट
एक चेतनि भनन्त है ॥
जैसे घटमट मध्या पहिले अकाश घिरे तैसे
घट घटन हि आपुही सनन्त है ।
रूप है अनन्त जाको महिमा अनन्त अरु आदि
नाहीं अन्त ताते आत्मा अनन्त है ॥

स्वरूपप्रकाश लक्षण

कवित

और वस्तु चाहिये तौं दीपक प्रकाशियत दीपक
जो चाहिवेको दीपक न चाहिये ।
और सब देखिवेको आंखि सुखदेव जैसे आंखिनके
देखिवे को कौनु अवा गाहिये ॥
रविको प्रकाश पाए सब मैं पकाश होत रवि मे
प्रकाश जैसें खत इस राहिये ।
अग्नि मैं दाहक प्रकति जैसे आपुहोते तैसे
स्वप्रकाश एक आत्मा सो आहिये ॥

कूटस्थालक्षण

दोहा

जाके नहीं विकार कुछ रहत कूटकुत ।
नित सो कूटस्थ रहावइ समझि देखु चितमित ॥

अजलक्षण

घटका कारण मृत्तिका ब्रह्म जगतको जानि ।
आदिरहित कारण रहित अज करि ताहि वखानि ॥

अक्रियलक्षण

आत्म है अक्रिय सदा देह क्रिया बहुरूप ।
जैसे दोप प्रकाशते खेले ज्वारो जूप ॥
विषै वुधि पातु रतन चे अहङ्कार ठिग भूप ।
इन्द्रि ताल मृदङ्ग जुत आत्म दीपक रूप ॥

ब्रह्मलक्षण

विहाग

शेषके सहस मुख जोभ द्वै सहसता तेन मनए नाक
नित लेत रहियतु है।
एकु ब्रह्म अखण्ड जाको पावत न पारु कोउ ऐसे
ऐसे कोटि कोटि वोम लहियतु है॥
करे सुखदेव एकु अद्वय पुरुष जा सौ नेतिनेति
कहै न प्रमाण कहियतु है।
सदचिद आनन्दस्वरूप अविनाशी अङ्ग पूरण प्रकाट
प्रारब्रह्म कहियतु है॥

दोहा

ए द्वादश विस्तार सौ कहै विशेषण चारु।
ऐसे जाने आप को यहै वेदको सारु॥

शिष्योवाच

न्यारे न्यारे सब कहे वलविक्रम अरु नाम।
रूपका नहै ब्रह्मको लह्यो ज्ञानके धाम॥

गुरु उवाच

अप्रमा अद्वैत है औ चैतन्य सुभाइ।
मन इन्द्री गहि सकत नहिं क्यों करि वरनो जाइ॥

कविता

काननको नाद नाहि जोभको सवाद नाहि
वचनको वाद नाहि जुगति सौ जो कहे।
आंखिको देखाउ नाहि नाकको सुवाउ नाहि
कर को गहाउ नाहीं पाइनको रो कहै॥
मन करि जानो नाहि बुद्धि अनुमानो नाहि दूसरो
प्रमाणो नाहि प्रकटत्र सो कहै।
असति प्रपञ्च शक्ति कैसे पहिचाने नयन आपु
सुखु जाने दूजो जाने बिन को कहै॥

दोहा

एक ब्रह्म अद्वैत है ताको उपमा कौन।
बिन उपमा समुझै नहीं अन्न कहावै तौन॥
जो लच्छण आकाशको वहै ब्रह्मको देखि।
यह जदु वह चैतन्य है यहै भेव पुनि लेखि॥

कवित

व्योम हो मैं सात उरसात लश्री सात लोक व्योम
होतके माझ लोकालोक लेखियतु है।
व्योम मैं जगत अरु जयत मैं व्योमसे घटघे मांउ
अरु न्यारो देखियतु है॥
कहै सुखदेव जैसे जोव जग भेदवा मे तैसे घटमट
भेद यामे भेखियतु है।
और सब लच्छण समान जानि व्योमके पै ब्रह्म
माझ चेतन ता सो विसेखियतु है॥

शिष्योवाच

दोहा

कह्यो प्रपञ्च सत्य अरु सत्य ब्रह्म सो एक।
दू जो तपो असत्य क्यो रहै एकको टेक॥

गुरु उवाच

एकै केवल ब्रह्महै भेद प्रपञ्चन जानु।
नित्य अनित्य विवेकके दूरि करत अज्ञानु।
जो कह तो यह पहिले हो देह आत्मा एक।
तो आत्मा न जान तो गहि लेतो यह टेक॥
देह आत्मा भिन्न करि मम तु छुड़ाई।
भयो आत्मा आपु जब तब सबु एकै आई॥

अरिल्ल

एकमेव अद्वैत अद्वाह ब्रह्म यह भेदु है।
और वस्तु कुछु नाहि भेद अनभेदु है॥
यहै वार अद्वैत सिद्ध करिहो गहै।
जानि आपु को आपु मुक्तिपद वो लहै॥

दोहा

जग को कारण ब्रह्म है यह निश्चय करि जोइ।
भूलिन मन मे आनिये कारण करि जोइ॥

शिष्योवाच

दोहा

कारण तौं द्वै भांति है उपदानसे निर्मित।
कहिये ता मे कौन है वह अविनाशो नित॥

गुरु उवाच

कार्य्य कारण ब्रह्म है दुह भांति तेहि जानि।
उपादान अब कहति हो फेरि निमित्त वखानि॥

परज

माट सौ कहत घट काट सौ कहत मट सुत सौ
कहत पट पोटि पाटि आनिते।
लोहे सौ कहै कटारी पीतरि सो कहै झारी
कासिसौ कहत थारी भोजनके सानिते॥
कहे सुखदेव जैसे जल सौ तरङ्ग कहे तुग वाहे
तावे माझरा गुल पिटानिते।
कनक सौ कङ्कन औ किङ्किनो कहत जैसे ब्रह्म सौ
जगत कहे ध्यापुविन जानिते॥

२

नगर गन्धर्व जैसे वादर मे देखियत नोलता अकाश
मांझ खाली को धरमु है।
जैसे सखा उड़ आगपर उसा निशि लागे जी वरी
अंधेरे माउ सांप को भरमु है॥
कहै सुखदेव जैसे फटिक कौड़ा माने लाल को
अङ्गार जाने जानत मरमु है।
रूपोसी ससे तनि मेनीर लेखि रेरनि मे ऐसे ब्रह्म
चेतनी जाक गमरमु है॥

३

उसमा के दोनि जैसे छोटो ऊ बड़ो सो लागे दूरिते
निहारे बड़ो छोटेऊ लगतु है।
सो लस तुहे कांचको धरनी मालनीर ओसो
देखियत नीर माह कह कहु कांच सो वलतु है॥
नाउके चलत रूख तीरके चलत लागे वादरके
टौरे मानो चन्द्रमा भगतु है।
जैसे इन्द्रजाल भमया घको परे वा भासे तैसे
ब्रह्म चेतनि मे भासत जगतु है॥

शिष्योवाच

दोहा

ब्रह्म नित्य चैतन्य है जगु अनित्य जड़ जानि।
उपादान क्यों करि भयो जड़ को चेतनि मानि॥

गुरु उवाच

पापाकुल

जो तुम देहै इ करि मानत।
देही क्यों नहि ब्रह्म हि जानत॥

गुरु उवाच

दोहा

चेतनिते जड़ होति है जड़ते चेतनि होइ।
यह प्रत्यच्छ हो देखि के संशे डारी खोइ॥
यह शरीर चैतन्य है ताते नख जड़ होइ।
गोवर जड़ते प्रकट है गोवरीड़ा चिद सोई॥

शिष्योवाच

यह तौ जानी जो कह्यो उपादान की रीति।
अब निमित्त किहि भांति है सो कहिये करि प्रीति।

गुरु उवाच

साविविद अरु सुमृतिको धरे ग्रन्थ बढ़ि जाइ।
ताते उपमा युगुति सौ प्रकट देत समुझाइ॥

परज

जैसे घट कारज को कारण कहत दोइ
उपादान माटी औ निमित्त सो कुम्हारु है।
ओसे पञ्चतत्त्व गुण तीनि है
जगत भयो आपहो ते जीय ईश आपु कर तारु है॥
माटी औ कुम्हारु न्यारो एक कहे सो तुमाटी
ताते और उपमा दे कोनो निरधारु है।
जगका निमित्त उपादान जैसे मकरी है
तैसे भांति जगको विचारु ब्रह्म चारु है॥

दोहा

कारण करि कह्यो यह तो सो व्योहार।
कार्य्य कारण ते परे सोहे तत्त्व विचार॥
चिद विलास पर पञ्चयहु दुष्कर वे कृपाल।
मिसिरि इन्द्रापनि मिले वाकई होइ दयाल॥

कुण्डलिया

जैसे घटको घट कहे माटी कारण होइ।
घट त्यजि माटी के कहे काको कारण होइ॥

काको कारण होइ ब्रह्म जग ऐसे जानो।
जगुतजि ब्रह्मै कहि प्रकट निरुपाधि वखानो॥
पिता पुत्रते होइ पुत्र बिन पिता न जैसे।
कारनही मिटि जाइ तजि कारजके जैसे॥

कवित्त

चेतनि कहो जो कहुं श्रोर जड़ होई कोऊ सत्य
कहोतो जो असत्य श्रौर लहिये।
आनन्दस्वरूप कहो जो तोसो कजानो कहुं एवा तो
कहो जो दूजो रूप श्रौर गहिये॥
तो कहीं अखण्ड खण्ड श्रौर होई कछु चल श्रोरु
होई तो अचल यहि कहिये।
जानि यह वेद सुखदेव नेति नेति कहि आप को
विचारि चुपचाप आपु रहिये॥

२

अज तो कहो जो देखा श्रौर को जन्म कहुं अक्रिया
कहो जो करताव्र श्रोरु लहिये।
कुटवत कहीं जो लोहारवत होई कोऊ अन्त श्रौर
होई तो अनन्त याहि कहिये॥
स्वप्रकाश कहो जो देखे या श्रौर होई कोऊ
ब्रह्म तो कहो जो जीव ईस श्रोर गहिये।
गूंगो गुर पाइ ताको स्वद न वखानो जाइ आपु
हो को पाइ चुपचाप आप रहिये॥

दोहा

ऐसो ब्रह्मस्वरूप है ताहि आत्मा जानि।
अब तेरे प्रारब्ध नहिं कछू लेहु जनि मानि॥

कवित

सोवतमें जैसे देह धरिके मनोरथके पूत भयो
काहूको खिलायो तिन वारेते।
शिशुता निवारो पुनि वेद पढ़ि चारों
सबु कुटम सम्हारो काका बाबा अरु सारेते॥
कहि सुखदेव नाति पूत उपजाए भांति भांतिन
सिखाए पाप पुण्य पूरे पारेते।
जागत हो जैसे सब सपनेके ऊठे जाने जगतको
जाने तैसे आत्मा विचारेते॥

२

सोवत सपन मांहदीन जैसे राजा होत जागत मे
लेसु ताको रंचक न लेखिये।
जैसे का वांउ पूतको लराइके यो राहनेको जाके
ताके जाइ करिउट अवरेखिये॥
कहै सुखदेव जैसे गंगनको गुफा माझ फूले
अरविन्द ताको सौरभ विसेखिये।
तैसे झूठ जगतमें झूठा ई सरीरु जानि ताके किए
काम कैसे साचे करि देखिये॥

दोहा

ब्रह्म रूप तवही हतो जब हो अज्ञ सुभाइ।
ज्ञान भए कछु श्रौर नहिं वहै ब्रह्म अब आइ॥
भूले को समुझावहो वेद श्रौर गुरु लोग।
करत श्रौरते श्रौर नहिं क्रियाकर्मके योग॥

कवित

कोरीदसचले गाऊं वोच नदो उतराउ पैरि
पैरिके सुनाई पारभ्रत आयो रहै।
जोई गने सोई आपु को न गने लेखे एकु वड़ो
अवरेखे महा सोक उपजायो है॥
श्रौर जब पंथी आए न्यारे न्यारे समुझाए गनि कै
दसोनत ए तव सुख पायो है।
ऐसे सुखदेव गुरुदेव उपदेश करि तेरोई स्वरूप
फेरि तोहि समुझायो है॥

शिष्योवाच

दोहा

जानो तुम परसादते अपनो आत्मस्वरूप।
अनुभव कासों कहत है श्री विज्ञान अनूप॥

गुरु उवाच

चिद सद जानत ब्रह्मको तोलो कहिये ज्ञान।
ब्रह्म आपुही को लखे सो विज्ञान निदान॥
जैसे नर अज्ञानते कहत देह सो आपु।
त्योंही जब ब्रह्मै लखे ज्ञान हृदय आलापु॥

शिष्योवाच

युक्त भयो संसै गयो लख्यो आपनो रूप ।
रही देत व्योहार सो का विधि कटै अनप ॥

गुरु उवाच

भांति भांति भोगनि करै करै दङ्गवर होइ ।
पापपुण्य लागी नहीं वोजन आदिक जोइ ॥

अष्टावक्रावच

दोहा

जीव ईस अरु जगतको आतम जानै जोइ ।
मनमें आवै त्यो रहै ताहि न रोकै कोइ ॥

गीता

लोक वेदकी रीति सब ज्ञानो कोने जाइ ।
जाके धर्म हि देखिकै जगत धर्म ठहराइ ॥
जैसे तब अज्ञान में चलत हतो जेहि रीति ।
ते सो विधि अबहु चलो तजो कर्म सो प्रीति ॥

कवित

नर सो जनमु न धरमु वेद शासन सो विप्र सो
न वर्ण श्रोसर आश्रम न गेही सो ।
कर्मसो न प्रवल न अवल विषे लम्पट सो जग सो
भरमु न भूलैया श्रौर नेही सो ॥
गुरसो न वेद उपचार न विचार ऐसो अज्ञ सो न
रोगी श्री असज्जमो न एही सो ।
मन सो उपासक सुबुद्धि सो न सङ्गो श्रौर देह सो
न द्योहरा न देव श्रौर देही सो ॥

दोहा

यहु वेदान्तक को कह्यो सब सिद्धान्त विचारु ।
सबे समुझिये आपु में सब में आपु निहारु ॥
लाख लाख हृद्या करे ग्रन्थनि माह विचारु ।
सो मतु वहुसङ्क्षेप सो भाषा मांह निहारु ॥
जैसे साम्हरि लोनके ढेरसेल स्यम जोइ ।
लोनै पैसा एक भरि काजु आपनो होइ ॥
हतो जो कछु पक जानिवे जानि चुको तु सोइ ।
श्रौर जु शास्त्रनिके मतै भूलि न तिन तन जोइ ॥

श्रीगीतार्थ

यज्ञादिक कर्मनि करै देवलोक फलभोग ।
मीमांसा मुक्ति हि कहै दुःखको भयो वियोग ॥

पातञ्जल

जीव ईस न्यारो कहै पातञ्जल सब काल ।
दहै कालसनि जोग करि कहै मुक्ति सुख लाल ॥

सांख्य

प्रकृति पुरुष अरु तत्त्वको जाके होई विवेकु ।
यहै मुक्ति सांख्यकहै ज्ञान भए सबु एकु ॥
वैशेषिक अरु न्याय पुनि दोऊ तार्किक जान ।
भेदवाद इनके सदा मुक्ति पदार्थ ज्ञान ॥
आगम तन्त्र पुराण पुनि पञ्चरात्र मत जानि ।
खैचि आपमें पंथको डारत जगमें आनि ॥
श्रौरजु शास्त्रनिके मतै परै जगतमें जाइ ।
कल्पनि लौ छूटै नहीं जन्ममृत्युते माइ ॥
अपनै मत यह वेद शिर सबते उत्तम जान ।
ताही को विश्वास करि भूल श्रौर मतिमान ॥
सठ धूरत अरु नास्तिकनि वेद विरोधी श्रोर ।
तिनहि न भूलि सुनाईये पडु यतु मति सिरमोर ॥
जिनके उर हरि भक्ति है श्री गुरु भक्तिनिदान ।
तिनके आगे षोलिवो यहु उपदेश निधान ॥
वेद सुमतिके वचन को कह्यो सुखदेव विलास ॥

इति श्रीअध्यायप्रकाश समाप्त ।

——*——

श्रीहरि गुरु सच्चिदानन्द सत्यनाम
परब्रह्मणे नमः ।

अथ आलापचारी

दोहा रागिणी सोरठ तीनसौ साठ ताल

एकताला—आदि

धिन् तक् धिकत्रा धिं धिं धाग तुन्ना किटि
कबीर संवत पदरहसे श्रोर चांमो मगहको योमबन ।
अगहन सुदी एकादशी मिले पवन सो पवन ॥

सम्बत वारे सौ ओर पाचमे ग्यनी कीयो विचार।
काशी माहि प्रकट भयो शब्द वाह्यो टक सार॥
कबीर सबसो हिलीये सबसे मिलिये सब
का लीजिए नाम।
हांजी हांजी सबसे किजिये बसिये अपने गांव॥
शीव वन्दगी कहत है सत्य नाम गुरु कृपाल।
शिषकु आशोष करत है गुरु की दया ततकाल॥
अन्य उपासन राम बिनु अगर सुएसो रीति।
भूसे पर को लीपने अरु वारुकीभीति॥
कबीर हरिका नाम ले तज माया विष कीज।
बारम्बार न पाइये मनुष जन्मको मौज॥
कबीर ओठ कण्ठ हाले नहीं नहिं जिभ्या
नाम उचार।
गुप्त वस्तु को जो लखे सोई हंस हमार॥
कबीर शून्य मण्डलमें घर किया वाजा शब्द रसाल।
रोम रोम दीपक भया प्रकट्या दीनदयाल॥
कबीर उतते कोउ न आई जाको पूछू धाय।
इत ते सब कोई जातहैं भार लदाय लदाय॥
कबीर नाना वाणी बोलतो सो कित गयो विलाय।
यह संशय माजि नहो कौन कहे समुझाय॥
कबीर चलो चलो सब कहत है मोहि अंसो ओर।
साहबसे परचे नहो बैठोगे केह ठोर॥
कबीर विरक्त जो ठूठे वीजको वीज विरक्तके माहि।
जीव ज्यो टुट ब्रह्मको ब्रह्मजीके आहि॥
कबीर रामनामकी लूट है लूट सके तो लूट।
फिर पाछे पछतायोगे जब प्राण जाएंगे छूट॥

सोरठ

कबीर जैसे माया मनरमे तैसे रामरमाय।
तारा मण्डल छेदिके तव अमरापुर जाय॥

२

काल करे सो आज कर आजु करे सो अब।
पलमें परलय होयगो बहुर करेगो कब॥

३

कबीर हरिसंग शीतल तू भया मिटो मोह
तन ताप।
निशि वासर सुखनिधि लहै तब अन्तर प्रकट न
आप॥

४

कबीर पाला हरि नामका अन्तर लेहु लगाय।
रोम रोममे रहा ओर अमल कहा खाय॥

५

कबीर आगीके दिन पाछे गए हरि सों कियो न हेत।
अब पछताए होतका चिड़िया चुगगई खेत॥

६

कबीर आगि आगि दवजरे पीछे हरोया होय।
बलिहारी वा वृक्षकी जड़ काटे फल होय॥

साहाना

सुनतही गुंगा भया जाखतही मर जाय।
एक अचंभा देखिये मरा कालको खाय॥

२

करि स्नान लागो तिसको तिसबिन रहो न जाय।
ध्यान मिलावोत सकुति देखि ति सजाय॥

३

कबीर कबीर क्या करे सोधो आप शरीर।
पांचो इन्द्री वस करो सोई जास कबीर॥

सोरठ—चौताला

निरञ्जन निराकार पार ब्रह्म परमेश्वर।
परमात्मा एकही अनेक होय व्याप रही सब संसार॥
अलख ज्योति अविनाशी आदिनाथ अगोचर
अनादि तुही एक करतार॥
तुही पवन तुही पारती तुही धरनी तुही आकाश
तोही ते सकल व्यवहार॥
तुही ब्रह्मा तुही विष्णु तुही शिव तुही शक्ति सुरनर
मुनि ज्ञानी ध्यानी तुही सर्वसार॥

२

अलख लखो नहीं जापरो मनमें कहां कानो वहांवास।
घट घट पूरण व्याप रह्योहै जल स्थल श्रो आकाश॥
एक अनेक अनेक एक हो न न्यानो नामीन प्रकाशत ज्यो चन्द्रसूजो प्रतिविम्ब आकाश॥
कहूं गावत ककतु तरुणई प्रखात काल कालके हातहै मोहि भरसानाहि।
यह तन काचाकंभ है विनसि जाय छिन माहि॥
घरी पहरको सुध नहीं करे कालका साज।
काल अचानक मारि है ज्यों तीतरको वाज॥
खोजत खोजत जुग गए मया जी गुण सगुण।
हेरत हेरत ना मिलो न बहारी वावावे चुन॥
अबके बिछुरे कब मिलोगे कहा धरोंगो घराव।
शिरसों पो सन्मुख लरो अवजिन करो कुदाव॥
जलको शोभा कमल है दलको शोभा कील।
धनको शोभा धर्म है कुलको शोभा शील॥
हद हद करते सब गये वे हद गोय।
वे हदके में दान मे रहे कबीरा सोय॥
उठो कबीरा कहा सोवे जागनको कर चोंप।
एकदम छिदे लाख हे गिन गिन हरि को सोप॥
राम रहस कबीरका पाया दास ज्यो सूर।
बाकीरहा सो तुलसी गायो अब गावे सो कूर॥
सुआ कबीरा काहेको भजले कृष्ण मुरार।
एकदिन सोना होयगा सोलेवे गोड़ पसार॥
चलती चक्की देखके दिया कबीरा रोय।
दोपर भोतर आयके सावित रहान कोय॥
आशपाश में ओपड़े निपट पोसान होइ।
तसो के लोसे लग रहे वांको पोसे न कोइ॥
खूटो पकड़े जो रहे ताहि न छूवे कोय।
रामनाम के नाम सो भव सो पार जो होय॥
राम नामको खेती किया काट लिया सब सूर।
तुलसीदास ले विनोया ज्या प्रकाशे चन्द ओसर॥
मिश्रीका एक पर्वत चूटी पहुंचो जाय।
चांच भरके बहलोया पर्वत लोया न जाय॥
कहनी बड़ी बीरको गोरख बड़ो जू ज्ञान।
रहनी बड़ि जू दतको शङ्कर बड़ा जू ध्यान॥
चन्द्रग्रहणका शील गो सब सखो दोनो सोन।
एक सखो लि गदो एसो को सखो कारण कोन॥
त्रिषावन्तको मोन भई गई ताल ततकाल।
सर सूखे आनन्द भयो कारण कोन जमाल॥
वायस राह भुजंग हरि लिखत त्रिया ततकाल।
लिखत मिटावत फिरि लिखत कारणकौन जमाल॥
आजु अमावस सदनिघर शशि भोतर नन्दलाल।
बीचे पड़िवा पर गई कारण कोन जमाल॥
तनको तनक सराय मो कन हन पायो चेन।
खासन गारा कूचका वाजत हे दिन रेन॥
बाबुल तब क्योन बरजोया अन लागो मेरे नेह।
रोम रोममें भोजया अब कैसे छुटे सनेह॥
बाबुल वेद बोलाइया पकर देखाई वाह।
भूला वेद न जानता कलक कलेजे माह॥
वे गये बाबुल वे गए नदो किनार किनार।
आपतो पार उतरि गए हमहि छाड़ि मझधार॥
बाबुल गांउ नदो जीए समझ समझके सुधार।
ओर गाठ सब खुलत जहां लग गई लगन अपार॥
प्रेम गांठ सरके नहीं सरके शिरके साथ।
शिर तो विकारे नाम को धरे शिरे ले हाथ॥
शिरके हरिके मिल गया चरणकमलसे आन।
शिरके साटे हर मिले तोर वस्ता जान॥
गया तो घरहे प्रेम का ओर खाला धरनाह।
सोस उतारे भूधये जब बैठा घर माह॥
जाओ वेदध आपनी हमरी आह न लेह।
भेदाढो दुःख बरहको तु क्यां दारु देह॥
मन सुरासूलो चढ़ो यह विधनो सोस।
प्रेम सुखा लो जानके कोई मत करयेरो रोस॥
करम लिखो सोई लिखि घड़ो मोन करवार।

हस हस जितना देत हे साजन ऊपर वार ॥
जात जातको पाहुनो जात जात पे जाय।
साहव जात अजात तरे सब घरत ह्या समाय ॥
काम विना पारस पवर अषे वृच्छ किएवार।
तुलसी हरिकी भक्ति बिन गृह तव भले उजार ॥

दोहा

आशको देशकि लालोता दे दरठो लवजाय।
हसन कुड़ोया करण सु जागाकि दरा कलम
ले आए ॥

२

चिकड़ अग लगो मरड़ाठे सातु विरहे न फुकज
लाए।
कका लेया रदो खारसाले पुष ताया रगवाए ॥
नाम सुनोया रन चूड़ीया नानि बाहुयार।
किन सो लावो दोस्तो सब जग चल सेहार ॥

तिताला

घायल घूमि दर खेड़लो छुट पङ्क दे नेन।
बरछी लागी प्रेमकी जब निकसे तब चेन ॥
प्रेम नगरमें आयके उलटो देखो जाल।
घायल चुन चुन मारिके खूनो फिरे खुशाल ॥
क्याशा याहो क्या लेखन नहीं क्या नहीं
लिख ले हार।
क्या हमसे अवगुन भया क्या मन दिए विसार ॥
कर कांपे लेखनी डिगे अङ्ग अङ्ग अकुलाय।
सुधिआवे छाती फटे पाती लिखो न जाय ॥
पन घटका गजवो खड़ो पियाकोन।
जब पोय न छुटत छुटत दोनो छुटे उत पटका
इत प्राण ॥
लाल सुपारी प्रेमरस तन चूना मन प्राण।
तुम विन धोन जावने अब लागे महो जान ॥
पृथिवो एक डग करे दरोया करे छाड़े हाथ।
पर्वत काड़े एचके सोइ गए कालके साथ ॥
मेरु उड़ावनहार जी धरा करे कर वोच।
सो भट खाए मशक सिस कान कट लता नीच ॥
मेरी मेरी कर सबहो गए मिटो नहो कबु आश।
काम क्रोध मद लोभ वश फिर फिर कानटि पाश ॥

कबीर शब्दसारङ्ग लभ—एकताला

तुम तो भले विराजो जी।
ओड़ीसा जगन्नाथपुरीमें भले विराजो जी ॥
आप अछे विराजो जी।
बलभद्र जुटे मैया ठाकुर भले विराजो जी ॥
कबको छोड़ो मथुरानगरो कबको छोड़ो काशो।
झाड़खण्ड में जाय विराजे वृन्दावनके वासो ॥
(ठाकुर बलभद्र)
द्वापरमें छोड़ो मथुरा नगोचे ता छोड़ो काशो।
द्वारकापुरोमें ओपाश धारे श्रीगोकुलके वासो ॥
(ठाकुर बलभद्र)
अठा दे नाले चोको लाग जो लो जानन पावे।
गुदड़ोयाका झाट लागे नागानट बजावे ॥
बङ्गालिन बेटो परम सुन्दरो उसका नैन सलोना।
गोविन्दको गति गोविन्द जाने करे बङ्गालिन टोना ॥
सोलह गजको सारो पहरे जिसको लाल किनारो।
ससुर जेठको लाज न करे आधोटाङ्ग उघारो ॥
ओड़िया मांगे खोचड़ो बंगालो मांगे भात।
साध मांगे दरशन महाप्रसाद ॥
तुम तो भले विराजो जी।
गलो गलो में नारोयर फेलो घर घर ठाकुरवारो।
मारकण्डे वट कृष्ण रेहनो गांसि ध्रुववारो ॥
नोलचक्र घर ध्वजा विराजे मस्तक सोहे होरा।
ठाकुर आसे दासो नाचे गावे दास कवोरा ॥

राग—भैरव

आपहो धरमधारो ठाकुर आपहो खेल खेलारो है।
तबु तो असमानाए जमो दुलो चाड़ारो है ॥
चांद सूरय दोउ मसलत बनाए तेरो कुदरत
न्यारो है ॥

आशावरी

राम नामको चोपड़ माड़ी पांसा जुग संसारी है।
जाको गोटीपकी घर आए सोई सुघर खेलारी है॥

२

हम जीते तो पीको पावें पी जीते हम ला राहै।
सात पांचकी कची पचि सोनेहु लोले डारी है॥
द्वादश वाट आटारे राहे पड़ा श्रीरचा लेहे भारी है।
छके पछे छुट जाय तबजब नही रहे संभारी है॥
जाके उपर साहव राजी जिसका जगत भिखारी है॥

आशावरी सोरठ—पस्ती

हम नहे इस्क मस्ताना हमन कौंहे शदारी क्या।
रहे अजादया जग सोह ननद दुनीया से यारी क्या॥
अहो हो हो अहा हा हा अहो हो हो अहा हा हा।
खलक सब नाम अपनें सो बहुतके शिर पटक तोहे॥
हम् न गुरु ज्ञान आमल हे हम् नको नामदारी क्या॥
(अहो…)
जा जन बिछुरे पीयासे सो भटकते दर विदर फिरते।
हामारा या रह हममें हमन कौं इन्तजारी क्या॥
(अहो…)
न पल विछुरे पिया हमसे न विछुरे हम पिया रे।
सजन से प्रीत लागी है उनो कौं वेकरारी क्या॥
(अहो…)
कबीरा साद है वांका रहे सत शब्दका वाका सो
चालना राहना जु कहे हम न शिर वोझभारी क्या॥

रेखता—गान्धार

समझ मन सोच अब कौना गुरूसें पूछ नहिं लीना।
कहां से रङ्ग यह आया न कोई मोहि बतलाया॥
है कोई गांवका वासी देखावो ख्याल परकाशी॥
बतावे गण्वका घेरा मिटावे पलकका फेरा॥
सफत रग किन कही आवें बड़े कोई भागसे पावे॥
सुरति यह रङ्गकी प्यारी पपीहो पो पिउ पुकारी।
न आवे हाथ यह बारनो शिधारो जायके शरनो॥
पिया जिन प्रेमका पानी सन्तजन लेहि पहचानी।
कबहि यह मोहि न भूले विरह वेभोक ज्यों भूले॥
चरण कबीर संतके धोवे सदा सुख अमृत जो पीवे।
यह धर्मदास बर मांगा सदा हरिचरण में पागा॥

सोरठ—यत्

सखी मोहि वाही देशको जाना जाको नाम न जान् ठिकाना।
जहां टूट जाय सब फंदा जादुबयां नहीं कछु धन्धा।
जहां उगी नहि शशिभाना॥
जहां पीर पैगम्बर न देवा जहां रिषि मुनि असुर न भेवा।
जहां कुफर इसलामसमाना॥
जहां जाना न कोई भावे जहां किरितन कोई गावे।
जहां जाय कर फिर न आना॥
जहां बपुराअन वमना जहां कुरान किताव न मुलना।
जहां पूजा निमाज न ध्याना॥
जहां अन्ध नहिं उजियारा जहां भूख न प्यास जहारा हां पूजन आदि जमाना॥

२

जहां आग न पवन नहिं पानी जहां मरत जीव नहिं जानी।
जहां जाय चढ़ परवाना॥
जहां न कसर गणहो माना।
जहां सोउ पीया गलबाही तहां दूसरा नहीं तही वाही जहां प्रेम सोहाग काना॥

३

जहां नाद वेदउ भावा जहां सफरी सगरी माया जहां पीया रच्यो मोरा गौना॥
जहां लागी प्रेमकी बाड़ी जहां फूल गुलाबन बाड़ी॥
जहां फूलो है मरुवा दौना॥
जहां रङ्ग रूप नहि रेखा जिन नैन न साहव देखा।
जहां पायो जीव अस्थाना॥
जहां जात न पांत विवेका।
सब घटमें एकही लेखा।

जहां सब जग एकहि ठाना ॥
ब्रह्म सागर रङ्ग उजागर सच्चिदानन्द अमृत आगर
कृष्णानन्द रङ्ग रङ्गाना ।
गो हंसा करो ने निवासा हो अमरपुर खासा ॥
आवे नही दिन तहा आवे नही राति ।
जागत पुरुष बसत बहु भाति हो ॥
लगे नही भूख तहां लगे नहि प्यासा ।
अमृत भोजन करो सुखवासा ॥
जात नहि पांत तहां वरण विवेका एकहि रूप
सकल घट देखा ।
आंख नही कान जहां रूप नरखा विन नैन तहां
साहब देखा ॥
नरनार नहि पशुपक्षी न सुरमुनी नाग न पेखा।
नही श्वेत पित रङ्गराते नहो काहुके वे साथे ॥
वह आपही अलख अलवेला कहि गुरु ताके
नहीं चेला ।
सागर रूप उजागर एका नाही दूसर आप अलेखा ॥

कनाड़ी—तिताला

साचे मनके मीता प्रभु तुम साचें ।
कब शिवरी काशी कर आई कब पढ़ आई गीता ।
जूठावेर विश्वम्भर चाखोघरीब पलछिन वीता ॥
यज्ञ दान कब कियो नो धोया तीरथ जल कद पीता।
बांह पकड़ घर लीयो राम के मन हो के परतीता ॥
कब करमा बाई भोर सुमरके चौका सञ्जम गोता ।
हो नन्दलाल गोपालके नित उठ खिचड़ी दीता ॥
साच समान ओर जग नाही जुग जुग संत कहीता ।
कहे कबीर बसो घट जाके साच सकल जगजीता ॥

२

बोलो राम पिंजरके सुआ ।
सोच विचार घटही में देखो धंधा करत
सकल जगमुवा ।
बोलो काल मञ्जारी ले जायगी हार चले जैसे
ज्वारी का जुवा ।
अन्तसमय कोउ काम न आवे मरे कहत कुवा कुवा ॥
स्वारथके सब लोग बटाउ धनसम्पत ने छुवा ।
कहे कबीर सुनो भाई साधोसन्तनके मुख अमृत
रस चूवा ॥

खम्माइच

झूठा जगत पसारो जो राम देख लोभाना ।
जो आया सो सबही जायगो क्या राजा क्या राणा ॥
(जो राम)
दीपक देखके पतङ्ग लुभाना जल वलखाक समाना
(जो राम दे)
काम क्रोध मद लोभ मोह बस निश दिन यहि
मनमाना (जो राम)
यह संसार मृगतिसना है नाहक भरम भुलाना ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो हरिके चरण चित
लाना (जो राम)

कानड़ा—तिताला

कहा मागु कछु थिर न रहाई।
यह जग देखत चलोहे भाई ॥
एक लक्ष पूत सवा लक्ष नाती रावण घर दीया
न बाती ।
लङ्का सा कोट समुद्रसी खाई ता रावनकी खबर
न पाई ॥
कहा मागु जो आया सो सबही जायगे राजा
रङ्क अमीर वादसाई ॥
कहे कबीर रहे नाम हरिका विन और न करो हे
सहाई ॥

कलिङ्ग—तिताला

कोइ सुनताहै गुरुज्ञानी गगनमें ।
अवाज होती झानो पहले आए नाद विन्दसे पाछे
जमाए पानी घट घट पूरन पूर रहाहे अलख
पुरुष निखानी ॥
वहांसे आए पटालिखाय तृष्णा नाहि बुझानी ।
अमृत छोड़ विषे रस पीवे उलटे फास फसांनी ॥
ज्यो कछु देखा नजरही पेखा अजर अमर निशानी ।

कहे कबीर सुनो भाइ साधो यह अगम निगमकी
वानी ॥

भाटियाल—तिताला

चरखा देहो बनाय वठैया मोरो मितवारे ।
पानीसे पेदा कीयो रे नगर बसाए जाय ।
एक अचंमा अचजो म देखो सखी रो बेटा
वाप ले जाय ॥
बावारे एक व्याह कराय दे अच्छा वर खोज ल्याय ।
ज्यो खोजे तब वर नाही मिले हमरा तुमरा च्याय ॥
सासरुसे सङ्गुरु रुसे व्याह खसम ले जाय ।
एक तो वठैया ना रुसे जिन चरखा दए बनाय ॥
ज्यो यह चरखा लखे पड़ेगा आवा गमन मिट जाय ।
कहे कबीर सुनो भाइ साधो चरखा लख्यो न जाय ॥

आशावरी—तिताला

ज्ञानकी आंधी आई साधो ।
सबही उड़ाने भरम कोटटी रहत न माया वाधो ॥
दो चितके दोउ खे भ गिराए मोह वलि ड़ाटाए गई ।
त्रस्ना छान परी घर दुरमत हाड़ा फढ़ा अमृत
वरषा मुक्ति जल वरषत पोए हरिरस अघाई ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो ध्यानमान दोउ आई ॥

२

एरी वाको भेद न जाने कोई ।
डालीके भीतर वहल चलत है हलमे खेती वोई ॥
हाथीने अङ्कुश वस कर लीनो शिर मारत है भोई ।
जिन पायो तिन नींदम आई भूखो परके सोई ॥
वहरो सुने दूरकी वातें अंधरे माला पोई ।
दुखिया उमग उमग गुण गावे सुखियागए सबरोई ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो सबही सवानप खोई ॥

भाटियाल—तिताला

हमारे गुरु भूले कुराह वतावो सत्गुरु तीन
छन्द ले गावे ।
छपरमेकी मरिवो जङ्गलमेकी लकरो गड़रीयारो
वकरी वो वो वकरि लकरि मकरि ॥
वो जुलाहाकेरा ताना तंवोला केरा पान तानवाई
कारा नानवो नान पानातामा ।
वनीयाके राहि गाभेसो केरा सिङ्गा महादेवका
लिगावो लिगा सिङ्गाहि गा ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो या सन्तनका मेला ।
यह वातका मरम जो जाने वहे गुरु हम चेला ॥

कलिङ्ग

कौन वध प्रीतम पाइये ।
गुरु रहि लगावो चंचलताइ छोड़ देइ थिरताई
ले आवो ॥
कलह कल्पना मेटके चरणन चित लावो ।
अरध उरध विच वामहे जहां सुरत रमावो ॥
अष्टसिद्ध नवनिधमें तनहु न विलसावो ।
इड़ा पिङ्गला सुषुमना जहां ज्ञान हृष्टावो ।
कहे कबीर गगनमण्डलपे मोहे भुला भुलावो ॥

कलिङ्ग—तिताला

वङ्गला खूब बना हदवेश जाने नारायण वोले वोलेरे
साधो परमेश्वर वोले वङ्गला अजव वनाहदवेश
जाने ना ।
इस वङ्गलाके दश दरवाजा वीच पवनके खंभा ।
आवत जात कोई न देखा यह भा वड़ा अचंभा ॥
पांच तत्त्वकी भीत बनाई तीन गुणोके गारा ।
भरम भ्रमरकी छान छवाई चिह्न न चेतनहारा ॥
पांच पचीस पातुरो नाचे मनुवा ताल वजावे ।
कहे कबीर सुनो भाइ साधो बूझे सो फल पावे ॥

२

हम न मरे वमरीहै संसारा ।
हर मर होतो हमहु मरसे हरण मरे तो हम काहे
मरे विचार ॥
हर हममे हम हरमे निशदिन अलख निरख
नहे निराकार ।
हरहि हम हम हरहो दोशत सब जगव्याप रहो
करतार ॥

मरेंगे नहीं रहेंगे सदाही गुरु अमृतवचन
पीवे आधार।
कहे कबीर मरेंगे सोई जा घटमें नाहीं हरि उचार॥

३

नर जाने अमर मोरी काया एक कुआ
पाचों पनिहारी।
पांचो सोचे अपनी वारी औघट घाटकुअना
टेठ कुमलाय गई वो पांचो क्यारी॥
सहस पाखरी एक शरीर तनमन भजले दास कबीर
अपने गुरुको हो बलिहारी॥

४

जमसे नाही डरु आवे साहब याद रखु गावे।
सुरत निरत काखो दुला मेरे दिल अर्दर दोड़ाउ।
पुरुष प्रताप हाथ लेकर सनमुख लड़के आउ॥
और सवक सवाके आकरमे हजूरो पाजी।
काम क्रोधको गरदन मारु साहब राखु राजी॥
कहे कबीर सुनो माइ साधो विरला जाने कोई
जोरा परका होरा साध सन्तनको सीस निवाउ॥

सिन्धु—तिताला

क्यारे सोवे तू मोहनिशामें जागत नाहि कूच
नियराना।
पहले नकारो अनहद वाजो दूजे बैन सुने नहि काना॥
तीजेनैन दृष्ट नही आवे आइ पहुंचा परवाना।
हाथी कूटे घोड़ा कूटे छुट गए यह महल खजाना॥
भाई बन्धु पिता सब छूटे छूट गए यह लोक जहाना।
परी है पुकार नगरकसबेमे रे यत लोग सवे अकुलाना॥
पूरण चन्द्रको सई है तयारी छिनमें दीपक
भवन बुझाना॥
रक्षा कौन करे नगरीके मालक मुखिया पेलोपुराना।
कहे कबीर यही गत सबको भज मन पूरण
ब्रह्म अमाना॥

कलिङ्ग—तिताला

राम रस ऐसा हैरे माई ज्यो पीवे सो अमर होय जाई
आगे आगे दव जरे रे पोछे हरीया होय।
बलिहारी व वृक्षको जो जड़ काटे फल होय॥
कुम्भ घटा विच जल वरषत है जल विच
कमलत होय।
ज्ञान कथा विच मन्द रहत है विनगुरु ज्ञान न
बूझे कोय॥
मैं घर जारूं आपनोरे लीए सुरेड़ा हाथ।
दूजे जारूं तिस केरे जो पगे हमारे साथ॥

२

घर जारे घर उवरेरे घर राखे घर जाय।
एक अचम्भो य सुनो रे मड़ा कालकू खाय॥
नाम रसायन जो पीवे जाके वर खरसो सन होय।
जखलमें जिन शिर दियोरे बहुर जनम नहिं होय॥
ज्यो रस पीयो नाम देवरे और पीयारे दास।
पीवत कविरा ना छक्योरे और पीवनकी आस॥
ध्रुव पीयो प्रह्लाद पीयो और विभीषण दास।
हनूमान नारद पियो श्री शुकमुनि वेदव्यास॥
महादेव ब्रह्मा पियो सनकादिक आस।
रुक्माङ्गद अम्बरीष पीयो सागर भयो वैकुण्ठे वास॥

भटीयाल—तिताला

तेरो बनत बनत बन जाई हरि सों लागा
रहु रे भाई।
जा तन लगी सोई तन जाने दूजा क्या जानेरे भाई॥
ऐसो ध्यान धरो घर भीतर आवा गमन मिटाई।
वंकालागो वंकालागो लागो सदन कसाई॥
धना भगत को ऐसी लागी तुंवामें गउनि पाई।
सेनानो केवट लागो लागो मोरावाई॥
बलष बुषारे ऐसो लागो छाड़ि चले वादसाई।
ध्रुव लागो प्रह्लादे लागो नारद वीण वजाई॥
शिव सनकादिक लागि रहत है कवहूं न पीवत
अघाई।
इस नगरी में घायल घुमड़े धावन विसरे भाई॥
सुरत निरतको कमठा कीनो अन्दर पड़ी लड़ाई।
जलदी जलदी वजे नगारा फौज चले हरसाई॥

सतगुरु बैठा खेत बतावे सूरकरे लराई।
यमराज सों युद्ध मचावे वीर होय सो जाई।
कहे कबीर सुनो माइ साधो हारो तो राम दुहाई॥

बहौरी—तिताला

होय पीय पीय धुन होय अवरे नहोय रमण लामारे।
अवरेण हर मन लागी ला पी पीया कहे भई बावरीरे।
नेहर डारुषाय अब नयन हर मन लागे पीया
सबहोके होय जो तुक चाडु सासुरे॥
पीय जुरल सनेह सुख ठाटड़ो हो रहोरे जल भल
भई खाक जरत आगन अममन्तररे।
दास कवीरके मङ्गलारे जाने विरला कोय जाने सो
पहचाने रे।
तेरा कबीर उहा तनहो जाव कोई एसा होय
कोउ एसा होय अवरेने॥

कलिङ्ग—तिताला

क्या नयना झमकावे ठगनी क्या नयना झमकावे रे।
रुपा पहरके उपा देखावे सोना पहरके रिझावे॥
गले बांधके तुलसोको माला तीन लोक भरमावे।
कदु काठ मृदङ्ग यास्तोबु काट मजीरा यद चुवाना
यत भेश पद्मनी मेड़क ताल वजावे॥
कमर बांधके मदहा नाचे जट विष्णुपद गावे।
गदहाके शिर मोर बाधके नाचे बालम खोराट॥
विरक्ष चढ़ी मछली फल तोड़े मेड़क चुन चुन खावे
भेश पदमनी मंगल गावे उठहो रीझ रीझावे।
धरती वरषे अवर धावे अलख हि लख के जगावे॥
रूप रेष रङ्ग नहि जाके सो नैनन दरसावे।
कहे कबीर सुनो भाइ साधो यहो अचम्भा आवे॥

२

राम नाम कहोरे मन होए गरभवास भक्तिके
कबुली अब क्यासो चन विकल शरीरा।
आधो धरतीरे चुओखेषाइ आधोमे रह गई पीरा॥
कहे कबीर सुनो भाइ साधो हरिके चरण मति धीरा।

३

लूभजो न सगर वाहसां पनीयाको गईलो त्योरे।
सगर दुलभ भई गोरे को हाथ कुट घोइए कुटकोई
नहो वाते पुछे सुन सखीयारे॥
कजरा दई जरा बोलेरे विरहो।
सात पांच सखी मिल चलली महातम सुन
सखीयारे॥
उहो रे नैहरवा पीतम ड़ोलेरेको।
दासरे कबीर एक निरगुण गावे लगाए सुनावल
कवहुं न यह जाग आय वरेको॥

विहाग—तिताला

अस कोई नगर करे कोट बलोया मास विछायगो
घार घवरीया।
मूस मए नाव विलारी खेवे नइया॥
दादूर सोवे सरपर खवरिया।
सुतल कुकरा कुनवट भूखे॥
साहव टनवर चोरवाहो मूसे उलटि सिह सायाल
स भजे।
कबोराके पद कोई विरला बूझे॥

विहारी—यत्

देखहु रे गुरुग मस्ताना।
इङ्गला पिङ्गला, चमर डुलावे निशदिन सुख मन
करता निशाना।
पश्चिम दिशाके खोल किवड़ीया गगन मन्दिर सहज
चलि जाना॥
गुरु गोविन्दमें ध्यान लगीहै मगन होय पलटे वोराना।
सुरत लगाय रहो घट भीतर छिनमे कबीर वेड़ा
पार लगाना॥

कलिङ्ग—तिताला

ध्यान धर हरिजना रे जासोहंसा निर्मल होय।
दिल दरियाव सुरत सेना ले मैल जो डारो धोय।
कोई हरि जन उवरे रे सब जग लिया है माय॥
असंख्य जनमें जोत विराजे रहो नाथ घनघोर।

चांद सुरजका मारग पाया सुख मन दोना जोर ॥
आत्मसे परमात्म चिन्हा रही वासना मोरो ।
डाल रात फल पैंठ मूलमें जहां देखा तुही ओरो
स आदि अन्त जग तुही
रमरह्यो घट घटमें वास तुम विन और कहू
नहीं देखो कहै कबीर दास ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो विरला जानै सोइ ।
गुरु प्रताप साधको सङ्गत सतको खेतो पोइ ॥

धनाश्री—तिताला

बाबुल मोलो हो हमारे मन कुड़ कु व्याह दई ।
कुड़ अरासी कुड़ परसो कुड़ कुड़के भाई ॥
कुड़े कुड़ विहावन आए कुड़ना मिले सगाई ।
भड़हा जर गए मांड़ो जर दुलहन भइ ॥
अहवातो गांवके लोग देखन सब आए ।
नाचत चलत बराती कहै कबीर सुनो भाइ साधा
यह पद है निरवानी ।
जो यह पदको निन्दा करे ताको नरक निशानी ॥

कलिङ्ग

रस गया लागी जंगल कोना वासा हो ।
काया नगरके दश दरवाजा पांच प्रधान छठो
मन राजा ॥
हाड़ जरे जैसे जङ्गल जड़ाके सजले जैसे धामको
फला जलवई ।
झपड़ी उड़न लागी खाक कहा गए हंस
कहां रूप राख ॥
कहे कबीर सुनो भैरे भाई हमको दो ताकों
राम दुहाई ।

२

साधो रामनाम जपले चित मो धरे मन हरे हरे
गुण भरे भई ॥
ढूढ़न निकसो कवि राइको माई मोरे पुतवा पर
छिन जादु वारे ।
होइ घर मेरा वे कबीराकि जाइ अरे
दइ मारे बैठा घर सब खाई हरे ॥
कोन सुदोया तोहे भरम भरमायो ठग ज्यो ठगो
तोहे भरम भरमाई ।
कबीरा का मरम न जाने कोई विना हरि भजन
सुझाई होई ॥

———•———

श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रामसागरोद्भव सङ्गीत-
रागकल्पद्रुमे ज्ञानतत्त्वसागर ग्रन्थ आरम्भ ।

प्रणम्य परमात्मानं सच्चिदानन्दमीश्वरम् ।
ज्ञानतत्त्वसागरोऽयं कुरुते रागसागरः ॥

अथ सुन्दरदासकृत कवितादि छन्द ।

भैरव—चौताला ध्रुवछन्द

मौज करी गुरुदेव दया करि शब्द सुनाय कह्यो
हरि मेरो ।
ज्यो रविके प्रकटे निशि जात सुदूरि कियो
भ्रम भानि अंधेरो ॥
कायक वाचक मानसहु करि कै गुरुदेव हि
वन्दन मेरो ।
सुन्दरदास कहै कर जोरि जु दादूदयाल को हूं
नित चेरो ॥

२

पूर्णब्रह्म विचार निरंतर कामन क्रोधन
लोभन मो है ।
श्रोत्र तुचा रसना अरु घ्राण सुदेखि कछू कहूं
नयनन जो है ॥
ज्ञानस्वरूप अनूप निरूपण जासु गिरा सुचि
मो मन मो है ।
सुन्दरदास कहै कर जोरि जु दादूदयाल हि
मो मन मो है ॥

२

धीरजवन्त अडिमा जितेन्द्रिय निर्मल ज्ञान
गह्यो दृढ़ आदू।
शील सन्तोष क्षमा जिनके घट लागि रह्योसु
अनाहद नादू॥
भेषन पक्ष निरन्तर लक्ष जु और नहीं कछु
वादविवादू।
ये सब लक्षण हैं जिन माहि सु सुन्दरके उर है
गुरु दादू॥

४

भौ जल में बहि जात उतै जिन काढि लिये अपने
करि आदू।
और सन्देह मिटाइ दियो सब काननि टेरि
सुनाइ कै नादू॥
पूर्णब्रह्म प्रकाश कियौ पुनि छुटि गयो यह
वाद विवादू।
ऐसी कृपा जु करी हम उपर सुन्दरके उर है
गुरु दादू॥

५

कोउक गोरस को गुरु थापत कोउक दत्त
दिगम्बर आदू।
कोउक कंथ कोउक भर थर कोउक धिर को
राखत नादू॥
कोउ कहै हरिदास हमारे जु यों करि ठानत
वाद विवादू।
और तौ सन्त सबै सिर उपर सुन्दरके उर हैं
गुरु दादू॥

विभास—चौताला

कोउ विभूति जटानखधारी कहै यह भेष
हमारो हो आदू।
कोउक कान फराइ फिरै पुनि कोउक सिङ्गो
बजावत नादू॥
कोउक केश लूचाइ करै व्रत कोउक जङ्गम
के शिव वादू।
ये सब भूलि परे जितहीतित सुन्दरके उर हैं
गुरु दादू॥

२

जोगी कहै गुरु जैनि कहै गुरु बौधि कहै गुरु
जङ्गम मानै।
भक्त कहै गुरु सन्यासी कहै बनवासी कहै गुरु
और बखानै॥
शेष कहै गुरु सोफि कहै गुरु याहिते सुन्दर
होत हरानै।
वाउ कहै गुरु वाहु कहै गुरु वहै गुरु सोई
सबै भ्रम मानै॥

२

सो गुरुदेवनिपै न छिपै कछु सत्वर जो तम ताप
निवारो।
इन्द्रिय देह मृषा करि जानत शीतलता समता
उर धारी॥
व्यापक ब्रह्म विचार अखण्डित द्वैत उपाधि सबै
तिन टारी।
शब्द सुनाई सन्देह मिटावत सुन्दर वा गुरुकी
बलिहारी॥

४

है गुरु को उरध्यान हमारे।
पूरण ब्रह्म बताइ दियो जिन एक अखण्डित
व्यापक सारे।
रागरु दोष करै अब कौन सों जोई है मूल सो
ईश कुड़ारे॥
संशय शोक मिट्यो मनको सब तत्त्व विचार
कह्यो निरधारे।
सुन्दर शुद्ध किये मल धोइ जु है गुरु को उर
ध्यान हमारे॥

५

ज्यों कपड़ा दरजी गहि ब्योंतत काठहो को
बढ़ई कसि आने।

कञ्चन कौं जु सुनार कसै पुनि लोह कौ घाटल-
हारहि जानै ॥
पाहन कौं कसि लेत सिलावट चाक कुम्हार कैं
हाथ नियानै ।
तैसे ही शिष्य कसै गुरुदेव जु सुन्दर दास
तबै मन मानै ॥

ललित—तिताला

ऐसे गुरुदेवको हमारे जु प्रणाम है ।
शत्रुहै न मित्र कोउ जाके सब है समान देह की
ममता छाड़े आत्माही राम है ॥
औरहु उपाधि जाके कबहू न देखियत सुखके
समुद्र मैं रहत आठो जाम है ॥
रिद्धि और सिद्धि जा के हाथ जोरि आगे
खड़ी सुन्दर कहत ताके सबही गुलाम है ॥
अधिक प्रशंसा हम कैसे करि कहि सकैं ऐसे
गुरुदेव को हमारे जु प्रणाम है ॥

चौताला

ज्ञानको प्रकाश जाकै अन्धकार भयो नाश देह
अभिमान जिन त्यजो जानि सारथी ।
सोई सुखसागर वैराग जो जाके दैन सुनत
बिलात है मनको विकार धी ॥
अगम अगाध अति कोऊनहिं जानै गति आत्माकी
अनुभव अधिक अपारथी ।
ऐसो गुरुदेव वन्दनीक तिहुं लोक माहि सुन्दर
विराजमान शोभित उदारथी ॥

को

सोई गुरुदेव जाकैं दूसरी न बात है ।
काहू सौं न रोष तोष काहू सौं न राग दोष काहू
सौं न बैरभाव काहूको न घात है ।
काहू सो न बकवाद काहू सौं है न विषाद काहू
सौं न सङ्ग न कोऊ पचपात है ॥
काहूसो न दुष्ट बैन काहूसो न लेन देन ब्रह्मको
विचार कछु और न सुहात है ।
सुन्दर कहत सोई ईसनको महाईस सोई गुरुदेव
जाकै दूसरी न बात है ॥

चौताल

सिष पलटै सो सत गुरु जानिये ।
लोहे कौं जु पारस पखान ह्व पलट लेत कञ्चन
छुवत होत जगत मैं प्रमाणिये ।
द्रुमको जो चंदनहु पलटै लगाइ वास आपके
समान ताकै शीतलता आनिये ॥
कीट कौ ज्यौं भृंगहुं पलटि के करत भृङ्ग सोई
उड़ि जाइ ताको अचरज मानिये ।
सुन्दर कहत यह सगरो प्रसिद्ध बात सद्य सिष
पलटै सो सत गुरु जानिये ॥

२

गुरु विन ज्ञान नाहीं गुरु विन ध्यान नाहीं गुरु
विन आत्म विचार न लहत है ।
गुरु विन प्रेम नाहिं गुरु विन प्रीति नाहिं गुरु विन
शीलहु सन्तोष न गहत है ॥
गुरु विन प्यास नाहिं बुद्धिको प्रकाश नाहिं
भ्रमहु को नाश नाहिं संशयई रहत है ।
गुरु बिन बाट़ नाहिं कौड़ा विन हाट नाहिं सुन्दर
प्रकट लोक वेद यौं कहत है ।

अलैया वेलावल—चौताला

पढ़े के न बैठे पाश अच्छर न वाचि सके विनही
पढ़े से कैसे आवत है फारसी ।
जौहरीके मिले विनु पारष न जानै कोउ हाथ
नग लिये फिरै संशय नहि टारसी ॥
वैदहु मिल्यो न कोउ बूटी को बताई देत भेद
विनु पाये वाके औषध है छारसो ।
सुन्दर कहत मूरख रंचक न देखो जाइ गुरु विन
ज्ञान जी अंधेरे माहि आरसी ॥

चौताला

गुरके प्रसाद बुद्धि उत्तम दशा को गहै गुरुको
प्रसाद भवदुःख विसराइये ।

गुरुके प्रसाद प्रेमप्रीतिहु अधिक बाढ़ै गुरुके प्रसाद
रामनाम गुण गाइये ॥
गुरुके प्रसाद सब योगकी जुगति जानै गुरुके प्रसाद
शून्य मैं समाधि लाइये ।
सुन्दर कहत गुरुदेव जो कृपाल होंहि तिनके प्रसाद
तत्त्वज्ञान पुनि पाइये ॥

देवगिरि—चौताला

जग मैं न कोऊ हितकारी गुरुदेव सो ।
बूड़त भव सागर मैं आइ के बंधावै धीर पारऊ
लंघाय देत नामकी जौ खेव सो ॥
परउपकारी सब जीवनके तारि काम कबहु न आवै
जाके गुननिको छेव सो ।
बैनउ सुनाइ भय भ्रम सब दूरि करै सुन्दर दिखाइ
देत अलख अभेव सो
औरऊ सनेही हमनोंके करि देखि सोधि जगमैं
न कोऊ हितकारी गुरुदेव सो ॥

चौताल

गुरु तात गुरु मात गुरु बन्धु निज गात गुरुदेव
नखसिख सकल सम्वार्‍यो है ।
गुरु दिये दिव्य नयन गुरु दिये सुखवन गुरुदेव
श्रवण देयवद उचार्‍यो है ॥
गुरु दिये हाथ पाव गुरु दिये सोसभाव गुरुदेव
पिण्डमाहि प्राण आइ डार्‍यो है ।
सुन्दर कहत गुरुदेव जु कृपाल होहि फेरि घा
घटि करि मोहि निस्तार्‍यो है ॥

२

कोऊ देत पुत्रधन कोऊ देत बलवन कोऊ देत
राजसाज देवरिषि सुन्यो है ।
कोऊ देत यशमान कोऊ देत रिसग्रान कोऊ देत
विद्यादान जगत मैं गुन्यो है ॥
कोऊ देत रिद्धि सिद्धि कोऊ देत नवनिधि कोऊ
देत और कछू ता ते सोस धुन्यो है ।
सुन्दर कहत एक दियो जिन रामनाम गुरुसो
उदार कोउ देख्यो है न सुन्यो है ॥

ककुभ—चौताला

गुरुके अनन्त गुण का पै कहे जात हैं ।
भूमिहुंको रेणु कोतो संख्या कोऊ कहत है
भारहु अठारह द्रुम तिनके जो पात हैं ॥
मेघनको संख्या सोऊ ऋषिन कही विचारि
बुन्दनको संख्या तेऊ आइके विलात हैं ।
तारनको संख्या सोऊ कहो है पुराण मांहि
रोमनिको संख्या पुनि तितनेक गात हैं ।
सुन्दर जहां लौ जत सबही को आवै अन्त गुरुके
अनन्त गुण का पै कहे जात हैं ॥

२

गुरुको तौ महिमा अधिक है गोविन्द तें ।
गोविन्दके किये जीव जात है रसातलकी गुरु
उपदेशे सो तो छूटे यमफन्द तें ।
गोविन्दके किये जीव वस परे कर्म्मनिके गुरुके
निवाजे सोतो फिरत सुछन्द तें ॥
गोविन्दके किये जीव बूड़त भवसागर मैं सुन्दर
कहत गुरु काढ़े दुःखदन्द तें ।
औरउ कहालौं कछु मुख तें कहूं बनाइ गुरुको
तौ महिमा अधिक है गोविन्द तें ॥

३

ऐसो कौन भेट गुरुदेव आगे राखिये ।
चिन्तामणि पारस कल्पतरु कामधेनु औरहु
अनेक निधि वारि वारि नाखिये ।
जोई कछू देखिये सो सकल विनाशवन्त बुद्धि मैं
विचार करि बहु अभिलाखिये ॥
ताते अब मन वच कर्म्म करि करजोरि सुन्दर कहत
सोस मेलि दीन भाखिये ।
बहुत प्रकार तीनो लोक सब सोधे हम ऐसो
कौन भेट गुरुदेव आगे राखिये ॥

मनहरनछन्द

खट—तिताला

कान गराते कहा कान ऐसे होत मूढ़ मनके गराते
कहां नैन एसे पाइ है ।

नासिका गरातें कहां नासिका सुगन्ध लेत मुखके
गरातें कहां मुख ऐसे गाइ है ॥
हाथ कोगुते कहां हाथ ऐसो काम होत पांवके
गएतें कहा पांव ऐसे धाइ है ।
याही ते विचार देखि सुन्दर कहत तोहि देहके
गरातेंरे सो देह नही आइ है ॥

२

बार बार कह्यो तोहि साव्य धान कौन होहि
ममताकी पोढ़ सिर काहे कौं धरत है ।
मेरो धन मेरो धाम मेरो सुत मेरो वाम मेरे पशु
मेरो ग्राम भूल्यो फिरत है ॥
तूतो भयो बावरो बिकाइ गई बुद्धि तेरो ऐसो
अन्धकूप गृह तामें क्यों परत है ।
सुन्दर कहत तोहि नेकहु न आवे लाज काज कों
बिगारके अकाज क्यों करत है ॥

३

तेरे तो कुपेच पर्‍यो गाढ़ मति घुरि गई ब्रह्मा आइ
छोरें कौह्र छुटत न जबहूं ।
तेल सौ भिजोइ करि चौंथरा लपेट राखे कूकरको
पूछ सुधो होइ नहो तबहूं ॥
सास देत सोख बहुकोरो कौ गनत जात कहत
कहत दिन बीत जात सबहूं ।
सुन्दर अज्ञान ऐसो छाड़्यो नहि अभिमान निकसत
प्राण लगि चेत्यो नहो कबहूं ॥

४

वारू मांहि तेल नहि निकसत काहू विधि पाथर
न भीजे बहु बरषत घन है ।
पानीके मथे तें कछु घीव नहि पाइयत कूकसके
कूटे नहि निकसत कन है ॥
सून्य कों मुठो भरे ते हाथन परत कछू ऊसरके
बोये कहा उपजत अन है ।
उपदेश ओषध कौन विधि लागे ताहि सुन्दर असाध
रोग भयो जाके मन है ॥

५

वैरो घर माहि तेरे जानत सनेहो मेरे दारासुत
वित तेरो खोंसि खोसि खांहिगे ।
औरज कुटुम्ब लोक जूटे चहु ओरहो ते मोठी मोठी
वातें कहि तोसों लपटांहिगे ॥
सङ्कट परेगो जब कोऊ नहि तेरो तब अतिहो
कठिन वाको वेरि हट जांहिगे ।
सुन्दर कहत तातें झूठोई प्रपञ्च यह सुपनेको नांई
सब देखत बिलांहिगे ॥

सिन्धु—तिताला

बालूके मन्दिर माहि बैठि रह्यो थिर होइ राखत है
जीवनकी आशा कोऊ दिनकी ।
पल पल छीजत घटत जात घरो घरो विनशत बार
कहा खबरि न छिनकी ॥
करत उपाय झूठे लेन देन खान पान मूसा इत उत
फिरे ताकि रह्यो मिनकी ।
सुन्दर कहत मेरो मेरो करि भूल्यो सठ चञ्चल
चपल माया भई किन किनकी ॥

२

श्रवण ले जाइ करि नाद के ले डारे पास नैना
ले जाइ करि रूप वश कर्‍यो है ।
नासिका ले जाइ करि बहुत सुधावे फूल रसना
ले जाइ करि स्वाद मन दुर्‍यो है ॥
चरम ले जाइ करि नारो सौं स्पर्श करे सुन्दर
कोउक साधु ठगन तें डर्‍यो है ।
कामठग क्रोधठग लोभठग मोहठग ठगनिको
नगरो मौ जोव आइ पर्‍यो है ॥

३

पायो है मनुष्य देह औसर बन्यो है आइ ऐसो देह
बार बार कहौ कहां पाइ है ।
भूल्यो के बार तू अबके सयानो होउ रतन अमोल
यह काहेको ठगाइ है ॥

समुझि विचार देखि ठगनि की सङ्ग पाय
ठगबाजी देखि कहुं मन न डुलाइ है।
सुन्दर कहत तोहि अब सावधान होहि हरि को
भजन करि हरि मे समाइ है॥

४

महादेव वामदेव ऋषभ कपिल देव व्यासदेव
शुकहुं जयदेव नाम देव जू।
रामानन्द सुखानन्द कहिये अनन्तानन्द
सुरसुरानन्द हुं वे आनन्द अछेव जू॥
रैदास कबीरदास सोझादास पीपादास धनादासहु
के दास भावही की टेव जू।
सुन्दर सकल सन्त प्रकट जगत माहि तैसे गुरु दादू
दास लागे हरिसेव जू॥

५

गुरुदेव सर्व्वोपर अधिक विराजमान गुरुदेव सब
होते अधिक गरिष्ट हैं।
गुरुदेव दत्तात्रय नारद शुकादि मुनि गुरुदेव
ज्ञानघन प्रकट वसिष्ठ हैं॥
गुरुदेव परम आनन्दमय देखियत गुरुदेव
बरबरियान हु बरिष्ट हैं।
सुन्दर कहत कछु महिमा कही न जाइ ऐसे
गुरुदेव दादू मेरे सिर इष्ट हैं॥

६

जोगी जैन जङ्गम सन्यासी बनवासी बोधी और
कोऊ भेष पक्ष सब भ्रम भान्यु है।
तापस ऋषीश्वर मुनीश्वर कवीश्वर हु सबनि की मत
देखि तत्त्व पहिचान्यु है॥
वेदसार तन्त्रसार स्मृतिपुराणसार ग्रन्थनिको
सार सोई हृदय माहि आन्यु है।
सुन्दर कहत कछु महिमा कही न जाइ ऐसे
गुरुदेव दादू मेरे मन मान्यु है॥

७

जीते है जू काम क्रोध लोभ मोह दूरि किये
और सब गुणन को मद जिन भानु है।
उपजै न कोऊ ताप सीतल सुभावजाकों सबही
सौं समता सन्तोष उर आनु है॥
काहू सौ न राग दोष देत सबही कों पोष जीवत ही
पायो मोष एक ब्रह्म जानु है।
सुन्दर कहत कछू महिमा कही न जाइ ऐसे
गुरुदेव दादू मेरे मन मानु है॥

रागिणी रामकली—झपताल

उपदेश चितावनी हंसालछन्द

राम हरि राम हरि बोल सुवा।
तो सही चतुर तू जान प्रवीण अति परे जिन
पिञ्जरे मोहकूवा॥
पाइ उत्तम जन्म लाइ ले चपल मन गाइ
गोविन्द गुण जीत जूवा।
आपही आप अज्ञान नलिनो बंध्यो विना प्रभु
विमुख कै बार मूवा॥
दास सुन्दर कहै परमपद तो लहै राम हरि
राम हरि बोल सुवा।

२

हकतू हकतू बोल तोता।
म' फस शैतान कों आपनि कैद करि क्यों दुनी मे
परा खाइ गोता।
है गुनागारभो गुनहही करत है खायगा
मार तब फिरै रोता॥
जिन तुझे खाक सौं अजब पैदा किया तू उसे
क्यों फरामोश होता।
दास सुन्दर कहै अरम तबही रहै हक्कतू हक्कतू
बोल तोता॥

झपताल

भी तुही भी तुही बोल तूती।
आवको वद ओजूद पैदा किया नयन मुख
नासिका कर संजूती।
ख्याल ऐसा करै हवी लोए फिरै जागि करि
देख क्या करै सूती।